

असतो मा सद्गमय



# अंकुर



पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय  
(दिल्ली विश्वविद्यालय)  
नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065

# Editorial Team



***Sitting L-R:***

Dr. Manoj Kumar Kain, Chief Editor; Ms. Anu Kapoor, IQAC Co-ordinator; Dr. Vandana Agrawal, Editor, English; Prof. Krishna Sharma, Principal; Mr. Surender Kumar, Bursar; Dr. Giridhar Gopal Sharma, Editor Sanskrit; Ms. Garima Gaur Srivastava, Librarian

***Standing L-R:***

Mr. Saurabh Kumar, Technical Head, Commerce; Dr. Rohit Sharma, Co-Editor, Sanskrit; Dr. Reshma Tabassum, Co-Editor, English; Dr. Pramita Mishra, Co-Editor, Sanskrit; Dr. Chain Singh Meena, Editor, Hindi; Dr. Sandeep Kumar Ranjan, Co-Editor, Hindi

# अंकुर



## पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065

[www.pgdavcollege.edu.in](http://www.pgdavcollege.edu.in)  
email: [pgdavcollege.edu@gmail.com](mailto:pgdavcollege.edu@gmail.com)



# विषय सूची / Contents

Editorial		6
प्राचार्या की कलम से		7
प्राचार्या जी के साथ परिचर्चा		8-14
संपादकीय	डॉ. मनोज कुमार कैन	15

## संस्कृत खंड

संपादकीयम्	डॉ गिरिधर गोपाल शर्मा	17
भक्तिवैशिष्ट्यम्	डॉ. प्रमिता मिश्रा	18-20
अष्टाध्याय्यां वर्णिताः प्राचीनजनपदाः	नागेन्द्र कुमारः	21-26
कोरोना विषाणुः	प्रियंका शर्मा	27
सदाचारः	तबस्सुमः नसरीनः	27
संस्कृत नीति में व्यवहारिक शिक्षा	गरिमा	28
जन्माष्टमी महोत्सवः	प्रिया	29
दुर्जनानां विवादे कालो न नष्टव्यः	संजना नागरः	29
दशकं धर्मलक्षणम्	निखिल कुमार मिश्रा	30
आत्मा	शिवानी साहु	30
सत्संगत्याः महिमा	निशा	31
गुरु महिमा	निशा	32
दुर्बुद्धिः विनश्यति	ऋचा राजः	32
सुभाषितानि	पूजा	33
संस्कृतप्रहेलिका	वर्षा	34
अभ्यास एव परमो गुरुः	वर्षा	35
बकः कर्कटकः च	वर्षा	35
माता	विनीता	36
त्रिचक्रिकाचालकः	कृष्णचन्द्र मिश्रा	36
आयुर्वेदे सुभाषितानि	अर्चना	37
वैवश्यं चौर्यं करणम्	सुमनः	38
श्रमेव जयते	उजाला कुमारी	39
जननी-भूमि गरीयसी जो माँ कहलाती है	बृजेश कुमारः	39
विद्यायाः महिमा	गोलू कुमारः	40
महामृत्युंजय मंत्रः	सूरज कुमार झा	41
शान्ति पाठः	सूरज कुमार झा	41
नीतिशतकम्	काजल विश्वालः	42
चाणक्यनीति से शिक्षाप्रदं श्लोक	शिवांजय सिंह राठौरः	43
अचिन्त्यभेदाभेद दर्शनम्	विशालः	44-45
संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्	आरती	45
संस्कृत में विज्ञान विषयक कुछ महत्वपूर्ण तथ्य	रोहित कुमारः	46-47
कोरोना काल में श्रीमद्भगवद्गीता	डॉ. राजेश कुमारः	48-49
माँ वैष्णोदेवीधाम यात्रा वृत्तान्त	सौरभ सक्सेना	50-52

## हिंदी खंड

संपादकीय	डॉ. चैनसिंह मीना	54
<b>पद्य खंड</b>		
मेरे सपनों का भारत वर्ष	बृजेश कुमार	56
परीक्षा फल	बृजेश कुमार	56
हे भगवान! स्कूल आकर तो देख	बृजेश कुमार	56
बेटी होती बहुत महान	बृजेश कुमार	57
जिस्म के भूखे	अमित कुमार कुशवाहा	57
यारियाँ	शिवानी	58
जिंदगी	शिवानी	59
माँ	शिवानी	59
अशुभ विवाह	शिवानी	59
समय की साख	आशुतोष यादव	60
आओ फिर से दिया जलाएँ	आशुतोष यादव	60
स्तुति	शशि चौरसिया	60
प्रकृति तू रहम कर	दामिनी चौहान	61
पूरे देश का सम्मान	अटल यादव	61
मुरझाई कली	रामू सिंह	62
अत्याचार हुआ किस प्रकार?	आकांक्षा मिश्रा	62
बेरोजगारी	किशन वीर	63
काश मैं छोटी-सी नहीं-सी बनकर रहती	ममता दास	63
क्या है किसान?	आयुष कुमार पाल	64
ये डर की सियासत है	गुलाम मुस्तफा	64
सपने	तनवी	65
अपने जैसा बना दो	नाजनीन	65
तेरे लिए क्या हूँ मैं?	प्रेम राजपूत	66
पागल नहीं हूँ मैं	प्रेम राजपूत	66
चीख	प्रिया सिंह	67
उड़ान	प्रिया सिंह	67
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है	शीतल तिवारी	67
अकेलापन	प्रदीप बिश्नोई	68
चंबल का पानी	आविद खान	68
विश्व गुरु भारत	सचिन कुमार पाण्डेय	69
पुरुषोत्तम राम	सचिन कुमार पाण्डेय	69
सुंदरता	कोमल रैक्वार	69
समय का पहिया	वर्षा मीना	70
अन्न ही जीवन	वर्षा मीना	70
हिन्दी भाषा बड़ी महान	वर्षा मीना	70
कोविड	शालू त्रिपाठी	71
समाज	शालू त्रिपाठी	71
हिंदी	शालू त्रिपाठी	72
माँ	हरिओम	72
फौजी की यादें	सबिता कुमारी	73
जरूर देखना	सबिता कुमारी	73
पैसा और शिक्षा	सबिता कुमारी	73



मैं लाल किला	सबिता कुमारी	73
धन्यवाद दीदी	देवकी दक्ष	74
इंसाफ नहीं होता !	दिव्या	74
कुछ दिल की कुछ मन की	काजल ठाकुर	75
नारी का अस्तित्व	काजल ठाकुर	76
शुभ विवाह या दहेज	काजल ठाकुर	76
नन्हा पौधा	आकांक्षा	77
बहुत कम सीखा है	आकांक्षा	77
हवस	गुलफसा	77
चाहती हूँ	गुलफसा	77
आधुनिक राजनीति—एक परिचय	अर्पित गुप्ता	78
आतंक की गृहणता	अर्पित गुप्ता	78
प्रेम	उपासना शर्मा	79
वह	उपासना शर्मा	79
सम्मान	कशिश छाबरा	79
कर्ण रश्मिस्थी	रितेश कुमार पांडेय	80
कर्ण	निशांत कुमार सिंह	80
संस्कृत की लाडली बेटी है हिन्दी	कृष्णचंद्र मिश्र	81
कविता	कृष्णचंद्र मिश्र	81
जमाना	राजकुमार	81
ईश्वर का अवतार है पेड़	सचिन प्रजापति	82
प्लास्टिक मुक्त करें ये भूमि	सचिन प्रजापति	82
तुम जागते रहो	सौम्या शर्मा	83
स्त्री...	अनुभव मिश्रा	83
<b>गद्य खंड</b>		
सामाजिक मीडिया और सामाजिक आंदोलन	आयुष कुमार पाल	85-87
किसी की परवाह मत करो आगे बढ़ो	अंकित पाल	88
सामाजिक जिम्मेदारी	आकांक्षा शुक्ला	89
गुरु एवं अध्यापक	वर्षा मीना	90
जिंदगी का सफर	तनवी	90
भारतीय समाज और स्त्री	अनुभव मिश्रा	91-92
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	सौरभ कुमार	93-94

## ENGLISH SECTION

From the Editor's Desk	Dr. Vandana Agrawal	96-97
<b>Curled Fancies (Prose)</b>		
The Blacker Twilight	Aadar Atreya	98
Dog Lover	Disha Wadhvani	99
This Is Also Life	Hritika Lamba	100-101
Fever	Barenya Tripathy	102-103
Beauty	Harshita Negi	104
Lessons from the "Diseased" Year	Chitrang Kaushal	105
Mirror, Mirror on the Wall: Don't Lose Confidence at All	Srishti Garg	106
A Social Union Called 'Marriage'	Nupur	107-108
Diverse Colours of Unified 'Bharat'	Vrinda Parwal	109-110

<b>Harmonic Chimes (Poetry)</b>		
Mother Nature Is Healing	Aarzo Agarwal	111
Money	Hritika Lamba	111
Silence	Krishna Chandra Mishra	112
Quite Lost	Suchit Rajvanshi	112
Does the Dream Ever Come True?	Radhika Nagpal	113
Anxiety: Our Generation's Legacy	Divanshi Aggarwal	113
Racism Isn't Born but Taught	Kusha Vasudeva	114
<b>Scholastics (Book Reviews)</b>		
Animal Farm by George Orwell	Shaurya Dev	115-116
Kino by Haruki Murakami	Divyanshi Goel	117-118
<b>Brainery Bonus (Work by Mentors)</b>		
Goa Diaries: A Photographic Journey	Ms. Renu Kapoor	119-120
Engaging the Learner: Why Do We Need the Human Teacher in a Rapidly Digitising World	Dr. Urvashi Sabu	121-123
An Angel's Kiss	Dr. Vandana Agrawal	124-125
Trams in Lisbon	Ms. Nancy Khera	126
Toba Tek Singh Revisited (2020)	Dr. Vandana Agrawal	127
Safety Tips for Online Share Trading	Ms. Anindita Goldar	128-129
Moving Towards a Plastic-Free World	Ms. Sakshi Verma	130-131
Friends for Life	Ms. Sakshi Verma	131

## COLLEGE SOCIETIES

IQAC REPORT	133
LIBRARY: PGDAV COLLEGE	134
THE PLACEMENT CELL	135-136
NATIONAL CADET CORPS (NCC)	137
NATIONAL SERVICE SCHEME (NSS)	138-139
HYPERION - CULTURAL COMMITTEE	140-149
ENACTUS - THE P.G.D.A.V. CHAPTER	150-151
SATARK – THE CONSUMER CLUB	152-153
BHARAT RATNA DR. B.R. AMBEDKAR MEMORIAL LECTURE SERIES, 2021	154
<b>भारत केंद्रित राष्ट्रीय शिक्षा नीति</b>	155-156
<b>संस्कृत विभाग</b>	157
<b>संस्कृत विभाग वेबिनार रिपोर्ट</b>	158-162
<b>हिंदी विभाग</b>	163-164
ECLECTICA - THE ENGLISH DEPARTMENT LITERARY SOCIETY	165-166
REPORT ON DEPARTMENT OF COMMERCE ACTIVITIES	167-168
COMMERCIUM: THE COMMERCE SOCIETY	169-170
THE EQUILIBRIUM- DEPARTMENT OF ECONOMICS	171
SANKHYIKI - DEPARTMENT OF STATISTICS	172
DHAROHAR - DEPARTMENT OF HISTORY	173
DEPARTMENT OF MATHEMATICS	174-175
SAMVAAD - DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE	176-178
PAIKALAN - DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE	179
GEO-CRUSADERS – DEPARTMENT OF ENVIRONMENTAL STUDIES	180
DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION	181
KAIZEN - THE CAREER COUNSELLING CLUB, PGDAV COLLEGE	182-183
सेवानिवृत्त प्राध्यापक	184

आवरण पृष्ठ : ईशा कौशिक





Patron

**Prof. Krishna Sharma**

Chief Editor

**Dr. Manoj Kumar Kain**

Editors

**Dr. Giridhar Gopal Sharma (Sanskrit)**

**Dr. Chain Singh Meena (Hindi)**

**Dr. Vandana Agrawal (English)**

Co-Editors

**Dr. Pramita Mishra (Sanskrit)**

**Mr. Rohit Kumar (Sanskrit)**

**Dr. Sandeep Kumar Ranjan (Hindi)**

**Dr. Reshma Tabassum (English)**

**Mr. Saurabh Kumar (Commerce)**

Student Editors

Sanskrit : **Akansha Pathak, Priyanka Sharma**

Hindi : **Shubham Sharma, Saurav**

English : **Srishti Garg, Harshita Negi**

Publisher

**Ms. Garima Gaur Srivastava**

Printer

**Print Source Glazers Pvt Ltd**





## प्राचार्या की कलम से...

अपने महाविद्यालय के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की रचनात्मक सामर्थ्य की सार्थक मंच के रूप में 'अंकुर' पत्रिका से मेरा जुड़ाव आरंभ से ही रहा है। गत पच्चीस वर्ष की 'अंकुर यात्रा' में मैं पाठक, रचनाकार और संपादक के रूप में साक्षी रही हूँ। आज प्राचार्या के रूप में 'अंकुर' को आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे कितना हर्ष हो रहा है इसका शब्दों में बयान करना सचमुच बहुत कठिन है। गत एक वर्ष से अधिक समय से हम लोग असामान्य स्थितियों में रह रहे हैं। पूरा विश्व एक ऐसी महामारी से संघर्ष कर रहा है जिससे हम लोगों का कॉलेज में मिलना नहीं हो पा रहा है। सारी गतिविधियाँ— अध्यापन तक भी आभासी (Virtual) माध्यम से ही संभव हो रहा है। ऐसे समय में 'अंकुर' के लिए रचनाएँ आमंत्रित करना, उन्हें संपादित करना एवं प्रकाशित करना कितना श्रमसाध्य हो सकता है, इसका अनुमान लगाना सहज है। ऐसे समय में भी पत्रिका के संपादक डॉ. मनोज कुमार कैन ने निरंतर सक्रिय रहकर 'अंकुर' का यह अंक तैयार किया है। मैं डॉ. मनोज कुमार कैन और उनके सहयोगियों डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा एवं डॉ. वंदना अग्रवाल को हृदय से साधुवाद देती हूँ कि ऐसे विकट समय में भी उन्होंने अपने दायित्व को बखूबी निभाया है।

'अंकुर' के रचनाकारों को पुनः एक बार बधाई। 'अंकुर' निरंतर इसी प्रकार से नए रचनाकारों के लिए एक सार्थक मंच के रूप में अपनी यात्रा जारी रखे इसी आशा के साथ अपने सभी सहयोगियों को बहुत-बहुत धन्यवाद!

कृष्णा शर्मा

प्रो. कृष्णा शर्मा



## प्राचार्या जी के साथ परिचर्चा

**Dr. Reshma** - Good afternoon ma'am! First of all we would like to thank you for sparing your valuable time for this interview. Ma'am, whenever we see you, we find you carrying a beautiful smile on your face, releasing positive energy all over the place; when we see you, we could think of just one word - Grace. Ma'am, how do you manage to be so graceful, so full of energy and verve?

**प्राचार्या-** प्रश्न ऐसा है कि इसका उत्तर मैं क्या दूँ? अगर आपको ऐसा लगता है, तो धन्यवाद ही कह सकती हूँ।

**सौरव-** मैम, आप इस महाविद्यालय की प्राचार्या हैं। आप हम सभी की प्रेरणास्रोत भी हैं। कृपया आप अपना साहित्यिक परिचय साझा करें।

**प्राचार्या-** जब से मैंने पढ़ाना शुरू किया है। विशेषकर हिंदी ऑनर्स के विद्यार्थियों से मेरा हमेशा यही आग्रह रहा है कि हम जब भी किसी व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं, तो उससे हमेशा उसका साहित्यिक परिचय पूछना चाहिए। अब जब कि मैं यह कहती आयी हूँ, तो मैं भी यही चाहूँगी कि अपना साहित्यिक परिचय दूँ। मसलन मैं आज जिस पद पर हूँ, जहाँ से मैंने अपना साहित्यिक जीवन शुरू किया है और यहाँ तक पहुँचने में जिन्होंने मेरी सहायता की है उसे साझा करूँ। मैंने बी.ए. इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से किया है। वहीं

से मैं अपने साहित्यिक जीवन का आरम्भ मानती हूँ। मेरा अध्ययन-अध्यापन वास्तविक रूप में तब शुरू होता है, जब मैं कॉलेज पहुँची। मुझे याद है कि इंद्रप्रस्थ कॉलेज में बी.ए. ऑनर्स का एक समूह बनता था। उसमें हम एक मॉनिटर बनाते थे, जैसा कि स्कूलों आदि में होता है। बी.ए. ऑनर्स के उस समूह का मॉनिटर मुझे भी बनाया गया। वहीं से मैंने लिखना शुरू किया था। अतः सही मायने में मैं अपने साहित्यिक जीवन का आरम्भ इंद्रप्रस्थ कॉलेज से ही मानती हूँ। मेरा जो रुझान है- हिंदी में प्रति, अध्ययन के प्रति, अध्यापन के प्रति और चिंतन के प्रति यह सब वहीं की सभी अध्यापिकाओं की बदौलत है।

**आकांक्षा पाठक-** मैम, हम चाहते हैं कि आप हमसे अपनी अकादमिक उपलब्धियों को भी साझा करें।

**प्राचार्या-** मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। उससे पहले मैंने एम.फिल. की थी जो कि उस समय पीएचडी के लिए आवश्यक होती थी। हिंदी के प्रति मेरा अत्यधिक रुझान था। अतः मैंने हिंदी विषय में एम.ए., एम.फिल. और पीएचडी किया। ये सभी उपाधियाँ जिसने यहाँ तक पहुँचने में मेरी सहायता की हैं।

**शुभम शर्मा-** मैम, आप के अध्ययन और अध्यापन का चुनिंदा क्षेत्र क्या है?

**प्राचार्या-** आरंभ में जब मैंने अध्ययन करना शुरू किया

था, मेरे अध्ययन का चुनिंदा क्षेत्र कविता, कहानी और उपन्यास रहा, जिसमें मेरी अत्यधिक रुचि थी। उसके बाद जब मैंने कॉलेज में पढ़ाना शुरू किया, तब आलोचना के क्षेत्र में मेरी रुचि विकसित हुई। क्योंकि पढ़ाने के लिए केवल एक ही दृष्टिकोण उपयुक्त नहीं होता है। हमें अलग-अलग दृष्टिकोणों से चाहे वह कविता हो, उपन्यास हो या कहानी हो पढ़ाना पड़ता है। विविध रचनाओं के संबंध में आलोचकों के क्या विचार हैं? उन्हें जानने के लिए मैंने आलोचना पढ़ना-पढ़ाना शुरू किया। वैसे मूल रूप से कविता, कहानी और उपन्यास पढ़ने में ही मेरी रुचि रही। एक और बात जब मैं कक्षा छः या सात में थी तब मैंने अपनी पहली कविता लिखी थी। उस समय वह कविता मेरे स्कूल में छपी थी। कॉलेज में भी सबको पता है कि मैं कविताएं लिखती थी। वंदना जी को भी मालूम है। मेरी कविताएं जनसत्ता और कादंबिनी जैसी मशहूर पत्र-पत्रिकाओं में छपी हैं। हाँ, कहानियाँ भी मेरी छपी हैं।

**प्रियंका शर्मा-** मैम, हमें पता चला है कि कई साल पहले आपके ससुर जी इस महाविद्यालय के प्राचार्य थे। अब आप यहाँ की प्राचार्या हैं। आपको अपने प्राचार्य ससुर जी से किस तरह की प्रेरणा मिलती है?

**प्राचार्या-** इस प्रश्न के जवाब में सबसे पहले जो पंक्ति मेरे मस्तिष्क में आती है वह यह है कि आज मैं यहाँ जो हूँ उन्हीं के कारण हूँ। मेरा अपना परिवार पूर्णतया व्यावसायिक था। मेरे परिवार में किसी ने भी नौकरी नहीं की थी। बावजूद इसके मुझे पढ़ने का शौक था और मैं पढ़ती थी। इसलिए नहीं पढ़ती थी कि आगे मुझे नौकरी करनी है। मुझे एम.ए. में एडमिशन मिल गया और मैंने एम.ए. किया। एम.ए. में मुझे अच्छे अंक आए। अतः परिवार वालों से कहा कि मैं एम.फिल करना चाहती हूँ। मैंने एम.फिल. किया। एम.फिल. के बाद मैंने पीएचडी करने के लिए सोचा। उसी दौरान मेरा विवाह हो गया। मेरे ससुर जी इसी कॉलेज के प्राचार्य थे। उन्होंने मुझसे एक तो यह कहा कि तुम्हें पीएचडी करनी चाहिए, दूसरा उन्होंने मेरा पंजीकरण पीएचडी में करा दिया। तब मेरे विवाह को एक साल हुआ था। पुनः उन्होंने कहा कि तुम्हारी पीएचडी हो गई है, तो तुम अब नौकरी कर लो। हालांकि

वे 'नौकरी' शब्द कहने से चिढ़ते थे। उनका विचार था कि हम कॉलेज में अध्यापन का कार्य करते हैं। यह नौकरी नहीं है। इसके लिए भले ही हमें पैसे मिलते हैं, परंतु इसे नौकरी मत कहा करो। इसको इस दृष्टि से देखो कि हम किसी को शिक्षित कर रहे हैं। उनकी यह भी इच्छा थी कि मैं इसी कॉलेज में पढ़ाऊँ। आपको विश्वास नहीं होगा कि मेरी सभी डिग्रियाँ, अंक-पत्र यहाँ तक कि एक-एक पेपर उन्होंने संभालकर रखा था, जो नौकरी के समय यहाँ काम आएँ। मैंने तो शादी के बाद ये सोचकर कि अब कुछ करना नहीं है, यह कार्य छोड़ ही दिया था। परंतु यह मेरे लिए अत्यंत दुःखद है कि वे मुझे प्राचार्या के रूप में देख नहीं पाए। मेरे ससुर जी का उनकी सेवानिवृत्ति के कुछ महीने पहले ही देहांत हो गया था। जब मैं 30 नवंबर, 2020 को इस कुर्सी पर बैठी तो सबसे पहले मुझे यही ध्यान आया कि वे इसी कुर्सी पर बैठा करते थे। यह उनका आशीर्वाद ही है जो आज मैं यहाँ पर हूँ।

**Srishti Garg-** As a first woman principal of the college, what steps do you plan to take for the women of the college in the current session?

**प्राचार्या-** This expression of 'first lady principal' is weighing me down. आपको याद होगा मैंने पहले ही स्टाफ काउंसिल की मीटिंग में एक बात कही थी कि प्राचार्य का कर्तव्य सबके लिए समान होता है। इसमें महिला या पुरुष की बात नहीं होती। हाँ, महिला होने के नाते किसी चीज को देखने या सोचने का तरीका थोड़ा अलग हो सकता है। परंतु, मुझे नहीं लगता कि मुकेश जी जो कार्य करते थे या मैं जो कार्य करती हूँ, उसमें कोई विशेष अंतर है। यह भी सच है कि किसी वस्तु के प्रति, किसी घटना के प्रति और किसी काम के प्रति महिला-पुरुष के दृष्टिकोण अलग-अलग हो सकते हैं। मुझे यह स्वाभाविक भी लगता है। परंतु यहाँ मुझे लगता है कि जब से इस कॉलेज की स्थापना हुई है कोई महिला प्राचार्या नहीं रही, तो महिला होने के नाते मुझे कुछ लोग ज्यादा जज करते होंगे- महिला है तो क्या सबकुछ ठीक से कर पाएगी? कहीं कोई कमी तो नहीं रह जाएगी? वगैरह, वगैरह। मुझे विश्वास है कि मैं सबकी अपेक्षाओं पर



खरी उतरूंगी। प्राचार्या बनते ही मैंने सोच लिया था कि मुझे कुछ बेहतर करना है— केवल अकादमिक स्तर पर ही नहीं बल्कि कॉलेज के अन्य कार्यों के स्तर पर भी। जब से यह कॉलेज बना है इसकी बिल्डिंग वैसी ही है। इस दिशा में भी मैं कुछ कदम उठाना चाहती हूँ और मेरी पूरी कोशिश होगी कि मैं सफल हो जाऊँ।

**सौरव-** मैम, प्राचार्या जैसे शीर्ष पद पर पहुँचने में आपको अनेक तरह की कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ा होगा। अपनी इन कठिनाइयों और चुनौतियों को साझा करें।

**प्राचार्या-** मुझे नहीं लगता कि कोई रुकावट आई है। शायद मुझ पर ईश्वर की कृपा रही होगी। हाँ, चुनौती जरूर आई। हालाँकि चुनौती के रूप में मैंने इसे कभी नहीं लिया। मैं थोड़ी दुविधा में थी कि मुझे प्राचार्या बनना चाहिए अथवा नहीं। लेकिन यह मेरे अंदर की दुविधा थी। बाहर से मुझे कोई रुकावट नहीं आई।

**आकांक्षा पाठक-** मैम, आप एक महिला हैं। अतः महाविद्यालय में महिला सशक्तिकरण के लिए हमें आप से अधिक उम्मीदें भी हैं। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के क्रम में आप अपनी कार्य योजना के बारे में बताएं।

**प्राचार्या-** देखिए, अभी विश्व महिला दिवस मनाया गया है। आप सभी को मालूम ही होगा कि उसमें हमने पूरा सप्ताह अपने कॉलेज में अलग-अलग कार्यक्रम किए। हमने महिलाओं के शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य से लेकर वे क्या कर रही हैं और क्या कर सकती हैं? उनके सभी दृष्टिकोणों को इसमें साझा किया। इन कार्यक्रमों में हमने अपनी छात्राओं को भी जोड़ा और बाहर से भी कुछ विद्वानों को आमंत्रित किया। महिला सुरक्षा के दृष्टिकोण पर विचार करने हेतु हमने महिला पुलिस को आमंत्रित किया था। अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने यह भी बतलाया कि किस तरह से महिलाएं और हमारी छात्राएं अपनी रक्षा कर सकती हैं। मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करने के लिए हमने मनोचिकित्सकों और एक अन्य कॉलेज की प्राध्यापिका को आमंत्रित किया था। इसके साथ-साथ मैं स्वयं ऐसा सोचती हूँ और अगर आपको

याद है तो इससे पहले भी मैंने यह बात कही थी कि आखिर महिलाओं को ही यह बात क्यों कही जाती है कि उन्हें शक्तिशाली बनना है? क्या वे हैं नहीं? यह तो हमें अपने भीतर सोचने-समझने की बात है कि हम पुरुष से कमतर हैं? और साल में एक दिन जब हम 'विश्व महिला दिवस' मनाते हैं तो मुझे ऐसा लगता है कि आज के दिन हम पुरुषों से कमतर हो गई हैं। महिलाओं को स्वयं न तो पुरुषों से ऊपर और न ही उनसे कमतर समझना चाहिए। हम यह सोचें कि हम भी उनके बराबर हैं। अगर महिलाएं सोचती हैं कि हम पुरुषों से कम-ज्यादा हैं, तो यह समझ लीजिए कि महिला और पुरुष में अंतर है। और हाँ, महिला और पुरुष में कुछ तो अंतर रहेगा ही। वह तो ईश्वर प्रदत्त है। हम उसमें बदलाव भी नहीं ला सकते हैं। परंतु मैं यह भी मानती हूँ कि मानसिक स्तर पर महिलाएं पुरुषों से ज्यादा मजबूत हैं और वे जीवन में जो भी चाहती हैं उसे प्राप्त कर सकती हैं। उनका 'चाहना' बहुत जरूरी है। एक बात और, मैं यह भी मानती हूँ कि हमारे देश में किसी भी कारण से जो महिलाएं शिक्षित नहीं हैं वहाँ महिला सशक्तिकरण की जरूरत है।

**Harshita Negi-** Ma'am, Dalai Lama says, "Women leaders across the world are better than male leaders". In fact, in this pandemic, women leaders have tackled issues and crises better than males, why is it so, is it compassion or something else?

**प्राचार्या -** I both agree and disagree with Dalai Lama. We can't categorize leaders by their gender. हम यह सोचते हैं कि इस परिस्थिति में महिला ने यदि ऐसा किया है तो देखो यह महिला ही कर सकती है। परंतु ऐसे ही किसी परिस्थिति विशेष में किसी पुरुष ने भी विशेष कार्य जरूर किया होगा। अतः जब तक हम इसे दो सांचों में बांट कर देखते रहेंगे यह गैरबराबरी का भाव दिखाई देता रहेगा। प्रत्येक दृष्टिकोण से चाहे हम भावुकता में कहें, मानसिक स्तर पर कहें, शारीरिक स्तर पर कहें महिलाएं भी उतनी ही सक्षम हैं, जितने की पुरुष हैं। ऐसा हमें नहीं सोचना चाहिए कि इमोशनली पुरुष ज्यादा कठोर होते हैं या महिलाएं ज्यादा कोमल होती हैं। यह तो केवल सोचने का

एक दृष्टिकोण है, जो सबका अलग-अलग हो सकता है। कोरोना महामारी में भी अनेक महिलाओं ने पुरुषों के बराबर काम किया है। यदि पुरुषों ने काम किया है तो महिलाओं ने भी किया है। अपने ही कॉलेज में देखें तो हमारे सभी विभागों के प्रत्येक महिला-पुरुष शिक्षकों ने कोरोना महामारी में भरपूर सहयोग दिया है। कोई अंतर नहीं है इनमें।

**शुभम शर्मा-** मैम, सन् 1996 ई. में आपने इस महाविद्यालय में एक अध्यापिका के रूप में पदभार ग्रहण किया था। उस समय से लेकर अब तक महाविद्यालय में अनेक तरह के विद्यार्थी आए और गए होंगे। 1996 के दौर के विद्यार्थियों से आज के विद्यार्थियों में आप क्या बदलाव देखती हैं?

**प्राचार्या-** जब मैंने यह कॉलेज ज्वाइन किया था, तब से और अब में मैंने काफी बदलाव देखा है। समय भी बहुत लंबा बीता है। यह स्वाभाविक है कि दस साल में पूरी जनरेशन बदल जाती है। अतः बदलाव भी बहुत आया है। परंतु मेरा अपना मानना है कि अब जो विद्यार्थी हैं वे पहले से ज्यादा अपने आप को लेकर, अपने भविष्य को लेकर सचेत हैं, जागरूक हैं। कुछ लोग मुझसे अलग भी सोच सकते हैं। जीवन में आगे क्या करना है इसकी समझ अभी के विद्यार्थियों में ज्यादा है। पहले मैं देखती थी कि विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता भी ज्यादा थी, अभी भी होगी। परंतु अब जो हमारे विद्यार्थी आते हैं, चाहे वे हिन्दी ऑनर्स के हों या इंग्लिश ऑनर्स के हों, जितने भी विद्यार्थियों से मैं मिलती हूँ, वे अपने भविष्य को लेकर ज्यादा जागरूक हैं, ज्यादा अनुशासन में रहते हैं और भविष्य में कुछ करना भी चाहते हैं। यह बदलाव मैंने देखा है। बाकी तो बहुत ज्यादा अंतर मुझे नहीं दिखाई देता। हिन्दी के विद्यार्थी जिन्हें मैं पढ़ाती आ रही हूँ उनमें एक गुरु को लेकर जो सम्मान रहता है वह पहले भी था और अब भी है। बहुत अंतर नहीं आया है। मैं अपने विद्यार्थियों से बहुत ज्यादा जुड़ी भी रही हूँ। बहुत पहले भी जो मेरे विद्यार्थी रहे हैं वे अभी भी मुझे फोन करते हैं। अपने सवाल पूछते हैं। मुझसे राय लेते हैं। प्रत्येक क्लास में आप देखेंगे कि 10-15 विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो अपने शिक्षकों से कुछ न कुछ सीखना चाहते हैं। ऐसे विद्यार्थी पहले भी थे, अभी भी हैं। लेकिन अभी के विद्यार्थी अपने आप को लेकर

ज्यादा जागरूक हैं, ज्यादा सचेत हैं।

**प्रियंका शर्मा-** मैम, इस महाविद्यालय में अध्यापक के रूप में आपका लंबा अनुभव रहा है। प्राचार्या पद का भी अनुभव जुड़ गया है। इन अनुभवों को आप कैसे देखती हैं?

**प्राचार्या-** इन दोनों अनुभवों में जमीन आसमान का अंतर है। पहले आपका समय एक या दो कक्षाओं तक का रहता था। कक्षा पढ़ा लिया और ज्यादा हुआ तो उससे आधा घंटा बाद तक, अगर कोई विद्यार्थी मिलना चाहे या कुछ पूछना चाहे तो उसने पूछ लिया। उसके बाद हम एक तरह से फ्री हो जाते थे। घर जाकर कोई चिंता भी नहीं रहती, जब तक कि परीक्षाएँ नहीं आती। विद्यार्थी भी आपको तंग नहीं करते। सिर्फ परीक्षाओं के समय वे पूछते थे कि मैम क्या पढ़ें? उससे पहले या बाद कोई इतना तंग नहीं करता। परंतु प्राचार्या के रूप में यह फुलटाइम जॉब है। घर जाकर भी आप इससे बच नहीं सकते। जैसे अभी ऑनलाइन एग्जाम शुरू हो गए हैं। इसमें उत्तर जब तक अपलोड नहीं हो जाता है, तब तक विद्यार्थी आपको तंग करते रहेंगे- 'मैम! यह समस्या आ रही है, वह समस्या आ रही है'। शिक्षकों की भी कुछ न कुछ समस्याएँ रहती ही हैं। यूनिवर्सिटी से भी कई बार शाम 5 या 6 बजे आपके पास लेटर आ जाता है कि सुबह 9 बजे तक आपको इसका जवाब देना है। अतः समय की दृष्टि से यदि देखें तो यह बहुत ज्यादा समय लेने वाला पद है और अगर आप अपनी दृष्टि से देखते हैं तो आप कॉलेज के लिए कुछ कर रहे हैं या विद्यार्थियों के लिए कुछ कर रहे हैं या शिक्षकों के लिए कुछ कर रहे हैं। और हाँ, जब आपको कुछ कदम आगे बढ़ाने हेतु अपने शिक्षकों का सहयोग मिलता है तो यह देख कर बहुत खुशी मिलती है। कुछ करने के बाद जो खुशी मिलती है उसका एहसास काफी ज्यादा होता है। इन दोनों अनुभवों में यह अंतर सबसे बड़ा है, जैसा मैंने महसूस किया है।

**Srishti Garg-** What are some of the issues that you want to prioritize immediately after reopening of the college?

**प्राचार्या-** As and when the college reopens, I think,



we can start with online remedial courses. शिक्षकों को मैंने यह कहा है कि हमारे जो भी विद्यार्थी पढ़ने में अथवा बोलने में थोड़े कमजोर हों, वे उन्हें जज करें। आपकी कक्षा में विशेषकर पढ़ाई को लेकर जो भी विद्यार्थी थोड़े इंट्रोवर्ट हैं, जो यह बता नहीं पाते कि उनकी समस्या क्या है? उन तक पहुँचने के लिए मैंने शिक्षकों को अभी से कहा है कि उनको देखें, पहचानें और उन्हें अपने करीब लाएं जिससे कि हम उनकी समस्या का समाधान कर सकें। क्योंकि मुझे लगता है कि ऐसे विद्यार्थी पिछड़ जाते हैं। इसप्रकार जो विद्यार्थी पीछे हैं वे और पीछे होते जाते हैं और जो एक्सट्रोवर्ट हैं वे और आगे बढ़ते जाते हैं। कॉलेज खुलते ही जब स्थिति कुछ सामान्य होगी मैंने यह एक बड़ा कदम सोचा है, जिसे मुझे जल्दी करना है।

**सौरव-** मैम, आप महाविद्यालय की हर जिम्मेदारी का निर्वहन करती हैं। घर की भी जिम्मेदारी आप पर होगी। एक साथ इन दोनों जिम्मेदारियों को निभाना सचमुच अत्यधिक चुनौतीपूर्ण होता होगा। आप इन दोनों जिम्मेदारियों से कैसे संतुलन बना लेती हैं?

**प्राचार्या-** यहाँ मैं पहले ही एक बात कहना चाहूँगी कि महिलाएं पुरुषों से ज्यादा मजबूत हैं। घर और बाहर दोनों जगहों की जिम्मेदारियां संभालने की निपुणता महिलाओं में पुरुषों से ज्यादा होती है। जिन परिस्थितियों में पुरुष टूट जाता है वहाँ महिला अत्यधिक शक्तिशाली दिखाई देती है। इसलिए मुझे बार-बार महिला सशक्तिकरण शब्द सुनकर दुख होता है। ऐसा सोचा ही कैसे जाता है? क्योंकि अब जब महिलाएं बाहर निकल रही हैं, कार्य कर रही हैं तब भी आपने कहीं भी देखा-सुना नहीं होगा कि उनके घर में उनसे ऐसी बातें होती हों कि आप घर की जिम्मेदारियां नहीं उठा पा रही हैं। अतः यह तो ईश्वर की देन है कि महिलाएं दोनों जिम्मेदारियाँ एक साथ संभालती हैं। रही बात मेरी तो मेरे बच्चे बड़े हो चुके हैं। मेरे बेटे की शादी हो चुकी है। बिटिया बड़ी है। इस दृष्टि से रोजमर्रा की जिंदगी में मेरे बच्चों को मेरी जरूरत नहीं है। बाकी माँ तो हमेशा माँ ही रहेगी।

**आकांक्षा पाठक-** मैम, वर्तमान दौर में कोरोना महामारी की

वजह से सामान्य जनजीवन और शिक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव आया है। महाविद्यालय की प्राचार्या होने के नाते निश्चित तौर पर आपके ऊपर उनका अतिरिक्त दबाव पड़ा होगा और चुनौती बढ़ गई होगी। आप किस तरह इनका निराकरण करती हैं।

**प्राचार्या-** जैसा कि आप सभी को मालूम है नवंबर में मैंने जैसे ही प्राचार्य पद को संभाला था, उसी समय प्रमोशन की प्रक्रिया शुरू हुई। उससे पहले जब मैं उप-प्राचार्या बनी थी तब भी पहली बार 'ओपन बुक एग्जाम' की प्रक्रिया शुरू हुई थी। हमने उसे भी सफलता पूर्वक संपन्न किया। उसके बाद जब डॉ. मुकेश अग्रवाल जी रिटायर हुए प्रमोशन की प्रक्रिया शुरू हो गई। ऑनलाइन शिक्षा आरंभ हुई। एक साथ इतने अधिक कार्यों का दबाव निश्चित रूप से था। आप सभी को मालूम होगा कि इससे पहले जो मेरा रूटीन था क्लास खत्म होने के बाद मैं घर चली जाती थी। कॉलेज में ज्यादा देर तक मैं कभी नहीं रुकती। परंतु प्राचार्या बनने के साथ ही 'ओपन बुक एग्जाम' हुए, ऑनलाइन कक्षाएँ हुई और उसके बाद प्रमोशन का कार्य शुरू हुआ और बीच-बीच में नए शिक्षकों के नियुक्ति की जिम्मेदारियाँ भी थी। निश्चित रूप से इन सबका दबाव अत्यधिक था। परंतु इन सभी जिम्मेदारियों को मैं ठीक तरह से निभाने की कोशिश कर रही हूँ। मेरी पूरी कोशिश है कि कम से कम समय में इन सभी जिम्मेदारियों को पूर्ण कर पाऊँ। अतः मैं कहूँगी कि चुनौती के रूप में ये सभी ही मेरे सामने आएँ जिसका सामना मैं भलीभाँति कर रही हूँ। इसमें कॉलेज के सभी शिक्षकों से मुझे सहयोग की भी अपेक्षा है।

**शुभम शर्मा-** मैम, आपने अभी प्रमोशन की चर्चा की है। इस महाविद्यालय के कई शिक्षकों ने पदोन्नति ली है और कुछ शिक्षकों की पदोन्नति होने वाली है। ऐसे में आपके कार्य का बहुत अधिक विस्तार हो जाएगा और नई स्थिति का सामना करना पड़ेगा। आने वाले दिनों में स्थायी नियुक्ति की प्रक्रिया भी संपन्न होगी। इस उत्तरदायित्व के कारण आने वाली चुनौतियों के निराकरण के लिए आप किस तरह का प्रयास करेंगी?

**प्राचार्य-** देखिए, इसमें किसी भी कॉलेज के प्राचार्य की बहुत बड़ी भूमिका नहीं होती है। अब तक जो भी प्रमोशन रुके हुए थे वह विश्वविद्यालय की तरफ से रुके थे। अतः इस प्रकार का कोई भी निर्णय प्राचार्य नहीं ले सकता है। हाँ, अभी यह मौका हमारे पास जरूर है कि हम ज्यादा से ज्यादा प्रमोशन करा सकें और मेरा प्रयास यही है कि जल्दी से जल्दी और ज्यादा से ज्यादा कार्य करके मैं अपने साथियों का प्रमोशन करा सकूँ। क्योंकि बहुत लम्बे समय से उनका प्रमोशन रुका हुआ था जो उन्हें मिलना चाहिए था। इसमें एसोसिएट प्रोफेसर पद के प्रमोशन के लिए छः लोगों की कमिटी को एक साथ एक ही समय पर बुलाना पड़ता है, जो अपने आप में बहुत चैलेंजिंग है। इस चैलेंज को दूर करने के लिए मैं लगातार प्रयास भी करती हूँ। दूसरी बात ये कि मेरे लिए यह बहुत गर्व की बात होगी कि मेरे रहते-रहते एडहॉक शिक्षकों के परमानेंट होने की प्रक्रिया भी संपन्न हो जाए। मेरे लिए यह बहुत सुखद क्षण होगा जब विश्वविद्यालय से एडहॉक के परमानेंट की प्रक्रिया शुरू होने की सूचना मिले।

**Harshita Negi-** What advice would you like to give to the young generation who are going through turmoil, feeling lonely and experiencing a sense of despair and disillusionment?

**प्राचार्य-** We are going through a difficult time and young students are suffering even more. जब आप स्कूल से कॉलेज में आते हैं तो आपके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आता है। उस बदलाव में आपके स्कूल के कुछ दोस्त छूटते हैं, तो कॉलेज में कुछ नए दोस्त बनते हैं। कॉलेज का यह समय पूरे जीवन आपको याद रहता है। क्योंकि जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, शिक्षा प्राप्त करके आप आगे बढ़ते जाते हैं, नौकरी का दबाव भी आप पर बढ़ता जाता है। अतः ऐसा समय होता है जिसमें आप स्वतंत्र जी सकते हैं। परंतु जब यह समय किसी कारण विशेष से आपको न मिले, जैसे अभी जो समय है कि आप कॉलेज नहीं आ सकते, बाहर नहीं निकल सकते। तब निश्चित रूप से यह मानसिक तनाव का समय होगा और है भी। इसे दूर करने के लिए मेरी एक ही सलाह

है कि आप पढ़िए। अगर आप से कुछ चीजें छिनी हैं तो दूसरी कुछ चीजें आपको उपलब्ध भी कराई गई हैं। अतः जितना समय आप पढ़ने में लगायेंगे इस मानसिक तनाव भरे समय को उतनी जल्दी भूलेंगे। मैं यह भी नहीं कह रही हूँ कि आप केवल परीक्षा की दृष्टि से पढ़ें। पढ़ने के लिए बहुत कुछ है। आप अपनी लाइब्रेरी में जाएं और जिस भी क्षेत्र में आपकी रुचि है, जो भी आप पढ़ना चाहते हैं—कहानी, उपन्यास, आलोचना अथवा इतिहास, अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हैं। मुझे जीवनी पढ़ने का बहुत शौक था। कोई व्यक्ति महान कैसे बनता है? वहाँ तक वह कैसे पहुँचता है? उनकी जीवन यात्रा को समझने के लिए मैंने जीवनियाँ बहुत पढ़ी हैं। हालाँकि हम सबका जीवन एक जैसा ही है, जैसे— मेरा है या आपका है। परंतु अपने लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति उनकी लगन उन्हें हमसे अलग और बेहतर बना देती है। एक और चीज जो हम उनमें देखते हैं वह है उनकी इच्छाशक्ति। हम बहुत से कार्य सामने आने वाली चुनौतियों को देखकर छोड़ देते हैं, परंतु जो महापुरुष हैं उन चुनौतियों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं। मेरी तरफ से आपको यही सुझाव है कि आप पढ़िए। इस समय आप जो पढ़ेंगे वह जिंदगी भर काम आएगा और आपको न तो कोई तनाव होगा न ही कोई डिप्रेशन। इस समय का सदुपयोग पढ़के कर सकते हैं। अगर आपको यह नहीं मालूम है कि हमें क्या पढ़ना है, तो आप अपने शिक्षकों और माता-पिता से पूछ सकते हैं। एक विकल्प के रूप में सिनेमा भी है, परंतु उसमें कोई ऐसी चीज नहीं है जो आगे बढ़ने में आपकी मदद करती हो।

**Srishti Garg-** Besides the work, what do you do with your time?

**प्राचार्य-** मुझे यदि पहले भी टाइम मिलता था तो मैं पढ़ती थी और अभी भी टाइम मिलता है, तो मैं पढ़ती ही हूँ। Whenever I get some spare time, I like to play with my grandson and also read books with a cup of tea. कॉलेज से जब मैं घर जाती हूँ तब मेरा पोता मेरा इंतजार कर रहा होता है। अभी वह थोड़ा-थोड़ा बोल पाता है। मुझे मम्मी कहता है। घर पहुँचने पर वह बोलता है, "मम्मी कॉलेज



से आ गई।” उसके साथ खेलती हूँ। जब वह सो जाता है तो मैं अपनी आदत के अनुसार कुछ पढ़कर ही सोती हूँ, चाहे वह 10 पेज हो या 5 पेज। यह मेरा सबसे बड़ा शौक है, जिसे मैं चाहती हूँ कि कभी खत्म न हो। मुझे पढ़ने का शौक है।

**प्रियंका शर्मा-** मैम, प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कोई ऐसी घटना या व्यक्ति होता है जिससे वह सर्वाधिक प्रभावित रहता है। ऐसी कोई घटना या व्यक्ति जो आपके लिए प्रेरणा स्रोत हो। अपने विचार साझा करें।

**प्राचार्या-** मैंने आरंभ में ही बताया था कि मेरे ससुर जी मेरे प्रेरणास्रोत थे। मुझे अपने पिता से भी ज्यादा अपने ससुर जी से स्नेह था। जब मैं यह बात किसी से कहती हूँ तो लोग विश्वास नहीं करते हैं। ससुर जी के प्रति स्नेह मेरा इस कारण से नहीं था कि उनके मन में मेरे प्रति यह भाव रहा कि इसे किसी अच्छी पद पर पहुँचाना है। वे मुझसे कहते थे कि तुम योग्य हो, तुम्हें यह करना चाहिए। उनके इस विश्वास के कारण मुझे उनके प्रति अत्यधिक स्नेह था। दो-तीन और लोग मेरे जीवन में प्रेरणास्रोत हैं और वे कॉलेज आने पर हुए। एक संस्कृत विभाग की प्रतिभा जी थीं जो यहाँ आने पर सबसे पहले मेरी मित्र बनीं। उनसे मेरी खूब बात-चीत होती थी। कॉलेज के माहौल को कम्फर्टबल बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान था। अब वह रिटायर हो गयी हैं। उनकी पुत्री है यहाँ पर। दूसरी, डॉ. वीणा हैं। हमारे हिंदी विभाग में सीनियर मोस्ट अध्यापिका हैं। उन्हें देखकर मुझे लगता है कि वे मेरी आदर्श हैं। अनेक मुश्किलों के बावजूद उन्होंने अपने घर-परिवार को बेहतर तरीके से संभाला है। वे लगातार कॉलेज का भी कार्य करती रहती हैं। तीसरे, डॉ. अविनेश अवस्थी जी हैं। उनकी वजह से मेरे पढ़ने का शौक और बढ़ा। उन्होंने मुझे पढ़ने के लिए अनेक किताबें सजेस्ट कीं। ये किताबें मुझे पहले नहीं पता थीं। मैं जिस बैकग्राउंड से आई थी वहाँ पढ़ने का ज्यादा माहौल नहीं था। हमारे परिवार का बैकग्राउंड व्यावसायिक था। ये तीन-चार लोग हैं, जिन्होंने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

**सौरव-** मैम, प्राचार्या के रूप में महाविद्यालय के लिए आपकी शीर्ष प्राथमिकताएं क्या हैं?

**प्राचार्या-** आप सभी को मालूम ही होगा कि हमारे कॉलेज को 'बी' ग्रेड मिला हुआ है। यह सोचकर मुझे बहुत दुख होता है। अतः मेरी सबसे पहली प्राथमिकता कॉलेज को 'ए' ग्रेड दिलवाना है। संयोग भी ऐसा बना है कि कॉलेज की ग्रेडिंग के पांच साल पूरे हो चुके हैं। इसलिए अभी हमें 'ए' ग्रेड प्राप्त करने के लिए प्रयास करना है। इसके लिए मैंने कार्य भी शुरू कर दिया है। इसके अतिरिक्त मुझे अपने कॉलेज की बिल्डिंग में भी थोड़ा सुधार करना है। नैक की पूरी प्रक्रिया इसी पर आधारित है कि आकदमिक स्तर पर हम क्या कर रहे हैं? अतः 'ए' ग्रेड प्राप्त करने के लिए यह भी आवश्यक है। अपने आप तो यह स्थिति सुधरेगी नहीं। इसमें मुझे अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों का भी सहयोग चाहिए। आपने यह देखा ही होगा कि हमारे कॉलेज और अन्य कॉलेज की बिल्डिंग में बहुत ज्यादा अंतर है। यह अंतर थोड़ा-बहुत होता तो चल जाता। मुझे लगता है कि हमारे कॉलेज की बिल्डिंग अन्य कॉलेज की बिल्डिंग के बराबर भी नहीं है। इसके लिए भी मैं भविष्य में कार्य करना चाहती हूँ।

**आकांक्षा पाठक-** मैम, महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए आपका संदेश क्या है?

**प्राचार्या-** विद्यार्थियों के लिए तो मैंने पहले ही कहा था कि आप पढ़िए। इस उम्र में आप मनोरंजन कीजिए, परंतु पढ़ना आपका अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। हमें एक सप्ताह में या एक महीने में एक पूरी पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिए। पढ़ने से ही हमारा यह शौक बनता है। शिक्षकों से भी मैंने कहा हुआ है कि नैक के लिए हमें अत्यधिक मेहनत करने की जरूरत है। कॉलेज की ग्रेडिंग सुधारने के लिए आपको मेरे साथ कार्य करना होगा। दूसरी बात यह कि मैं शिक्षा किसी को नहीं दे सकती। सभी मेरे सहयोगी हैं। मेरे बराबर हैं। हाँ, केवल एक बात मुझे कहनी है कि प्रिंसिपल बनने के बाद भी मैं वही कृष्णा हूँ जो पहले थी। धन्यवाद!



## संपादकीय



संपूर्ण विश्व लगभग दो वर्ष से कोरोना महामारी से त्रस्त है। इस महामारी ने सभी प्रकार से हमें भारी क्षति पहुँचाई है! हमारे लिए अपनी और परिवार की जान बचाना हमारी प्रमुखता बन गई। जान है तो जहान है। हम कभी सोच भी नहीं सकते थे कि ऐसे बुरे और विवश दिनों का सामना करना पड़ेगा। लेकिन जो हम सोच कर चलें वैसा ही हो जरूरी नहीं, कभी-कभी हमें जीवन में भयंकर और बेबस कर देने वाली कठिनाइयों-परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ता है। हम कोरोना की पहली लहर से पूरी तरह संभले भी नहीं थे कि दूसरी ने जानलेवा हमला बोल दिया। यह लहर पहले की अपेक्षा ज्यादा खतरनाक साबित हुई। वर्तमान में हम कोरोना त्रासदी से जूझ रहे हैं। संसार का कोई भी प्राणी ऐसा नहीं होगा जो इससे प्रभावित नहीं हुआ हो। कोई किसी को छोड़कर चला गया, किसी का व्यवसाय डूब गया, किसी की आजीविका खत्म हो गई और किसी का परिवार उजड़ गया।

काश हम पहली लहर के साथ ही संभल और सचेत हो जाते तो इतनी हानि नहीं उठानी पड़ती। कुछ भी हो जीवन कुछ समय के लिए ठहर सकता है जो कि ठहर गया था, लेकिन खत्म नहीं हो सकता। मनुष्य की जिजीविषा बड़े से बड़े संकट का मुकाबला करती हुई नकारात्मक वातावरण में सकारात्मक खोज और सोच के साथ निरंतर आगे बढ़ती है। इसलिए हमने अनेक पाबंदियों के तहत इस बीमारी के अनुकूल होकर धैर्य, शांति के साथ परिवार के साथ रहना और जीना सीख लिया। इस महामारी से अर्थव्यवस्था, साहित्य, चिकित्सा और शिक्षा आदि में अनेक परिवर्तन हुए। तकनीकी हमारे लिए महत्वपूर्ण हो गई। शिक्षा से संबंधित कार्य तकनीक के माध्यम से होने लगे। जिससे प्रबुद्ध समाज को भविष्य की चिंता होने लगी और यह स्वाभाविक भी थी। भारत जैसे देश में किसी भी रूप से तकनीकी शिक्षा उपयुक्त नहीं है, क्योंकि यहाँ सभी के पास साधन-संसाधन नहीं हैं। ऐसे वातावरण में हम कर भी क्या सकते थे। कुछ नहीं करने की अपेक्षा कुछ तो किया जाना चाहिए। विद्यार्थी और हम तकनीकी माध्यम से अध्ययन और अध्यापन करके संतुष्ट रहने का प्रयास कर रहे थे।

इसी वातावरण में राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई।

भारत के हित में निर्मित इस नीति में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान, आत्मनिर्भरता, स्किल डेवलपमेंट, रचनात्मकता, वोकेशनल एजुकेशन पर अधिक बल दिया गया है। प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय मूल्य संस्कारों को वरीयता दी गई है। प्रत्येक को सभी विषयों का अध्ययन करने की अनुमति इस नीति की मुख्य विशेषता है। साक्षर समाज को इस नई शिक्षा नीति का अवश्य ही स्वागत करना चाहिए।

वर्ष 2020-21 का 'अंकुर' अंक आपको सौंपते हुए अति प्रसन्नता हो रही है। परिस्थितियाँ किसी भी प्रकार की रहें परंतु मनुष्य का चिंतन मनन नहीं रुकता। यह एक सतत प्रक्रिया है। हमारा चिंतन मनन निर्भर करता है-परिवेश और परिस्थितियों पर। उससे ही प्रस्फुटित होता है हमारा रचनाकर्म। कोरोना कालीन परिस्थितियों का असर इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में भी देखा जा सकता है। तकनीकी द्वारा सामग्री संकलन से लेकर प्रकाशन तक सभी कार्यों में बहुत परिश्रम किया गया है। अंक प्रकाशित होने में आदरणीय प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा जी का सहयोग और मार्गदर्शन हमें निरंतर प्राप्त होता रहा। मैं संपादक मंडल की ओर से उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पत्रिका को आपके हाथों तक पहुँचाने में संपादक मंडल के अपने सहयोगियों डॉ. वंदना अग्रवाल, डॉ. रेशमा तबस्सुम, डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा, श्री रोहित कुमार, डॉ. प्रमिता मिश्रा, डॉ. चैन सिंह मीना, डॉ. संदीप कुमार रंजन और श्री सौरभ कुमार का मैं अंतर्मन से धन्यवाद करता हूँ। उनके अथक परिश्रम और उत्साह से यह कार्य अत्यंत सरल हो गया।

आभार व्यक्त करता हूँ डॉ. गरिमा गौड़ जी का उनके सुझाव और महत्वपूर्ण कार्य इस पत्रिका के प्रकाशन में सहायक सिद्ध हुए। छात्र संपादक मंडल को साधुवाद, समय-समय पर उनकी मदद हमें मिलती रही।

अंत में कोरोना महामारी से मुक्ति की कामना करते हुए और इस त्रासदी में विश्वविद्यालय के हमारे जो साथी हमें छोड़ कर चले गए उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए वर्ष 2020-21 का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

डॉ. मनोज कुमार कैन

# संस्कृत खंड

## संपादकीयम्



### उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां। धिया विप्रो अजायत॥

अत्यन्तप्रसन्नतायाः विषयोऽस्ति यत् भारतदेशस्य नवीनराष्ट्रीयशिक्षानीत्याः (2020) धोषणाः यशस्वी प्रधानमंत्री श्रीनरेन्द्रमोदीमहोदयेन कृतवान्। कस्यापि देशस्य शिक्षा तस्य देशस्य आध्यात्मिक-सांस्कृतिक-भौगोलिक-आर्थिक-राष्ट्रीयस्वरूपं च प्रकटीकरोति। अतएव राष्ट्रीय शिक्षाऽतीवमहत्त्वपूर्णविषयो वर्तते।

शिक्षायाः उद्देश्यं राष्ट्रस्य उन्नत्यै सह मानवमात्रस्य चरित्रनिर्माणद्वारा तस्य सन्मार्गानयनम् भवति। शिक्षा न केवलं मानवमात्रस्य विकास्य परमं साधनं अस्ति, अपितु राष्ट्रस्य उन्नत्याम् महत्सहाय्यं भवति। शिक्षया मानवस्य समाजस्य देशस्य च सर्वाङ्गीणविकासः भवति। परन्तु वयं सर्वे जानन्ति स्वतंत्रभारतस्य यत् शिक्षानीतिः आसीत् तत् ब्रिटेनादिपश्चिमदेशानां शिक्षापद्धतीनामनुगामिनी आसीत्। अस्माकं देशस्य कतिपयवाममार्गिभिरपि शिक्षानीतिं प्रभावितं कृतम्। परिणामतः राष्ट्रीयशिक्षानीत्यां सर्वत्र राष्ट्रभावस्य भावनायाः, सांस्कृतिकचेतनायाः, भारतीय ज्ञानपरम्परायाः च अभावः दृष्टिगोचरो भवति। वयं स्वतंत्रभारतस्य शिक्षानीत्याम् ज्ञानाधिग्रहणे केवलं पाश्चात्यविदुषां विचाराणां पठामः, किन्तु तेषु विषयेषु ज्ञानाधिग्रहणे भारतीयोपाचार्याणां विचाराणां न पठामः न जानीमः वा। 'यदा शिक्षायां शिक्षणे शिक्षानीत्यां च राष्ट्रस्य भावनायाः देशस्य ज्ञानपरम्परायाः च समावेशनं नाभवेयुः तदा सा राष्ट्राय उपादेयं न भवेयुः' – एतेषां विचाराणां स्वमनसि स्थापयित्वा भारतदेशस्य प्रथित-ऋषि-वैज्ञानिक श्री के.कस्तूरीरंगनमहोदयानां स्वअध्यक्षतायां अस्माकं राष्ट्रस्य राष्ट्रीयशिक्षानीत्याः विनिर्मितम्। अस्मिन् शिक्षानीत्यां देशस्य आचार्याणां, अभिभावकानां, बुद्धिजीविनां, छात्र-छात्राणां च विचाराणां गृहीत्वा तेन महोदयेन निर्माणं कृतम्। अस्याः शिक्षानीत्याः निर्माणं पंचवर्षादप्यधिकं समयः व्यतीतो जातः। अस्याः शिक्षानीत्याः विशेषता अस्ति यत् अस्याः केन्द्रे भारतं भारतीयछात्राः विद्वांसः भारतीयज्ञानपरम्परा च वर्तते। "सा विद्या या विमुक्तये" – इदमुपदेशं शिक्षानीतिः चरितार्थं करोति। के. कस्तूरीरंगनमहोदयेन अस्याः शिक्षानीत्याः उद्देश्यं उद्घाटितं कृत्वा लिखति- अस्याः शिक्षायाः परमोद्देश्यः भारतीयानां मूल्यानां भारतीयज्ञानपरम्पराया च पुनर्स्थापनाः वर्तते। सर्वेषां छात्राणां कृते मूल्याधृतशिक्षायाः व्यवस्थापि एषा शिक्षानीतिः करोति। न केवलं शास्त्रीयज्ञानाधृतशिक्षापद्धत्याः निर्माणं अस्याः उद्देश्योऽस्ति अपितु व्यावहारिकज्ञानेन सह छात्राणां मध्ये संवैधानिकमूल्यानां, सदाचाराणां, देशस्यप्रतिश्रद्धादिगुणानां एवं च परिवर्तिनीयमानविश्वे स्वकर्तव्यानां प्रति सदाशयता स्थापने अस्याः लक्ष्योऽस्ति। वर्तमानशिक्षानीत्यां(2020) छात्राः नैतिकशिक्षया सह कला-मानविकी-विज्ञानादि सर्वेषां विषयाणां स्वेच्छा-रुचि-आदि अनुसारेण पठिष्यन्ति। अस्यां शिक्षानीत्यां प्राथमिकशिक्षायां आंग्लभाषायाः स्थाने बालकस्य मातृभाषायाः गृहमध्यप्रयुक्तभाषायाः वा प्रयोगं भविष्यति। 'नैसर्गिकरूपेण=सहजरूपेण' तस्य बालकस्य ज्ञानेन सह साक्षात्कारं स्वमातृभाषायां भविष्यति- इयं अस्याः शिक्षानीत्याः विशेषता अस्ति। अस्यां शिक्षानीत्यां भारतीयभाषाणां अति महत्त्वं उद्घाटितं भवति स्म। अत्राशास्ति इयं शिक्षानीतिः न केवलं भारतीयभाषाणां अपितु भारतीयज्ञानपरम्परायाः अपि पुनर्स्थापनां नवछात्राणां जिज्ञासुनां मध्ये करिष्यति। 'भारतीयज्ञानविज्ञानैः सह देशस्य नव निर्माणं भविष्यति' – इति कामनया वयं सर्वे नवीनराष्ट्रीयशिक्षानीत्याः(2020) स्वागतं कुर्मः। इति शम्॥

डॉ गिरिधर गोपाल शर्मा



**डॉ. प्रमिता मिश्रा**

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग:

## भक्तिवैशिष्ट्यम्

दार्शनिकं चिन्तनं मानवस्य मूलप्रवृत्तिरेवास्ति । प्रत्येकस्य व्यक्तेः कश्चिदेका जीवनदृष्टिः अर्थात् जीवनस्य दर्शनाय वा बोधनाय दृष्टिः भवत्येव । दर्शनस्य चिन्तन-मननयोः पाश्चात्याः प्रायः बौद्धिकचिन्तनमेव प्राधान्येन गणयन्ति । तत्रैव भारतीयाः प्रायः अपरोक्षानुभूतिः वा आत्मसाक्षात्कारः एव प्रधानः इति मणन्ति । “दर्शनः—शब्दस्यान्तः साक्षात्कारस्यापि साधनानि परिगणितानि सन्ति ।”<sup>1</sup>

भारतीय दर्शनस्य उद्घोष एवास्ति यत्—आत्मानं विद्धि अर्थात् आत्मा को जानो । भारतीयदर्शनस्य लक्ष्यमेवास्ति यत्—आधिभौतिकम्, आधिदैविकम् तथा आध्यात्मिकम् इति दुःखत्रितयानाम् आत्यन्तिकः नाशः तथा अखण्डानन्दस्य प्राप्तिः । अस्य लक्ष्यस्य अवाप्तये मानवः जीवने विविधानि साधनानि आश्रयति । महर्षिणा याज्ञवल्क्येन बृहदारण्यकोपनिषदि अस्य लक्ष्यस्य अवाप्तये श्रवण-मनन-निदिध्यासनानि इति साधनत्रयाणि उक्तानि । दर्शन-धर्मयोः सम्बन्धः घनिष्ठ एव तथा भारतीयदर्शनस्य बहवः सम्प्रदायाः धार्मिक-सम्प्रदायाः अपि सन्ति । तेषु एकः सम्प्रदायोऽस्ति वैष्णव-सम्प्रदायः.. यस्यविस्तृतिः सर्वाधिकमस्ति ।

अस्य सम्प्रदायस्य प्रारम्भः प्रायशः रामानुजाचार्यादेव जातः, अनन्तरं सम्प्रदायस्य मूलमतस्य विषये मतान्तरकारणात् सम्प्रदायचतुष्टयाः भिन्नतया समुत्पन्नाः । तत्र रामानुजाचार्यस्य श्रीसम्प्रदायः विशिष्टाद्वैतदर्शनस्य पोषकः, मध्वाचार्यस्य ब्रह्मसम्प्रदायः द्वैतदर्शनस्य पोषकः, विष्णुस्वामी-वल्लभाचार्ययोः रुद्रसम्प्रदायः शुद्धाद्वैत दर्शनस्य तथा निम्बार्काचार्यस्य सनकसम्प्रदायः द्वैताद्वैतदर्शनस्य पोषकाः सन्ति । इतः परं चैतन्य महाप्रभोः सम्प्रदायः नाम्ना माध्वगौडीयसम्प्रदायो वा अचिन्त्यभेदा भेदसम्प्रदायोऽस्ति ।

भगवतः कृपया येषां ज्ञानचक्षुरुन्मीलितमस्ति ते स्वभावतः परमेश्वरं प्रति प्रवृत्ताः भवन्ति । यदा कदाचित् ते तस्य भगवतः चर्चा श्रृण्वन्ति तदा ते तस्य भगवतः स्वरूपस्य अपरोक्षानुभवं कुर्वन्ति अर्थात् तेषां संस्कार एव तस्य भगवतः साक्षादनुभवे तदैव कारणीभवति । परमेश्वरस्य उपासना एव तस्य अपरोक्षानुभवस्य उदयस्य परमं कारणं भवति । तेन अनुभवेन सकलानां दुःखानां नाशो भवति । उपनिषत्सु प्रोक्तं यत् व्यक्तिः ब्रह्मणः एकत्वप्रतिपादकानाम् उपनिषदां पाठः श्रवणो वा कुर्यात् तेषां ध्यानमपि कुर्यात् । सा एव साधना व्यक्तं परमेश्वरं निकषा नयति । एवं च कथ्यते यत् तेन ब्रह्मप्राप्तिसम्भवतीति ।

अष्टाङ्गयोगस्य प्रक्रियाः अपि व्यक्तेः ईश्वरप्राप्तौ कारणं भवति । कर्मणः अनुपालनमपि व्यक्तेः ईश्वरसान्निध्ये कारणं भवति । स्वकर्तव्यानां पालनेन व्यक्तिः परमेश्वरस्य उपदेशानां पालनं करोति । नित्य-कर्तव्यानां पालनेन पालनकर्ता फलरूपेण किमपि साक्षाल्लाभं न करोति, यतो तेषां कर्मणां फलं स्वभावतः एव परमेश्वरं प्रति समर्प्यते । भक्ति-सम्बन्धितं ज्ञानमपि परमेश्वरातिरिक्तेभ्यः विषयेभ्यः जनानां मनांसि पृथकीकृत्वा निषेधात्मना एव सहायको भवति । तथापि भगवतः नाम्नां कीर्तनं वा भगवतं पति भावावेशोन्मादेन अभिव्यक्ता भक्तिरेव सर्वाधिक्यं महत्त्वं प्राप्नोति । अत्र भक्तेः रूपद्वयस्य उद्देश्यं खलु एकमेवास्ति यत् ‘परमेश्वरस्य सुखाय’ इति । अतः एतादृशी भक्तिः अहैतुकी इति गण्यते । निष्ठावान् भक्तः भगवन्नाम-कीर्तनेन तथा प्राणीनां रक्षणाय परमेश्वरस्य दयामयकार्याणां ध्याने च करणे स्वस्य निलीनतायामेव नैसर्गिकस्य सुखस्य अनुभवं करोति । यद्यपि वर्गविशेषाणां कृते कर्माणि च मार्गाणि निर्दिष्टानि सन्ति तथापि समेषां कृते

<sup>1</sup> दर्शनं साक्षात्करणं अपि च दृश्यते अनेन इति दर्शनम् ।

भक्तिमार्गः श्रेयस्कर इति सर्वे मणन्ति । ये खलु अस्मिन् भक्ति-मार्गे सन्ति तेषां कृते ज्ञानमार्गस्य वा अनासक्तिरूपस्य वैराग्यमार्गस्य अनुसरणस्य आवश्यकता एव नास्ति।<sup>2</sup> शास्त्रेषु निर्दिष्टानि कर्माणि खलु तदैव फलप्रदानि भवन्ति यावदेव ते भक्ति-प्रेरितानि भवन्ति । यद्यपि शास्त्रानिर्दिष्टानि कर्माणि कोपि न साधयति परन्तु भक्तिमात्रेणैव स्वस्य उच्चतमस्य लक्ष्यस्य प्राप्तौ सः सफलीभवति । स्कन्दपुराणे भक्तिः एवं वर्णिता अस्ति यत् – भक्तिः स्वयं मुक्तिरेवास्ति।<sup>3</sup> तत्त्वज्ञानममेव भक्तेः गौणप्रभव एवास्ति । तत्त्वज्ञानं खलु ईश्वरस्य त्रिविधरूपस्य अपरोक्षानुभूतावेव निहितं भवति, येन सह तस्य भेदाभेदसम्बन्धौ स्तः । ईश्वरस्य अस्य सत्यस्य सम्यगनुभूतिः प्रत्यक्ष च केवलं भक्तिना एवं कर्तुं शक्यते।<sup>4</sup> ज्ञान-अपरोक्षानुभूत्योः तुलना क्रियते चेत् तर्हि ज्ञानं तत्त्वतः दूरे तिष्ठति तथा अपरोक्षानुभूतिः ततः अधिकतया निकटवर्ती भवति । भक्तिः न केवलं ज्ञानं जनयति अपि च ईश्वरसाक्षात्कारस्य प्राप्तिं कारयति “ज्ञानमात्रस्य का वार्ता साक्षादपि कुर्वन्ति” । अतः एवमपि स्वीक्रियते यत् भक्तिः तत्त्वज्ञानादपि अधिकम् उच्चतरा अस्ति । तच्च ज्ञानं तस्या ‘गौणप्रभाव’ इति कथ्यते । निष्ठावान् भक्तः ईश्वरस्य साक्षात्कारं स्व-इच्छानुसारं स्व-शक्तीनां साहचर्येण वा शक्तिभिन्नेषु तस्य त्रिविधाय सत्त्व-रज-तमांसिद्धरूपैः वा कस्मिंश्चित् एकस्मिन् रूपे कर्तुमर्हति । कस्यचित् व्यक्तेः शुभकर्मणां प्रभावः स्वर्गप्राप्तिः इति वक्तुं न शक्यते अपितु भक्तिं समुत्पादयन् तेन परमेश्वरस्य संतोषजनने सफलतायाः प्राप्तिः एव शुभकर्मणां प्रभावो भवति । उपनिषत्सु प्रयुक्तस्य निदिध्यासनस्य अर्थो भवति यत् भगवतः नाम्नां विभूतीनां च कीर्तनं, तेन च तस्य भगवतः उपासना एवास्ति । यदा कश्चित् जनः तं प्रति पूर्णतया समर्पितभावनया तस्य उपासनां करोति तदा तस्य कर्मणां सर्वाणि बन्धनानि विमुक्तानि भवन्ति । परं स्वान्तः तं भगवन्तं, परमेश्वरं प्रति स्वाभाविकतया उन्मुखीभवनमिति प्रवृत्तिजनने काठिन्यं भवति, अथ च तस्य परमेश्वरस्य नाम-विभूतीनां संकीर्तने परमसन्तोषस्य प्राप्तावपि महत् काठिन्यम् आयाति । निष्ठावतः भक्तस्य साहचर्येण एव व्यक्तेः मनः परमेश्वरोन्मुखं भवति । भागवतादीनां ईश्वर कर्मप्रतिपादकग्रन्थानां श्रवण-पठनेन च परमेश्वरोन्मुखी प्रवृत्तिः प्रबला भवति । तस्य फलस्वरूपं मनः “रजस्/इच्छा” “तमस्/दुःखम् इत्येताभ्यां मुक्तं भवति । इच्छा-दुःखयोः मुक्तं मनः परमेश्वरं प्रति अधिकम् आसक्तं भवति, तेन तस्मिन् भक्ते परमेश्वरस्य स्वरूपस्य साक्षात्कारस्य च ज्ञानं समुत्पद्यते । तस्य फलस्वरूपं भक्तस्य अहंकारस्य नाशः जायते । सर्वे संशयाः विलीनाः भवन्ति अपि च कर्मणः सर्वाणि खलु बन्धनानि नश्यन्ति ।

भक्तेः अनुष्ठानं तथा कर्मणः अनुष्ठानं इत्युभयोर्मध्ये भिन्नता एवंभूता अस्ति यत् –भक्तेः अनुष्ठानं साधनकाले च साध्यकाले सुखप्रदं भवति । परन्तु कर्मणः अनुष्ठानम् उभयत्र सुखप्रदं न भवति।<sup>5</sup> अतः व्यक्तिः नित्यमेव ज्ञान-वैराग्यादीनां कर्मणाम् अनुष्ठानं सर्वात्मना प्रयत्नेनैव त्यजेत्।<sup>6</sup> यतो यावन्न कर्माणि भगवन्तं प्रति समर्प्यन्ते तावदेव तानि बन्धनकारणात् तं पीडयन्ति, कदाचित् फलाशया, फलरूपेण वा अहमिति भावनया । भक्तिं विना केवलज्ञानं बाह्यज्ञानं भवति । तत् ज्ञानं न च साक्षात्कारं समुत्पादयति न वा आनन्दस्य समुत्पादने क्षमं भवति । अतः न च नित्यकर्मणाम् अनुष्ठानं न करणीयम् न वा नैमित्तिककर्मणाम् अनुष्ठानम् । अपितु तदपेक्षया केवलं भक्तेरनुष्ठानमेव करणीयम् । यदि भक्तेः चरमसीमां प्राप्यते तर्हि अहोभाग्यमिति जानीयात्, यदि कदाचित् तदवाप्तौ असफलं भवति कश्चित् भक्तः तथापि तस्य भाग्ये दण्डो न भवति, यतो भक्ति-रसिकस्य ज्ञान-कर्मणोः अनुष्ठाने अधिकारो न भवति।<sup>7</sup> परमेश्वरः समेषां मानवानां चेतनप्रक्रियासु स्वस्य प्रत्यक्षाभिव्यक्तिं कारयति, तथा च स सर्वान्तरात्मा अस्ति । केवलं तस्यैव उपासना करणीया । यतः भक्तिः स्वरूपतः मुक्तेः समानरूपमेवास्ति । अतः अस्माकं परमलक्ष्येव भक्तिरस्ति भक्तिरेवाभिधेयं वस्तु । यो मानवः भक्तिमार्गं अस्ति तस्य कृते आत्मचिन्तनाय दुःखमयकर्मणां प्रयासस्य आवश्यकता एव नास्ति । यतो भक्तिः स्वयमेव भक्तिमयभावावेशस्य बलेनैव सरलतया आत्मचिन्तनं समुत्पादयति । भक्तेः स्थानम् एतावदुच्चतरमस्ति यत् ये खलु जनाः जीवन्मुक्तेः अवस्थामवाप्तवन्तः तथा येषां पापानि भस्मीभूतानि जातानि, यदि एतादृशः जनः भगवन्तं प्रति कदाचित् अनादरं व्यनक्ति तेषामपि पतनं भगवतः इच्छां विना न सम्भवति ।

2 भजंता ज्ञानवैराग्याभयासेन प्रयोजनं नास्ति । षट्-सन्दर्भ, पृष्ठ-481

3 नश्चला त्वया भक्तिर्या सैव मुक्तिर्जनार्दन । – स्कन्दपुराण, रेवाखण्ड, षट् सन्दर्भ-पृष्ठ-45

4 षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 454

5 कर्माङ्गानवन्न साधनकाले साध्यकाले वा भक्तयानुष्ठानं दुःखरूपं प्रत्युत् सुखरूपमेव । षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 457

6 षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 457

7 भक्तिरसिकस्य कर्मानधिकारात् । षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 460



अर्थात् कदाचित् भगवान् तेषां पतने इच्छां जनयति वा । तदैव तेषां पापस्य पुनर्विकासो सम्भवति ।<sup>8</sup> यदा भक्त्या कर्मणां बन्धनस्य नाशो जायते तदैव भक्तेः उच्चतर-विकासाय अवसरः उत्पद्यते । येन व्यक्तिः स्वस्वरूपस्य ततोऽधिकं पवित्रां रूपं प्राप्नोति । एवं प्रकारेण भक्तिः शाश्वतापरोक्षानुभूतीनाम् अवस्था भवति यत् बन्धनरूपाशुद्धतानां पूर्णनिवृत्तेरनन्तरमपि विद्यमानं भवति । भक्तेरस्तित्वं खलु सकलाशुभानां पूर्णनिवारणमिति मन्यते । अर्थात् भक्तिः अस्ति चेत् अशुभस्यागमनं न भवति इति । एवं भक्तिः न केवलं सकलान् दोषान् दूरीकरोति अपितु तस्य प्रभावेन प्रारब्धस्यापि नाशो जायते ।<sup>9</sup> अतः निष्ठावान् भक्तः न सामान्यमुक्तेः कामनां करोति न च कस्यचित् अपरवस्तुनः, अपितु केवलं भक्तिमार्गस्यानुसरणे एव तत्परो भवति ।

भक्तेः स्वरूपमवमस्ति यत् सा न केवलं भगवन्तं प्रति अपितु भक्तस्य कृते अपि आनन्दमयोऽस्ति ।<sup>10</sup> कस्मिंश्चित् भक्ते भक्तेः आविर्भावः तस्मिन् भगवतः आत्मसिद्धिमयशक्तिरूपेण अभिव्यक्त- भगवदिच्छायः कारणादेव भवति । भगवतः इच्छायाः एतादृशस्य अभिव्यक्तेः व्याख्या तस्य भगवतः दयारूपेणैव क्रियते । अतः कस्मिंश्चित् व्यक्तौ भक्तेराविर्भावस्य परमकारणं खलु भगवान् एव भवतीति जानीयात् । यद्यपि भक्त्यामेव तस्य भगवतः उच्चतमस्य सर्वाधिकानन्दमयस्य स्वरूपस्य आत्माभिव्यक्तिः भक्तस्य सन्तोषाय भवति । एतदपि स्मरणीयं यत् न केवलं भक्तेः उदयः अपितु इन्द्रियाणां व्यापारोऽपि भगवदिच्छायाः प्रभावेण एव भवतीति । एवंप्रकारेण भगवान् मानवानां सकलेषु व्यवहारेषु आत्मसिद्धेः प्राप्तिं करोति । अतः एतत् तस्य विशिष्टानुग्रहस्य फलमिति जानीयात् । रामानुजाचार्यानुसारेण परज्ञानं पराभक्तिश्च समानमेव, तथा मोक्षस्य कारणमपि । एतत् परज्ञानं सविकल्पशाब्दबोधार्थं भिन्नमेवास्ति, यदि एवं न स्यात् तर्हि वेदान्तशास्त्रास्य अध्येतारो मुक्ताः भविष्यन्त्येव । पराभक्तिरपि प्रपत्ति-स्मृति-उपासनानां भगवत्साक्षात्काररूपं चरमोत्कर्षं भवति यत् भगवदनुग्रहेण वा कृपाद्वारा प्रसादेन वा सम्भवतीति ।

सच्चिदानन्दः भगवान् श्रीकृष्णः एव परब्रह्म इति, तथा प्रेम्णा श्रीकृष्णस्य सेवा एव भक्तिरस्ति । भक्तिरस्मिन् युगे मोक्षस्य एकमात्रां साधनमेवास्ति । एषा भक्तिः अपराभिलाषेभ्यः शून्यं भवति । यावत् हृदये भुक्तेः/सांसारिकभोगस्य मुक्तेश्च इच्छा विद्यमाने तावन्नोदेति भक्तिसुखमिति जानीयात् । इच्छायाः नष्टे जाते एतेषां समेषां दुर्भावानां च नाशः स्वतः एव भवति । भक्तिः न केवलं ज्ञानोदयस्य कारणं भवति अपितु भगवत्साक्षात्कारमपि कारयति । भक्तिं विना ज्ञान-कर्म-उपासना-वैराग्यादयः सर्वं निष्फलाः भवन्ति । भक्तिस्तु मुक्तेरपि श्रेष्ठा उच्चतरा च "पञ्चम-पुरुषार्थः एवास्ति, मोक्षे कर्मणाम् आत्यन्तिके क्षये जाते जीवस्य ज्ञानम् आनन्दश्च ब्रह्म इव नित्यं, विभुः अखण्डश्च जायते ।

सच्चिदानन्दः भगवान् श्रीकृष्णः एव परब्रह्म अस्ति । ते अनन्तकल्याणगुणैः सम्पन्नाश्च अनन्तशक्तिसम्पन्नाः सन्ति । तेषु गुण-गुण्योरभेदः विद्यते । भगवतः स्वरूप-विग्रह-गुणेषु कोऽपि भेदो नास्ति । भेदः केवल भाषामात्रमेवास्ति, प्रकृते तु तत्र भेदो नास्ति अपितु अभेद एव । ब्रह्म सजातीय- विजातीय-स्वगतेभ्यः भेदेभ्यः रहितोऽस्ति । तत् अखण्डानन्दात्मकोऽस्ति । भगवतः अचिन्त्य-अपरमेय- अनन्तशक्तीनां कारणादेव तस्मिन् विरुद्धगुणानां स्थितिः सम्भवति तिष्ठति च । मर्यादामार्गं वा वैदिकमार्गं भक्तिः कर्म-ज्ञाच-उपासनाभिः प्राप्यते इति । तथा तत्र तस्य लक्ष्यं सायुज्यमुक्तिरस्ति । पुष्टिमार्गं भक्तिः ईश्वरं प्रति अनन्यप्रेम्णा तं प्रति आत्मसमर्पणमस्ति । अस्मिन् ईश्वरस्य अनुग्रहमतिरिच्य अन्यत् किमपि न वा साधनं न च यत्नो भवति । भक्तेः स्थायीभावः प्रेम एवास्ति । भगवतः माहात्म्यस्य ज्ञानेन सह तं प्रति दृढं च सर्वातिशयप्रेम एव भक्तिः कथ्यते । तथा तेन प्रेम्णा एव मुक्तिर्सम्भवति नान्यथा ।<sup>11</sup>

मन्मते भक्तिमान् जनः सकलज्ञानस्य अधिकारी भूत्वा जीवनस्य परमं लक्ष्यं स्मारं स्मारं नित्यजीवनस्य विविधानि कर्माणि अविचलितेन हृदयेन कृत्वा कमपि जीवं भावेन वा कर्मणा अहिंसन् सावधानेन भक्तिमेव करोति । तादृशः एव जनः समाजे पूर्णतायाः प्राप्तौ सफलीभवतीति मे मतिः । भवतु भक्त्या विश्वस्य च तदितरस्य कल्याणमिति मे भावना ।

8 जीवन्मुक्ताः अपि पुनर्बन्धनं यान्ति कर्मभिः यद्यचिन्त्य-महाशक्तौ भगवत्यपराधिनः । षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 505

9 षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 516

10 षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 523

11 षट् सन्दर्भ, पृष्ठ- 531



**नागेन्द्र कुमारः**

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभागः

## अष्टाध्यायां वर्णिताः प्राचीनजनपदाः

शास्त्रेष्वद्यं व्याकरणं रम्यं तत्रापि पाणिनेः इति पाणिनिनाचार्येण प्रोक्तं व्याकरणं भारतीयशब्दविद्यानां प्रत्नतमं रम्यतमं च शास्त्रं विद्यत इति सर्वसम्मतं मतं वरीवर्ति। महर्षिणा पाणिनिना “अष्टाध्यायी” इत्याख्यस्य महतः शब्दशास्त्रस्य रचना व्यधायि, यद्धि भारतीयसाहित्यपरम्परायां स्वविशालतया क्रमबद्धतया महत्या च. सत्कल्पनया भारतीयमनीषायाः सविशेषकृतित्वेन दिद्वद्वरैः सभाज्यते। अत एवोच्यते युक्तियुक्तमिदम्—

**पाणिनीयं महाशास्त्रं पदसाधुत्वलक्षणम्।  
स्वोपकारकं ग्राह्यं कृत्स्नं त्याज्यं न किञ्चन॥**

आचार्येण पाणिनिना संस्कृता देवी वागरमरपदं प्रापिता। शब्दशास्त्रस्य या रीतिः तेनाङ्गीकृता, तया संस्कृतभाषायाः सर्वेऽपि पक्षास्तत्रकाशेन यथायथमालोकिताः वर्तन्ते। तत्र पाणिनेः साहाय्येन कश्चनापि स्वाभीष्टस्य सम्प्राप्तौ न क्लेशलेशमप्यनुभवति। संस्कृतभाषायाः यावानपि विस्तारस्तत्र सर्वत्रेव पाणिनीयशास्त्रस्य प्रामाण्यमभ्युपगच्छन्ति। विज्जनाः। महर्षेः पाणिनेः सर्वातिशयी प्रभावः सर्वकालायैव संस्कृतभाषायामक्षुण्णो वरीवर्ति। अत एवाद्यापि तन्मान्यता सर्वशास्त्रेषु मूर्धायमाना कल्पते।

भगवता पाणिनिना तत्कालस्य व्यावहारिकीं शिष्टां च भाषां सुसमीक्ष्यैव स्वशास्त्रारम्भः कर्तुमारेभे। तस्य पुरतः संस्कृतवाङ्मयस्य लोकजीवनस्य च दैनन्दिनप्रयोगवतां शब्दानां महान् राशिः सुविस्तृतोऽविद्यत। एतस्य महतो वाङ्मयराशेः यश्चापि शब्दः अर्थत्वेन रचनासौष्टवेन च नैजं वेशिष्ट्यं प्राकाशयत्, तस्य सर्वस्यापि शब्दस्योल्लेखः पाणिनीयेषु सूत्रेषु गणपाठेषु वा व्यधीयत। तत्कालिक लोकव्यवहारस्य कश्चनापि पक्षः ईदृशी नाविद्यत, यस्य शब्दस्याभिव्यक्तिरष्टाध्यायां न व्यजायत। भूगोलः, शिक्षा, साहित्यम्, सामाजिकं जीवनम्, कृषिः, वाणिज्यम्, व्यवसायः, राजा, शासनम्, मन्त्रिपरिषद्, यागः, पूजा, देवताः, साधुसंन्यासिनः, शिल्पविद्या इत्यादिभिरनेकैः पक्षैः सम्बद्धो यावानपि लौकिकजीवनस्य विस्तारः, तत्रस्थान् सकलानपि शब्दान् समाहर्तुं महर्षेः पाणिनेरष्टकं प्रभूतमासीत्। भौगोलिकानां जनपदानां स्थलानां च, वैदिकशाखानां तच्चरणानां च, गोत्राणां तद्वशानां चाभिधानैः सम्बद्धा अतिपुष्पकला सामग्री अष्टाध्यायां संगृहीता वर्तते। अत एव एतत्सकलमेवाक्षिलक्ष्यीकृत्य यथायथं केनचित्सूक्तमिदम्—

**समाजशास्त्रावगतिर्भवेदितस्तथेतिहासादिनयादि बुद्ध्यते।  
न केवलेयं पदसिद्धिसंहिता द्विजत्वसम्पादनसञ्चिकाद्भुता।**

एतस्मिन्नेवोपक्रमे इदमिदानीमिह निबन्धे पाणिनेराचार्यस्याष्टके वर्णितानां प्राचीनजनपदानां विवेचनं प्रस्तूयते—

पाणिनीयसूत्रकाले जनपदः इति भारतीयभूगोलस्य महत्त्वपूर्णतमं पदमासीत्। वस्तुतो भारतस्थैतिह्ये युगविभागतया सूत्रकालस्य यथावत् नामकरणं महाजनपदयुगमेव। एतस्मिन् काले सम्पूर्णोऽपि देशो जनपदेषु विभक्तः आसीत्। पाणिनीयभूगोलस्य प्रधानावयवो जनपदविभागो वर्तते। काशिकाकारो ग्रामाणां समुदायः जनपदः इत्यभिधातिग्रामसमुदायो जनपदः इति। अत्र ग्रामशब्देन नगरशब्देन नगरशब्दोऽप्यन्तर्भवति। तत्त्वतो जनपदेषु नगराणि ग्रामाश्चेत्युभयमपि अन्तर्भूयते स्म। जनपदानां राजनीतिक्यः सीमाः परिवर्तयन्ते स्म, किन्तु तेषु सांस्कृतिकजीवनस्य धाराप्रवाहो न विच्छिद्यते स्म। जनपदानां यो विस्तारः प्रस्तीर्णः आसीत्, तत्रान्योन्यं जनपदं विभेदयितुं नदीनां वा पर्वतानां वा सीमाः विधीयन्ते स्म।



काशिकाकारो लिखति यद् एकस्या जनपदस्य सीमा तदितरो जनपद एव भवति स्म, ग्रामो नैव—तदविधरपि जनपद एव गृह्यते न ग्रामः इति।?

साम्प्रतमष्टाध्याय्यामुल्लिखिताः जनपदाः अधस्ताद्विवेच्यन्ते :-

### 1. कम्बोजः -

पाणिनेराचार्यस्य कालेऽयमेकराजो जनपदोऽपवर्तत। अत्रत्याः राजानः क्षत्रियकुमाराश्च “कम्बोजाः” इत्यभिधीयन्ते स्म। अपत्यवाचिनां राजवाचिना च प्रत्ययानां कम्बोजाल्लुकः इति सूत्रेण लुक (लोपः) विधीयते स्म। कच्छादिगणे सिन्ध्वादिगणे च सिन्धु, वर्ण, गन्धार, मधुमत्, कम्बोज, कश्मीर, साल्व, कुलुन इत्येतानि अष्ट जनपदनामानि पाणिनिकृतानि प्राप्यन्ते। गान्धार, कपिश, बाल्हीक, कम्बोज इत्येतेषां चतुर्णां महाजनपदानां चतुष्टयमासीत्। हिन्दुकुशपर्वतस्य उत्तरपूर्वस्यां कम्बोजः, उत्तरपश्चिमस्यां बाल्हीकः, दक्षिणपूर्वस्यां गन्धारः, दक्षिणपश्चिमस्यां च कपिशः इति जनपदाः आसन्। वर्तमानयोः पामीर बदख्शां इति जनपदयोः समवेतं नाम पुरा कम्बोज इत्यासीत्।

### 2. प्रकण्वः -

अष्टाध्याय्याः प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी/इति सूत्रे प्रस्कण्व इति कस्यचिदृषेर्नाम विज्ञायते। एतस्यैव सूत्रस्य प्रत्युदाहरणतया प्रकण्व इत्युदाह्रियते, यश्च कस्यचिद्देशस्य नामावर्तत। प्रकण्वो देशः इति काशिकाकारो लिखति। एवं विज्ञायते यत् फरगना इत्यस्यैव प्राचीन नाम प्रकण्व इत्यविद्यत। प्रकण्वदेशो मध्य-एशियायाः भूगोलस्य भागोऽभूत्।

### 3. गन्धारः -

पाणिनिमुनेरष्टकस्य साल्वेयगान्धारिभ्यां च’ इति सूत्रे एतस्य जनपदस्य प्राचीन नाम गान्धारि इति प्राप्यते। तत्रस्थाः राजानस्तत्पुत्राश्च गान्धाराः इत्यभिधीयन्ते स्म। पश्चात्कृतमेतस्य गन्धार इति नाम गणपाठे उपलभ्यते। गन्धारजनपदः काश्कनदीतः तक्षशीलां यावत् विस्तीर्णः आसीत्। पश्चिमगन्धारस्य राजधानी पुष्कलावती विद्यते स्म, यत्र स्वात, काबुल इति नामधेययोः नद्योः सङ्गमस्थले चारसद्दा इति नामक स्थानं वर्तमानमस्ति।

### 4. सिन्धुः -

सिन्धुनद्यात् पूर्वस्थितस्यथ सिन्धसागरस्यथ दुआब इत्यस्य प्राचीनमभिधानं सिन्धु इत्यासीत्। सिन्धुजनपदे उत्पन्नाः मनुष्याः सिन्धुकाः” कथ्यन्ते स्म। सिन्धुजनपदे येषां पूर्वजाः निवसन्ति स्म, येषामभिजनस्थानं सिन्धुजनपदः आसीत्, ते सैन्धवाख्याः भवन्ति स्म।

### 5. सौवीरः -

पाणिनेरष्टके अस्योल्लेखः वृद्धाट् ठक् सौवीरेषु बहुलम् इत्यस्मिन् सूत्रे प्राप्यते। वर्तमानकाले सिन्धुप्रान्तस्य यद्वा सिन्धनदस्याधोभागः पुरा सौवीरजनपदः आसीत्। एतस्य राजधानी रोरुव (संस्कृते रौरुक इति) इति वर्तते स्म। एतस्य वर्तमान नाम रोडी इत्यस्ति। अत्र प्राचीनगराणां भग्नावशेषाः अपि विद्यमानाः सन्ति। रोडीनगरस्य परस्तात् सिन्धोः दक्षिणतटस्य प्रसिद्धं स्थानं सक्खराख्यम् अस्ति, यस्य प्राचीन नाम शार्कर इत्यासीत्। सक्खरशब्दोऽयं शार्कर इत्यस्यैवापभ्रंशः। अष्टाध्याय्याः शर्कराया वा? इति सूत्रे अस्योल्लेखो लभ्यते। शर्कराशब्दस्यार्थः ग्राम्यभाषायां रोडी इत्यस्ति।

### 6. ब्राह्मणकः -

अष्टाध्याय्याः ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम्!” इति सूत्रानुसारं ब्राह्मणक इति कस्यचित् देशस्य नाम वर्तते। महर्षेः पतञ्जलेरनुमतम् अयमेको जनपदः आसीत्—ब्राह्मणको नाम जनपदः इति। एतस्याभिज्ञानं वर्तमानस्य ब्राह्मणावादाभिधानेन। (सिन्धुप्रान्तस्य मीरपुरखासाख्यात् स्थानात् पञ्चविंशतियोजनात् उत्तरेण) स्थानेन कर्तुं शक्यते। अत्र प्राचीनकालस्य विस्तृताः ध्वंसावशेषाः सन्ति।



## 7. पारस्करः -

अष्टाध्याय्याः पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम् इति सूत्रे एतस्य उल्लेखो वर्तते। पतञ्जलिना मुनिना पारस्कर इति एको देशः कथितः— पारस्करो देशः इति। अयं सिन्धुप्रान्तस्य पूर्वी जनपदः थर—पारकर इति विज्ञायते। थर इति मरुस्थलवाची थल इति शब्दस्य सिन्धीरूपमस्ति। कच्छप्रान्तस्य इरिण इति प्रदेशात् उत्तरस्य समस्तोऽपि भूभागः पारस्कराख्यः आसीत्।

## 8. कच्छः -

अष्टाध्याय्याः कच्छादिभ्यश्च” इति सूत्रे अस्योल्लेखो वर्तते। सिन्धुप्रान्तात् साक्षात् दक्षिणे कच्छजनपदः आसीत्। पाणिनिना मुनिना कच्छजनपदस्य मनुष्याः काच्छकाः इति कथिताः, अस्य च जनपदस्य जनानां हास्यादिविशेषतानामपि निर्देशो विहितोऽस्ति। काशिकायामेतस्य ‘त्रीण्युदाहरणानि प्राप्यन्ते— काच्छकं हसितम्, काच्छक जल्पितम्, काच्छिका चूडा इति। अपरस्मिन्नपिसूत्रे पाणिनिनास्योल्लेखोऽकारि—कच्छाग्निवक्त्रगर्तोत्तरपदात् इति। एतस्योदाहरणं काशिकाकारः दारुकच्छकः, पैपलीकच्छकः इति निर्दिशति।

## 9. केकयः -

अष्टाध्याय्याः केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः इति। एतस्योल्लेखो विहितः। वर्तमानं झेलम इति स्थानम्, शाहपुरम्, गुजरातप्रान्तं च प्राचीनकाले केकयजनपदत्वेन प्रसिद्धमासीत्, यत्र साम्प्रतं खिउडा इत्याख्यः पर्वतोऽस्ति। केकयजनपदो राजधानीत्वेन प्रसिद्धोऽभूत्। केकयस्थाः क्षत्रियाः कथ्यन्ते स्म।

## 10. मद्रः -

अष्टकस्य मद्रवृज्योः कन् इति सूत्रे एषः जनपदः उदलिख्यत। अयं जनपदः प्राचीनवाहीकप्रदेशस्य उदीच्यो भागः आसीत्। एतस्य राजधानी शाकल (वर्तमान स्यालकोटस्थानम्) इति स्थानमासीत्, या आपगा इति नद्यास्तीरे अवस्थितामासीत्। इयं लघ्वी नदी जम्बूप्रान्तस्योपत्यकाभ्यो निर्गम्य उपस्यालकोटं सरन्ती वर्षर्तौ चन्द्रभागा इति नद्यां संगच्छते।

## 11. उशीनरः -

विभाषोशीनरेषु” इति सूत्रे अयमुल्लिखितः। पाणिनेराचार्यस्थानुमतं उशीनरो वाहीकप्रान्तस्यैव एको जनपदः आसीत्। तथा हि काशिकाकारः आह— उशानरेषु ये वाहीकग्रामाः इति। महाभारतस्य वनपर्वणि (1942) शिविः उशीनरजनपदस्यैव राजा कथितः। राज्ञः शिवेः राजधानी शिबिपुरमवर्तत, यस्याभिज्ञानं वर्तमानस्य शोरकोटेन क्रियते। एवं विज्ञायते यत् रावीनद्याः चन्द्रभागानद्याश्च मध्यस्थितो भूभागः, यश्च मद्रजनपदाद् दक्षिणे आसीत्, उशीनरप्रदेशः कथ्यते स्म। स द्विधा विभक्तः आसीत्। अद्यतनो जंग इति प्रदेशस्य औत्तरो भागः उशीनरजनपदोऽवर्तत, दक्षिणश्च भागः शोरकोटस्थानस्य समन्तात् शिबिजनपदः इति।

## 12. अम्बष्ठः -

पाणिनिनाचार्येण अष्टाध्याय्याः अम्बाम्बगोभूमिसव्याद्वित्रि.” इति सूत्रेण अम्बष्ठः, इति संज्ञाद्वयस्य सिद्धिर्विहिता। अयं जनपदो राजधानीत्वेनावर्तत, एतस्य च निवासिनो जनाः आम्बष्ठ्याः’ अकथ्यन्त। यथामहाभारतं अम्बष्ठस्य जनाः महाभारतस्य युद्धे कौरवाणां पक्षतोऽयुध्यन्त। इमे अत्यन्तं वीरपुरुषाः आसन् इमे चन्द्रभागानद्याः अधः प्रान्तेषु वसतिं स्वीचक्रुः।

## 13. त्रिगर्तः -

दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः इति सूत्रे अस्योल्लेखः। रावी, व्यास, सतलुज इति नदीत्रयस्य उपत्यकायाः मध्यप्रदेशः त्रिगर्तजनपदः आसीत्। एतस्यैव च प्राचीन नाम जालन्धरायण इत्यपि आसीत्। अद्यापि त्रिगर्तस्य प्रदेशो जालन्धर इत्येव कथ्यते। रावीनद्याः व्यासनद्याश्च सङ्कीर्णं मध्यभागे त्रिगर्तप्रान्तस्य मार्गो भवति स्म, योऽद्यापि वर्तते।



#### 14 कलकूटः -

महाभारतस्य सभापर्वणि वर्णितः कालकूटः (यथापाणिनीयं कलकूटः) कुलिन्दप्रदेशे अवर्तत। कलकूटजनपदः तमसानद्याः यमुनायाश्च प्रदेशे भवति। अयं यमुनायाः ऊर्ध्वप्रवाहस्य यामुनः प्रदेशः आसीत् इह अञ्जनस्योत्पत्तेः कारणादेतस्य यामुनपर्वतस्य नाम कालकूटः इति स्वाभाविकमेव।

#### 15. भारद्वाजः -

अष्टाध्याय्याः कृकणपर्णाद् भारद्वाजेः इति सूत्रस्य व्याख्याप्रसंगे काशिकाकारो भारद्वाज इति शब्द देशवाचिनमेव मन्यते, न गोत्रवाचिनम्। पारजीटरः भारद्वाजप्रदेशस्याभिज्ञानं गढवाल इति प्रदेशे कुरुते।

#### 16, रङ्कः -

रङ्कोरमनुष्येऽण् च इति सूत्रे अयमुल्लिख्यते। पाणिनेरनुमतं रङ्कुदेशस्य मनुष्यो राङ्कवकः, तत्रस्थानि च वस्तूनि राङ्क्वाणि वा राङ्वायणानि वा कथ्यन्ते स्म। अयमलकनन्दायाः पिण्डरस्य च पूर्वप्रदेशः आसीदित्यनुमीयते। अत्रस्थितानां भाषा रङ्का इत्यभिधीयते स्म।

#### 17. कुरुः -

कुरुनादिभ्यो ण्यः! इति सूत्रे एतस्य जनपदस्योल्लेखो वर्तते। कुरुराष्ट्रम्, कुरुक्षेत्रम्, कुरुजांगलम् चेत्येतत् क्षेत्रत्रयमन्योन्यं संहयिष्यदासीत्। थानेश्वरम्, हस्तिनापुरम्, हिसारम्, सरस्वती, यमुना, गङ्गा इत्येतेषां मध्यस्थितः प्रदेश भागत्रये विभक्तः आसीत्। गङ्गायामुनयोः मध्ये मेरुक्षेत्रं कुरुराष्ट्रमासीत् एतस्य राजधानी हस्तिनापुरं भवति स्म पाणिनिरेतत् हस्तिनापुरम् इत्यकथयत्। कुरुक्षेत्रं तु जगद्विख्यातमेव। रोहतक, हिसार, सिरसा इत्येतेषां क्षेत्रं कुरुजांगलं कथ्यते स्म।

#### 18. साल्वः -

साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादञ् इति सूत्रे एतस्य जनपदस्योल्लेखः। अलवरादारभ्य उत्तरबीकानेरं यावत् विस्तृतः प्रदेशः साल्व इत्यभिधीयते स्म। महर्षिपाणिनिनाष्टके साल्व, साल्वेय, साल्वावयव इति जनपदत्रयमुदलेखि। साल्वेय, साल्वावयव इति द्वयमपि साल्वजनपदस्यैव भागः आसीत्। साल्व इति नाम्ना काचित् प्राचीना जातिरपि प्रसिद्धा। साल्वावयव इति विषये काशिकावृत्तौ अयं प्राचीनः श्लोकः उद्ध्रियतेः-

**उदुम्बरास्तिलखला मद्रकारा युगन्धरा।  
भूलिङ्गाः शरदण्डाश्च साल्वावयवसंज्ञिताः॥'**

अस्य श्लोकस्यानुसारं साल्वावयवराजतन्त्रस्य षट् प्रविभागाः आसन्-

1. उदुम्बरः 2. तिलखलः 3. मद्रकारः 4. युगन्धरः 5. भूलिङ्गः 6. शरदण्डः इति।

#### 19. प्रत्यग्रथः -

अस्याप्युल्लेखः साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादञ् इति सूत्रे एव। मध्यकालस्य कोशानुरूपं पाञ्चालजनपदस्यैवापरं नाम प्रत्यग्रथ इत्यासीत्। यस्य राजधानी अहिच्छत्रावर्तत। प्रत्यग्रथे प्रवहन्ती नदी रथस्था-रामगङ्गा अभूत्। प्रत्यग्रथ रथस्था इत्येतयोरभिप्रायस्तुल्य एव।

#### 20. अजादः -

वृद्धेत्कोसलाजादाञ्जङ् इति सूत्रे अयं जनपदः उल्लिख्यते। एतस्य जनपदस्याख्यया विज्ञायते यदयं प्रदेशः अजानां कृते प्रसिद्धोऽभविष्यत्। इटावा इति प्रदेशः अद्यापि अजानां प्रजातिभ्यो विश्रुतः। अतोऽयमेव प्रदेशः प्राचीनकाले अजादजनपदो भवेदित्यनुमीयते।

### 21. काशिः -

काश्यादिभ्यष्टञ्जिठौ इत्यष्टकसूत्रे जनपदोऽयमुपलभ्यते। महर्षिपाणिनिनाष्टकस्य इति सूत्रे स्थाननामसु काशि इति शब्दः उल्लिखितः। जनपदस्य नाम काशि, तस्य च राजधानी वाराणसी इत्यासीत्।

### 22. वृजिः -

मद्रवृज्योः कन्' इति सूत्रेऽस्योल्लेखः। बिहारप्रान्ते गङ्गायाः उदीच्यः प्रदेशः वृजि इत्यभिधीयते स्म। अत्र विदेहानां लिच्छवीनां च राज्यमासीत्।

### 23. मगधः -

द्वयञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् इति सूत्रे एतस्योल्लेखो विद्यते। काशिजनपदात् पूर्वभागो गङ्गायाश्च दक्षिणप्रदेशो मगधजनपदः आसीत्। अत्र राजतन्त्रशासनमवर्तत।

### 24. कलिङ्गः -

द्वयञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् इति सूत्रे एतस्याप्युल्लेखः। पूर्विसमुद्रतटे कलिङ्गदेशः आसीत्, यत्र साम्प्रतं महानदी प्रवहति। पाणिनेराचार्यस्य कालेऽयं जनपदोऽभूत्। षोडश महाजनपदाः प्रसिद्धाः, तत्रायं न गण्यते।

### 25. सूरमसः -

एतस्य जनपदस्योल्लेखः केवलम् अष्टाध्याय्याम् द्वयञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण् इति सूत्रे एवोपलभ्यते। इत्थं विज्ञायते यत् असमप्रान्ते प्रसिद्धायाः सूरमानद्याः अधित्यकाः पर्वतानां चोपत्यकानां नाम सूरमस इत्यासीत्।

### 26. अवन्तिः -

स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्चः इति सूत्रे अयमुल्लिखितः। अयं महाभारतकालीनः प्रसिद्धो जनपदः। एतस्य राजधानी उज्जयिनी अविद्यत।

### 27. कुन्तिः -

स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च इत्येव सूत्रे अयमप्युल्लिखितः। यमुनायाः चन्द्रभागायाश्च नद्यास्तटे कुन्तिनामकं (वर्तमानस्य ग्वालियर इति) राज्यमासीत्। इदमिदानीं कोतवार इति कथ्यते।

### 28. अरुमकः -

साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटाश्मकादञ् इति सूत्रे भौरिकजनपदस्य जनानां देशस्योल्लेखः भौरिकभक्तः इत्यभिधानेन विहितः। वैजयन्तीकोशानुमतं बंगालप्रान्तस्य समतलो भागः भौरिक इति कथ्यते स्म।

### 29. भौरिकः -

पाणिनिनाष्टके भौरिक्याद्येषुकार्यादिभ्यो विधल्भक्तलौ”

### 30. बर्बरः -

एतस्य जनपदस्याष्टकस्य सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणजौ” इति सूत्रान्तर्गततक्षशिलादिगणे उल्लेखो लभ्यते। सिन्धुसागरस्य सङ्गमस्य समीपमेतत् बर्बरिकं समुद्रपत्तनमासीत्।



### 31 कश्मीरः -

अयं लोकप्रसिद्धो जनपदो वर्तते। अष्टकस्य सिन्ध्वादिगणे” एतस्य उल्लेखो वर्तते।

### 32, उरसः -

एतस्थ जनपदस्याप्युल्लेखः अधष्ठाध्याय्याः सिन्ध्वादिगणे विद्यते। एतस्य वर्तमानाभिधानं हजारा इति वर्तते। अयं सिन्धुः, कृष्णागङ्गा झेलम इति नदीनां मध्यवर्ती प्रदेशः आसीत्। अयं पश्चिमगान्धारं अभिसारं चान्तरास्ति।

### 33. दरद्-

अयमपि जनपदः सिन्ध्वादिगणे” एवोदलिख्यत् अयम् उदीच्यप्रतीच्यस्य कश्मीरस्य गिलगितहुंजा इत्यभिधानस्य प्रदेशः आसीत्।

### 34. गाब्दिका-

एतस्याप्यष्टकस्य सिन्ध्वादिगणे” एवोल्लेखः। अयं धौलाधारस्योपरिभागस्य चम्बाराज्यस्य प्रदेश प्राचीननामतयाभिज्ञायते।

### 35. किष्किन्धा-

अयमपि सिन्ध्वादिगणे एवं पठितः। इदं गोरखपुरस्य समीपे विद्यमानस्य खुंखुदो इति स्थानस्य प्राचीनं नाम विद्यते।

### 36. पटच्चरः -

अष्टकस्य प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण् इति सूत्रान्तर्गतपलाद्यादिगणे अस्योल्लेखः। अयं सरस्वतीनद्याः दक्षिणप्रदेशः आसीत्। वर्तमानकाले पटौदी इति नाम्ना ख्यातः। अत्र लुण्ठकानाम् आभीरगणानां च वसतिरासीत्। संस्कृते पाटच्चरशब्दः स्तेनवाचको विद्यते। पटौदीशब्दासौ पाटच्चरशब्दस्यैवापभ्रंशो भवति।

### 37. यकृल्लोमः -

पलाद्यादिगणे एवास्याप्युल्लेखः अयं अयं शूरसेनजनपदात् दक्षिणवर्तिनां जालौन, उरई, कौंच कलापी इत्येषां स्थलानां प्रदेशोऽवर्तत। महाभारतस्य विराटपर्वणि वर्णितं यत् पाण्डवाः दशार्णात् उत्तरस्य पञ्चालाच्च दक्षिणस्य यकृल्लोमस्य शूरसेनस्य च मध्यस्थितेन मार्गेण मत्स्यजनपदस्य विराटनगरं जग्मुः।

### 38. सर्वसेनः -

अष्टकस्य शण्डिकागणे” एतस्य जनपदस्य उल्लेखो लभ्यते। इति सूत्रयोः काशिकावृत्तेः उदाहरणेन विज्ञायते यत् सर्वसेनजनपदः शुष्कः प्रदेशः आसीत्— परि—परि सर्वसेनेभ्यो वृष्टो देवः। इत्थं पाणिनीयायामष्ठाध्याय्यां वर्णितानाम् अष्टात्रिंशतः प्राचीनजनपदानां निरूपित उल्लेखोऽस्माभिः सुतरां समवाप्यते।

**माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।**

**धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः ॥**

अर्थात्- मधुरता, स्पष्ट बोलना, बड़े-बड़े शब्दों को तोड़ना,

सुन्दर स्वर (मीठे स्वर) में बोलना, धैर्यपूर्वक बोलना,

लय सहित बोलना, ये पाठकों के छः गुण हैं।



**प्रियंका शर्मा**

बी.ए. (विशेष) संस्कृत, द्वितीय वर्षम्

कोरोना विषाणुः एकः विश्वव्यापी सक्रमणं अस्ति। कोरोना विषाणुः अनेक प्रकाराणां विषाणुनाम् एकः समूहः भवति। कोरोना विषाणुः मानवेषु श्वासनलिकासु संक्रमणं भवितुम् अर्हति। कोरोना विषाणोः प्रकोपस्य आरम्भः चीनदेशस्य वुहान नगरतः 2019 तमे वर्षे आगच्छन्ति स्म। विश्वस्वास्थ्य संगघटनेन अस्य विषाणु समूहस्य नाम् कोविड-19 दत्तम्। विश्व स्वास्थ्य सङ्घटनम् कथयत कोविड-19 एका महामारी अस्ति। कोरोना महामारी काले गृहे तिष्ठनम् अति उत्तमम् अस्ति। कोरोना काले रूग्णः प्रतिरोधक क्षमता कृते पौष्टिक आहारम् आवश्यकः अस्ति। द्विगजस्य सामाजिक अन्तरम् मुखसंरक्षकं आवरणम् प्रयोगं च आवश्यकः अस्ति। भारतदेशे अपि कोरोना सक्रमणात् सुरक्षायै रागद्रव्यनिवेशनं उपलब्धः। परन्तु कोरोना रोगात् कोरोना सक्रमणात् सुरक्षायै गृहे तिष्ठनम् अति उत्तमम् अस्ति। सामाजिक अंतरम् मुखसंरक्षक आवरणम् प्रयोग च अनिवार्यम्। वयं पुनः पुनः हस्तं मुखं च फेनिलेन प्रक्षालयेत्। कोरोना संक्रामक रोगात् मुक्तः सर्वे जनाः सहयोग अति आवश्यकः अस्ति।

कोरोना विषाणोः प्रकोपः अति भयावहः अस्ति। वर्तमान समये कोरोना विषाणोः वैक्सीनः सर्वत्र उपलब्ध अस्ति। कोरोना काले रूग्णः प्रतिरोधक क्षमता कृते पौष्टिक आहारम् आवश्यकम् अस्ति। एतत् काले शारीरिक अभ्यासः प्राणायाम् च शरीरार्थम् उत्तमम् अस्ति। वयं कोरोना योद्धायाः सम्मानं कुर्मः। कोरोना वायरसः अनेक प्रकाराणां वायरसनाम् एकः समूह अस्ति। उदाहरणतः सहित-ज्वरः काशः इत्यादि। प्रतिदिन सहस्राः जनाः संक्रमितः भवति। अधुना विश्वस्य समस्त राष्ट्राः अनेन ग्रसिताः सन्ति। कोरोना वायरसः एकम् महामारी अस्ति। परं अनवरत प्रयासरताः सन्ति। अस्य मात्र एकमेव उपायः अस्ति-एकैकम् परात् दूरीम् कृत्वा वसेत्।

## सदाचारः



**तबस्सुमः नसरीनः**

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।  
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।  
श्वः कार्यमहा कुर्वीतः पूर्वाह्ने चापराह्निकम्।  
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।  
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।  
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः।।  
सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।  
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन।।  
श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा।  
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा।।  
मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।  
मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।  
इति ज्ञात्वा प्रायासेन तदेव परिवर्जयेत्।।



गरिमा

बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्षम्

## संस्कृत नीति में व्यावहारिक शिक्षा

**आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।  
नास्त्यद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥**

अर्थ: व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन आलस्य होता है। व्यक्ति का परिश्रम ही उसका सच्चा मित्र होता है। क्योंकि जब भी मनुष्य परिश्रम करता है तो वह दुखी नहीं होता है और हमेशा खुश ही रहता है।

**उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।**

**न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥**

अर्थ: व्यक्ति के मेहनत करने से ही उसके काम पूरे होते हैं। सिर्फ इच्छा करने से उसके काम पूरे नहीं होते। जैसे सोये हुए शेर के मुंह में हिरण स्वयं नहीं आता, उसके लिए शेर को परिश्रम करना पड़ता है।

**ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।**

**भृङ्के भोजयते चैव बहुविध प्रीतिलक्षणम्॥**

अर्थ: लेना, देना, खाना, खिलाना, रहस्य बताना और उन्हें सुनना ये सभी 6 प्रेम के लक्षण हैं।

**अनादरो विलम्बश्च वै मुख्यम् निष्पुट वचनम्।**

**पश्चतापश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च॥**

अर्थ: अपमान करके देना, मुंह फेर देना, देरी से देना, कठोर वचन बोलकर देना और देने के बाद पश्चाताप होना ये सभी 5 क्रियाएं दान को दूषित कर देती हैं।

**वाणी रसवती यस्यः यस्य श्रमवती क्रिया।**

**लक्ष्मीः दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवितं॥**

अर्थ: जिस मनुष्य की वाणी रसवती हो, जिसका काम परिश्रम से भरा हो, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त हो, उसका जीवन सफल है।

**यस्तु संचरते देशान् यस्तु सेवेत पण्डितान्।**

**तस्य विस्तारिता बुद्धितैलबिन्दु रिवाभ्रसि॥**

अर्थ: जो व्यक्ति भिन्न-भिन्न देशों में यात्रा करता है और विद्वानों से संबंध रखता है। उस व्यक्ति की बुद्धि उसी तरह होती है जैसे तेल की एक बूंद पूरे पानी में फैलती है।

**श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।**

**विभाति कायः करुणापराणां, परोपकारैर्न तु चन्दनेन॥**

अर्थ: कानों में कुंडल पहन लेने से शोभा नहीं बढ़ती, अपितु ज्ञान की बातें सुनने से होती है। हाथों की सुन्दरता कंगन पहनने से नहीं होती बल्कि दान देने से होती है। सज्जनों का शरीर भी चन्दन से नहीं शोभा देता बल्कि परहित में किए गए कार्यों से शोभायमान होता है।



प्रिया

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

## जन्माष्टमी महोत्सवः

अद्य भारतवर्षे कृष्णजन्माष्टमी महोत्सवः हर्षोल्लासपूर्वकं सर्वैरपि भारतीयैः जनैः आचर्यते। श्रीकृष्णस्य जन्म कारागारे देवक्याः गर्भात् अभवत्। पिता वसुदेवः श्रीकृष्णं जातमात्रमेव आदाय स्वमित्रस्य नन्दगोपस्य गृहे तं स्थापयित्वा ततः च तस्य नवजातां कन्यां आदाय प्रत्यागत्य च कंसं समर्पितवान्। इतः गोकुले श्रीकृष्णः नन्दपत्न्याः यशोदायाः लालनपालनाभ्यां दिने दिने शुक्लपक्षस्य चन्द्रमसः इव अवर्धत। अयं वर्णेन श्यामोऽपि भवन्नतीव सुन्दरः आसीत्। अत एव सर्वेषां अपि गोकुलवासिनां सः अत्यन्तं प्रियः बभूव। श्रीकृष्णः बाल्यकाले अनेकानि अद्भुतानि कार्याणि कृतवान्। कंसद्वारा प्रेषितान् अनेकान् राक्षसान् हतवान्। यमुनायां कालियस्य सर्पस्य दमनं विहितवान्। स्वकुलगुरोः आचार्यसन्दीपनेः गृहे सर्वाः विद्याः आधीतवान्। अन्ते च मल्लयुद्धे कंसं हत्वा स्वकीयौ मातापितरौ कारागारात् मोचितवान्। महाभारतस्य युद्धे श्रीकृष्णस्य सहयोगेनैव पाण्डवानां विजयः अभवत्। एवञ्च सर्वेषां दुष्टनृपाणां विनाशं कृत्वा श्रीकृष्णः देशे सर्वत्र धर्मस्य न्यायस्य शान्तेः च स्थापनं व्यधात्। महाभारतस्य युद्धावसरे अर्जुनम् उद्दिश्य गीतानामकप्रसिद्धग्रन्थमाध्यमेन यः उपदेशः श्रीकृष्णेन अदायि सः अद्यावधि सर्वैरपि भारतीयैः समाद्रियते। एतस्मिन् अवसरे अस्माकं सर्वेषामपि एवं संकल्पो भवेत् यदधुना इतोऽग्रे अनाचारं अत्याचारं च न सहिष्यामहे प्रत्युत अत्याचारस्य बलपूर्वकं विरोत्स्यामः। अस्मिन् पर्वणि इदमेव अस्माकं व्रतं स्यात्। श्रीकृष्णस्य पावनजन्मदिवसे सर्वेषां कृते मत्तः हार्दिक्यः शुभकामनाः सम्प्रेष्यन्ते इति।



संजना नागरः

बी.ए. संस्कृत-विशेष, प्रथम वर्षम्

## दुर्जनानां विवादे कालो न नष्टव्यः

अस्मिन् संसारे मानवैः पशुपक्षि-आदिभ्योऽपि जीवनोपयोगिनीशिक्षा ग्रहीतव्या। यथा हि – वायसः एकमात्रः एतादृशः पक्षी अस्ति यः श्येनस्योपरि चञ्चुना प्रहर्तुमुत्सहते। सः श्येनस्य पृष्ठे तिष्ठति तस्य च ग्रीवां कृन्तति। परन्तु श्येनपक्षी काञ्चित् प्रतिक्रियां न ददाति। न हि तेन सह कलहयति। सः वायसेन सह न तु कालं व्येति। परन्तु एतस्मिन् अवसरे सः केवलं एकमेव कार्यं करोति – स्वपक्षान् विस्फार्य पृष्ठे तं वायसमादाय आकाशे उच्चादप्युच्चमुत्पतितुमारभते। तस्योद्भयं यावद् उच्चं भवति तावदेव आक्सीजनस्य अभावे श्वासग्रहणमपि कष्टप्रदं भवति। फलतः उच्चादाकाशात् वायसोऽधः पतति। एवमेव अस्माभिरपि वायसवत् कस्यचिदपि विवादे स्वमूल्यवान् समयो न नष्टव्यः प्रत्युत श्येनपक्षिणः इव उन्नतशिखरो लब्धव्यः। निम्नकोटिकजनानां तु स्वयमेव अधः पतनं भविष्यतीति।



**निखिल कुमार मिश्रा**  
बी.ए. (विशेष) संस्कृत, द्वितीय वर्षम्

## दशकं धर्मलक्षणम्

चतुर्भिरपि चौवैतै नित्यमाश्रमिभिर्दिवज ।  
दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः । मनु०(6/91) ।

धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।  
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् । मनु०(6/92)

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव ।  
अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा । मनु०(2/162)

स्यात्साहसं त्वन्वयवत्प्रसभं कर्म यत्कृतम् ।  
निरन्वयं भवेत्स्तेयं हृत्वाऽपत्ययते च यत् । मनु०(8/332)

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्द्विवर्षिपितृतर्पणम् ।  
देवताऽभ्यर्चनं चैव समिदाधानमेव च । मनु०(2/176)

इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् ।  
जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः । मनु०(7/44)

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छत्यसंशयम् ।  
संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं नियच्छति । मनु०(2/93)

ब्राह्मणो वै मनुष्याणामादित्यस्तेजसां दिवि ।  
शिरो वा सर्वगात्राणाम् धर्माणां सत्यमुक्तमम् । मनु०(8/6)

दश लक्षणानि धर्मस्य ये विप्राः समधीयते ।  
अधीत्य चानुवर्तन्ते ते यान्ति परमां गतिम् । मनु०(6/93)



**शिवानी साहु**  
बी.ए. ऑनर्स, प्रथम वर्षम्

## आत्मा

भगवत् गीता के अनुसार आत्मा का स्वरूप के विषय में श्रीकृष्ण के वचनः

“अव्यक्तोऽशमचिक्योऽशमविकार्योऽयमुच्यते”

इसके अतिरिक्त आत्मा का कभी जन्म नहीं होता है और नहीं इसका कभी मरण होता है। एक बार अस्तित्व में आने के पश्चात् यह फिर कभी उत्पन्न नहीं होती है। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत एवं पुराना है शरीर के विनाश के पश्चात् भी इसका अस्तित्व विद्यमान रहता है:

न जायते म्रियते वा कदाचिदयं  
भूत्वा भविता वा न भूय ।

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणं न हन्यते हन्यमाने शरीरम् ॥

आत्मा जीर्णशीर्ण बूढ़े शरीर को छोड़कर एक शरीर से दूसरे शरीर में ठीक उसी प्रकार चला जाता है जैसे हम पुराने जीर्णशीर्ण वस्त्रों का परित्याग करके नये वस्त्र धारण कर लेते हैं ।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।  
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य न्यानि संयाति नवानि देही ॥

यह आत्मा किसी भी शस्त्र द्वारा काटा नहीं जा सकता है । इसे अग्नि जला नहीं सकती है । जल गीला नहीं कर सकता है और हवा सुखा नहीं सकती है ।





निशा

बी ए प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

## सत्संगत्याः महिमा

- पुरा एकस्मिन् वने रत्नाकरः नाम एकः तस्करः  
निवसति स्म। सः अतिक्रूरः आसीत्। तेन मार्गेण यः कश्चित् पथिकः गच्छति स्म सः तस्य धनं हरति स्म। यः कश्चित् तस्य विरोधं करोति स्म स्त्नाकरः तं भृशं ताडयति स्म एकदा। तेन मार्गेण एकः मुनि गच्छति स्म।
- तस्करः – भोः मुने। तत्रैव तिष्ठ किञ्चित् तव समीपे अस्ति, मह्यं यच्छ।  
मुनिः – भोः तस्कर! अहं मुनि अस्मि अस्मिन् वनप्रदेशे अहं तपः करोमि। मम समीपे धनं नास्ति।  
तस्करः – स्वजलपात्रं त्यक्त्वा गच्छ अन्यथा तव वधं करिष्यामि।  
मुनिः – मम जीवनमपि परोपकाराय अस्ति अतः अहं मृत्योः भयात् मुक्तः अस्मि परं त्वम् एतत् पापं किमर्थं करोषि?  
तस्करः – अहं स्वपरिवारस्य पालनाय एतत् करोमि।  
मुनिः – किं तव परिवारस्य सदस्याः तव पापस्य फलं प्राप्यन्ति?  
तस्करः – अथ किम्? मम सर्वे बान्धवाः पापेऽपि मम सहायकाः भविष्यन्ति।  
मुनिः – गृहं गत्वा पृच्छ।  
तस्करः – भोः मुने! त्वं चतुरः असि यदा अहं गृहं गमिष्यामि तदा त्वम् इतः पलायिष्यसि।  
मुनिः – यदि विश्वासः नास्ति, तर्हि माम् अनेन वृक्षेण सह बद्ध्वा गृहं गच्छ।  
रत्नाकरः – मुनिं वृक्षेण सह बद्ध्वा गृहं गच्छति गृहं गत्वा सः स्वपितरं मातरं भार्यां पुत्रं च पृच्छति तस्करः भो पितः! किम् भवान् मम पापे सहायकः भविष्यति?  
पिता : – पुत्र जनः पापस्य फलं स्वयम् आप्नोति। अतः अहं तव पापकर्मणि सहायकः न भविष्यामि। रत्नाकरः स्वभार्या प्रति अगच्छत्।  
तस्करः – त्वं मम भार्या असि। ननु त्वं मम पाप फलस्य अर्धं भागं प्राप्स्यसि?  
भार्याः – न न भर्तः! मानवः स्वकर्मणः फलं स्वयम् आप्नोति। (रत्नाकरस्य पुत्रः अपि एवमेव अवदत् सः स्वमातरम् अपि पृच्छति)  
तस्करः – भोः मातः! भवती तु मयि स्निह्यति। किम् भवती मम पापस्य किञ्चित् फलं प्राप्स्यति?  
माताः – नहि वत्स स्वपापस्य फलं मानवः स्वयमेव आप्नोति। (परिवारस्य सदस्यानाम् उत्तरं श्रुत्वा गृहात् आगत्य रत्नाकरः मुनेः चरणयोः अपतत्।)  
तस्करः – भोः मुने! भवान् सत्यं कथयति। कोऽपि मम पापे सहायकः नास्ति। अधुना अहं किम् करवाणि कृपया माम् उपदिशतु।  
मुनिः – उत्तिष्ठ वत्स! 'राम-राम' इति जप श्रीरामस्य कृपया एव तव उद्धारः भविष्यति।  
तस्करः – राम, राम, राम, राम।  
मुनिः – उपदेशेन राम राम इति जपन् सः एवं तस्करः महर्षिः वाल्मीकीः सञ्जातः

## गुरु महिमा



निशा

बी ए प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

विद्यार्थी जीवनस्य कृते गुरुभक्तिः तथैव अनिवार्यम् यथा ईश्वरः भक्तिः अनिवार्या । गुरु भक्तिम् विना ना कोऽपि विद्यार्थी विद्यावान् भवितुम् अर्हति । अधुना नैतिकः शिक्षायाः अभावेन नितांत चंचलता अनुशासनहीनता च वृद्धिं आप्नोति । छात्राः स्वाध्यापकान् नैव सत्कुर्वन्ति । ते क्रीडासु कुसंगेषु चित्रपट्ट दर्शनादिषु अमूल्य समयः नाशयन्ति । अतः अस्माभिः गुरुणा सत्कारः सदैव करणीयः गुरु महिमा विषये अधः केचन श्लोकाः लिखिताः ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

शाब्दिक अर्थः— गुरु ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु हैं, गुरु देव महेश्वर शिव हैं, गुरु ही वस्तुतः परब्रह्म परमेश्वर हैंय ऐसे श्रीगुरु के प्रति मेरा नमन है ।

## दुर्बुद्धिः विनश्यति



ऋचा राजः

बी ए प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

सुहृदां हितकामनां न करोतीह यो वचः । स कूर्म इव दुर्बुद्धिः काष्ठादु भ्रष्टो विनश्यति ।। अस्ति कश्मिश्चिज्जलाशये कम्बुग्रीवो नाम कच्छपः । तस्य च संकटविकटनाम्नी मित्रे हंसजातीये परमस्नेहकोटिमाश्रिते, नित्यमेव सरस्तीरमासाद्य तेन सहानेकदेवर्षिमहर्षीणां कथाः कृत्वास्तमन वेलायां स्वनीडसंश्रयं कुरुतः । अथ गच्छता कालेनानावृष्टिशाल्सरः शनैः शनैः शेषमगमत् । ततस्तदु दुःखदुखितौ तावूचतु — भो मित्र । जम्बालशेषमेतत्सरः सञ्जातं, तत्कथं भवान्भविष्यतीति व्याकुलत्वं नो हृदि वर्तते । तच्छ्रुत्वा कम्बुग्रीव आह — भो । साम्प्रतं नास्त्य — स्माकं जीवितव्यं जलाभावात् । तथा प्युपायश्चिन्त्य — तामिति । उक्तञ्च”

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले, धैर्यात्कदात्थितिमान्पुयात्सः ।

जाते समुद्रेऽपि च पोतभङ्गे, सांयात्रिको वाञ्छति तर्तुमेव ।।

अपरञ्च

मित्रार्थं बान्धवार्थं च बुद्धिमान् यतते सदा ।

जातास्वापत्सु यत्नेन जगादेदं वचो मनुः ।।

तदानीयतां काचिद् दृढरज्जुर्लछुकाष्ठं वा । अन्विष्यतां च प्रभूतजलसनाथं सरः, येन मया मध्य प्रदेशे दन्तैर्गृहीते सति युवां कोटिभागयोस्तत्काष्ठं मया सहितं संगृह्य तत्सरो नयथः ।

तावूचतुः “भो मित्र! एवं करिष्यावः । परं भवता मौनव्रतेन स्थातव्यम् नो चेत्तव काष्ठात्पातो भविष्यति । तथानुष्ठिते, गच्छता कम्बुग्रीवेणाधोभागे व्यवस्थितं किञ्चित्पुरमालोकितम् । तत्र ये पौरास्ते तथा नीयमानं विलोक्य, सविस्मयमिद— मूचुः— “अहो, चक्राकरं किमपि पक्षिभ्यां नीयते, पश्यत! पश्यत!” ।

अथ तेषां कोलाहलमाकर्ण्य कम्बुग्रीव आह — “भोः किमेष कोलाहलः?” इति वक्तमाना अर्धोक्त एव पतितः, पौरैः खण्डशः कृतश्च ।



पूजा

बी ए प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

## सुभाषितानि

**गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।**

**सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥**

अर्थ— गुण गुणवान् व्यक्तियों में गुण होते हैं किंतु गुणहीन व्यक्ति को पाकर वे (गुण) दोष बन जाते हैं। नदियां स्वादिष्ट जल से युक्त ही पर्वत से निकलती हैं। किंतु समुद्र तक पहुँचकर वे पीने योग्य नहीं रहती।

**साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।**

**तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥**

अर्थ— साहित्य, सङ्गीत व कला-कौशल से हीन व्यक्ति वास्तव में पूँछ तथा सींग से रहित पशु है जो घास न खाता हुआ भी पशु की भाँति जीवित है। वह तो (असभ्य पशु समान मनुष्यों) पशुओं का परम सौभाग्य है कि घासफूस न खाकर अपितु स्वादिष्ट व्यंजन खाते हैं।

**लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।**

**विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य॥**

अर्थ— लालची व्यक्ति का यश, चुगलखोर की दोस्ती, कर्महीन का कुल, अर्थ/धन को अधिक महत्त्व देने वाले का धर्म अर्थात् धर्मपरायणता, बुरी आदतों वाले को विद्या का फल अर्थात् विद्या से मिलने वाला लाभ, कंजूस का सुख और प्रमाद करने वाले मंत्री युक्त राजा का राज्य/सत्ता नष्ट हो जाता है।

**पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ।**

**संतस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति॥**

अर्थ— जिस प्रकार यह मधुमक्खी मीठे अथवा कड़वे रस को एक समान पीकर मिठास ही उत्पन्न करती है, उसी प्रकार संत लोग सज्जन व दुर्जन लोगों की बात एक समान सुनकर सूक्ति रूप रस का सृजन करते हैं।

**महतां प्रकृतिः सैव वर्धितानां परैरपि।**

**न जहाति निजं भावं सख्यासु लाकृतिर्यथा॥**

अर्थ— दूसरों के द्वारा प्रशंसा पाने पर भी महापुरुषों का स्वभाव वैसा ही रहता है अर्थात् बदलता नहीं जैसे संख्याओं में नौ संख्या का आकार अपनी मौलिकता का त्याग नहीं करता।

**स्त्रियां राचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्।**

**तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते॥**

अर्थ— परिवार में स्त्री के प्रसन्न रहने पर वह सारा परिवार प्रसन्न रहता है। उसके अप्रसन्न रहने अथवा अच्छा न लगने पर कुछ भी अच्छा नहीं लगता।



# संस्कृतप्रहेलिका

किमिच्छति नरः काश्यां भूपानां को रणे हितः ।  
को बन्धः सर्वदेवानां दीयतामेकमुत्तरम् ॥

**मृत्युंजयः**

न तस्यादिः न तस्यान्तः मध्ये यः तस्य तिष्ठति ।  
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद ॥

**नयनम्**

दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः ।  
गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि परपादेन गच्छति ॥

**पादरक्षा**

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।  
अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ॥

**पत्रम्**

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः ।  
त्वग्स्त्रधारी न च सिद्धयोगी जलं च बिभ्रत न घटो न मेघः ॥

**नारिकेलः**

कृष्णमुखी न मार्जारी द्विजिह्वा न च सर्पिणी ।  
पञ्चभर्ती न पाञ्चाली यो जानाति स पण्डितः ॥

**महीनेखनी**

तिष्ठति रविणा साकम्, गच्छति रविणा सह ।  
अन्धकारस्य यः शत्रु कः स सर्वप्रकाशकः ॥

**दूरदर्शनम्**

पादैः पिबामि खादामि दूषितं पवनं सदा ।  
तिष्ठामि सुस्थिरो भूमौ न च गच्छामि कुत्रचित् ॥

**फ्रीजयन्त्रम्**

आलयोऽस्मि हिमास्याहम्, तिष्ठामि धनिनां गृहे ।  
न चाहं पर्वतः कोऽपि न गिरंः शिखरं तथा ॥

**पादपः (वृक्षः)**

विविधानि तु रूपाणि दर्शयामि प्रतिक्षणम् ।  
वदामि विविधाः वार्ताः नास्ति यद्यपि मे मुखम् ॥

**विद्युत्**

गच्छामि सहसाऽयामि सालोकं च करोम्यहम् ।  
चालयामि च यन्त्राणि, विना हस्तं विना तनुम् ॥

**आतपः (धर्मः)**

मेघश्यामोऽस्मिन् नो कृष्ण महाकायो न पर्वतः ।  
बलिष्ठो अस्मि भयोऽस्मि कोऽस्म्यहं नासिका करः ॥



**वर्ष**

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्



वर्ष

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

## अभ्यास एव परमो गुरुः

कश्चित् बालः आसीत्। सः बङ्गप्रदेशे एकस्मिन् विद्यालये पठति स्म। सः अतीव जिज्ञासुः आसीत् परन्तु सः पठने कुशलः न आसीत्। स यत् पठति तत् विस्मरति स्म। सहपाठिनः तस्य उपहासं कुर्वन्ति स्म। सः चिन्तयति किम् अहं मूर्खः अस्मि? किं मम भाग्ये विद्या न अस्ति? परन्तु अहं तु पठितुम् इच्छामि। तदा किं कर्तव्यम्? एकदा सः मार्गे एवं कूपम् अपश्यत्। कूपस्य उपरि एकः घटः आसीत्। सः घटस्य अधः एकं गर्तं अपश्यत्। सः अचिन्तयत् इमं सुन्दरं गर्तं कः निर्मितवान्? सः मातरम् अपृच्छत्—मातः! अहं कूपे घटस्य अधः एकं गर्तम् अपश्यम् तं गर्तम् कः निर्मितवान्? माता अपठत् पुत्र। प्रतिदिनं भूयोः भयः घट—स्थापनेन सः गर्तः निर्मितः।

सः बालः विचारमग्नः अभवत्। सः अचिन्तयत् यदि भूयो भूयः घटस्थापनेन पाषाणशिलायां गर्तः अभवत् तदा किं पुनः पुनः पठनेन मम मतिः तीव्रा न भविष्यति? इति विचार्य सः विद्याभ्यासे संलग्नः अभवत्। सः पुनः पुनः पाठान् अपठत्। पुनः पुनः लेखनस्य अपि अभ्यासम् अकरोत् शनैः शनैः सः बुद्धिमान् अभवत्। सः परीक्षायां विशिष्टं स्थानं प्राप्तवान्। अधुना तस्य सहपाठिनः तस्य उपहासं न कुर्वन्ति स्म अपितु आदरं कुर्वन्ति स्म।

सत्यम् एव अस्तिः अभ्यास एव अस्ति परमो गुरुः।

## बकः कर्कटकः च

हिमालयस्य समीपे एकः सरोवरः आसीत्। तस्य सरोवस्य समीपे एकः बकः अवसत् कालान्तरे सः बकः वृद्धः अभवत्। अतः सः मत्स्यानां ग्रहणं कर्तुम् असमर्थः अभवत् अनन्तरं बकः स्वस्य जीवनस्य रक्षणाय एकस्य उपायस्य चिन्तनम् अकरोत्।

उपायानुसारं बकः सरोवरस्य समीपे उपविश्य रोदनम् अकरोत्। तदा एकः कर्कटकः बकं अपश्यत्। सः बकस्य निकटे अपृच्छत्। भो बक! भवान् किमर्थं रोदनं करोति इति।

बकः तस्य प्रश्नस्य उत्तरम् अयच्छत्, कर्कटक! अस्मिन् वत्सरे वृष्टिः न भविष्यति। अतः जलस्य न्यूनतया वयं पीडिताः भविष्यामः। अतः एव अहं रोदनं करोमि इति। कर्कटकः अपि दुःखितः इदानीं किं कुर्मः? इति बकस्य निकटे उपायम् अपृच्छत्। बकः अवदत् मम जलपूर्णं अन्यस्य सरोवरस्य परिचयः अस्ति। तत्र वयं गत्वा जीवामः इति।

कर्कटकः तर्हि भवानेव मम, बन्धुजनानां च रक्षणं करोतु इति अवदत्। सः बकः एकैकस्मिन् दिने एकं कर्कटकं नीत्वा अखादयत्।

वञ्चकस्य विषये विश्वासः न करणीयः।

## माता



**विनीता**

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

माता—माता त्वम् संसारस्य अनुपम उपहारा ।  
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति त्वं हि मार्गदर्शका ॥  
करुणा—ममतायाः त्वं मूर्ति नास्ति मातृसमा छाया नास्ति ।  
मातृसमा गतिः नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति ॥  
माता शब्दस्य महिमा अपारा न माता कस्याः सदृश्या प्यारा ।  
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति माता त्वं संसारस्य अनुपम उपहारा ॥  
न मातुः परदैवतम् ।  
गुरुणामेव सर्वेषां माता गुरुतरा स्मृता ।  
सा परमकल्याणी अस्ति ॥  
माता गुरुतरा भूमेः नास्ति मातृसमा प्रिया ।  
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति माता त्वं संसारस्य अनुपम उपहारा ॥

## त्रिचक्रिकाचालकः



**कृष्णचन्द्र मिश्रा**

स्नातक संस्कृत विशेष, तृतीय वर्षम्

त्रिचक्रिकाचालकसुन्दरस्मितं  
दिनेऽपि सेन्दुकृतसच्चतुष्पथम् ।  
अमासमे हर्म्यतलेऽधदूषिते ॥  
शताट्टहासान् धनिनामदोऽर्हति ॥  
ब्रवीमि ते घर्मजलैश्च दुर्दिनी  
कृतं कृतिन् । धन्यतरं सुजीवितम् ।  
अघेश्वराणां दुरुदर्कदुर्भगाद्  
ध्येन धन्वीकृतजीवनादिकम्  
मुखं वलीपंक्तिसुशाभिभालकं  
परिस्रवद्धर्मजलाविलाकृति ।  
तमालगन्धि प्रकटं मलीमसं  
मयेष्यते ते परिचुम्ब्यतामिति ॥  
चतुष्पथे प्रस्तारितैरथाक्षिभिः  
प्रतीक्षमाणैः परितः पदातये ।  
विसृज्यमाना वदनेषु शून्यता  
हृदस्मदीयम् ज्वलयत्यहर्निशम् ॥  
स्फुटच्छिरं बद्धशरीरमारुतं  
यदोच्चभूमिं प्रसभं विकर्षसि ।  
स्वकीययानं व्ययिताखिलोर्ज्या  
मनोमदीयं सकले विलीयते ॥  
त्वयोह्यमानो विपथे विसंष्टुले  
स्वनायकानामिवदन्तुरान्तरे ।  
विचारयेऽहं तवदुःखदुःखितस्  
त्वमास्व यानेऽथ वहाम्यतः परम् ॥  
सलज्जचित्तोऽस्म्यपराधबोधतो  
मनुष्यताऽत्रास्ति कथं प्रधर्षिता ।  
कथं च कश्चित् स्थितमान् सदासने  
तथापरः कर्षति यन्त्रवद् भुवि ॥



### अर्चना

बी.ए. संस्कृत (विशेष), तृतीय वर्षम्

तद्धि अनुतिष्ठन् युगपत् सम्पादयति  
अर्थद्वयम् आरोग्यम् इन्द्रियविजयं च ।

By engaging oneself in such a good conduct, one will immediately secure two benefits: health and conquest of the senses.

—चरक संहिता

आहारशुद्धौ सत्वशुद्धि सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः ।  
स्मृतिलाभे सर्वग्रन्थानां विप्रमोक्षः ।

By purity of food ensues purity of mind, By purity of mind ensues steady recollection. When recollection is secured there will be a liberation of all knots.

—हारीत संहिता

शरीरं सत्वसंज्ञं च व्याधीनामाश्रयोमतः ।

तथा सुखानां योगस्तु सुखानां कारणं समः ॥

Body and what is designated as mind are (both) the seats of diseases as well as happiness. The reason for happiness is an equilibrational combination (of the factors of fire, intellect, and sensitivities).

—चरक संहिता

वायुः पित्तं कफश्चोक्तः शारीरो दोषसंग्रहः ।

मानसः पुररूदृष्टो रजश्च तम एव च ॥

Vata, Pitta and Kapha constitute the gamut of vitiations of body. Of the mind however, these (vitiations) are only (two) rajas and tamas.

—चरक संहिता

चित्तायत्तं धातुबद्धं शरीरं नष्टे चित्ते घातवो यान्ति नाशम् ।  
तस्मात् चित्तं सर्वदा रक्षणीयं स्वस्थे चित्ते घातवः सम्भवन्ति ॥

The body bound up by its constituents is under the control of mind. When mind is lost the constituents undergo a destruction. Therefore mind should always be protected. If mind is healthy, constituents will come about.

—अवधूत गीता

## आयुर्वेदे सुभाषितानि

व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः ।

एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः ॥

Comprehension of the true nature of the disease, and controlling of the pains ( and other distresses that arise thereby)- this is the physianness of a physician. He is not the Lord of the span of the (Patient's ) life.

—ब्रह्मवैवर्त पुराण

मैत्री कारुण्यमार्तेषु शक्ये प्रीतिरूपेक्षणम् ।

प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा ॥

Friendship (towards all), compassion for the ailing, devotion to the curable patients and a sense of resignation towards the dying of such for four-fold nature is the profession of physician.

—चरक संहिता

सर्वरोगविशेषज्ञः सर्वोषधविशारदः ।

भिषक्समियान् हन्ति न च मोहं निगच्छति ॥

The Physician who is an expert in the differential diagnosis of all the diseases and possesses a thorough pharmacological knowledge cures all diseases and is never confused.

—चरक संहिता

बुद्धिमेधार्धकपदार्थानां समूहः (Factors responsible for promoting mental vigour.)

सतताध्ययनं, वादः, परतंत्रावलोकनं, तद्विद्याचार्यसेवा चेति बुद्धिमेधाकरो गणः ।

Constant study, argumentation, reference work of other technical treatises, study (lit. service) of the masters, (experts in the special learnings) that are concerned; these constitute group of factors.

—सुश्रुत संहिता

द्वामयोयं पुरुषो यो यत् श्रद्धः स एव सः ।

This (human) person is entirely made up of faith. Whatever is his faith, that alone is he.

—चरक संहिता



सुमनः

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

## वैवश्यं चौर्यं करणम्

जन्मना कोपि चौरो न वैवश्यं चौर्यं करणम् ।  
समाजात् सर्वकाराच्च, वैवश्यं तत् प्रजायते ॥

जन्म से कोई भी चोर नहीं होता है। विवशता चोरी का कारण होती है। समाज और सरकार से वह विवशता पैदा होती है।

सः विकार्यता—ग्रस्तः आसीत् । कार्यं प्राप्तुं तेन बहु प्रयासाः कृताः । किन्तु सफलता न कुत्र अपि मिलिता । अन्ते बुभुक्षया म्रियमाणेन तेन कस्यचित् गृहस्थस्य गृहात् रोटिकां चोरयित्वा क्षुधाशान्तिः कृताः । चौर्यापराधे निगृहीताय तस्मै न्यायधीशः दण्डम् उद्धोषयन् सर्वप्रथमम् आत्मेन ततः च न्यायं श्रोतुम् उपस्थितेभ्यः सर्वेभ्यः जनेभ्यः शत्—शत् रूप्यकाणां राशिना दण्डं दत्तवान् । जनैः पृष्टः च सः एवं उत्तरम् अददात्—

“समाजस्य एका व्यक्तिः विकार्यता—ग्रस्ता तिष्ठेत् । यदा समाजः तत्कृते किं अपि न कुर्यात् तदा व्यक्तिः दोषिणी न भूत्वा समाजः अपराधी भवति अहम् अपि तेषु अपराधिषु एकः अस्मि । अतः अहम् अपि आत्मानं दण्डितवान् । परन्तु रोटिका चौरः दण्ड—राशिं कुतः भरिष्यति? तस्य समीपे यदि इयन्ति एव रूप्यकाणि अभविष्यन् तर्हि सः चौर्यम् एव किम् अकरिष्यत्? अतः सः क्षम्यते ।

नहि कश्चित् जन्मना चौरः भवति । जनतान्त्रिकः सर्वकारः अपि इह स्वल्पदोषी न अस्ति । सः आत्मनः रीति—नीति सुधरयतु, अन्यथा बुभुक्षितः किं न करोति पापम्?

तत्र उपस्थिताः सर्वे अपि न्याय—श्रोतारः अनेन न्यायेन लज्जिताः इव सन्तः स्वं स्वं दण्ड—राशिं तत्कालम् एव दत्त्वा न्यायालयस्य गरिमां रक्षितवन्तः इति ।

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्षते निघर्षणं—छेदनम् तापताडनैः ।  
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते, त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ।

अर्थ— घिसने, काटने, तापने और पीटने इन चार प्रकारों से जैसे सोने का परीक्षण होता है, उसी प्रकार त्याग, शील, गुण एवं कर्मों से पुरुष की परीक्षा होती है ।

यो न हृष्यति न शोचति, न काङ्क्षति ।  
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः सः मम् प्रियः

अर्थ— जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ संपूर्ण कर्मों का त्यागी है— व भक्तियुक्त पुरुष मुझको प्रिय है ।





**उजाला कुमारी**

बी.ए. आनर्स संस्कृत, द्वितीय वर्षम्

## श्रमेव जयते

रामदासः नाराणपुरे निवसति। सः नित्यं ब्रह्मे मुहूर्ते उत्थाय नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति, ततः परं पशुभ्यः तृणं ददाति। अनन्तरं पुत्रेण सह सः क्षेत्राणि गच्छति। तत्र सः कठिनं श्रमं करोति। तस्य निरीक्षणेन च कृषौ प्रभुतम् अन्नम् उत्पद्यते। तस्य पशवः हृष्ट-पुष्टाङ्गाः सन्ति गृहं च धनधान्यादि पूर्णम् अस्ति। अत्रैव ग्रामे पैतृकधनेन धनवान् धर्मदासः निवसति। तस्य सकलं कार्यं सेवकाः सम्पादयन्ति। सेवकानाम् उपेक्षया तस्य पशवः दुर्बलाः, क्षेत्रेषु च बीजमात्रमपि अन्नं नोत्पद्यते। क्रमशः तस्य पैतृक धनं समाप्तम् अभवत्। तस्य जीवनम् अभावग्रस्तं जातम्। एकदा वनात् प्रत्यागत्य रामदासः स्वद्वारि उपविष्टं धर्मदासं दुर्बलं खिन्नं च दृष्ट्वा अपृच्छत्-मित्र धर्मदासः चिराद् दृष्टोऽसि! किं केनापि रोगेण ग्रस्तः येन एव दुर्बलः। धर्मदासः प्रसन्नवदनं तम् अवदत् “मित्र! नाहं रूग्णः परं क्षीणाविभवः इदानीम् अन्य एव सज्जातः। इदमेव चिन्तयामि केनोपायेन, मन्त्रेण-तन्त्रेण वा सम्पन्नः भवेयम्। रामदासः तस्य दारिद्र्यस्य कारणं तस्यैव अकर्मण्यता इति विचार्य एवं अकथयत्- “मित्र! पूर्वं केनापि दयालुना साधुना मह्यं एकः सम्पत्तिकारकः मन्त्रः दत्तः यदि भवान् अपि तं मन्त्रम् इच्छति तर्हि तेन उपदिष्टम् अनुष्ठानम् आचरतु”। “मित्र! शीघ्रं कथय तदनुष्ठानं येनाहं पुनः सम्पन्नः भवेयम्” रामदासः अवदत् “मित्र! नित्यं सुर्योदयात् पूर्वम् उतिष्ठ, स्वपशुनां च उपचर्या स्वयमेव कुरु, प्रतिदिनं च क्षेत्रेषु कर्मकराणां कार्याणि निरीक्षस्व। अनेन तव अनुष्ठानेन प्रसन्नः सः महात्मा वर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमन्त्रं दास्यति इति।” विपन्नः धर्मदासः सम्पत्तिम् अभिलषन् वर्षम् एकं यशोक्तं अनुष्ठानम् अकरोत्। नित्यं प्रातः जागरणेन तस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत्। तेन नियमेन पोषिताः पशवः स्वस्थाः सबलाः च जाताः। गावः महिस्यः च प्रचुरं दुग्धम् अयच्छन्। तदानीं तस्य कर्मकराः अपि कृषिकार्ये सन्नद्धाः अभवन् तस्मिन् वर्षे तस्य, क्षेत्रेषु प्रभुतम् अन्नम् उत्पन्नं, गृहं च धनधान्यपूर्णं जातम्। एकस्मिन् दिने प्रातः रामदासः क्षेत्राणि गच्छन् दुग्धपरिपूर्णपात्रं हस्ते दधानं प्रसन्नं मुखं धर्मदासम् अवलोक्य अवदत् अपि कुशलं ते, वधते किं तव अनुष्ठानम्? किं तं महात्मानं मन्त्रार्थम् उपगच्छाव?



**बृजेश कुमारः**

बी.ए. प्रोग्राम संस्कृत, तृतीय वर्षम्

## जननी-भूमि गरीयसी जो माँ कहलाती है

जननी-भूमि-गरीयसी जो माँ कहलाती है  
आह! उस मातृभूमि की व्यथा मुझसे देखी नहीं जाती है  
पुत्र जन्मोत्सव के थाल की गूँज सुनाई दे जाती  
पुत्री के मृत्यु की चित्कार कानों को सुनाई नहीं दे पाती  
सोलह संस्कारों से पुत्र की महिमा गाई जाती  
पुत्री को हथेली में लेते ही उसे गहरी नींद सुला दी जाती  
जननी-भूमि-गरीयसी जो माँ कहलाती है  
आह! उस मातृभूमि की व्यथा मुझसे देखी नहीं जाती है।

बेटों को स्कूल की कथा जोरों से कही जाती  
बेटी को सिर्फ घर की चारदीवारी दे दी जाती  
बेटे की जवानी खुले में दहाड़ती  
बेटी के लिए काल कोठरी बना दी जाती  
जननी-भूमि-गरीयसी जो माँ कहलाती है  
आह! उस मातृभूमि की व्यथा मुझसे देखी नहीं जाती है।

मुझे इस राजनीति की परिभाषा समझ में नहीं आती  
जन सेवक की धन सेवन से चाँदी होती जाती  
साथ में बने की दुकानदारी भी चल जाती  
लोकतंत्र की गरीमा लोकतंत्र में ही रह जाती  
जननी-भूमि-गरीयसी जो माँ कहलाती है  
आह! उस मातृभूमि की व्यथा मुझसे देखी नहीं जाती है।

धर्मनिरपेक्षता की भावना जगह-जगह दबा दी जाती  
संप्रदायिकता के नाम पर लोगों की बलि चढ़ा दी जाती  
सत्य मार्ग पर चलने पर सीबीआई लगा दी जाती  
जननी-भूमि गरीयसी जो माँ कहलाती है  
आह! उस मातृभूमि की व्यथा मुझसे देखी नहीं जाती है।



**गोलू कुमार:**

बी.ए. संस्कृत विशेष, प्रथम वर्षम् वास्तव मे विद्या मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य है। विद्या छिपा हुआ गुप्त धन है। विद्या भोग, यश और सुख को देने वाली है। विद्या गुरुओं के भी गुरु है। विदेश जाने पर विद्या आत्मीय बंधु है। विद्या सर्वश्रेष्ठ देवता है। राजाओं में विद्या ही पूजी जाती है न कि धन, विद्या से रहित मनुष्य पशु है।

प्रस्तुत श्लोक में विद्या मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्य है। अर्थात् विद्या से संपन्न व्यक्ति ही सुन्दर माना जाता है। क्योंकि उसकी बातचीत से ही उसकी विद्वता का पता चलता है। यह एक ऐसा धन है। जिसे कोई देख नहीं सकता इसलिए इसे छिपा हुआ गुप्त धन कहा जाता है। जिसे दिखाई नहीं देने के कारण कोई इसे चुरा नहीं सकता विद्या के द्वारा ही व्यक्ति श्रेष्ठ पद पर पहुँच जाता है। उसे धन कमाने में कोई असुविधा नहीं होती और वह सांसारिक भोगों का आनन्द प्राप्त करता है। तथा अत्यंत यशस्वी बनता है और विद्या के माध्यम से व्यक्ति सुखों को प्राप्त करता है। वास्तव में विद्या गुरुओं का भी गुरु है। क्योंकि व्यक्ति गुरु विद्या के माध्यम से ही बनता है। विदेश में जाने पर विद्या मनुष्य का आत्मीय बंधु है। अर्थात् व्यक्ति विदेश अकेले ही जाता है, पर विद्या के माध्यम से विदेश में भी उसके मित्र बन जाते हैं। या यह कहना चाहिए कि विद्या एक सच्चे मित्र के समान उस व्यक्ति के सारे सपने सिद्ध कर देती है। इस प्रकार विद्या सभी देवताओं में श्रेष्ठ मानी जाती है। यहाँ तक कि राजा भी विद्वानों का सम्मान करते हैं। जबकि धन के कारण राजा सम्मान का पात्र नहीं होता इसलिए विद्या से विहीन मनुष्य को साक्षात् पशु ही कहते हैं।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।  
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम्॥

विद्या से विनय (नम्रता) आती है। विनय से पात्रता आती है, पात्रता (सज्जनता) से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्ति होती है।

विद्या ही वह एकमात्र हथियार है जिसका इस्तेमाल करके हम दुनियाँ को बदल सकते हैं। जीवन में सुख की प्राप्ति के लिए विद्या को ग्रहण करना अति आवश्यक है। सभी को शिक्षा का अधिकार होना चाहिए।

सुखार्थिनः कुतोविद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम् सुखार्थी वा त्यजेद् विद्या विद्यार्थी वात्यजेत् सुखम्।

सुख चाहने वाले को विद्या प्राप्त नहीं हो सकती और विद्यार्थी को सुख नहीं मिल सकता सुख चाहने वाले को विद्या पाने की आशा छोड़ देनी चाहिए और विद्या चाहने वाले को सुख छोड़ देना चाहिए। अगर कोई विद्यार्थी सुख चाहता है तो कभी नहीं उसे विद्या प्राप्त होगी। इसे हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं। जैसे कोई व्यक्ति अपने प्रतिदिन का कार्य कर लेता है। वह अच्छे से पढ़ता है उसे जरूर विद्या प्राप्त हो सकती है।

सन्दर्भः इस सभी श्लोकों को लिखने का मुख्य उद्देश्य यह था कि अपने समाज को विद्या से परिचित कराना। क्योंकि विद्याहीन व्यक्ति एक पशु समान है। इस कारण हमारे समाज को विद्या से परिचित कराना मुख्य उद्देश्य बन जाता है। क्योंकि एक आदर्श समाज बनाने के लिए विद्या मुख्य भूमिका निभाता है और इस आधुनिक समाज की विद्या जाने और अपने समाज को उन्नत बनाए।



सूरज कुमार झा

बी.ए. आनर्स संस्कृत, प्रथम वर्षम्

## महामृत्युंजय मंत्रः

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

भावार्थः इस मन्त्र में उपमालंकार है। मनुष्य ईश्वर को छोड़कर किसी का पूजन न करें क्योंकि वेद से अविहित और दुःखरूप फल होने से परमात्मा से भिन्न दूसरे किसी की उपासना नहीं करनी चाहिए। जैसे कि फल पक कर समय के अनुसार लता से छूट कर सुन्दर और स्वादिष्ट हो जाता है वैसे ही हम लोग पूर्ण आयु को भोग कर शरीर को छोड़ के मुक्ति को प्राप्त हों और कभी मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनुष्ठान व परलोक की इच्छा से अलग न हो और कभी नास्तिक पक्ष को लेकर ईश्वर का अनादर भी न करे। जैसे मनुष्य व्यवहार के सुख के लिए या अन्न जल आदि की इच्छा करते हैं। वैसे ही हम लोग ईश्वर, वेद, वेदांत धर्म और मुक्त होने के लिए निरन्तर श्रद्धा करते रहते हैं।

## शान्ति पाठः

द्यौ शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः

शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः

शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओम्

भावार्थः शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में। शान्ति कीजिए। जल में थल में और गगन में, अन्तरिक्ष में, अग्नि में, पवन में, औषधि वनस्पति वन उपवन में सकल विश्व में जड़ चेतन में शान्ति कीजिए।

शान्ति राष्ट्रनिर्माण सृजन में, नगर ग्राम में और भवन में, जीवमात्र के तन में मन में और जगत के कण-कण में शान्ति कीजिए।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओम्



**काजल बिश्वाल:**

बी.ए. प्रोग्राम संस्कृत, तृतीय वर्षम्

## नीतिशतकम्

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।

ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति ॥

अर्थः अज्ञानी मनुष्य को समझाना सामान्यतः सरल होता है। उससे भी आसान होता है जानकार या विशेषज्ञ अर्थात् चर्चा में निहित विषय को जानने वाले को समझाना, किन्तु जो व्यक्ति अल्पज्ञ होता है, जिसकी जानकारी आधी-अधूरी होती है, उसे समझाना तो स्वयं सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के भी वश से बाहर होता है।

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात् समुद्रमपि सन्तरेत् प्रचलदुर्मिमालाकुलाम् ।

भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत् न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

अर्थः मनुष्य कठिन प्रयास करते हुए मगरमच्छ की दंतपंक्ति के बीच से मणि बाहर ला सकता है, वह उठती-गिरती लहरों से व्याप्त समुद्र को तैरकर पारकर सकता है, क्रुद्ध सर्प को फूलों की भांति सिर पर धारण कर सकता है, किन्तु दुराग्रह से ग्रस्त मूर्ख व्यक्ति को अपने बातों से संतुष्ट नहीं कर सकता है।

लभेत् सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन् पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ।

कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेत् न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

अर्थः कठिन प्रयास करने से संभव है कि कोई बालू से भी तेल निकाल सके, पूर्णतः जलहीन मरुस्थलीय क्षेत्र में दृश्यमान मृगमरीचिका में भी उसके लिए जल पाकर प्यास बुझाना मुमकिन हो जाता है और घूमते-खोजते अंततः उसे खरगोश के सिर पर सींग भी मिल जाता है, परन्तु दुराग्रह-ग्रस्त मूर्ख को संतुष्ट कर पाना उसके लिए संभव नहीं।

**दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतोऽपि सन् ।**

**मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ॥**

अर्थात्- विद्या के अलंकार से अलंकृत होने पर भी दुर्जन से दूर ही रहना चाहिए, क्योंकि मणि से भूषित होने पर भी क्या सर्प भयंकर नहीं होता।



**शिवांजय सिंह राठौर:**

बी.ए. प्रोग्राम संस्कृत, प्रथम वर्षम्

## चाणक्यनीति से शिक्षाप्रद श्लोक

### सच्चा मित्र

**आतुरे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रु-संकटे।**

**राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः॥**

अनुवाद: रोगी होने पर, दुःखी होने पर, अकाल पड़ने पर, शत्रु से संकट उपस्थित होने पर, किसी मुकदमे आदि में फँस जाने पर गवाह एवं सहायक के रूप में राजसभा में और मरने पर जो श्मशान में भी साथ देता है, वही सच्चा बन्धु है।

### स्वर्ग

**यस्य पूत्रो वशीभूतो भार्या छन्दाडनुगामिनी।**

**विभवे यश्च सन्तुष्टस्य स्वर्ग इहैव हि॥**

अनुवाद: जिसका पुत्र वश में है, स्त्री आज्ञानुसार चलने वाली है, धन की जिसके पास न्यूनता नहीं है ऐसे मनुष्य के लिए इसी संसार में स्वर्ग है।

### त्यागने योग्य मित्र

**परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।**

**वर्जित्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम्॥**

अनुवाद: जो मुख पर तो चिकनी-चुपड़ी बातें बनाये और पीठ पीछे कार्य को बिगाड़ दे, ऐसे मित्र को त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह तो उस घड़े के समान है जिसके ऊपर तो दूध लगा हो और भीतर विष भरा हो।

### सन्तानों के महाशत्रु

**माता शत्रुः पिता बैरी येन बालो न पाठितः।**

**न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥**

अनुवाद: वे माता और पिता अपने सन्तानों के महाशत्रु हैं, जिन्होंने उनको उत्तम शिक्षा नहीं दिलाई, क्योंकि वे विद्याहीन बालक विद्वानों की सभा में ऐसे ही तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं, जैसे हंसों के मध्य में बगुला।

### सर्प तथा शत्रु में श्रेष्ठता

**दुर्जनस्य च सर्पस्य वरं सर्पो न दुर्जनः।**

**सर्पो दंशति कालेन दुर्जनस्तु पदे-पदे॥**

अनुवाद: दुर्जन और सर्प—इन दोनों में सर्प अच्छा है, दुर्जन नहीं क्योंकि साँप तो काल आने पर ही काटता है परन्तु दुर्जन पद-पद पर हानि पहुँचाता है।

### अति

**अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः।**

**अतिदानं बलिर्दत्त्वा अति सर्वत्र वर्जयेत्॥**

अनुवाद: अत्यधिक सुन्दरता के कारण सीता का हरण हुआ, अत्यंत गर्व के कारण रावण मारा गया, बहुत अधिक दान देने के कारण राजा बलि को बन्धन में बँधना पड़ा—इन सब दृष्टान्तों को देखकर सर्वत्र 'अति' को छोड़ देना चाहिए।



**विशालः**

बी.ए. आनर्स संस्कृत, द्वितीय वर्षम्

## अचिन्त्यभेदाभेद दर्शनम्

दर्शन सिद्धान्त धर्म का एक महत्वपूर्ण व तात्विक दृष्टिकोण है। अनेक धर्म मार्ग प्रदर्शक आचार्यों न अपने-अपने सिद्धान्त के अनुसार दर्शन प्रस्तुत किए हैं। जिसमें शुद्धाद्वैत-श्री बल्लभाचार्य जी, विशिष्टाद्वैत-श्री शंकराचार्य जी, शुद्धाद्वैतवाद - मध्वाचार्याजी एवं द्वैत -अद्वैतवाद श्री निम्बार्काचार्य जी ने प्रस्तुत किया।

वही लगभग 550 वर्ष पूर्व भक्तिकाल में प्रकट श्रीमन चैतन्य महाप्रभु जी के मार्ग में भजन रत श्री जीव गोस्वामी चरण ने वेदों एवं सर्व शास्त्रों का मंथन करते हुए एक अलौकिक दर्शन का प्रस्तुतिकरण किया। जो अचिन्त्य भेदाभेद नाम से विख्यात हुआ। अपने षड् सन्दर्भों में से भगवत सन्दर्भ में बृहद रूप से इस दर्शन का उन्होंने अलौकिक निरूपण किया।

जीव, जड़, जगत एवं माया, ईश्वर, संसार, इन सभी विषयों का वर्णन एवं शास्त्र सम्मत सिद्धांतों को प्रकट किया।

ईश्वर से जीव अभेद है एवं भेद भी है। इसे ही भेदाभेद कहा गया। शास्त्रों के अनुसार जीव में जितने भी गुण विद्यमान है वह सभी ईश्वर के ही गुण हैं। श्रीमद् भागवत् में श्रीकृष्ण के षड् ऐश्वर्य का वर्णन आता है। वही षड् ऐश्वर्य के गुण जीव मात्र में भी विद्यमान है।

परंतु यह षड् ऐश्वर्य संपूर्णता से विद्यमान जीव में नहीं होते। इसलिए वो परमेश्वर श्रीकृष्ण से भेद भी दिखाता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है, जैसे एक जलती हुई अग्नि से एक चिंगारी निकलती है। वह चिंगारी उस अग्नि का ही अंश है। जिस प्रकार अग्नि में ऊष्णता है उसी प्राकर उस अग्नि से निकली हुई चिंगारी

में भी ऊष्णता है, परंतु ऊष्णता के प्रभाव, बल, सामर्थ्य एवं शक्ति में अनेकानेक गुणा अंतर है। लेकिन अग्नि के सभी गुण उस अग्नि से निकली हुई चिंगारी में भी विभाजित है। इसी प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के अंशमात्र होने पर हर एक जीव मात्र में उनके गुणों का प्रदर्शन होना संभव ही है, लेकिन स्वयं में जीव का श्रीकृष्ण ही हो जाना बिल्कुल अनुचित सिद्ध होता है। इसलिए यह दर्शन का तत्व भेदाभेद कहलाता है।

श्री कृष्ण ही सर्वकारण कारण होकर सदा विराजित है। ब्रह्म सहिता श्लोक संख्या 1) उनकी शक्ति तीन प्रकार की होकर विद्यमान है। अंतरंगा, बहिरंगा एवं तटस्था। अंतरंगा शक्ति हलायिनीशक्ति श्री राधा हो एवं बहिरंग शक्ति समस्त संसार, जो माया का विस्तार है एवं समस्त जीव सृष्टि तटस्था शक्ति का स्वरूप है। जिसमें जड़ एवं चेतन दोनों की ही सृष्टि है। जड़, जीव एवं जगत श्रीकृष्ण की इन्हीं तीनों शक्तियों से संचालित है। ईश्वरः परमःकृष्ण सच्चिदानंद विग्रह।

अनादिशदि गोविंद सत्रकारण कारणम्।।

अचिन्त्य भेदाभेद सिद्धांत के अनुसार श्रीकृष्ण से जीव का भेद और अभेद दोनों ही है। साथ ही श्रीकृष्ण से जगत का भी भेद एवं अभेद सत्य है।

मानवबुद्धि के सीमित होने के कारण उसके द्वारा इस भेदाभेद को समझा नहीं जा सकता। इसलिए भेदाभेद को अचिन्त्य कहा गया है।

श्री जीव गोस्वामी जी ने स्वरचित भगवत सन्दर्भ में, भगवत तत्व के विचार प्रसंग में लिखा है—

“एकमेव तत् परमे तत्त्वं स्वाभाविकाचिन्त्यशक्त्या सर्व दैव स्वरूप तद्रूप वैभवं जीव प्रधानरूपेण चतुर्द्विविष्टते सूर्यान्तर मण्डल, तद्वहिरगत तप्रस्मि, तत्प्रतिच्छवि रूपेण।

अर्थात् परमतत्व एक है। वे स्वाभाविक अचिन्त्य शक्ति से संपन्न है। उसी शक्ति से वे सदैव चार रूपों में विराजमान है: 1) स्वरूप 2) तद्रूपवैभव 3) जीव और 4) प्रधान।

### अचिन्त्या खलुं ये भावा न तास्तकैव याजयेत

अर्थात् अचिन्त्या वस्तु में तर्क नहीं होता। अचिन्त्य शब्द का तात्पर्य ब्रह्म सूत्र में इस प्रकार का दिया गया है।

श्रुतेस्तु शब्दमूलात् (ब.सू. 2/1/28)

इसी विषय में शंकराचार्य ने भी उक्त सूत्र को अपनी भाषा में स्वीकार किया है। वही श्रीधर स्वामी एवं गौडीय आचार्य श्रीमद् जीव गोस्वामी चरण के मत में “अचिन्त्य” शब्द का अर्थ शब्द मूलक श्रुत अर्थ—आपत्ति—ज्ञान—गोचर है।

(भागवत सन्दर्भ 16 अनुच्छेद)

मध्वाचार्य ने ब्रह्म तर्क नामक ग्रन्थ में लिखा है:

“ विशेषस्य विशिष्टस्याप्यभेदस्त द्वेदेवतु ।  
सर्व चाचिन्त्यशक्तिवाद युज्यते परमेश्वरे ॥  
तच्छक्त्यैव तु जीवेषु चिद्रूप प्रकृतावपि ।  
भेदाभेदौ तदन्यत्र ह्युभयोरपि दर्शनात् ॥  
कार्यकारणयोश्चापि निमित्तं कारणं विना ।  
इति ब्रह्मतर्के

अर्थात् कर्तुम्, अकर्तुम् और अन्यथा कर्तुम् समर्था भगवान् श्रीकृष्ण, अचिन्त्या शक्ति से युक्त होने के कारण उक्त सभी उनमें संभव है। परमेश्वर की अचिन्त्याशक्ति के द्वारा चिद्रूप का जीवों और प्रकृति के साथ भेद और अभेद संबंध है। क्योंकि चिद्रूप का जीव और प्रकृति के साथ भेद और अभेद दोनों ही देखा जाता है।

अतएव जिस प्रकार कार्य कारण का भेदाभेद संबंध है, उसी प्रकार कारण स्वरूप परमेश्वर श्रीकृष्ण के सत्य कार्य स्वरूप जीव और प्रकृति का भेदाभेद संबंध है। अचिन्त्याभेदाभेद दर्शन पूर्णत वैष्णव दर्शन से जो अद्वैतवाद एवं द्वैतवाद दोनों को ही एक ही समय पर मानता है परंतु दोनों सिद्धांत विरुद्धधर्मी होने के कारण अगोचर व बुद्धि के सरलतम् विषय से परे है इसलिए इसे अचिन्त्य घोषित किया गया।

इति अचिन्त्याभेदाभेद दर्शनम् ॥

## संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्

संस्कृतभाषा संसारस्य प्राचीनतमा मुख्या च भाषा अस्ति। संस्कृत भाषा एव देववाणी देवभाषा, गीर्वाणवाणी इत्यादिभिः नामभिः व्यवहरते। संस्कृतस्य साहित्यम् अति विशालतम् अस्ति। संस्कृत भाषा सरला, मधुरा, परिष्कृता च अस्ति। इयमेव भाषा समस्त भारतम् एक सूत्रे बध्नाति। अनेकाः ग्रन्थाः अस्मिन् भाषायां एव सन्ति।



आरती

बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्षम्

बहूनां भारतीयानां तथा अभारतीयानां भाषाणां जननी संस्कृत भाषा। बहवः विद्याग्रन्थाः संस्कृते रचिताः। पूर्वम एषा व्यवहार भाषा अपि आसीत्। इदानीम् अपि बहवः भारतीयाः संस्कृतमाध्यमेन वदन्ति लिखन्ति च। संस्कृत भाषायां चत्वारः वेदाः सन्ति ऋग्वेदः यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदः च।

वैदिकसाहित्यस्य अन्येऽपि ग्रन्थाः संस्कृतभाषायामेव सन्ति। यथा— ब्राह्मणग्रन्थाः, आरण्यकाः वेदाङ्ग, षड्दर्शनानि, उपनिषदः। महाकाव्यं, खण्डकाव्यम्, इतिहासः, तत्त्वज्ञानं, सङ्गीतं, राज्यशास्त्रम् इति नैके विषयाः अस्या भाषायां पूर्वं प्रकलिताः। वाल्मीकि विरचितं रामायणम्, व्यास रचितं महाभारतम्, कविकुलशिरोणिकालिदासेन विलिखितम् अभिज्ञानशाकुलतम् च संस्कृतभाषायाः गुणगौरवं महत्त्व च प्रकटयन्ति। अतः एषा ज्ञानभाषा इति वक्तुं युज्यते खलु।

वाल्मीकिः, व्यासः, कालीदासः अन्ये चेति अनेके प्रसिद्धाः कवयः संस्कृतस्य श्री वृद्धिम् अकुर्वन्। संस्कृत साहित्यस्य अध्ययनेन सद विचाराः स्वयमेव उत्पदान्ते। पुरा सर्वे जनाः संस्कृत भाषायाम् एव वदन्ति स्म। भारतीयसंस्कृतेः एकः प्रमुखः आधारः संस्कृतभाषा। अतः वदन्ति विद्वज्जनाः विना संस्कृतं नैव संस्कृतिः धन्या एषा भाषा। अतः अस्याः सम्वर्धनाय वयं प्रयत्नशीलाः भवेम ॥



**रोहित कुमार:**

सहायक आचार्यः, संस्कृत विभागः

## संस्कृत में विज्ञान विषयक कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

विश्व के प्राचीनतम ज्ञान का संचित कोश वेद में निहित है। वेद विश्व संस्कृति के आधारस्तंभ तथा समस्त ज्ञान के भंडार हैं। विल्सन, मैक्समूलर और कीथ जैसे पाश्चात्य विद्वानों ने भी इसमें संचित ज्ञान के बारे में बहुत कुछ कहा है। वेद और उसके बाद का संस्कृत साहित्य मानव जाति के लिए जीवन प्रक्रिया का आधार है। आधुनिक एवं साधन समर्थ विश्व में जितने भी ज्ञान विज्ञान की बातें मिलती हैं। जो भी कला एवं विधाएं हैं उन सब का मूल वेदों में विद्यमान है। इसलिए भगवान मनु ने मनुस्मृति में कहा है— सर्वज्ञानमयो हि सः। मनुस्मृति— 2.7

अर्थात् वेद सम्पूर्ण ज्ञान का भंडार है। इसी बात को केन्द्र में रखकर हमने यह तथ्य संकलित करने का प्रयास किया है। जिससे अन्य विभाग के प्राध्यापक और अंकुर को पढ़ने वाले समस्त छात्र, समस्त बौद्धिक संपदा का मूल उस वेद को स्वीकार कर सकें। ज्ञान विज्ञान के इस मूल स्रोत के परिशीलन से ज्ञात होता है कि तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवेश में विज्ञान विद्यमान था। आइए बिन्दु बार उन तथ्यों को देखें—

- संस्कृत दुनियां की प्राचीनतम भाषा ही नहीं, अपितु संसार के ज्ञान-विज्ञान और अनुसंधान का अक्षय स्रोत है।
- प्राचीन भारत के प्रसिद्ध गणितज्ञ और ज्योतिषी भास्कराचार्य द्वितीय ने गुरुत्वाकर्षण शक्ति की खोज की थी।
- संसार में सर्वाधिक चिंतन मनन संस्कृत की दर्शन परंपरा में हुआ है। इसी दर्शन परंपरा में महान दार्शनिक कपिलमुनि ने सांख्य दर्शन का प्रतिपादन किया।

- ऋषि कणाद वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक थे। उन्होंने भौतिक विज्ञान पर भी काम किया और उनका परमाणु आविष्कार प्रसिद्ध है।
- जो विपुल ज्ञान भंडार संस्कृत में है, उसे देश की प्रगति और मानवता के कल्याण के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।
- संस्कृत में विद्वानों ने ईसा के तीन सौ वर्ष पूर्व रक्त प्रभाव आदि के संबंध में अपनी विशिष्ट व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं।
- सदियों पहले जो ज्ञान और विज्ञान दुनियां में फैला या ज्ञात हुआ, वह प्राचीनतम काल से हमारी संस्कृत परंपरा में विद्यमान था।
- संस्कृत के आयुर्वेदाचार्यों ने शरीर का सूक्ष्म से सूक्ष्म अध्ययन अपने ग्रंथों में प्रस्तुत किया है, जिसे अभी 'पोस्टमार्टम' कहा जाता है।
- संपूर्ण दुनियां में सुश्रुत को 'शल्य-चिकित्सा' का जनक माना जाता है, उन्होंने ही त्वचारोपण (प्लास्टिक सर्जरी) की शल्य क्रिया का विकास किया।
- प्राचीन भारत की जो चिकित्सा संपदा है, उसी को चरक ऋषि ने आयुर्वेद कहा है। इसी को उन्होंने अपनी 'चरक-संहिता' में विस्तृत रूप से प्रतिपादित किया है।
- वैदिक ऋषियों द्वारा प्राकृतिक वातावरण पर विस्तृत चिंतन किया गया है, जिसमें प्रकृति संवर्धन, संरक्षण, प्रकृति के साथ समन्वय, मौसम परिवर्तन की चुनौतियां आदि शामिल हैं।
- दुनियां में जो गणित है, जो रेखा गणित और ज्यामिति है, इसका पर्याप्त विकास सबसे पहले दुनियां में हुआ तो वह वैदिक युग में भारत में हुआ।
- वैदिक काल के लोग खगोल-विज्ञान का पर्याप्त ज्ञान रखते थे और संस्कृत भाषा से यह ज्ञान पूरी दुनियां ने लिया।
- वैदिक भारतीय वैज्ञानिकों को सत्ताईस नक्षत्रों का ज्ञान था। उनमें वर्ष, महीने और दिन के रूप में समय का विभाजन करने की पूरी ताकत और क्षमता थी।
- आचार्य लगध नाम के ऋषि वैज्ञानिक ने लगभग 1352 ईसा पूर्व में 'ज्योतिष वेदांग' में तत्कालीन खगोलीय ज्ञान को व्यवस्थित किया था।
- भारत के प्राचीन गणितज्ञ बोधायन ने लगभग 1200 ईसा पूर्व में जिस प्रमेय की व्याख्या की है, उसको आज सारी दुनियां स्वीकार करती है।



- महान ज्योतिर्विद और गणितज्ञ आर्यभट्ट भी इसी धरती पर पैदा हुए और संस्कृत-संस्कृति को उन्नत किया। आर्यभट्ट ने 400 ईस्वी में दशमलव दिया।
- महर्षि भारद्वाज ने विश्व में सर्वप्रथम विमान विद्याविषयक ग्रंथ की रचना की थी, जिस पर दुनियां की विशिष्ट संस्थाओं द्वारा बहुत सारे अनुसंधान और शोध किए जा चुके हैं।
- वैदिक काल में भारत में बीजगणित, ज्यामिति, रेखागणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और खगोल शास्त्र आदि का विकास उत्कर्ष पर था।
- भारत के ऋषि-मुनि और आचार्य उस समय के महान वैज्ञानिक थे।
- आचार्य चाणक्य द्वारा प्रतिपादित 'अर्थशास्त्र' दुनियां का सर्वोत्तम ग्रंथ है, जिस पर दुनियांभर में शोध हुए और आज भी हो रहे हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से सिंधु घाटी के लोगों की वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोगों के प्रमाणों से संस्कृत भाषा की प्राचीनता और समृद्धता का पता चलता है।
- अनेक खोजें, आविष्कार न केवल देश में, बल्कि पूरी दुनियां में संस्कृत में ही हुए हैं।
- संस्कृत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संस्कृत भाषा में ज्ञान और विज्ञान का असीम भंडार हैं।
- ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र में जितने ग्रन्थ संस्कृत में लिखे गए हैं, उतने किसी भी प्राचीन भाषा में प्राप्त नहीं होते।
- संस्कृत वाङ्मय बहुत विशाल है। यहाँ प्रत्येक विषय से सम्बद्ध ग्रन्थों की संख्या इतनी अधिक है कि उनका सम्यक् ज्ञान करना आजीवन अध्ययन करने वाले व्यक्ति के लिए भी कठिन है।
- विज्ञान की प्रत्येक विधा का मूल स्रोत संस्कृत में निहित है।
- पश्चिम में संस्कृत की वैज्ञानिकता को गम्भीरता से लिया गया है। इंग्लैण्ड व अमेरिका में वैदिक गणित को शिक्षा के पाठ्यक्रम का अंग बना दिया गया है।
- संस्कृत धर्मग्रंथों एवं पूजा-पाठ की कठिन भाषा है, इसका विज्ञान के साथ तालमेल नहीं है, इन सभी पूर्वाग्रहों को संस्कृत से दूर करना जरूरी है।
- संस्कृत के विद्वानों को चाहिए कि वे लोगों को संस्कृत की सरलता व वैज्ञानिकता के बारे में समझायें।
- ब्रिटेन व जापान के विद्यालयों में संस्कृत को इसलिए अनिवार्य किया गया कि संस्कृत गणित के बाद कम्प्यूटर की सबसे उपयुक्त भाषा है।
- संस्कृत केवल एक भाषा नहीं अपितु सदियों से समाज को ज्ञान और संस्कारों से पोषित/समृद्ध कर रही भारत की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।
- संस्कृत भाषा में रचित ग्रन्थों में मौजूद ज्ञान को केवल संस्कृत के अध्येताओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए।
- आज सारी दुनियां आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा की ओर आकर्षित हो रही है। आयुर्वेद, योग और चिकित्सा पद्धतियों का अनमोल साहित्य संस्कृत में मौजूद है।
- संस्कृत में निहित ज्ञान को महर्षि पाणिनी, महर्षि कात्यायन तथा योगशास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि ने संस्कारित किया है।
- महर्षियों ने बड़ी कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया, यही इस भाषा की विशेषता और रहस्य है। संस्कृत की वैज्ञानिकता पूरी दुनियां में प्रमाणित हो चुकी है।
- भूमंडलीकरण के इस युग में संस्कृत भाषा और उसके साहित्य में छिपे अथाह ज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन व शोध नितान्त आवश्यक है।
- संस्कृत भाषा के डिजिटिजेशन की तकनीक जैसे-जैसे विकसित होती जायेगी, वैसे-वैसे वैश्विक स्तर पर संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों पर शोध का महत्व और अधिक बढ़ेगा।
- संस्कृत भाषा में रचित हमारे पवित्र वेद-पुराण, उपनिषद, रामायण तथा भगवद्गीता जैसे महाग्रन्थों में निहित ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के कारण ही भारत विश्व गुरु बना है।
- ईश्वर एक है के विषय में जितना विस्तृत और स्पष्ट वर्णन वेदों में किया गया है, उतना विश्व के किसी ग्रन्थ में नहीं है।
- मूल रूप में संस्कृत में रचे गए वेदों का अनुवाद विश्व की 133 भाषाओं में हो चुका है।



**डॉ. राजेश कुमार:**

अतिथि प्राध्यापकः, संस्कृत विभागः

## कोरोना काल में श्रीमद्भगवद्गीता

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय विचारधारा का अत्यंत महत्वपूर्ण लोकप्रिय दार्शनिक, धार्मिक एवं नैतिक ग्रंथ है। हम सब जानते हैं यह महाभारत के भीष्म पर्व का एक भाग है। भारतीय जनमानस में इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। गीता के सम्बंध में समय समय पर अनेक प्रश्न उठते रहें हैं। इसके सैकड़ों व्याख्याकारों में भी अनेक तरह की मतभिन्नता रही है। फिर भी इसकी लोकप्रियता में कोई कमी नहीं हुई। गीता एक पथ प्रदर्शक के रूप में ज्ञान, कर्म और भक्ति के रहस्यों को समझाकर मनुष्य को कर्म क्षेत्र में वास्तविकता के धरातल पर ला देती है। इसके उपदेष्टा एक कर्मयोगी, तपस्वी, महात्मा, राजनीतिक नेता है, और अधर्म का नाश करने वाला एवं धर्म की स्थापना के लिए युग-युग में अवतार लेने वाले भगवान कृष्ण हैं।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। गीता, 4.7

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को जीवन के सबसे कठिन समय में उपदेश देते हैं। कोरोना काल हमसबके लिए, परिवार, समाज, देश और विश्व के लिए सबसे कठिन समय है। कुरुक्षेत्र में पाण्डव और कौरव पक्ष की सेनाएँ सामने खड़ी हैं। युद्ध प्रारंभ होने को है। अर्जुन दोनों सेनाओं के मध्य में जाकर दोनों ओर युद्ध के लिए तैयार पारिवारिक जनों को देखकर मोहग्रस्त हो जाता है, और अपने कर्तव्य को छोड़कर युद्ध न करने की घोषणा कर देता है। वह इस विषम परिस्थिति में क्या करना चाहिए वह निश्चय नहीं कर पाता? उसी प्रसंग में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया है। अर्जुन को कर्तव्य बोध कराने

के लिए जो उपदेश तीन हजार साल पहले दिया गया था वह 2020 के कोरोना काल में करोड़ों भारतीयों को सन्मार्ग पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। अचानक लगे लॉकडाउन के बाद हर कोई घरों में कैद हो गया। संचार के लिए सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ही बचें थे। भय और अशांति से विचलित समस्त राष्ट्र को एक बार फिर से सहारा दिया। संकट के समय व्यक्ति धर्म का आश्रय लेता है। 22 मार्च 2020 के देशव्यापी लॉकडाउन के बाद दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत का पुनः प्रसारण किया गया। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि रामायण और महाभारत ने 30 वर्ष के बाद टीआर पी चार्टर्स में शीर्ष पर रहते हुए विश्व में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले शो का रिकॉर्ड बनाया। 16 अप्रैल को प्रसारित एपिसोड को तो 7 करोड़ लोगों ने देखा। गाँव से ज्यादा लोगों ने शहरों में रामायण और महाभारत को देखा। शहरों में कोरोना का कहर ज्यादा था। दिल्ली मुम्बई जैसे महानगरों की स्थिति भयावह है। बहरहाल, यहाँ कोरोना की विभीषिका के बदले गीता का महात्म्य वर्णन करना है इसलिए हमने देखा की गीता प्रेस की श्रीमद्भगवद्गीता की सर्वाधिक डिमांड रही। हजारों लोगों ने उसकी श्रीमद्भगवद्गीता को डाउनलोड करके पढ़ा और अनलॉक होने पर गीताप्रेस की भगवद्गीता सहित सभी महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ आरूट ऑफ प्रिंट हो गए। हम सब ने पिछले 10-15 वर्षों में यह भी देखा है कि हर समस्या के समाधान के लिए गीता को चुनना एक फैशन बन गया है लेकिन इस कोरोना काल में हमने यह देखा कि गीता जरूरी और मजबूरी है। तनाव और अवसाद के मामले अचानक से बढ़े। हजारों लोगों



की नौकरी चली गई। कोरोना महामारी बीमारी के भय से हर कोई भयभीत हो गया। कॉलेज के विद्यार्थियों को भविष्य की चिन्ता सताने लगी। परीक्षा कब होगी, परीक्षा कैसे होगी, परीणाम कैसे आएंगे? इसको लेकर छात्रों में तनाव होने लगा, उस तनाव को दूर करने के लिए और इम्यूनिटी पॉवर को बढ़ाने के लिए हर कोई योग के एकाध आसन और प्रणायाम में अनुलोम विलोम करने लगा। उस परिस्थिति में हमने देखा कि गीता के दूसरे अध्याय में कई श्लोक योग को लेकर कहें गए हैं।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।  
सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।

गीता, 2.48

भगवान् अर्जुन को कहते हैं— हे धनंजय ! तुम योग में स्थित होकर, फल की अभिलाषा छोड़कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान रहकर कर्मों को करो। यह सिद्धि और असिद्धि में समता ही योग कहा जाता है। इसी संदर्भ में आगे यह भी कहा गया है कि—

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।  
तस्माद्योगाय युजस्व योगः कर्मसु कौशलम् । गीता, 2.50

भगवान् कहते हैं— कर्मों में समत्वबुद्धि से युक्त पुरुष सत्वशुद्धिज्ञानप्राप्ति द्वारा पुण्य और पाप दोनों का परित्याग कर देता है, इसलिए तुम बुद्धि योग के लिए प्रयत्न करो। यह कर्मों में समत्वरूप योग महान् कौशल है। इस तरह के कई संदर्भ गीता से योग के लिए कहे जा सकते हैं। इसलिए स्वस्थ जीवन के लिए योग को जीवनचर्या का भाग बनना ही पड़ेगा।

श्रीमद्भगवद्गीता में कई बार कर्म की अनिवार्यता के बारे में कहा गया है। कर्म प्राणी मात्र का स्वभाव है। प्रत्येक जीव अपने जीवनकाल में निरंतर कर्म करता रहता है। जीवन के साथ ही कर्म सम्बद्ध रहता है इसलिए कहा है—

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।  
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणः । गीता, 3.5

कोई भी पुरुष क्योंकि एक क्षण भी कदाचित् कर्म किए बिना नहीं रह सकता, कारण कि प्रकृति जन्य सत्त्वादि गुण अथवा स्वभाविक गुण राग द्वेषादि सभी से जबरदस्ती कर्म कराते रहते हैं। इसलिए गीता का आदेश है कि कर्म करते रहें।

**यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।  
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥**

अर्थात्- श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण यानी जो-जो काम करते हैं, दूसरे मनुष्य (आम इंसान) भी वैसा ही आचरण, वैसा ही काम करते हैं। वह (श्रेष्ठ पुरुष) जो प्रमाण या उदाहरण प्रस्तुत करता है, समस्त मानव-समुदाय उसी का अनुसरण करने लग जाते हैं।



**सौरभ सक्सेना**

स्नातक संस्कृत विशेष, तृतीय वर्ष

## माँ वैष्णोदेवीधाम यात्रा वृत्तांत

जागने के लिए मुर्गे की कूकडूकू या घड़ी का अलार्म नहीं अपितु मोबाइल की कंपन सुनाई दी। कितना सुकून था उन आँखों में जो देर तक सोने का कठिन उद्देश्य, पूर्ण कर खुली हो। निस्संदेह दिन की शुरुआत तभी हुई होगी। सूर्योदय-सूर्यास्त तो महज अप्रभावित घटनाएँ हैं।

उठाया तो पता चला कि गजोधर है। स्नातक के अंतिम वर्ष तक हम साथ हैं। चूँकि कक्षाएँ ऑनलाइन माध्यम से अपना दायित्व निभा रही थी तो मित्र-मिलाप कई माह से ठप पड़ा था। जीवन यथावत बढ़ रहा था पर आनंद संकुचित होने लगा था कि सहसा आवाज आई, "अब तक सो ही रहा है क्या?"

"हम्म" की ध्वनि से प्रतिक्रिया भेजी।

"पैकिंग कर ले" उसकी आवाज में उत्सुकता थी। उसकी उत्सुकता ने मुझे जिज्ञासु होकर यह पूछने के लिए कि, "कहाँ की पैकिंग और कहाँ जा रहे हैं?" विवश कर दिया।

"माँ वैष्णो धाम"।

यह सुनते ही काया में जो उर्जा का संचार हुआ, हृदय में घंटियों की ताल बजने लगी और मस्तिष्क में मैया के जयकारे स्वतः फूट पड़े।

"क्या?, कब?, और कौन-कौन हैं?, कैसे जाना है? यह योजना कब बनाई।" इत्यादि प्रश्नों का सैलाब कंठ से बाहर आया और उत्तर मात्र यह आया कि "टिकट बुक हो गई है", इकतीस को जाना है।" और इतना कहकर उसने फोन काट दिया। अब पैकिंग जोर-शोर पर थी

और खरीदारी ताबड़तोड़। कब इकतीस तारीख आ पहुँची पता न चला। गंतव्य स्थान का चयन इतना आस्थामयी था कि स्वजनों की नामंजूरी का तो प्रश्न ही नहीं था। अतिरिक्त इसके अपने पडोस से आस्था के नाम पर माता को भेंट चढ़ाने के लिए उनकी श्रद्धा भी लिए जा रहा था। सबकुछ इतना आकर्षक लग रहा था मानो माँ वैष्णो स्वयं पथप्रदर्शित कर रहीं हो। इसलिये यह उक्ति प्रचलित भी बहुत है कि, "माता का बुलावा आता है तब जाना ही पड़ता है।"

पुरानी दिल्ली स्टेशन पर सभी मित्र प्रतीक्षा में थे और ट्रेन रात 10 बजे अपने समय से जम्मू तवी के लिए रवाना होनी थी।

स्टेशन पहुँचने पर सभी मित्रों एवं सखियों से मुलाकात हुई। हमारी इस सहयात्रा में राम दुलारी, राम प्यारी, गजोधर, सफेदा और साक्षात "मैं" भी सम्मिलित था। यात्रा का आनंद हमारे मिलने से ही प्रारंभ हो गया। हँसी-ठिठोली का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। कभी एक पंच दायीं तरफ से आता तो कभी बायीं तरफ से। वातावरण में आशावादी हवाएँ बहने लगीं थी। तत्पश्चात हम सभी ने अपनी सीटें ग्रहण की और ट्रेन के शीघ्र चलने कि आस लगाकर बैठ गये। ट्रेन के चलने से लगे शुरुआती मद्धम धक्के का सुख हम सभी के हर्ष का एक और हेतु बना। अब ट्रेन सच में "छुक-छुक-छुक-छुक" कर रपतार पकड़ने लगी। अब "सोने पर सुहागा" मुहावरे के सिद्धि करण का समय आ चुका था। "म से, म-म-से गाओ"। गीत की प्रतियोगिता आस-पास बैठे यात्रियों के लिए मनोरंजन का विषय बन गयी। अब स्वरों में एकतान गूँज उठी और सभी आनंद से ओत-प्रोत हो गये।

जनवरी माह की रात काली और काफी सर्द थी, ट्रेन भी गतिमान थी और धीरे से आँखों में नींद की छाया अब सभी को घेरने लगी। बारी-बारी से नींद और सामान की पहरेदारी की साझेदारी हम सभी मित्रों ने मिलकर उठाई। सवेरा होने ही वाला था और सूर्योदय नई किरणों से हमारे स्वागत के लिए तैयार हो गया। अब जम्मू तवी स्टेशन पर उतरते ही सूर्य की लालिमा से स्टेशन रोशन हो गया और पहला पड़ाव भी इसी के साथ पूर्ण हुआ।

स्टेशन पर कोरोना जाँच की उचित व्यवस्था सेनाबल युक्त थी। चूँकि यह टेस्ट हम सभी के लिए अनिवार्य था, सो हुआ भी पर परिणाम माता के बुलावे से पोषित था और फलस्वरूप रिपोर्ट ऋणात्मक हमारे पक्ष में हुई। राहत का सामूहिक श्वास हम सभी ने निश्चिंतता के साथ लिया। आगे कटरा के लिए बस से यात्रा सुनिश्चित थी पर एक महत्वपूर्ण पदार्थ का सेवन इन सर्द दिनों के लिए तृष्णा से परिपूर्ण था। “सूड-सूड-सूड-सूड”, वाह! गर्मा-गर्म, बस में बैठे गजोधर की चुस्कियों के स्वर प्रतिध्वनित हो गये। मित्रगण संतुष्ट हुए कि अनवरत “बोलो चोटी वाली मैया कि”.... “जय” ( समस्त यात्रीगण एकस्वर में)। ऐसे जयकारे समय-समय पर मैया पर आस्था के अस्तित्व का परिचय देते रहें। जम्मू तवी से कटरा के लिए घुमावदार पर्वतीय स्थलाकृतियों के शीखरीय दृश्यों ने, आँखों में और चरम ऊँचाई पर जाने की लालसा को घोर उत्सुकता युक्त कर दिया। राम दुलारी- राम प्यारी की आँखों में बर्फ की आशाओं को भली-भाँती देखा जा सकता था। इन्हीं अभिलाषाओं के बीच बस कटरा पर जा पहुँची। सामानसहित हम रोड पर स्थिर हो गये। “भाई साहब यहाँ आईये, हम आपको होटल दिखाते हैं।

“केसर-हिंगोली लेलो”, “चाय-बोलो-चाय-चाय- चाय, चाय-बोलो-चाय-चाय-चाय”, “भाई साहब खच्चर लेलो 600 रुपये प्रति व्यक्ति एक चढ़ाई।” ध्वनियों के वैकल्पिक ऊहा-पोह में होटल को चुना गया और डबलबैड युक्त रूम पर सभी आश्वस्त हुए। यह आलीशान तो नहीं पर हम पाँचों के प्रभाव से ऊर्जावान जरूर हो गया। सभी ने नहा-धोकर जल-पान किया। योजनाबद्धतानुसार माँ वैष्णों देवी की चढ़ाई हम रात में प्रारम्भ करने वाले थे क्योंकि हमारी पर्सनल संचालिका रामप्यारी का यह अद्वितीय सुझाव था। सुझाव से सभी एकमत हुए। चढ़ाई से पूर्व विश्राम और शरीर के अभिन्न अंग मोबाइल को वैद्युतीय ऊर्जावान किया गया। तदन्तर रात्रि 8 बजे से रोमांच माँ वैष्णों देवी की चढ़ाई से आरंभ हुआ। शुरुआत में हम सभी शक्तिवान और उत्साहित महसूस कर रहे थे। यही कारण था कि 2 किलोमीटर

चढ़ाई कब पूरी हुई पता न चला अपितु वापसी कर रहें

श्रद्धालुओं से चढ़ाई की थकान का परिचय भी जगह-जगह मिलता रहा। “ये सब लोग इतने थके-मांदे क्यों लग रहे रहें?, मुझे देखो एकदम टना-टन।” सफेदा ने स्फूर्तियुक्त अभिमान में कहा। इतना कह कर सफेदा बैसाखी लेकर आगे बढ़ने लगा। उसके साथ बैसाखियों की सेना (गजोधर, रामप्यारी, रामदुलारी बैसाखीसहित) कदमताल मिलाकर बढ़ रहे थे और आस-पास के खच्चरों, दुकानदारों, पालकी इत्यादि को निहार रहे थे। फोटू खिंचवाने का जन्मजात गुण सभी साथ लायें थे और चढ़ाई पर से नजारा जितना आकर्षक होता जाता फोटोंज की संख्याओं की वृद्धि सीधे अनुपात में होती जाती। समय-समय पर स्वयं को चार्ज करने के लिए आईसोलेटिड बोटल मे संग्रहित चाय स्फूर्ति भरती जाती। यात्रा का आधा पड़ाव ठहरते-ठहरते अर्ध कुमारी पर पूर्ण हुआ। यहाँ रुक कर तनिक विश्राम किया और रात्रि की कौमुदी को निहारते रहें। पहाड़ो की ऊँचाई से नीचे गहराई का सौंदर्य जगमगा रहा था। “चलो-चलो बहुत सेक ली आँखे, अब पहाड़ो को काला टिका लगाना पड़ेगा।” राम प्यारी ने आगे बढ़ने की टोन के साथ कहा। सब चल पड़े। पैरो की गति मंदन गति का परिलक्षित स्वभाव दिखा रहे थे और हो भी क्यों न सारी मेहनत पैरो ने ही की हैं। जिस उर्जा से चढ़ाई प्रारंभ की थी, बैटरी लो से वास्तविक परिचय होने लगा था। थके-मांदे वैष्णो धाम आखिरकार पहुँच ही गये। सुबह के 4 बजे थे। दर्शन के लिए स्नान करना हम सभी ने अनिवार्य समझा। महिलाओ और पुरुषों के लिए स्नानगृह की पूरी व्यवस्था वहाँ उपलब्ध थी। परन्तु ऊँचाई पर टंड के भाव बहुत बढ़े हुए थे। “अभी मुझे 24 घंटे भी नहीं हुए नहाए हुए, मैं तो पवित्र हूँ।”

सफेदा बचने का प्रयास करता हुआ। किन्तु गजोधर और मैं आश्वस्त थे कि अब चाहे बर्फ ही क्यों न गिरे, हम यह खतरो का खिलाड़ी अवश्य खेलेंगे। रामदुलारी और रामप्यारी भी सहमत हुई। केवल 20 सेकेन्ड में ऊपर पर्वतों से बहते पानी के नीचे त्राहिमाम-त्राहिमाम जैसे अविस्मरणीय विस्मयादिबोधक संबोधन स्नानगृह से नहाते समय फूट पड़े। “ही-ही-ऐ-ऐ-ही-ही” मेरे दांतों से लयात्मक गीत अनवरत बह गया। गजोधर कंपकपाने लगा। प्रसाद



अपनी-अपनी श्रद्धानुसार लिया गया और अब वो महत्वपूर्ण क्षण आ गया जब माता रानी के दर्शन का सौभाग्य हमें प्राप्त होने वाला था। यहाँ श्रद्धालुओं की संख्या कम थी जिससे दर्शन करने पर कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई। अंततः माँ वैष्णो देवी के वो तीनों पिंड आँखों में सदा के लिए छायांकित हो गये और सभी तृप्त हुईं। थकावट मानों फुर्र। सभी प्रसन्नचित्त होकर भैरव बाबा के लिए अग्रसर हो चले। अब चढ़ाई अपने चरम पर थी और प्रयास ऊफान पर। यह सबसे खड़ी चढ़ाई थी जिसमें पसीने से ओत-प्रोत हमारा तन था। खैर थकावट को शिथिलता पहुँचकर ही प्राप्त हुई। “भैरव बाबा की जय” आस्था की लहर पुनः गूँज उठी। उस चर्मोत्कर्षीय पर्वत श्रृंखलाओं की अद्वितीय स्थलाकृतियों ने निर्वेद रस से परिपूर्ण कर विश्राम का अनुभव कराया। सूर्योदय अधिकतर साधारण ही दृष्टिगोचर था परन्तु वहाँ ऊँचाई से सूर्योदय मानो लोचन को लालिमाग्राही करने में समर्थ बना चुका था।

चोटी से नीचे देखने पर भय का बीज हृदय में अंकुरित हो उठता। सुना था यहाँ से मृत्योपरान्त सीधे बैकुण्ठधाम मिलता है किन्तु मित्रों ने पीछे खींचकर बैकुण्ठधाम की टिकट कैंसल करवा दी। मैं इस गहराई में खोया हुआ था और वहाँ सभी श्रद्धालु फोटोज के सैलाब में तैर रहे थे। यदि बस चलता तो माता के साथ सेल्फी जरूर होती एवं कैप्शन में “इन वैष्णो धाम, फीलिंग ब्लेसिंग्स विथ वैष्णो माँ ऐंड 49 अदर्स।” इन सबके बीच जो सबसे जरूरी था “वानरसेना से सुरक्षा” के पुख्ता उपाय अपनाये गये। वानरों की नारायणी सेना ने पर्वतों को चारों ओर से घेरा हुआ था। जैसे-तैसे छीना-झपटी कर अपने आधिपत्य का प्रदर्शन वें करते रहें। नीचे उतरने में परिश्रम अधिक तो नहीं पर वानरों से बचाव की जद्दोजहत अत्याधिक करनी पड़ी। अतः नीचे तलछट पर पहुँचकर सभी पैरों का आकलन करने लगे। मानों पैर हैं ही नहीं।

**या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता,  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।**

अर्थात्- जो देवी सभी प्राणियों में माता के रूप में स्थित हैं, उनको नमस्कार, नमस्कार, बारंबार नमस्कार है।

**या देवी सर्वभूतेषु विद्या-रूपेण संस्थिता।  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥**

अर्थात्- जो देवी सब प्राणियों में विद्या के रूप में विराजमान हैं, उनको नमस्कार, नमस्कार, बारंबार नमस्कार है। मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूँ।



## संपादकीय



पिछले डेढ़ वर्ष की अवधि से समूची मानवता कोरोना वायरस के कहर से जूझ रही है। समूची सृष्टि पर कोरोना का पहरा है। अभी हाल ही में हमने इस वायरस की दूसरी लहर का खौफनाक मंजर देखा है। उल्लेखनीय है कि इस महामारी में कुछ संस्थाएँ जहाँ जी-जान से मानवता की रक्षा में लगी थीं वहीं बाजार/व्यापारी वर्ग ने इसे अवसर के तौर पर भुनाया। कुछ रुपयों में मिलने वाली दवाइयाँ, स्वास्थ्य सेवाएँ कालाबाजारी से प्रभावित रहीं। आज पुनः आवश्यकता है प्रकृति के संसाधनों के संरक्षण की। नयी जीवन परिस्थितियों के अनुरूप विशद परंपरागत ज्ञान और नवोन्मेष के समन्वय से न केवल वर्तमान संकट टलेगा अपितु मानवता के लिए भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त होगा। इस संदर्भ में अधिक से अधिक सामूहिक जागरूकता बढ़ानी होगी। युवा पीढ़ी को अपना योगदान देना होगा। विद्यार्थी जीवन नित नयी संवेदनाओं से युक्त होता है। विद्यार्थियों का मानस आने वाले समय की चुनौतियों के लिए परिपक्व बनाना होगा। महाविद्यालय के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा कोरोनाकाल में किया गया रचनात्मक लेखन आने वाले समय में संवेदना के धरातल पर प्रासंगिक होगा।

कोरोनाकाल में तकनीक हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। ऑनलाइन शिक्षा वर्तमान की सबसे बड़ी जरूरत है। तमाम स्कूल, कॉलेज और शैक्षणिक संस्थाओं ने ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली को अपना लिया है। हालाँकि ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली से जुड़ी तमाम व्यावहारिक समस्याएँ भी हमारे सामने उपस्थित हुई हैं। जैसे- स्मार्टफोन की समस्या, इंटरनेट के स्पीड की समस्या, बिजली की समस्या और तकनीकी जानकारी की समस्या इत्यादि। हिंदी विषय से जुड़ी तमाम सामग्रियाँ इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध हैं। परंतु यह सामग्री कितनी उपयोगी है, यह संदेह के घेरे में है। इंटरनेट पर उपलब्ध हिंदी की सामग्री वृहत् उद्देश्य और भाषा के दृष्टिकोण से ज्यादा भ्रामक हैं। सभी सामग्री 'सारांश' और 'सरलार्थ' बता देने तक ही सीमित हैं। परन्तु यह सुखद है कि प्राध्यापकों ने ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली में भी विद्यार्थियों के पठन-पाठन में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होने दी है। यह भी सच है कि इस शिक्षण प्रणाली में देश के अमीर और गरीब विद्यार्थियों का फासला भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है।

पीजीडीएवी महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अंकुर' (सत्र : 2020-2021) के प्रकाशन पर हम अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव कर रहे हैं। वस्तुतः यह पत्रिका महाविद्यालय का दर्पण है। मूल रूप से यह पत्रिका महाविद्यालय के विद्यार्थियों को उनकी प्रतिभा निखारने का अनुपम अवसर प्रदान करती है। पत्रिका द्वारा वे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन से जुड़े अपने तमाम अनुभवों को शब्दबद्ध करते हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित उनकी रचनाओं में हम सहज ही कोरोना वायरस, प्रकृति, समाज, स्त्री, राजनीति, बेरोजगारी, आतंकवाद, मीडिया, हिंदी भाषा, अध्यापक और विश्वगुरु के रूप में भारत के संदर्भ में उनके अनुभवों को देख और पढ़ सकते हैं।

डॉ. चैनसिंह मीना





### आशा का दीपक

यह प्रदीप जो दीख रहा है झिलमिल दूर नहीं है  
थक कर बैठ गये क्या भाई मन्जिल दूर नहीं है  
चिन्गारी बन गयी लहू की बून्द गिरी जो पग से  
चमक रहे पीछे मुड़ देखो चरण-चिन्ह जगमग से  
शुरू हुई आराध्य भूमि यह क्लांत नहीं रे राही,  
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से  
बाकी होश तभी तक, जब तक जलता तूर नहीं है  
थक कर बैठ गये क्या भाई मन्जिल दूर नहीं है

“मैं कविता को जीवन तक पहुँचने की सबसे सीधी और  
सबसे छोटी राह मानता हूँ। यह मस्तिष्क नहीं हृदय की  
राह है।”

— रामधारी सिंह दिनकर



**बृजेश कुमार**  
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## मेरे सपनों का भारत वर्ष

एक बार फिर धर्मगुरु हो  
एक बार फिर सोने की चिड़िया हो  
पथ प्रदर्शक विश्व का  
ऐसा मेरा सपनों का भारत वर्ष।

जहाँ कोई जन न सोए भूखा  
जहाँ पड़े कहीं कभी न सूखा  
चारों तरफ फैले खुशहाली  
लहराए फसलें चारों ओर खुशहाली  
ऐसा मेरा सपनों का भारत वर्ष।

जहाँ लड़कियों को सम्मान मिले  
जहाँ लड़कियों को पहचान मिले  
जहाँ न आतंकवाद हो न जातिवाद हो  
जहाँ न हो डर न किसी जुर्म का नाम  
ऐसा मेरा सपनों का भारत वर्ष।

**मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूँ  
जो समृद्ध और मजबूत है। ऐसा  
भारत जो दुनिया के महान देशों की  
पंक्ति में खड़ा हो।**

—अटल बिहारी वाजपेयी

## परीक्षा फल

मेरा परीक्षाफल घर आया, देख उसे मैं घबराया  
नंबर देख रोना आया, मन ही मन पछताया  
अंग्रेजी का पेपर था पहला, उसे देख मैं ठहरा  
नंबर मुझे मिले थे तीन, जबकि चाहिए थे चालीस  
हिंदी के तो क्या कहने, लगे हम मातृभाषा जपने  
लेकिन चर्चा कठिन कराल, करते-करते हुआ बेहाल  
गणित देख पसीना छूटा, अंत देख भ्रम टूटा  
शायद शिक्षक थे बड़े उदार, तभी दिए नंबर चार  
सिद्ध किया भूगोल, सारी दुनिया है गोलम-गोल  
भृकुटी ताने शिक्षक बोला, तभी मिला है तुमको गोला  
इतिहास में भी क्या रखा है? बाबर अकबर का बेटा है  
यही मैंने अब तक सीखा है, तभी नंबरों का स्वाद तीखा है  
आखिर में आया विज्ञान, जिसका नहीं था मुझको ज्ञान  
अब आप लगाए अनुमान, आएगा क्या वार्षिक परिणाम?

## हे भगवान! स्कूल आकर तो देख

अरे युद्ध में गदा तो हम चला दें  
तू एक बार कलम चला कर तो देख  
हे भगवान! स्कूल आकर तो देख।

अरे ऊपर बैठे दुनिया तो हम भी संभालते  
तू संस्कृत की किताब को संभाल कर तो देख  
हे भगवान! स्कूल आकर तो देख।  
अरे युद्ध भूमि में रथ तो हम भी निकाल लें  
तू एक बार गणित के सवाल का हल निकालकर तो देख  
हे भगवान! स्कूल आकर तो देख।

अरे युद्ध में गदा तो हम भी खा लें  
तू एक बार टीचर की डॉट खा कर तो देख  
हे भगवान! स्कूल आकर तो देख  
अरे युद्ध में धनुष तो हम भी तोड़ दें  
एक बार तू स्कूल का नियम तोड़ कर तो देख  
हे भगवान! स्कूल आकर तो देख।



**बृजेश कुमार**  
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## बेटी होती बहुत महान

बेटी जब पैदा होती है,  
पहाड़ सा टूट जाता है।  
बेटा जब पैदा होता है,  
जश्न मनाया जाता है।  
कौन जाने बेटा अच्छा हो या शैतान,  
मैं तो कहता बेटी होती बहुत महान।

झाँसी की रानी भी तो एक बेटी थी,  
पूरे भारतवर्ष की चहेती थी  
रोशन किया अपने माता-पिता और देश का नाम  
मैं तो कहता बेटी होती बहुत महान।

कल्पना चावला भी तो देश के लिए मर गई  
पूरे भारतवर्ष के लिए मर गई  
बड़े-बड़े वैज्ञानिकों की सूची में है उसका नाम  
मैं तो कहता बेटी होती बहुत महान।

बेटी पर मत करो अत्याचार  
उसको भी जीने का है अधिकार  
आप की दया ले जाती है  
जब करते हैं उसका कन्यादान  
मैं तो कहता बेटी होती बहुत महान।



**अमित कुमार कुशवाहा**  
बी.कॉम (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

## जिस्म के भूखे

संभाल कर रखो अपनी नन्हीं सी जान को  
यहाँ जिस्म के भूखे हजार बैठे हैं  
रात के अंधेरे में बच्चों का शिकार करने वालों  
तुम्हारे भी घर तुम्हारी बहन बेटियों पर  
बुरी नजर गड़ाए हजार बैठे हैं  
एक छोटी-सी बच्ची पर अत्याचार हुआ  
उस बच्ची को देश बचा न सका  
समझ लो देश उन दरिदों के सामने लाचार हुआ  
छोटे कपड़ों के कारण नहीं होता है रेप  
लोगों को कैसे समझाऊँ मैं  
आखिर एक छोटी-सी बच्ची को  
साड़ी कैसे पहनाऊँ मैं  
एक छोटी-सी कली थी  
माँ-बाप के अरमानों में पली थी  
तेरी हवस की भूख को देख  
वैश्याएँ भी बोल उठी ऐ हैवान छोड़ दे  
इस मासूम बच्ची को  
तेरी हैवानियत तेरे जिस्म की भूख मिटाने को  
हम मुफ्त में तैयार बैठे हैं  
राह चलती लड़कियों पर नजर रखने वालों  
शर्म करो अपनी मर्दानगी पर  
अरे ऐ देशवासियों संभाल कर रखो  
अपनी कली को यहाँ जिस्म के भूखे  
नामर्द हजार बैठे हैं।

**किसी को भी मत कहने दो कि तुम कमजोर हो,  
क्योंकि तुम एक औरत हो।**

—मैरी कॉम



शिवानी

बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, तृतीय वर्ष

## यारियाँ

इंतजार किया था इस दिन के लिए कब से  
भविष्य के सपने देख रहे थे न जाने कब से  
बड़े उतावले थे यहाँ से जाने को  
अपनी एक नई दुनिया बनाने को

पता नहीं दिल में मेरे क्यों कुछ आता है  
वक्त को रोक देने को मेरा जी चाहता है  
जिन बातों को लेकर रोती थी  
आज उन्हीं बातों पर हँसी आ जाती है

न जाने क्यों आज उन पलों की याद बहुत आती है  
कहा करते थे बड़ी मुश्किल से तीन साल रह गया  
पर आज क्यों लगता है कि कुछ पीछे रह गया  
न भूलने वाली यादें रह गईं  
यादें जो अब जीने का सहारा बन गईं

बात-बात पर अब मेरी टांग कौन खींचा करेगा?  
बिना किसी वजह अब कौन मुझे परेशान करेगा?  
जहाँ दो हजार का हिसाब नहीं  
वहाँ दो रुपये के लिए अब कौन लड़ेगा?  
एग्जाम हॉल में 'बहन एक सवाल का जवाब बता दे प्लीज'  
अब कौन कहेगा?

कौन बैक आने पर दिलासा देगा?  
गलती से नंबर आ जाने पर कौन गालियाँ देगा?  
कैंटीन में कॉफी अब किसके साथ पिऊँगी  
वह मस्ती भरे पल अब किसके साथ जिऊँगी  
ऐसे दोस्त अब कहां मिलेंगे जो पहले मुसीबत में फँसाए  
पर हर लड़ाई में बचाने कूद जाएँ  
मेरे गानों से परेशान कौन होगा?  
मेरी उल्टी हरकतों में मेरा साथ कौन देगा

कौन कहेगा तेरे चुटकुले पर हँसी नहीं आई  
कौन पीछे से बुलाकर कहेगा 'हट यहाँ से आगे देख भाई'  
अचानक किसी को देखकर बिना मतलब पागलों की तरह  
हँसना न जाने कब होगा?  
एक प्लेट छोले-भटूरे में पूरे गुप का खाना  
न जाने कब होगा

बस के उस धक्के भरे माहौल में अब मेरे साथ  
सफर कौन करेगा?  
मेरी हर खुशी में खुश और दुख में दुखी कौन होगा?  
अब तो मेरे दिल में हमेशा बस यह सवाल होगा  
दोस्तों सुनो न अब कब फिर से यह धमाल होगा?

हिंदी के प्रयोग से संबंधित पहला द्विभाषी कंप्यूटर 'सिद्धार्थ' 1986ई. में बना। यह रोमन और देवनागरी दोनों लिपियों में कार्य कर सकता था। बाद में 'लिपि' नाम से एक और विकसित कंप्यूटर तैयार किया गया, जिसमें रोमन के साथ-साथ हिंदी, तमिल और अन्य भारतीय भाषाओं आदि में से दो लिपियों की व्यवस्था संभव थी। 'यूनिकोड टेक्नोलॉजी' का आविष्कार नागरिकों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। इससे पहले कंप्यूटर में देवनागरी के लिए चाणक्य और क्रुतीदेव जैसे सॉफ्टवेयर से कार्य हो रहा था। यूनिकोड ने तो कंप्यूटर और लिपि के संबंध को पुनः व्याख्यायित कर दिया। यूनिकोड 16 डिजिट का कोड है, जिसमें 65536 संकेत उपलब्ध हैं। इसमें विश्व की लगभग सभी भाषाओं में कार्य संभव है।



**शिवानी**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, द्वितीय वर्ष

## जिंदगी

जिंदगी एक रहस्यमय कथा है  
जिसका अंतिम छोर जाने कहाँ बँधा है  
जी लो अगर इसे हँसी से, तो यह एक मजा है  
मिलती नहीं खुशी तो बन जाती यह सजा है

हर एक मोड़ पर इम्तिहान ये लेती है  
खुशी से करो सामना तो ही यह साथ देती है  
मुझे तो आ जाते हैं हर दुख में आँसू  
फिर इसी ने मुझे सिखाया  
क्यों नहीं करती तू मन को अपने काबू  
अरे पगली यह मन ही तो है  
जहाँ लालसाएँ उत्पन्न होती हैं  
औरा मिलने पर तू पागल है जो रोती है

मैंने फिर जिंदगी से ऐसी सीख ली  
किसी के भी प्रति अब आशा ही नहीं कोई  
जिऊँगी इसे इस उत्साह के साथ  
कभी न लगे कि कोई नहीं मेरे साथ

मेरा ध्येय है बस अब एक यही  
जी लूँ मैं इसे अपने माता-पिता के लिए ही  
आखिर वही तो हैं जिन्होंने मुझे जिंदगी की राह दिखाई  
जिस पर चलकर आज मैं यह कविता भी लिख पाई।

**जीवन लंबा होने की बजाय महान होना  
चाहिए।**

—डॉ. बी. आर. अंबेडकर

## माँ

कब्र के आगोश में जब थक कर सो जाती है माँ  
तब जाकर कहीं थोड़ा चैन पाती है माँ  
रुह के रिशतों की यह गहराइयाँ तो देखिए  
चोट लगती है हमें और चिल्लाती है माँ

जब परेशानी में हम घिर जाते प्रदेश में  
आँसुओं को पोंछने सपनों में आ जाती है माँ  
चाहे खुशियों में हम माँ को भूल जाए  
जब मुसीबत सिर पर आ जाए तो याद आती है माँ

लौटकर वापस सफर से, जब भी घर आते हैं हम  
डालकर बाँहे गले में सिर को सहलाती है माँ  
शुक्रिया से हो नहीं सकता उसका कर्ज अदा  
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ  
प्यार कहते हैं किसे और ममता क्या चीज है  
यह तो उन बच्चों से पूछो, जिनकी मर जाती हैं माँ।

## अशुभ विवाह

आज तक आपने अनेक शादी के कार्ड देखे होंगे पर अब  
अलग तरह का कार्ड देखिए—

ओम असुराय नमः  
भेज रहे हैं सड़ा निमंत्रण दोस्तों तुम्हें बुलाने को  
सभी मूर्ख अवश्य आना विवाह की शान घटाने को  
चि. मूर्खानंद को पुत्र श्री भूतनाथ बिजी शमशान वाले  
सौ. पूतना कुमारी, पुत्री श्री भस्मासुर  
नरकवासी लोक भाषा  
आप सभी दोस्तों को जानकर अत्यंत दुःख होगा  
कि भगवान के असीम प्रकोप से  
हमारे कुपुत्र मूर्खानंद का शुभ विवाह 19 अप्रैल 2016 को होना  
तय हुआ है।  
आप सभी दोस्तों से सरफोड़ निवेदन है कि इसमें अवश्य भर्ती  
हों और वर-वधू को श्राप दें  
क्रियाकर्म डंडा मार पार्टी 40 बजे  
बारात विसर्जन 40 बजे  
बारात शमशान से चलकर सीधे जहन्नुम में जाएगी  
कृपया जूते चप्पल साथ लाएँ  
(उत्तरांकाक्षी)  
सभी लालची, कमजोर, मूर्ख, पाखण्डी मित्र, परिवार वाले व  
अन्य 420 रिश्तेदार  
(मेरे 'मूर्खानंद' मामा की शादी में जलूल-जलूल आना -  
हड्डी रानी)



**आशुतोष यादव**  
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

## समय की साख

कितना भी पकड़ लो फिसलता जरूर है  
यह वक्त है, यारों बदलता जरूर है।  
जब-जब जहाँ किसी कमजोर पर हँसा है  
तब-तब उसी ने इतिहास रचा है।

कौन कहता है खुदा तुझसे खफा है  
कौन कहता है वक्त तुझसे जुदा है।  
कोशिश करो यारों हल निकलेगा  
आज नहीं तो कल निकलेगा।

सितारें कभी अंधेरे के बिना नहीं चमकते  
सोच लेना यारों, जीवन भी  
टोकरों के बिना नहीं बदलते।

जो हो गया उसे सोचा नहीं करते,  
जो मिल गया उसे सब से बोला नहीं करते।  
हासिल उन्हें ही होती है सफलता,  
जो मुसीबतों में विवेक खोया नहीं करते।

ढूँढ़ लेते हैं अंधेरों में रोशनी  
जुगनू कभी रोशनी के मोहताज नहीं होते  
और जब टूटे हौसला तो याद रखना  
बिना मेहनत के तख्तों-ताज नहीं होते

## आओ फिर से दिया जलाएँ

भरी दुपहरी में अंधियारा  
सूरज परछाई से हारा  
अंतराम का नेह निचोड़े  
बुझी हुई बाती सुलगाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ

हम पड़ाव को समझे मंजिल  
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल  
वर्तमान के मैदान में आने वाला  
कल न भुलाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा  
अपनों के विघ्नों ने घेरा  
अंतिम जय का वज्र बनाने नव  
दधीचि हड्डियाँ-हड्डियाँ गलाएँ  
आओ फिर से दिया जलाएँ।



**शशि चौरसिया**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## स्तुति

लाख गलतियाँ की है हमने  
पर हम तेरे ही बंदे हैं  
इस तरह न सजा दे हमको  
हे ईश्वर! हम तेरे बंदे हैं

काल पुकारे तो हम आगे हैं  
उन छोटे बच्चों को बख्शा दे  
आँखे उनकी खुली अभी हैं  
क्या देखा संसार उन्होंने

दुनिया भर की इस माया में  
नवल-कोमल सी इस काया में  
सुनहरे आऑंचल की छाया बिन  
विषैली दुनिया में कैसे जिएंगे  
हे ईश्वर! एक और गुजारिश  
उनके लिए उनकी माँ बख्शा दे

लाख गलतियाँ की है हमने  
पर हम तेरे ही बंदे हैं  
इस तरह न सजा दे हमको  
हे ईश्वर! हम तेरे बंदे हैं

**बीते समय के लिए मत रोइए वह चला गया और भविष्य की चिंता करना छोड़ो क्योंकि वह  
अभी आया नहीं है, वर्तमान में जियो, इसे सुंदर बनाओ।**

—महात्मा बुद्ध



**दामिनी चौहान**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## प्रकृति तू रहम कर

प्रकृति तू रहम कर,  
मैं कहती हूँ रहम कर  
रहम कर, तू रहम कर  
ज्ञात है मुझे कि  
तेरा आलम नष्ट किया है  
तभी तो तूने हमें इतना कष्ट दिया है  
पर करती हूँ विनती फिर भी तुझसे  
न करो विनाश, होकर खफा हमसे

लेकर तुमसे सुख  
हमने तुमको दुख दिया है  
तभी तो तुमने हमें  
मास्क पहना दिया है  
कर-कर करतूत  
जो हाथ काला किया है  
तुमने उसे धोने का  
मौका हमको दिया है।

माना कि हमने सब कुछ गलत किया है  
तभी तो तुमने हमें इतना कष्ट दिया है  
पर करती हूँ विनती फिर भी तुमसे  
न करो विनाश, होकर खफा हमसे।



**अटल यादव**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, द्वितीय वर्ष

## पूरे देश का सम्मान

नया खून और नयी जवानी हम हैं हिंदुस्तानी  
वीर तुम बॉर्डर पर खड़े रहो  
भारत माँ की रक्षा करते रहो  
वीरों की आग जल-जल कर बुझ गयी है  
मातृभूमि की सेवा करते रहो  
नया खून और नयी जवानी हम हैं हिंदुस्तानी

वीरों का खून खौलता है  
वीरों की यही कहानी है  
हिंदुस्तान का सम्मान बढ़ाना है  
नई शिक्षा नीति को सफल बनाना है  
नया खून और नयी जवानी हम हैं हिंदुस्तानी  
दहेज दानव को जड़ से मिटाना है  
भ्रष्टाचार मिटाना है, शिष्टाचार बढ़ाना है  
जनता के चेहरों पर खुशहाली लानी है  
नया खून और नयी जवानी हम हैं हिंदुस्तानी

**प्रकृति के क्षेत्र में जो साधना करते हैं,  
उन्हें शक्ति प्राप्त होती है।**

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

विश्व में करीब 64 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिंदी है। आज विश्व के 206 देशों में हिंदी प्रयुक्त हो रही है और उसके प्रयोक्ताओं की संख्या 1 अरब 30 करोड़ तक पहुँच गयी है। विदेशों में हिंदी की 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाएँ लगभग नियमित रूप से प्रकाशित हो रही हैं। इसके अतिरिक्त विदेशों के करीब डेढ़ सौ से ज्यादा शिक्षण संस्थानों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है।



**रामू सिंह**  
बी.एस.सी. (ऑनर्स) गणित, तृतीय वर्ष

## मुरझाई कली

मैं पहुँचा ही था चमन में कि एक  
मुरझाई हुई गुलाब की कली लटक रही थी  
क्या वक्त आ गया, दूसरों की मुस्कान की वजह  
आज खुद मायूस बैठी है  
क्यों उखड़ा हुआ है उसका मासूम चेहरा  
क्या छोड़ दिया है,  
तीखे काटों ने उसका पहरा,  
या किसी के नाजुक हाथों ने  
इसे मरोड़ दिया है  
ले जाना चाहिए था, इसे अपने घर  
पता नहीं क्यों यहीं छोड़ दिया है  
खुशबू बिखेर रही थी  
अभी भी उसकी पंखुडियाँ  
मानों कह रही हैं अभी भी जिंदा है वह  
अभी भी खूबसूरत है वह  
अभी भी किसी को भी मोहित कर सकती है वह  
पर मैं अलग ही इसकी वजह खोजने में लगा था  
और ये अपने तारीफों के सेतु बनाने में लगी थी  
आखिर मैंने पूछ ही लिया  
क्यों उदास है चमन की परी  
सिसकियाँ लेते हुए बोली  
आज मुझे ले जाने,  
मुझसे भी ज्यादा सुंदर कली आयी थी  
मैंने कहा, क्या जरूरत है तुम्हें मेरी  
तुम भी बहुत खूबसूरत हो  
लगती अजंता की मूरत हो  
मत रो अब तुम, चलो ले चलता हूँ तुम्हें  
अपने घर, रख दूँगा तुम्हें भी,  
उन पुरानी किताबों में  
जैसे तुम भी किसी की दी हुई अमानत हो!



**आकांक्षा मिश्रा**  
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

## अत्याचार हुआ किस प्रकार?

अत्याचार हुआ किस प्रकार?  
जिसने उम्र न देखी हर बार,  
वह 2 साल की थी,  
12 साल की थी,  
हाथरस की बेटी 19 साल की थी।।  
अत्याचार हुआ किस प्रकार?  
सरकार चुप रही हर बार,  
वह मास-मीडिया के वादे  
वह मोमबत्तियों का जलाना  
वह कुछ दिन का आक्रोश हुआ  
फिर इस बार हाथरस की बेटी के  
साथ बलात्कार।  
यह कैसे हुआ अत्याचार?  
अत्याचारियों ने लांघी शिष्टाचार की हर दीवार।  
वह गलत कपड़े पहनती थी,  
वह गलत लड़की थी,  
वह लड़को के साथ घूमती थी,  
क्या देंगे रूढ़िवादी लोग यह जवाब?  
कि दो साल की बच्ची ने की कौन सी हद पार  
जो बलात्कारियों ने किया ऐसा अत्याचार।।  
अत्याचार हुआ किस प्रकार?  
बलात्कारियों ने किया हर लड़की पर वार।  
वे चिंगारी हैं दहकेंगी  
वे अधिकारों के लिए लड़ेंगी,  
बलात्कार करने वालों,  
तुम करो उल्टी गिनती की शुरुआत  
होगा तुम्हारा भी हिसाब इस बार।  
अत्याचार हुआ किस प्रकार?  
लड़कियाँ करेंगी अपने  
अधिकारों के लिए पलटकर वार।





**किशन वीर**

बी.एससी. (ऑनर्स) गणित, तृतीय वर्ष

## बेरोजगारी

खाली कंधों पर थोड़ा सा भार चाहिए  
बेरोजगार हूँ साहब, रोजगार चाहिए।  
जेब में पैसे नहीं है, डिग्री लिए फिरता हूँ  
दिनों दिन अपनी नजरों में गिरता हूँ  
कामयाबी के घर में खुले किवाड़ चाहिए  
बेरोजगार हूँ साहब, रोजगार चाहिए।

टैलेंट की कमी नहीं है, भारत की सड़कों पर  
दुनिया बदल देंगे भरोसा करो हम लड़कों पर  
लिखते-लिखते मेरी कलम तक घिस गई  
नौकरी कैसे मिले जब नौकरी ही बिक गई  
नौकरी की प्रक्रिया में अब सुधार चाहिए  
बेरोजगार हूँ साहब, रोजगार चाहिए।

दिन रात एक करके मेहनत बहुत करता हूँ  
सूखी रोटी खाकर ही चैन से पेट भरता हूँ  
भ्रष्टाचार से लोग खूब नौकरी पा रहे हैं  
रिश्वत की कमाई खूब मजे से खा रहे हैं  
नौकरी पाने के लिए यहाँ जुगाड़ चाहिए  
बेरोजगार हूँ साहब, रोजगार चाहिए।



**ममता दास**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

## काश में छोटी-सी नन्हीं-सी बनकर रहती

काश में छोटी-सी नन्हीं-सी बनकर रहती  
काश में छोटी-सी नन्हीं-सी बनकर रहती  
माँ तेरे आँचल में छिपी रहती  
माँ तेरी लोरियों को सुन सो जाती  
माँ सदा तेरी परी बनकर रहती  
पापा आपके कंधों पर बैठकर पूरी दुनिया की सैर करती  
आपकी उंगलियों को पकड़कर सदा चलती  
माँ-पापा काश में आपसे कभी न बिछड़ती  
काश में आपके आँगन की तितली बनकर उड़ती रहती  
माँ-पापा काश में छोटी-सी नन्हीं-सी बनकर रहती।

**अपने आदर्श को पाने के लिए सैकड़ों बार  
असफल होने पर भी आगे बढ़ो।**

—स्वामी विवेकानंद

संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार करते हुए राजभाषा हिंदी के संबंध में प्रावधान किए। संविधान के भाग 5 एवं 6 के क्रमशः अनुच्छेद 120 व अनुच्छेद 210 में और भाग 17 के अनुच्छेद 343, अनुच्छेद 344, अनुच्छेद 345, अनुच्छेद 346, अनुच्छेद 347, अनुच्छेद 348, अनुच्छेद 349, अनुच्छेद 350 और अनुच्छेद 351 में राजभाषा हिंदी के संबंध में प्रावधान किये गए हैं।



**आयुष कुमार पाल**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

## क्या है किसान?

किसान है वह इंसान,  
जो करता है नित दिन रात,  
सब पर एहसान, अन्नदाता है किसान,  
हम सबका भाग्यविधाता है किसान,  
ये धरा हमारी माता है,  
अनाज इसी से आता है,  
पर जो इसको उगाता है,  
खून पसीने से सींचता है, वह है किसान।  
करने वाला हमारे जीवन का निर्माण, वह है किसान।  
मेहनत से न वह डरता है,  
दिन रात संघर्ष वह करता है,  
फिर भी क्यों एक किसान मजबूरी में आत्महत्या करता है,  
जीवनदाता खुद का हनन करता है,  
नियति का यह विधान सर्वस्व मनन करता है,  
वह है किसान।  
न धूप के उजाले में रुकता है,  
न रात के अँधेरे में छिपता है,  
न मौसम की मार में तपता है,  
न मौसम की सिहरन में काँपता है, वह है किसान।  
आँसू उसके लिए सूखे हैं,  
चैन और रैन उसके लिए तो सब झूठे हैं, वह है किसान।  
लगाता है वह सम्पूर्ण सामर्थ्य,  
फिर भी क्यों रह जाता है वो असमर्थ, ऐसा है किसान।  
साहसी है किसान, प्रतिक्षण रणभूमि का निवासी है किसान,  
आदरणीय है किसान, माननीय है किसान,  
पर आज आखिर क्यों अवहेलनीय है किसान?  
उमड़ती हुई सागर की लहरों जैसा है किसान,  
नितांत हम सबके लिए कर्मठ है किसान,  
ऐसा है किसान।



**गुलाम मुस्तफा**  
बी.ए. (ऑनर्स) अर्थशास्त्र, द्वितीय वर्ष

## ये डर की सियासत है

जो कभी अपनी मसरूफ जिंदगी से  
फुरसत के कुछ लम्हें निकाल पाओ  
हटा कर आँखों से मजहब का चश्मा  
धोकर अपने दिल से वतनियत का रंग  
खुरच कर दिमाग से कौमियत का निशान  
किसी रोज दुनिया की सैर को आओ

कभी देखो संसार को उन नजरों से  
जिन में किसी तरह का भेदभाव न हो  
जो देख पाए किसी के दिल की हालत  
जिनकी पलकों में बसे हों किसी और के आँसू  
जहाँ पहचान हो इंसान की संघर्षों से  
जहाँ पे अमन हो कायम कई बरसों से

जिन नजरों में इंसान की कोई जात न हो  
जहाँ बुगज की, नफरत की कोई बात न हो  
जुल्म करने की हो न आदत, न ही सहने का मिजाज  
इल्म ओ हिकमत की अदाओं पे हो जहाँ कारसाज  
मैली आँखों से अमन को जो नजर देखा करे  
रहम की नाजुक रग भी उसे अनदेखा करे

हो फिजाओं में महक प्यार की हरसै फ़ैली  
खत का मजमून हो इक जैसा जुदा हो शैली  
फिक्र और अक्ल जहाँ काम में लाई जाए  
जाम ऐ उल्फत से हर महफिल सजाई जाए  
जो भी नफरत की करे बात वह मुँह की खाए  
हर जगह प्यार-ओ-अखुवत् की जबाँ बोली जाए

ये सियासत जो डर की है मौजूद न हो  
कोई इंसान किसी इंसान का मकबूज न हो  
क्या ही अच्छा हो जो सरसब्ज हो जाए दुनिया  
फिर किसी जुल्म के बहकावे में न आए दुनिया।



**तनवी**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

## सपने

सपने होते उन्हीं के सच, जो करते भरोसा  
अपनी मेहनत और हिम्मत पर रहते आत्मनिर्भर  
दृढ़ संकल्प करके आगे बढ़ते,  
भूल जाते दुनिया क्या कहेगी, क्या नहीं,  
बस रखते ध्यान इतना कुछ करना है,  
करके दिखाना है,  
नाम रोशन अपने माता-पिता का करना है  
जिनके हम बुढ़ापे के सहारे हैं  
सपनों को पूरा करने में मुसीबतें तो लाखों आएँगी  
लेकिन डरना नहीं सामना करना है  
अपने सपनों को सच करना है  
सपने होते उन्हीं के सच, जो करते भरोसा  
अपनी मेहनत और हिम्मत पर  
जो करते भरोसा अपनी किस्मत पर  
वे रह जाते सोचते केवल न कर पाते कुछ  
जिनके होते हौसले बुलंद वही कर पाते  
अपने सपने सच  
जो डर जाते हैं छोटी-छोटी मुसीबतों को देखकर  
वह लक्ष्य की दौड़ में रह जाते पीछे  
सपने होते उन्हीं के सच, जो करते भरोसा  
अपनी हिम्मत पर  
समय के महत्त्व को समझ कर  
जो करते हैं अपना काम  
समय पर वे ही कर पाते अपने सपने सच  
सपने होते उन्हीं के सच, जो करते भरोसा  
अपनी मेहनत और हिम्मत पर।



**नाजनीन**

बी.कॉम. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## अपने जैसा बना दो

कहाँ से लाती हो इतनी मोहब्बत  
इतनी शिद्दत, इतनी मोहब्बत  
कुछ हमें भी सिखा दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ

कभी तकलीफ में रहूँ तो आसानी से  
शिफा दिला देती हो, इतनी काबिलियत  
हमें भी सिखा दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ

चूल्हे की आग में खुद को तपाती हो  
लज्जत की चाशनी में सबको भुला देती हो  
मुशकलात से जूझकर हर परेशानी से लड़कर  
सबका ख्याल रखती जाती हो  
इतनी मुद्दस परवाह हमें भी सिखा दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ

जाने कौन-सा जादू है आपकी आवाज में  
सुनते ही सारी दूरियाँ मिटा जाती हो  
दूर रहने के एहसास से बेखबर कर जाती हो  
इतनी शफकत हमें भी सिखा दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ  
अपने जैसा बना दो न माँ



प्रेम राजपूत

बी.एससी. (ऑनर्स) गणित, तृतीय वर्ष

## तेरे लिए क्या हूँ मैं?

तेरे लिए क्या हूँ मैं?  
तेरी मंजिल खड़ी जहाँ वहाँ जाने वाली राह हूँ मैं  
जो देखा कल रात ख्याब तूने,  
क्या उसे देखने वाली निगाह हूँ मैं  
तेरे लिए क्या हूँ मैं?

जो कभी भी भिगो दे तेरी लताओं को  
क्या वह बिन मौसम बारिश हूँ मैं?  
जो दिला दे तुझे कोई ऊँचा ओहदा  
क्या ऐसी सिफारिश हूँ मैं?

उड़ा दे जो तेरी घनी जुल्फों को  
क्या वह शरारती तेज हवा हूँ मैं?  
तुझमें भर दे फूलों जैसी ताजगी  
क्या वह खुशनुमा फिजा हूँ मैं?

हँसती रहे तू जिसे याद करके बार-बार  
क्या वह गुजरा हुआ हसीन किस्सा हूँ मैं?  
जिसे तू भी न अलग कर पाए खुद से  
क्या वह तेरा अटूट हिस्सा हूँ मैं?  
थोड़ा बहुत कुछ भी पूछो चुप हो जाती है,  
मुझे इतनी सी बात क्यों नहीं बताती है?  
थक गया मैं पूछकर अब तू बोल ही दे?  
तेरे लिए क्या हूँ मैं?

## पागल नहीं हूँ मैं

क्यों दिखाते हो मुझे अपनी हमदर्दी  
कोई दर्द से कराहता हुआ घायल नहीं हूँ मैं  
माना थोड़ा कमजोर हूँ दिमाग की लड़ाई में  
पर इतना भी पागल नहीं हूँ मैं...

भले ही मुझे अपनों ने ही ठुकराया  
फिर भी उनके ख्यालों में डूबा हूँ मैं  
क्यों करते हो पत्थरों से स्वागत मेरा  
क्या कहीं और से आया हुआ अजूबा हूँ मैं...

जुल्मी दुनिया वालों जरा थम जाओ  
मुझे पैरों में चुभे काँटे निकाल लेने दो  
अभी फकीरों जैसी हालत है मेरी  
पहले मुझे खुद को संभाल लेने दो...

मुझे तड़पाने में कैसी खुशी मिलती है तुम्हें  
फिर भी इसी में तुम्हारी खुशी है तो तड़पाने दो मुझे  
मुझसे तो खफा हैं मेरे अपने ही  
दुआ करता हूँ तुम्हारी किसी से रूसवत न हो...

रोकर बरस गए हैं मेरे सारे आँसू  
फिर भी बरसने वाला बादल नहीं हूँ मैं  
माना मेरा मन तुम जैसा नहीं सोचता  
पर इतना भी पागल नहीं हूँ मैं  
हाँ पागल नहीं हूँ मैं...

प्रेम की पवित्रता का इतिहास ही मनुष्य की सभ्यता का इतिहास है, उसका जीवन है ।

—शरतचंद्र चटर्जी



**प्रिया सिंह**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## चीख

आबरू ये उसकी क्षीण हुई  
मन ये तार-तार हुआ  
जब रूह पर उसके वार हुआ  
जहां ये शर्मसार हुआ

तन नहीं, मन ये उसका लहलुहान हुआ  
उसका नहीं उसके जज्बातों का बलात्कार हुआ  
मन ये उसका आहत हुआ  
सपनों के संसार पर जब उसके प्रहार हुआ  
चीख उसकी निकलती रही  
बेबसी भी बढ़ती रही  
दर्द भी उसको अपार हो रहा  
ऐसा लगा मानो दर्द भी आज  
उसका इम्तिहान ले रहा  
करनी पर तेरे ऐ मर्द  
तेरी माँ बेटी का प्यार भी  
आज शर्मसार हुआ

उसकी बेबसी पर तुझे गर्व अपार हुआ  
लेकिन तू भूल गया कि  
एक स्त्री से तू जन्मा हुआ  
एक स्त्री ने ही है, तुझे पाला हुआ  
एक स्त्री ने ही है, तुझे संभाला हुआ  
स्त्री ने ही है, तुझे तुझे थामा हुआ  
तेरी इस करनी से आज  
जहां ये शर्मसार हुआ।

## उड़ान

पंखों को हमारे भी दे दो उड़ान,  
घूमना है इन्हें भी सारा दुनिया जहान।  
मुड़कर पीछे देखना तो होता है  
बुजदिलों का काम।  
आगे बढ़ते जाना ही है, काबिलों की पहचान।

सपने देखना तो होता है बहुत आसान,  
लेकिन मंजिलों को पाना नहीं होता  
सबके बस का काम।  
पंखों को हमारे भी दे दो उड़ान,  
घूमना है इन्हें भी सारा दुनिया जहान



**शीतल तिवारी**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है

मैंने पापा को उंगली पकड़कर चलना सिखाने से  
विदाई तक दुःख छिपाते हुए देखा है।  
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है।  
मैंने पापा को बुखार में भी अपने बच्चों के लिए ऑफिस  
जाते हुए देखा है।  
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है।  
अपना खाना छोड़ मुझे खाना खिलाते हुए देखा है।  
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है।  
मेरे सपने पूरे करने के लिए मैंने पापा को रातों को जागते  
हुए देखा है।  
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है।  
पैसे न होते हुए भी मैंने पापा को मेरे लिए खिलौने लाते  
हुए देखा है, पापा को दुःख छिपाते हुए देखा है।  
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है।  
बहन की विदाई में मुस्कान के पीछे आंसुओं को छिपाते  
हुए देखा है।  
मैंने पापा को मुस्कुराते हुए देखा है।



**प्रदीप बिश्नोई**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## अकेलापन

बहुत खलता है यह अकेलापन  
इस विशाल शहर में अपने गाँव से बहुत दूर  
अपने थार के छोटे से गाँव को याद करते हुए  
बहुत खलता है यह अकेलापन

इस शहर की भीड़-भाड़ और चकाचौंध में  
अपने गाँव के शांत साँझ को याद करते हुए  
बहुत खलता है यह अकेलापन

गाँव में तारों से भरे शांत आसमां के नीचे शांत नींद  
और यहाँ एक छोटे से बंद कमरे के भीतर बेचैनी में  
बहुत खलता है यह अकेलापन

इन छोटी-छोटी दीवारों को देखते-देखते ख्याल आता है  
कहीं इन्हीं के बीच में न सिमट जाऊँ  
गाँव में क्षितिज तक जाती नजरों को याद करते हुए  
बहुत खलता है यह अकेलापन



**आविद खान**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## चम्बल का पानी

चम्बल का पानी नहीं, यह तो बहती हुई कहानी है।  
चम्बल के पानी में, बगावत बहुत पुरानी है।  
यहाँ कई घर बर्बाद हुए। लुटी कई जवानी है।  
दददा सोच समझकर पीना, 'जिय चम्बल कौ पानी है'।  
जिस माटी में बिस्मिल जैसे, जन्में स्वतंत्रता सेनानी हैं।  
जिन्होंने देश के लिए दी, अपनी जान की कुर्बानी है।  
मोहरसिंह मानसिंह और फूलन की, यहाँ अपनी कहानी है।  
पानसिंह ने हमें देश-विदेश में दिलाई पहचान पुरानी है।  
देश की रक्षा के प्रति, हमारे युवा बहुत अभिमानी हैं।  
जान देने से कभी नहीं डरता, जिसने चम्बल का पिया पानी है।

**जीतता वही है जिसमें शौर्य, धैर्य, साहस,  
सत्त्व और धर्म होता है।**

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन है। इसमें विश्व भर से हिंदी के विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी एकत्रित होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने, हिंदी की विकास यात्रा का आकलन करने, लेखक और पाठक दोनों के स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रति सरोकारों को दृढ़ करने, हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने और हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण रिश्तों को और अधिक गहराई एवं मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से 1975 ई. में विश्व हिंदी सम्मेलन की शृंखला आरम्भ की गयी। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर में सम्पन्न हुआ। अब तक कुल 11 विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भारत सहित मॉरीशस, त्रिनिदाद एवं टोबेगो, यूनाइटेड किंगडम, सूरीनाम, अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में किया जा चुका है। 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 2018 में मॉरीशस में किया गया था।



**सचिन कुमार पाण्डेय**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## विश्व गुरु भारत

शून्य दिया जिसने दुनिया को  
दशमलव बतलाया है  
सापेक्षता सिद्धांत दिया जिसने  
जिसने आध्यात्म सिखाया है  
बंधुत्व, क्षमा, सहिष्णुता को जिसने  
अपना कोश बनाया है  
राम, कृष्ण, दुर्गा को जिसने  
अपना आराध्य बताया है  
सूर, कबीर, मीरा और तुलसी को जिसने  
है जन्म दिया  
गीता, वेद, मानस का गौरव  
नित्य जहाँ गाया जाता  
तुलसी, गाय, विप्र, धरा को  
पवित्र जहाँ माना जाता  
काम, क्रोध, लोभ, मोह को  
अशुभ जहाँ माना जाता  
सिंधु, हिमालय और गंगा का गौरव  
जिसे है प्राप्त हुआ  
सिख, इसाई, हिंदू और मुस्लिम  
सबने जहाँ पुरुषार्थ किया  
आर्याव्रत भारत नाम है जिसका  
वह विश्व गुरु कहा जाता है  
वह विश्व गुरु कहा जाता है।

## पुरुषोत्तम राम

मर्यादा को परिभाषित कर  
पिता आदेश को मान लिया  
सौतेली माँ का मान रखा  
नवेली स्त्री का त्याग किया  
सत्ता मोह में डिगे नहीं वह  
वंश को जिसने तार दिया  
चौदह वर्ष वन गमन कर  
उसी भाव से आए थे  
जैसे रावण को नहीं  
कोई खग मार के आए थे  
हनुमान सेवक थे जिनके  
सुग्रीव और विभीषण मित्र  
नर से नारायण बन गए जो  
वह हैं सबके ईश, वह हैं सब के ईश।



**कोमल रैक्वार**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## सुंदरता

इतनी फुर्सत ही कहाँ मुझको  
कि सबकी झलक देख लूँ  
लगाकर आँखों में पट्टी  
थोड़ी शांति माँग लूँ।  
सुनहरा वह स्पर्श हुआ  
बातों में तिरछी नजर  
स्वयं को खुद बनाना है  
थोड़ा ही सही पर अपना बनकर!  
बेतहाशा टपकती वह मधुर ध्वनि  
अदृश्य होकर पारदर्शी बन गई  
हँसते-हँसते हर इंसान को  
उपकार का सलीका दे गई!  
क्या सुंदरता, क्या मिथ्या  
भावना सब में अभी भी है  
सिद्धांतों के मायने कम न हुए  
नियमों के बंधन में बंध गए।  
जिज्ञासु हूँ उस भीगी तृष्णा में  
सँवारती हूँ रोज स्वयं को  
मिटा अंधेरों की छाँव को  
प्रकाश के दीप बनना चाहती हूँ।  
मुश्किल है भावना को छिपाना  
नामुमकिन नहीं स्वयं को बदलना  
अस्तित्व मात्र एक पहचान है  
मैं स्वयं को खोजती हूँ खुद में !

भारत की एकता का मुख्य आधार एक संस्कृति है, जिसका प्रवाह कहीं नहीं टूटा। यही इसकी विशेषता है। भारतीय एकता अक्षुण्ण है, क्योंकि भारतीय संस्कृति की धारा निरंतर बहती रही है और बहेगी।

—पं. मदनमोहन मालवीय



**वर्षा मीना**

बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## समय का पहिया

यह दुनिया है एक सराय,  
कोई यहाँ रहने नहीं पाये,  
आना जाना लगा हुआ है,  
आया मुसाफिर जाए।  
पहिया चलता जाए  
समय ने ऐसा फेर दिखाया,  
कल है अपना आज पराया।  
किसी को मांगे भीख न मिलती,  
कोई मौज उड़ाये।  
पहिया चलता जाए...  
तन के उजले मन के काले,  
देख लिए तेरी दुनिया वाले  
वक्त पड़े जो इस दुनिया में,  
कोई काम न आये।  
पहिया चलता जाए...  
कोई ऐसा कोई वैसा  
देख तेरा संसार है कैसा  
जो आज न पढ़े  
कल तो वह पछताए।  
पहिया चलता जाए...  
समय का पहिया चलता जाए...  
पहिया चलता, चलता जाए...

## अन्न ही जीवन

छोड़कर गाँव, बस गया है तू शहर में जाकर  
पर क्या जी पाएगा एक दिन भी अन्न न खाकर  
बूँद-बूँद खून पसीना बहा  
अन्न उगाया जिस किसान ने  
बेकदरी कर उस मेहनत की  
थाली भर-भर छोड़ दी तेरे मेहमान ने  
कर्ज उठा तूने नाना पकवान बनवाए।  
फसकर झूठी शान में  
उम्र तेरी कट जाएगी अब कर्ज के भुगतान में  
भूख मिटा सकता है अपाहिज, लाचार समाज में  
जूठी थाली में बर्बाद हो रहे हैं अनाज से  
छू रही कीमतें आसमां, लागत ज्यादा कम पैदावार से  
उत्पादन भी नहीं हो पा रहा भरपूर मौसम की मार से  
चींटी अन्न का दाना-दाना बचा  
समझाती महत्व अनाज का  
तू बर्बाद कर रहा अन्न  
छीन रहा हक भूखे वंचित समाज का  
अभी भी वक्त है समझ जा अन्न ही जीवन है  
अन्न के बिना कुछ नहीं, अन्न ही जीवन है।

## हिन्दी भाषा बड़ी महान

जान देश की हिन्दी है,  
मान देश की हिन्दी है,  
हिन्दी से ही ज्ञान मिला  
गौरव और सम्मान मिला है  
पूरब-पश्चिम हिन्दी-हिन्दी उत्तर-दक्षिण  
हिन्दी-हिन्दी हिन्दी से मुँह न मोड़ों,  
सारे जगत से इसको जोड़ो  
हिन्दी भाषा दैवीय ज्ञान, हिंदी भाषा बड़ी महान।

कर्मभूमि पर फल के लिए श्रम सबको करना पड़ता है।

रब सिर्फ लकीरें देता है, रंग हमको भरना पड़ता है।

—गुरु नानक देव





**शालू त्रिपाठी**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## कोविड

कहाँ से आया कोविड कितनों को साथ ले जाएगा,  
जिंदगी को तो मौत तक पहुँचा दिया तूने  
कब तक तू खुद मौत से बच पाएगा...  
किसने तुझको भेजा है क्यों खुशनुमा चलती फिरती  
दुनिया को तूने उजाड़ा है  
कोविड तू ऐसा फेविकोल है जो एक बार किसी से  
चिपक जाए तो बिना मारे छोड़ता नहीं है...  
पूरा देश तो इन सभी आम जनों से चलता है,  
तूने उन्हीं जनों को खत्म करने का प्लान,  
क्या तूने खूब बनाया है...  
याद दिला दिया कोविड तूने  
आजादी के बाद की उस बेखौफ स्थिति को,  
जब लोग प्लेग जैसी बड़ी महामारी से मरते थे...  
भुखमरी और अकाल से ग्रस्त जीवन की कठिनाइयों से  
लड़ते जीते और मरते थे...  
आज पूरा देश तेरी गुलामी सह रहा है,  
पर कोविड अब तेरा समय भी आया है  
ये तेरा 2020 नहीं हमारा 2021 है  
जो नई उम्मीद लाया है...  
वैक्सीन तेरी मिल गई, अब तेरा भी अंत होगा  
तू थोड़ा रुक न, कुछ क्षणों में तेरा जीवन  
इस धरती से अंतिम होगा...

**पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने  
के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है,  
लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं ।**

—महात्मा गाँधी

## समाज

समाज कैसे बिखरा है  
कौन है इसके बहिष्कार की वजह  
क्यों हर तरफ तबाही है, क्यों सुकून और शांति ने  
अपना रास्ता बदला है...!  
समाज कैसे बिखरा है  
कौन साजिशें रच रहा है  
क्यों हर तरफ एक-दूसरे के प्रति आग लगाई है  
क्यों आदमी झुंड में मारने को  
तलवार लेकर निकलता है...!  
समाज कैसे बिखरा है  
क्यों हर तरफ गरीबी और लाचारी है,  
क्यों देश आज गंभीर हालातों में बदला है  
क्यों बीमारियों से मौत है  
क्यों हर तरफ शमशान में रोज धुँआ है...!  
समाज कैसे बिखरा है  
क्यों महुँगाई है, क्यों हर आदमी कमाने  
और खाने के लिए तरसा और भटका है  
क्यों हर तरफ तबाही है  
कब तक रोएगा हर एक इंसान  
कब सरकार अपनी सही ताकत दिखाएगी  
समाज न बिखरा होता अगर  
सही से सबने अपनी जिम्मेदारी उठाई होती  
गलती सबकी है किसी एक ने नहीं यह आग लगाई है  
समाज को आम जनता चलाती है  
जो खुद आपस में और अपनी परेशानियों से मर रही है  
राजनीति पे चलता सारा देश और सरकार  
जिसको सिर्फ पैसों से अपनी जेब भरनी है  
देश बिकता गया और यही है वह बहिष्कार  
जिसकी वजह से समाज आज बदल रहा है...!



**शालू त्रिपाठी**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## हिंदी

हाँ, हिंदी हूँ मैं संस्कृत से निकलकर आई हूँ कई प्रदेशों में मेरे अनेक स्वरूप हैं जिनकी अपनी-अपनी उपलब्धियाँ और विशेषताएं पाई जाती हैं...

हाँ, हिंदी हूँ मैं सभ्यताओं से पुराणों में मेरा ही गान है, जन-जन में मेरे गान की अपनी पहचान और अपना सम्मान है, चाहे वह किसी भी भाषा-भाषी का हो मेरा गान करता है...

हाँ, हिंदी हूँ मैं जो सबकी शान बनकर उभरती हूँ, जिसे सीखा नहीं महसूस किया जाता है वह हिंदी हूँ मैं...

हिंदी हूँ मैं जिस का एक लंबा इतिहास है, जिसे पूर्ण रूप देने में कई महर्षियों, कवियों, विद्वानों ने अपने ज्ञान से हिंदी को एक नई उमंग, नया चिंतन, नया बोध, नई दिशा नई, परिभाषा, नया साहित्य, कई रचनाओं के माध्यम से समाज में निरंतर विकसित किया है...

हाँ, हिंदी हूँ मैं जिसकी एकता सामूहिक है हर जाति की भाषा की शुरुआत हिंदी से है। इसके बिना हर मार्ग अधूरा और अविकसित हैं...

जिसमें धरती माँ की कोख से जन्मी इस जन्मभूमि की पहचान है एक भाषा नहीं हम सब की मातृभाषा है, पर हिंदी का विकास तभी संभव है जब उसके स्वरूप और उसका साहित्य उसके साथ जुड़े होंगे...

वह शान से कह सकती है हाँ, हिंदी हूँ मैं।



**हरिओम**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

## माँ

जब मुझसे किसी ने पूछा माँ क्या है?

तो मैंने जवाब दिया

माँ

एक अलग सा एहसास है

कोई सुंदर सा एक राज है

कोई महकता हुआ गुलाब है

वह है माँ

जो मेरे हर तकलीफ को पहले समझ जाती है

जो मेरे लिए भगवान से पहले आती है

इस दुनिया की समझ जो मुझे बताती है

वह है माँ

मेरी हर चीज को अच्छे से संभालती है

कुछ हुआ तो सबसे पहले नजर उतारती है

कुछ बात हो तो मेरा नाम पुकारती है

वह है मेरी माँ

**हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है,  
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक  
भाषाओं की अग्रणी श्रेणी में सभासीन  
हो सकती है।**

—मैथिलीशरण गुप्त



**सबिता कुमारी**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## फौजी की यादें

वह टोपी भी महफूज रहे  
वह वर्दी भी महफूज रहे  
जहाँ लहरे भारत माँ का ध्वज।  
वह धरती भी महफूज रहे।  
न भेद हिंदू का न भेद मुसलमान का रहे  
जिस आघात में पल रहे माँ के लाल सभी  
उस आँचल का हर एक रंग महफूज रहे।  
खेतों की लहलहाती हुई हरियाली महफूज रहे  
बच्चों के चेहरे पर खिलखिलाती हुई  
खुशियाँ भी महफूज रहे।  
जो दिन-रात दौड़ता है सीमा पर  
उसका कंधा भी मजबूत रहे  
उसका कंधा भी मजबूत रहे  
जय हिंद।

## जरूर देखना

अपनी तकलीफ जब ज्यादा लगने लगे।  
तो एक बार बेसहारों को जरूर देखना।।  
जब भी मन में भोजन फेंकने का विचार आए।  
तो भूखे सोते हुए बच्चे को जरूर देखना।।  
जब भी अपने टूटे-फूटे घरों से घृणा होने लगे।  
तो सड़कों पर सोते हुए लोगों को जरूर देखना।।  
जब भी पढ़ने में दिल न लगे।  
तो होटल की दुकान पर काम करते हुए  
बच्चों को जरूर देखना।  
जब भी सफलता की सीढ़ियों से उतरने का मन करे।  
तो एक बार इतिहास पलटकर जरूर देखना।  
जब भी खुद पर घमंड आने लगे।  
तो एक बार शमशान के राख को जरूर देखना।

## पैसा और शिक्षा

पैसा समाज में मान-सम्मान बढ़ाता है  
पर शिक्षा अलग पहचान दिलाती है।  
पैसा हमारी जरूरतों को पूरा करता है  
पर शिक्षा हमारे लिए क्या जरूरी है  
ये बताती हैं।  
पैसा हमें श्रेष्ठ बनाता है  
पर शिक्षा हमें सर्वश्रेष्ठ बनाती है।  
पैसा हमें अमीरों की गिनती में लाता है  
पर शिक्षा हमें महानों की गिनती में लाती है  
पैसा पेट भरता है  
पर शिक्षा ज्ञान भरती है  
पैसा से ही हर काम होता है  
पर शिक्षा हर जगह काम करती है।  
पैसा बेहतर जिंदगी जीना सिखाता है  
पर शिक्षा बेहतरीन जिंदगी जीना बताती है।

## मैं लाल किला

नन्हें-नन्हें बच्चों को समेटे अपने हृदय में  
मैं अत्याचार सहता रहा  
वे बच्चे अत्याचारियों के शिकार न हो जाएं  
इसलिए मैं अपने ही ऊपर जख्म भरता रहा।  
जमीन से लेकर आसमाँ तक चढ़े ये अत्याचार करने वाले  
सबका अत्याचार मैं सहता रहा  
उखाड़-उखाड़ कर फेंके जा रहे थे, भारत के पताके।  
मैं सब देखता रहा, हाँ मैं अत्याचार सहता रहा।  
मेरे जख्मों का मरम्मत तो फिर से कराओगे  
पर यह बताओ  
मेरे दर्दों की कीमत क्या लौटा पाओगे?  
ध्वज के आगे शीश तो झुकाओगे  
मेरे मस्तक पर फिर से ध्वज लगाओगे,  
पर यह बताओ  
क्या पताके का मान सम्मान लौटा पाओगे?  
माना कि तुम्हारे हक की लड़ाई सही थी  
पर वह लड़ाई मुझसे तो नहीं थी  
दिखाया जाता है जिस दिन जवानों की  
सर्वशक्ति पूरे विश्व को, तुमने उसका भी अपमान किया  
लाठी-डंडों, तलवारों से वार किया।  
कई मीटर ऊँची दीवारों से ढका गया  
कई बार ट्रैक्टर से रौंदने का प्रयास किया गया  
उसके वर्दी का भी अपमान किया गया।  
किसी का हाथ टूटा, तो किसी का सर टूटा  
कोई हॉस्पिटल के बिस्तर पे  
तो कोई घर के बिस्तर पर तड़पता रहा।  
चाहे अब लाख मांगे माफी, चाहे हजार करो वाद-विवाद  
पर मेरा एक ही सवाल, क्या ऐसे होते हैं किसान  
मैं लाल किला।



**देवकी दक्ष**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, द्वितीय वर्ष

## धन्यवाद दीदी

कुछ दिनों का ही रहा होगा जब  
हमें एक पेड़ के नीचे मिला था।  
थोड़ा बड़ा हुआ तो तोते जैसा दिखता था।  
हरा शरीर, लाल चोंच, सुंदर शक्ल और मोती जैसी आँखें  
हमारे घर में पला बढ़ा यह तोता अपने आपको चिंटू बेबी  
कहता और मुझे दीदी।  
हमारे शब्दों को सीखकर, कभी गुड मॉर्निंग तो कभी गुड  
नाइट कह कर सबको हँसाता और खुद भी हँसता  
हा हा हा हँसी उसकी बिल्कुल इंसानों जैसी  
कमर मटकाना गोल घूमना  
तेज आवाज में सीटी बजाना  
लेकिन कभी-कभी पिंजरे में घबराना इस कंधे से  
उस कंधे पर इतराना  
ऐसे ही चिंटू अब पूरा बड़ा हो गया था।  
एक दिन शीशे की खिड़की पर बैठकर  
पूरे दिन चिल्लाता रहा।  
जाने क्या बाहर की दुनिया में खोया रहा।  
चिंटू शायद अब आजादी चाहता था,  
तोतों के झुंड के साथ उड़ जाना चाहता था।  
मैंने घर में बिना किसी को बताए खिड़की खोल दी।  
चिंटू ने भावुक आँखों से आजादी की  
खुशी की भाषा बोल दी।  
उसने मुझे भाव भरी आँखों से देखा और  
बहुत तेज कुछ बोलते हुए उड़ गया।  
आखिर उसकी आजादी भी तो प्यारी थी,  
खुले आसमान में उड़ते हुए  
मेरे लिए उसके आखिरी शब्द रहे होंगे  
'धन्यवाद दीदी'।  
अब मुझे हर तोते में चिंटू दिखता है।



**दिव्या**

बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## इंसाफ नही होता !

जुर्म होता है, साजिश भी होती है  
दर्द होता है, तकलीफ भी होती है  
लेकिन, इंसाफ नहीं होता!

आबरू लूटी जाती है, इज्जत से खिलवाड़ भी होता है  
सरे राह होता है, कानून का मजाक भी होता है  
लेकिन, इंसाफ नहीं होता!

चंद टुकड़ों पर वर्दी भी बिकती है, तो कहीं वर्दी पर जान  
निछावर हो जाती है  
बेशुमार रंग होते हैं, कभी काले तो कभी श्वेत होते हैं  
लेकिन, इंसाफ नहीं होता!

सरेआम देह से प्राण और सड़क पर  
खून निकाल दिया जाता है,  
चश्मदीदों की नजरों का सुकून होता है  
और जुबान भी बंद बक्से-सी बंद हो जाती है,  
प्रक्रिया भी दंग हो जाती है  
लेकिन, इंसाफ नहीं होता!

तारीख पे तारीख और कार्रवाई के नाम पर  
सुनवाई भी होती है, मौका-ए-वारदात के बाद  
सिस्टम की हाजिर जवाबी  
और अगर केस हो बड़े घर का तो सीबीआई भी होती है ...  
लेकिन, इंसान नहीं होता!

गर मिले सुकून कार्रवाई से तो सालों बीत चुके होते हैं  
सही मायने में वह इंसाफ-इंसाफ नहीं होता...!



काजल ठाकुर  
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## कुछ दिल की कुछ मन की

हाँ, थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
आने वाले कल की सोच में...  
आज को बर्बाद करने लगी हूँ...  
हाँ, थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
आस-पास का देख, बेसुध और उदास होने लगी हूँ...  
हाँ, थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
हाँ... मैं खुद को कहीं... खोने लगी हूँ...  
और थोड़ी नहीं... कुछ ज्यादा ही...  
परेशान रहने लगी हूँ...  
हाँ... थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
छोटी-छोटी बातों पर भी चिढ़ने लगी हूँ...  
हाँ... मैं अब कहीं और का गुस्सा... कहीं और...  
निकालने लगी हूँ...  
हाँ... थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
बिना मुझे समझे... मेरे हालात जाने...  
लोग मुझे ही... हर गलती के लिए जिम्मेदार माने...  
हाँ... थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
हाँ... कल तक रहे जो दोस्त मेरे... वे मुझे ही गलत बताने  
लगे है... मुझसे दुखी होकर दामन छोड़ने लगे है...

हाँ... मुझसे हाथ छोड़ाकर (कल तक रहे जो दोस्त मेरे)  
वे भागने लगे हैं... अपनी मस्ती की उन गलियों में...  
(जो कल तक मेरे बिना अधूरी हुआ करती थी)  
मंडराने लगे हैं...  
हाँ... थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
मतलब की इस दुनिया में...  
मैं लापरवाही दिखाने लगी हूँ...  
लेकिन अब... झूठ, फरेब के रिश्तों से... मैं तुम दोस्तों को  
आजाद करने लगी हूँ...  
हाँ... मैं ही अब तुम लोगों से दूर रहने लगी हूँ...  
किसी को गलत क्यों समझूँ... किसी को गलत क्यों मानूँ...  
जब वक्त ही पासा पलटे तो तुम्हें दोषी क्यों मानूँ...  
हाँ... थोड़ी परेशान रहने लगी हूँ...  
(वक्त की फिक्र में वक्त से ही अनजान रहने लगी हूँ...)  
और आखिर में...  
हालात बदलेंगे... वक्त फिर लौटकर आएगा...  
और सब ठीक हो जाएगा...  
इसी उम्मीद से आगे बढ़ने की कोशिश करने लगी हूँ...  
क्योंकि माँ को देख...  
अब मैं भी ढाढ़स बाँधना सीखने लगी हूँ!  
हाँ... मैं अब बदलने लगी हूँ...  
और बदलना अच्छा होता है।  
लेकिन खुद को कहीं-किसी वजह से खोकर नहीं...  
ध्यान रखूँगी।

कष्ट ही तो वह चाक शक्ति है जो इंसान को कसौटी पर परखती है और उसे आगे बढ़ाती है ।

—वीर सावरकर



**काजल ठाकुर**  
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## नारी का अस्तित्व

मर्यादाओं और सीमाओं से परे वह पंख फैलाना जानती है,  
तोड़ पिंजरे की सलाखें वह उड़ना जानती है,  
उसकी शक्ति का अनुमान, तुम क्या जानोगे?  
जो जन्मे एक औरत की कोख से...  
एक नारी का ही अस्तित्व मिटाना चाहते हो?  
स्वयं के मिथ्या अभिमान में चूर...  
उसे गरियाना जानते हो?  
अरे उसकी शक्ति का अनुमान, तुम क्या जानोगे?  
जो मिट जाए... वह मिटाना भी जानती है,  
वह करुणानिधि, ममतामयी, संघर्षशील,  
जीवनदायिनी, त्याग और प्रेम की भावना से परिपूर्ण...  
देवी ही नहीं, चांडालिका बनना भी जानती है...  
उसकी शक्ति का अनुमान, तुम क्या जानोगे?  
जो जन्में एक औरत की कोख से...  
एक नारी का ही अस्तित्व मिटाना चाहते हो?

**हिंदी साहित्येतिहास की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें**  
**गार्सा द तासी- इस्त्वार द ला लितरेत्यूर ऐंदुई**  
**ऐन्दुस्तानी (1839 ई.)**  
**शिव सिंह सेंगर- शिव सिंह सरोज (1883 ई.)**  
**ग्रियर्सन- द मॉडर्न वर्नेक्युलर लितरेचर ऑफ**  
**हिंदुस्तान (1988 ई.)**  
**मिश्र बंधु- मिश्रबंधु विनोद (1913 ई.)**  
**रामचंद्र शुक्ल- हिंदी साहित्य का इतिहास**  
**(1929 ई.)**  
**हजारीप्रसाद द्विवेदी- हिंदी साहित्य : उद्भव**  
**और विकास (1952 ई.)**  
**नगेन्द्र (सं.)- हिंदी साहित्य का इतिहास**  
**(1973 ई.)**

## शुभ विवाह या दहेज

प्यार तो था ही नहीं, इजहार कैसे कर दूँ?  
शादी तक तो सोचा ही नहीं, तुम्हें 'हाँ' कैसे कर दूँ?  
तिनका-तिनका जोड़कर...  
बनाया है घर, मेरे माँ-बाप ने...  
दहेज के उन साढ़े छः लाख के लिये,  
उस घर को तबाह कैसे कर दूँ...  
प्यार तो था ही नहीं, इजहार कैसे कर दूँ?  
शादी तक तो सोचा ही नहीं, तुम्हें 'हाँ' कैसे कर दूँ?  
चलो मान लिया... कि होती है जरूरत...  
हर इंसान को, एक हमसफर, हमराही की ...  
लेकिन जो साथ न निभा सके?  
न मेरे साथ... सफर के दो कदम मिला सके?  
उसके हाथ अपनी आगे की जिंदगी बर्बाद कैसे कर दूँ?  
प्यार तो था ही नहीं, इजहार कैसे कर दूँ?  
शादी तक तो सोचा ही नहीं, तुम्हें 'हाँ' कैसे कर दूँ?  
होगी कुछ उम्मीदें, कुछ सपने, तुम्हारे माँ-बाप के भी...  
लेकिन तुम्हें पाने के लिए...  
मैं अपने व अपने परिवार की खुशियाँ न्यौछावर कैसे कर दूँ?  
प्यार तो था ही नहीं, इजहार कैसे कर दूँ?  
शादी तक तो सोचा ही नहीं, तुम्हें 'हाँ' कैसे कर दूँ?  
मैंने... अपने लिए, मम्मी-पापा को कुर्बानी देते देखा है...  
खुद से ज्यादा बेटी की खुशियों को तवज्जो देते देखा है !  
तो तुम्हारे लिए...मैं उनके सपनों और  
उम्मीदों पर पानी कैसे फेर दूँ?  
प्यार तो था ही नहीं, इजहार कैसे कर दूँ?  
शादी तक तो सोचा ही नहीं, तुम्हें 'हाँ' कैसे कर दूँ?  
चाहे... लाख मुझे तुम कोस लेना,  
चाहे... लाख तुम चेतावनी देना  
मैं लौटकर फिर न आऊंगी  
इस जन्म तो क्या... मैं अगले सात जन्मों तक  
अपने माँ-बाप का साथ निभाऊँगी।



**आकांक्षा**

बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## नन्हा पौधा

एक बीज था गया बहुत गहराई में बोया  
उसी बीज के अंदर था नन्हा पौधा सोया  
उस पौधे को मंद पवन ने आकर पास जगाया  
नन्हीं—नन्हीं बूँदों ने फिर उसपर जल बरसाया  
निद्रा छोड़ो बेटा अब तुम आँखें खोलो  
बादल बोले पानी लाया हूँ, मुँह तो धो लो  
आँखें खोलकर पौधे ने ली अंगड़ाई  
आलस छोड़ा और अनोखी शक्ति समाई  
तन में फिर आ गई एक नई उमंग  
बाहर आया पौधा व उसे मिली नई सुगंध  
नींद त्याग जैसे ही पौधा बाहर आया  
उसने जगत का कुछ अलग और अद्भुत रूप पाया  
तब सूरज ने आकर बात एक थी बोली  
अलसायी आँखों के कितने नम से है खोली  
पौधे को मिली जैसे एक नई दिशा  
सूरज की किरणों ने दिया अंधेरा मिटा  
पौधे ने सोचा मुझे उठना ही पड़ेगा  
तभी तो सब लोगों को नया जीवन मिलेगा।

## बहुत कम सीखा है

बहुत कम सीखा है अभी तो जिंदगी से  
बहुत कुछ सीख लेना बाकी है,  
सब्र किया ही कहाँ है अभी तक  
अभी तो रफ्तार बाँध लेना बाकी है,  
नादानियाँ ही की है अभी तक  
अभी तो समझदारी दिखाना बाकी है  
हादसे हुए ही कहाँ हैं अभी तक  
अभी तो रूतबा दिखाना बाकी है  
इल्जाम ही लगे हैं अभी तक  
अभी तो सब की चर्चा में गूँजना बाकी है!



**गुलफसा**

बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## हवस

(यह कविता उस पुरुष के भाव व्यक्त करती है, जब वह किसी लड़की के प्रति जानवर का वेश धारण कर लेता है)

दिल में तुम्हारे कैसी आग है,  
कि बड़े से बड़ा दरिया निजात है।  
लगता है किसी नादान की बर्बादी का एहसास है  
तुम्हारे साथ हवस का साथ है।  
शायद तुम्हें अपने ऊपर किसी चीज को लेकर नाज है,  
लेकिन याद रख कर्म हमेशा साथ है।  
बिना वजह रोज कई लोग मर जाते हैं यहाँ,  
लेकिन बड़े लोगों का कुछ अलग इतिहास है यहाँ।  
हम कर क्या सकते हैं? वैसे कलम तो कई बार उठे हैं  
फिर भी रोज नई खबर छपी है।  
कई तो जिंदगी से डटकर लड़ने पर  
भी मौत से हार गई हैं,  
और कई तो तुम्हारे हाथों ही मार दी गई हैं।  
अरे! क्या फर्क पड़ता है  
वह तुम्हारे घर की थोड़ी ही है।

## चाहती हूँ

उड़ते परिंदे और चलती हवाओं को पकड़ना चाहती हूँ  
कुछ इस तरह अपने लक्ष्य पर काबू पाना चाहती हूँ  
जो गलत हो उसे गलत ठहराना चाहती हूँ  
मैं अब किसी से डरना नहीं चाहती हूँ  
पराए को अपनों में ढूँढना चाहती हूँ  
और उनसे बहुत सारा प्यार चाहती हूँ  
आईना और परछाईं सी बनना चाहती हूँ  
कुछ इस तरह कलम की स्याही को  
पन्नों पर उतारना चाहती हूँ



**अर्पित गुप्ता**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

## आधुनिक राजनीति-एक परिचय

राजनीति एक अखंड जुआ है जिसकी पार्टी का सूरज उदय हो उसी की दुआ है शब्दों के जाल में, भावों के हाल में, कई लोग बिकते हैं रातों ही रात में, नोटों की गड्डी पर अनेक वोट मिलते हैं यह शतरंज की विसात है, खुला एक मैदान है युवाओं और प्रतिभागियों की पहचान है नेताओं का खेला है जिसकी अभिलाषा हो उसी के समर्थन का मेला है विभिन्न समूह चारित्रिक मंच को दर्शाते हैं अपनी पार्टी को पूर्ण बहुमत दिलाने के लिए लालायित हैं नई-नवेली राजनीतिक पार्टियाँ जीतने के लिए रोती हैं विभिन्न वर्गों की राजनीतिक प्रणाली निर्णायक होती है राजनीति में पक्ष-विपक्ष के दाव-पेंच होते हैं फिर क्यों न जाने जनहित समूह अपनी आवश्यकताओं, उम्मीदों के लिए भूखे पेट सोते हैं राष्ट्र का भविष्य स्वतंत्र राजनीति का आधार है यही सुदृढ़ कार्यप्रणाली का उपचार है शिक्षा और चुनाव नीति रूपी परिचायिकता को दर्शाता है शुद्ध राजनीतिक और कार्यशील राजनीति को अपनाता है उम्मीदवारों की विजय और देश की पहचान होती है सबल राजनीति और कर्मठ नेतृत्व राज्य की जान होती है अन्न और रोजगार जनता का अधिकार है यही मूल अर्थव्यवस्था का आधार है नैतिक और नेता समाज का साथ तीनों विकास की काठ बाँटते हैं जनता के कर्तव्यों पर साज सजते हैं सोचो, समझो, परखो और विवेक का उपयोग करो राजनीति और काज का व्यावहारिक रूप से सावधानी पूर्वक उपभोग करो।

## आतंक की गृहणता

हम भारतीयों का यह कसूर है क्यों हम अभी भी इतने मजबूर हैं अपने सरताज की, धरती माता की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं कश्मीर जैसे स्वर्ग में अपने ही घातक बनते जा रहे हैं ये खुशियों से भरा स्वर्ग का अफसाना क्यों बनता जा रहा है खून से भरा जवानी का पैमाना क्या हथियार ही इसका समाधान है महसूस होता आतंकी दानव का यही एक अंजाम है धरती माता के रक्षकों का यही एक पैगाम है अब न सोने देंगे आतंक के पहरेदारों को जीवन पर्यंत खात्मा करेंगे इनकी हर ललकारों को सेना ने यह प्रण लिया है ऋण चुकाने का धरती माता को यह वचन दिया है विनाश तब और भयानक लगता है जब कोई अपना मौत की टोली में सजता है शिक्षित आतंक नहीं मुस्कान का दामन नोचता है अनजान बच्चा भी फिर हक जमाने के लिए हथियारों को खोजता है जागरुकता का दामन फिर छूटा-छूटा सा लगता है बिखरे हुए माता पिता का दिल पिघले हुए मोम की तरह लगता है ऊपर से सत्ताधारी और मंत्रिमंडल निर्णय कर पाते हैं जात-पात के डर से एक दूसरे के बैरी बन जाते हैं इस कारण शय बन जाता है इसलिए यह गृहणता का अपराधी आम जनता पर कहर ढाता है सेना हो या केंद्रीय बल आखिर वे भी तो इंसान हैं हमारा भी फर्ज बनता है रक्षा और जागरुकता को फैलाने का तभी तो हमारा देश भी महान है भारत के वीर फौजियों तुम्हें कोटि-कोटि नमन है बस कोई अपना न रह जाए बस इसका ही गमन है इसकी माटी में हर माँ ने अपनी ममता का बीज बोया है हर सैनिक खुशी-खुशी इसकी चादर में शहीदी की नींद सोया है जीवन की वीरांगनी दास्तां आबाद रहे बलिदानों की कर्ज की शहादत युगों-युगों तक याद रहे।





**उपासना शर्मा**

बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, द्वितीय वर्ष

## प्रेम

प्रेम सत्य है, प्रेम सनातन  
प्रेम बिना है सूना जीवन  
प्रेम कृष्ण है, प्रेम है राधे  
प्रेम बिना परमात्मा आधे  
प्रेम तपस्या, प्रेम समर्पण  
प्रेम पे सारी सृष्टि अर्पण  
प्रेम प्रयास है, प्रेम है तृप्ति  
प्रेम बिना अधूरी सृष्टि।

## वह

स्वच्छंद है वह मनमानियों सी  
टोका न करो उसे  
चंचल है वह पानियों सी  
रोका न करो उसे  
बरस जाए तो आग जैसी है  
ठहर जाए तो राग जैसी है  
गंभीर भी है वह जलधर सी  
नासमझ भी है वह बचपन सी  
किसी के लिए उदार है  
किसी के साथ मतलबी है  
समझना मुमकिन नहीं उसे  
अपने लिए भी अजनबी है वह।



**कशिश छाबरा**

बी.एससी. (ऑनर्स) सांख्यिकी, प्रथम वर्ष

## सम्मान

सम्मान है, श्रद्धा और विश्वास भी,  
अध्यापक की भूमिका में आया बदलाव भी।

वैदिक काल में थी विद्या में आस्था,  
शिष्यों और गुरुजनों के दरमियान शून्य था फासला।  
विद्या का बीज शिष्यों में बोते,  
गुरुकुल में मानवीय मूल्यों को सँजोते।

मध्यकालीन युग में शिक्षा का हुआ नया सवेरा,  
ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, पुराण आदि ने डाला डेरा।  
इस युग में कई महान शिक्षक आए,  
शिक्षक की भूमिका में चार चाँद लगाए।

आधुनिक युग में मानवीय मूल्यों के  
साथ था ज्ञान का ताल मेल बिठाना,  
और पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाना।  
आज अध्यापक ही है सर्वोपरि,  
बच्चों के सर्वांगीण विकास की  
जिम्मेदारी उस पर आ पड़ी।

सम्मान है श्रद्धा और विश्वास भी,  
अध्यापक की भूमिका में आया बदलाव भी।

**प्रेम असीम विश्वास है, असीम धैर्य है और असीम बल है।**

—प्रेमचंद



**रितेश कुमार पांडेय**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, द्वितीय वर्ष

## कर्ण रश्मि रथी

जन्म उसकी माया थी, क्षत्रिय उसका वर्ण था  
लौह उसकी काया थी, नाम उसका कर्ण था  
माँ ने साथ न दिया, पिता का न साथ था  
गंगा माँ का वह लाडला, दिनकर का सर पे हाथ था  
कानों में तेज कुंडल का, छाती पर कवच अनोखा था  
सूत पुत्र से संबोधित होता, सबकी आँखों का यह धोखा था  
खाली हाथ न लौटाऊँ मैं, कुछ हूँ ऐसा दानी मैं  
कवच कुंडल दान दे दिया, कुछ हूँ ऐसा शानी मैं  
जाति का था छोटा, कहते थे कि अच्छूत हूँ मैं  
इंद्र माँगे भीख जिससे, ऐसा सूत पूत हूँ मैं  
भीष्म बोले युद्ध कला, धुनर्विद्या में हूँ रमणीय मैं  
सत्य को जो पूजता, ऐसा हूँ क्षत्रिय मैं  
सूत पुत्र होने पर भी था, कर्ण कुरुक्षेत्र का हिस्सा

दिवस अढ़ाई चला समर में, कीर्ति कथा का किस्सा  
कर्ण बना उस युद्ध में, कौरवों का नायक था  
सामने संबोधित करता गीता का गायक था  
उसने युद्ध में इंद्र का अस्त्र, श्राप का बाण चलाया  
और कृष्ण ने हर मोड़ पर अर्जुन को बचाया  
पहिया भूमि में लगा धसने, देख कर्ण घबराया  
श्राप गऊ और परशुराम का याद कर्ण को आया  
फिर भी खड़ा हुआ लड़ने अम्बर से मस्तक लेकर  
लड़ रहा था युद्ध में वह वचन माँ कुंती को देकर  
अर्जुन हुआ मूर्छित और कर्ण कुछ घायल थे  
योद्धा, देवता सब कर्ण के शौर्य के कायल थे  
कर्ण उतरे रथ से और रथ के पहिये छुए थे  
देख कर्ण को बिना शस्त्र के व्याकुल यादव हुए थे  
बोले कृष्ण 'पार्थ चिंता छोड़ो व्यर्थ न शंशय पालो  
पाप पुण्य सब मैं देखूँगा वध इसका कर डालो'  
उठाया शस्त्र अर्जुन ने और दिव्य बाण चलाया  
और मस्तक कर्ण का भूमि पर गिर आया  
रश्मि रथी का शीश भूमि पर कट कर पड़ा हुआ था  
जीत कर भी अर्जुन रथ पर लज्जित खड़ा हुआ था  
अपने जीवन के चक्र को, मैंने हँस कर किया दान  
वचन नहीं तोड़ा मरने तक, मृत्यु का रख लिया मान  
उसके बल में बसते थे युद्धों के सारे निर्णय भी  
वह सूर्य पुत्र, वह रश्मि रथी, वह महावीर अतुलित महान।

## कर्ण



**निशांत कुमार सिंह**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

कृष्ण रोए जिसके मृत्यु पर, वह कर्ण बड़ा अभिमानी था।  
कुंडल कवच किया भेंट इंद्र को, कर्ण नहीं वह दानी था।।  
भाग्य अभाग्य था उसका, वह सूत पुत्र बड़ा ज्ञानी था।  
मित्र दुर्योधन था उनका पर, वचनों में माधव वाणी था।।  
पैदा होते माँ ने त्यागा शाप दिया परशुराम ने।  
दर-दर भटक रहा था वह पहचान बनाने संसार में।  
धृतराष्ट्र नहीं थे नेत्रहीन अंधकार में जग ये सारा था।  
सूर्य पुत्र को सूत समझे नियति का खेल भी न्यारा था।।  
कर्ण खड़ा है पैर टिकाये कुरुक्षेत्र मैदान में  
बरस रहा है रणभूमि में पाशुपतास्त्र और प्राण मय।  
देवों ने था रचा चक्रव्यूह माधव का यही इशारा था।  
धस गया पहिया धरती में कर्ण बना बेचारा था।।  
दिख रही मृत्यु समक्ष अंतिम समय अब आया था।  
बाहें फैलाए कर्ण खड़ा ये नीत नहीं ये माया था।।  
आंखे भर आयी, फिर माधव की वत्स को जग से जाता देख  
शूरवीर तेजस्वी वह चढ़ गया मृत्यु की भेंट।।



**कृष्णचंद्र मिश्र**

बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत, तृतीय वर्ष

## संस्कृत की लाडली बेटी है हिन्दी

संस्कृत की एक लाडली बेटी है यह हिन्दी।  
बहनों को साथ लेकर चलती है यह हिन्दी।  
सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,  
ओजस्विनी है और अनूठी है यह हिन्दी।  
पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है,  
मैत्री को जोड़ने की सांकल है यह हिन्दी।  
पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, सुगम है,  
साहित्य का असीम सागर है यह हिन्दी।  
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,  
कवि सूर के सागर की गागर है यह हिन्दी।  
वागेश्वरी का, माथे पर वरदहस्त है,  
निश्चय ही वंदनीय माँ-सम है यह हिंदी।  
अंग्रेजी से भी इसका कोई बैर नहीं है,  
उसको भी अपनेपन से लुभाती है यह हिन्दी।  
यूँ तो देश में कई भाषाएँ और हैं,  
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है यह हिन्दी।

## कविता

केवल शब्दों का ढेर मात्र नहीं,  
कविता है कवि की कल्पनाओं का एक सुंदर बगीचा  
जिसमें प्रेम में श्वेत पुष्प और वियोग में सूखे श्वेत पुष्प  
दोनों रहते हैं साथ-साथ, जिसमें उगते हैं क्रांति के  
रक्त पुष्प कभी-कभी, जिनके उगने से  
डोलने लगते हैं कई सिंहासन  
जिनके अर्पण से होते हैं देव अवतार  
कविता विचार है शब्दों का  
कविता मौन अभिव्यक्ति है शब्दों की  
जिसका एक-एक शब्द रचता है अपना अलग संसार  
ब्रह्मा की भांति कविता ब्रह्म है,  
कविता गुलदस्ता है सभी मानवीय भावों का  
कविता केवल ढेर नहीं है शब्दों का।



**राजकुमार**

बी.ए. (ऑनर्स) संस्कृत, प्रथम वर्ष

## जमाना

जमाना भी एक ऐसा एप्लिकेशन है  
जो हर दिन, हर रोज और हर घंटे  
एक नया अपडेट माँगता है  
इन माथे की दीवार से।  
और मैं उस जमाने को बताना चाहूँगा कि  
तुम्हारी औकात याद दिलाना बस एक समय का खेल है।  
मत खोल मेरे माथे की दीवार को  
क्योंकि जो मैं था वह मैं रहा नहीं और  
जो मैं हूँ वह कोई जानना नहीं चाहता।  
हाँ मिल के देख तू मेरे जज्बात से  
दुनिया की औकात पता चल जाएगी।  
क्योंकि प्यार भरी आँखों के लिए  
यह जमाना ही सवाल बनता है।  
अगर तुमको कुछ काम न हो  
तो छोड़ दो इस दुनिया को...  
कसम से बहुत उन्नति दिलाता है जमाना।  
अगर तुमको लगता है कि कंप्यूज हो इस दशक से  
सो बदल दो उस दशक को  
क्योंकि इस जमाने का मजा जमाने के साथ ही आता है।

**हिंदी भाषा द्वारा हमारे भारत को एक सूत्र  
में पिरोया जा सकता है।**

—स्वामी दयानंद सरस्वती



सचिन प्रजापति

बी.ए. (ऑनर्स) राजनीतिक विज्ञान, द्वितीय वर्ष

## ईश्वर का अवतार है पेड़

एक बार की बात बताऊँ, सुनो—सुनो एक व्यंग्य सुनाऊँ,  
ईश्वर ने सब जीव बनाए, धरती अंबर सब मुस्काए।  
था मन ही मन बहुत खुशी मैं, अपनी रचना देख—देख के,  
रंग—बिरंगी यह दुनिया थी, जीव—जंतु थे बड़ी खुशी में।  
सोच रहा था ये मानव, खूब करेगा इसकी रक्षा,  
यह अनुपम रचना है मेरी, यह बनेगा माली सच्चा।  
ये मानव तो दानव बनकर, चला लूटने सब खुशहाली,  
लालच के आगोश में आकर, सभी व्यवस्था नष्ट कर डाली।  
मतलब की चालें ये चलता, लालच की बातें ये करता,  
कपटी इसकी प्रवृत्ति है, स्वार्थ भाव की आहें भरता।  
बेड, कुर्सी, टेबल है लकड़ी, खेती का वह हल भी लकड़ी,  
घर का छप्पर भी एक लकड़ी नदियों का वह पुल भी लकड़ी।  
घर की लकड़ी पेड़ से लाते, घर बनाते पेड़ काटते,  
सब जीवन लकड़ी पे जीते, मरते तो लकड़ी पर जाते।  
जीव—जगत का शोषण करता, काट—काट कर पेड़ रूलाए,  
वृक्ष जो जीवन देने वाले, उनको कितना कष्ट पहुंचाए।  
जीवन के हर क्षेत्र में पेड़, सहनशीलता इन का भाव,  
चोटिल होता यदि मानव, तब भी ये भरते उसके घाव।  
छाया, ईंधन, जल देते ये, कहां बदले में कुछ लेते ये,  
हंसते—हंसते खुशियां बांटे, खट्टे—मीठे फल देते ये।  
वर्षा इनके कहने पर आती, कृषि जनों के मन को भाती,  
हरियाली से उसे बुलाते, हंसती दौड़ी वह जल्दी आती।  
उपकार कितने मैं इनके गिनाऊँ, जीवन का आधार है पेड़,  
न शोषण कर मानव इनका, ईश्वर का अवतार है पेड़।

प्रकृति की सभी चीजों में कुछ न कुछ अद्भुत  
है।

—अरस्तु

## प्लास्टिक मुक्त करें ये भूमि

एक समय ऐसा जीवन था सब खुशहाली से जीते थे  
न प्रदूषण की चिंता थी न प्लास्टिक की बातें करते थे।  
लकड़ी मिट्टी के बर्तन थे, प्राकृतिक वह सब चीजें थी  
धरती माता की गोदी में, ये सारी चीजें पनपी थी।  
कपड़े और जूट का थैला था, न पर्यावरण को हानि थी  
सारी भूमि उपजाऊ थी, न सतत् विकास की कहानी थी।  
आलस के आगोश में आके, लालच की सब बातें सुनके  
श्रमी मनुज फिर स्वार्थी बनकर, पैसों की आहट में बहके।  
बड़े—बड़े उद्योग लगाकर, अतिशय प्लास्टिक पैदा करना  
पैसों की आंधी में उड़कर, वातावरण को दूषित करना।  
जीवन का हर क्षेत्र प्लास्टिक, प्लेट, बाल्टी, ब्रश प्लास्टिक  
ग्लास, चम्मच, मग प्लास्टिक, बोतल, थैला, पेन प्लास्टिक।  
कब्जा कर सारी दिनचर्या, यह एक दानव बन गया है  
बिन इसके कहां काम चले है, ऐसा इसने बांध लिया है।  
हाय प्लास्टिक! हाय प्लास्टिक! चहुंओर गजता ये प्लास्टिक  
हाहाकार मचा रखा है खूब रूलाता ये प्लास्टिक  
नदियाँ दूषित ताल भी दूषित, दूषित होता प्रेम का गागर  
जीवन को देता जो गहना, दूषित होता वह महासागर।  
जो माता देती थी भोजन, उसी की गोदी बंजर करने  
जहां से मिलता अन्न का दाना, उसी के तन को मैला करने।  
पहले जो अच्छा लगता था, वह प्लास्टिक अब दुखता है  
दुखने से होती क्या भलाई, गली—गली भी अब बिकता है।  
जो तुम जीवन जीना चाहो, तो फिर प्लास्टिक मार भगाओ  
बंद करो हर गली प्लास्टिक, न आलस के आगोश में आओ।  
न बोझ बढ़ाओ धरती पर, माना सहने की आदी है  
पर प्लास्टिक तो दिल का पत्थर है, करता इसकी बर्बादी है  
जब दे न सको कुछ इस माता को, मलने की कोशिश भी छोड़ो  
दो नया उजाला दुनिया को, मानवता का नाता तो जोड़ो।  
लौट चलो ऐसे क्षण में जहां खुशहाली से जीते थे  
न प्रदूषण की चिंता थी न प्लास्टिक की बातें करते थे।  
ये धरा वसुंधरा देती है, बदले में कहां कुछ लेती है  
सारी गलती को माफ करे एक नया सवेरा देती है।  
प्लास्टिक मुक्त करें हर भूमि, उपजाऊ हर क्षेत्र हो जाए  
हरा भरा ये वातावरण हो, ऐसा हम एक विश्व बनाएं।



**सौम्या शर्मा**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## तुम जागते रहो

तुम जागते रहो,  
कर्म की दीवारें लांघते रहो।  
रात भी आएगी, भोर भी होगा,  
प्रलय आएगी, घनघोर भी होगा।  
तुम जागते रहो,  
कर्म की दीवारें लांघते रहो।  
शून्य आएगा, विस्फोट भी होगा,  
घर ढहेगा, प्रतिशोध भी होगा।  
तुम जागते रहो,  
कर्म की दीवारें लांघते रहो।  
चूल्हा भी बुझेगा, तृष्णा चरम पर होगी,  
पतझड़ भी आएगा, पेड़ की ठूठ में तब्दीली होगी।  
तुम जागते रहो,  
कर्म की दीवारें लांघते रहो।  
चिमनी भी क्षुब्ध होगी, परदे बिखर जाएंगे,  
मंच भी टूटेगा, कलाकार जल जाएंगे।  
तुम जागते रहो,  
कर्म की दीवारें लांघते रहो।

हिंदी का प्रथम समाचार पत्र 'उदंत मार्तण्ड' है। यह 30 मई 1826 ई. को पंडित जुगल किशोर के संपादकत्व में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। यह एक साप्ताहिक समाचार पत्र था। इसके प्रकाशन के दिन को आधार मानकर प्रत्येक वर्ष 30 मई को 'राष्ट्रीय हिंदी पत्रकारिता दिवस' मनाया जाता है। हिंदी का प्रथम दैनिक समाचार पत्र 'सुधावर्षण' है। यह 1854 ई. में कलकत्ता से ही श्यामसुंदर के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ।



**अनुभव मिश्रा**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## स्त्री...

स्त्री एक शरीर नहीं पूरा एक मानव रूपी पहाड़ है,  
जिसमें से सबको कुछ न कुछ चाहिए।  
वह एक स्त्री है जो समाज के  
नियमों को, कलंक को, अपमान को  
अपने शरीर का कपड़ा बनाकर बैठी है।  
जिसे समाज ने एक सामान बना कर रख दिया  
जो तुम्हारे लिए,  
तुम्हारी कामनाओं को पूरा करने के लिए।  
क्या उसकी कोई आवश्यकता नहीं  
क्या उसकी कोई आशा नहीं  
क्या उसके कोई सपने नहीं  
क्या उसका कोई आत्मसम्मान नहीं  
उसका भी एक खुला आसमान है,  
जिसमें वह पंख फैलाकर उड़ना चाहे  
सबको तुमने ही तो मारा है।  
वह एक स्त्री है जिसका अपना कुछ नहीं  
न उसका कोई संसार है  
न उसका कोई निर्णय है  
न उसके पास अपनी आवाज है।  
वह सहमी-सी कहीं घर के कोने में बैठी होगी  
जिसकी जरूरत काम है  
क्या उसकी कोई आशा नहीं  
उसका भी एक खुला आसमान है,  
जिसमें वह पंख फैलाकर उड़ना चाहे  
सब को तुमने ही तो मारा है।



“साहित्य मानव-जीवन से सीधा उत्पन्न होकर सीधे मानव-जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवन्त विवरण होता है, जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है।”

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (साहित्य सहचर)



**आयुष कुमार पाल**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

## सामाजिक मीडिया और सामाजिक आंदोलन

भारत, एक लोकतान्त्रिक देश अर्थात् तीन स्तम्भ यानि विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका इत्यादि मौलिक शासन व्यवस्थाओं से बना हुआ देश, जिसका चौथा स्तम्भ हम सामाजिक मीडिया को मान सकते हैं जिसका कार्य प्राथमिक तीनों स्तम्भों पर नजर रखना और सूचना को हम तक पहुँचाना है। मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका अदा करे तो किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्त्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है। किन्तु अगर बात इसके एक दूसरे पहलू की यानि सामाजिक आंदोलन में इसकी अभूतपूर्व भूमिका का अंदाजा हम इस इसके हुए विस्तार से लगा सकते हैं। यदि आंकड़े प्रस्तुत करें तो हम यह पाते हैं कि वर्ष 2019 में भारत में 574 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ता थे और अब 636 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ता हो चुके हैं और साथ ही भारत चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। इंटरनेट उपयोगकर्ता व सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने वाले उपयोगकर्ता पाए जाते हैं। वर्ष 2019 में भारत में कुल डेटा (4जी डेटा उपभोग के साथ) ट्रैफिक में 47% की वृद्धि हुई है। देश भर में खपत

होने वाले कुल डेटा ट्रैफिक में 4जी की भागीदारी 96% है जबकि 3जी डेटा ट्रैफिक में 30% की उच्चतम गिरावट दर्ज की गई। उपर्युक्त आँकड़ों से यह तो स्पष्ट है कि सामाजिक मीडिया का उपयोग बढ़ा तो जाहिर सी बात है कि वस्तुतः उपयोग तो फिर समस्त क्षेत्रों में बढ़ा होगा चाहे वह सामाजिक जुड़ाव हो या सामाजिक आंदोलन। अमूमन ये तो स्पष्ट ही हो जाता है कि मीडिया ने आंदोलनों को एक नया अवसर और नया माध्यम प्रदान किया है।

जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार इसके भी हैं, तो आगे के कुछ संबंधों पर चर्चा करते हुए हम यह पता लगाएँगे कि मीडिया ने आंदोलनों को या आंदोलनों ने मीडिया को किस प्रकार से प्रभावित किया है –

### सत्प्रभावः-

#### वैश्विक मंच

मीडिया एक वैश्विक माध्यम प्रदान करता है जिससे एक आम आदमी को अपने विचारों को सीधा सम्प्रेषित करने और सरकार द्वारा प्रदत्त समस्त सुविधाओं का लाभ उठाने का अधिकार दिया है और आम लोग अपने सवाल या परेशानियों को रेलवे और अन्य मंत्रालयों को पोस्ट कर देते हैं, जो इन दिनों आम खबर है।

#### निकटीकरण

मीडिया ने चाहे आंदोलन हो या सामान्य वार्ता को भौगोलिक सीमाओं से परे कर दिया है चाहे सामान्य संदेश पहुँचाने के लिए चैटिंग एप्प हो यो सूचना अथवा विरोध करने के लिए ट्विटर या फेसबुक जैसा सारग्राही माध्यम सभी ही सोशल मीडिया की ही देन हैं

#### आधिपत्य का मुकाबला

सोशल मीडिया भी पारंपरिक खिलाड़ियों के आधिपत्य या रिवायत का मुकाबला करने के लिये एक उपकरण के रूप में कार्य करता है। इसने विश्व में ज्ञान का एक वैकल्पिक स्रोत प्रदान किया है, जिससे मुख्यधारा का मीडिया फर्जी खबरों और प्रचार-प्रसार के लिये गंभीर सार्वजनिक आलोचनाओं के घेरे में आ गया है।



## किफायती एवं प्रयोग में आसान साधन

एक सक्षम व पढ़ा लिखा व्यक्ति या एक अनपढ़ व्यक्ति भी मीडिया में प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक प्रभावी कंटेंट का निर्माता बन सकता है सिर्फ इतना ही नहीं मूलतः कम से कम राशि की लागत में इस पर अपने व्याख्यान अभिव्यक्त कर सकते हैं।

## सूचना का लोकतंत्रीकरण

सोशल मीडिया ज्ञान और व्यापक स्तर पर संचार सुविधाओं का लोकतंत्रीकरण करता है। विश्व भर के अरबों लोगों ने अब सूचना को संरक्षित रखने और इसका प्रसार करने के पारंपरिक माध्यमों को चलन से लगभग बाहर कर दिया है। वे सिर्फ इसके उपभोक्ता ही नहीं सामग्री के निर्माता और प्रसारकर्ता भी बन गए हैं।

## नए अवसर

आभासी दुनिया का उदय ऐसे लोगों को अपनी आवाज को मुखर करने का अवसर प्रदान करता है जिन्हें या तो अभी तक सुना नहीं जाता था अर्थात् समाज का अपेक्षित आभासी दुनिया के माध्यम से ये लोग दूसरे लोगों से जुड़ते हैं और स्वयं को स्थापित कर पाते हैं। अगर व्यवसाय के रूप में देखें तो कई YouTubers का उदय इस घटना का प्रमाण है।

## व्यापक और विषम समुदाय

भौतिक समुदायों की तुलना में ऑनलाइन समुदाय भौगोलिक रूप से बहुत व्यापक और अधिक विषम हैं।

अतीत में भारत में कई समुदायों को सार्वजनिक प्रवचनों में भाग लेने, खुद को संगठित करने तथा अपनी सोच और विचारों को आगे बढ़ाने की अनुमति नहीं थी। उनकी चिंताओं, विचारों, अनुभवों, महत्वाकांक्षाओं और माँगों को काफी हद तक अनसुना कर दिया जाता था।

## दुष्प्रभाव

### द्वेषपूर्ण भाषण और अफवाहें

### (Hate speech and Rumours)

पिछले कुछ समय से कई मामलों में हिंसा और जान-माल की क्षति के लिये नफरत फैलाने वाले भाषण और अफवाहें जिम्मेदार रहे हैं। हाल ही का एक मामला

है जब महाराष्ट्र के पालघर के गडचिंचल गाँव में दो साधुओं और उनके ड्राइवर की हत्या कर दी गई। व्हाट्सएप मैसेज द्वारा यह अफवाह फैलाई गई कि क्षेत्र में तीन चोर चोरी कर रहे हैं, इस अफवाह के चलते गाँव के एक समूह ने तीनों यात्रियों को चोर समझकर उनकी हत्या कर दी थी। हस्तक्षेप करने वाले कई पुलिस कर्मियों पर भी गाँव वालों ने हमला कर दिया जिससे वे घायल हो गए। 2020 के दिल्ली दंगों में सोशल मीडिया पर हुए द्वेषपूर्ण भाषण की बड़ी भूमिका थी।

## फेक न्यूज

वर्ष 2019 में माइक्रोसॉफ्ट द्वारा 22 देशों में किये गए सर्वेक्षण के अनुसार 64% से अधिक भारतीय फर्जी खबरों का सामना करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों और व्हाट्सएप जैसी मैसेजिंग सेवाओं के माध्यम से प्रसारित एडिटेड इमेज, हेरा-फेरी वाले वीडियो और झूठे संदेशों की एक चौंका देने वाली संख्या मौजूद है जिससे गलत सूचनाओं और विश्वसनीय तथ्यों के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

## ऑनलाइन ट्रोलिंग

ट्रोलिंग सोशल मीडिया का नया उप-उत्पाद है। कई बार लोग कानून अपने हाथ में ले लेते हैं, लोगों को ट्रोल करना और धमकाना शुरू कर देते हैं जो उनके विचारों या आख्यानों से सहमत नहीं होते हैं। इसने किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा पर हमला करने वाले गुमनाम ट्रोल को भी बढ़ावा दिया है।

## महिला सुरक्षा

महिलाओं को साइबर क्राइम और अन्य खतरों का सामना करना पड़ता है जो उनकी गरिमा को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।

कभी-कभी उनकी तस्वीरें और वीडियो को साइबर पर लीक कर देने की धमकी दी जाती है।

कभी-कभी उनकी तस्वीरें और वीडियो लीक हो जाते हैं जिसके कारण उन्हें साइबर अपराध के लिये मजबूर किया जाता है।



## आगे की राह

### कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

कई सोशल मीडिया केंद्रों ने कुछ विशेष प्रकार की सामग्री को बढ़ावा देने या फिल्टर करने के लिये स्वचालित और मानव संचालित एडिटेड प्रक्रियाओं का मिश्रण तैयार किया है। ये एआई इकाइयाँ स्वचालित रूप से किसी छवि या समाचार को साझा करने पर हर बार गलत रिपोर्टिंग के खतरे को भाँप लेंगी। इस अभ्यास को और अधिक दृढ़ता के साथ कार्यान्वित किया जाना चाहिये।

### फर्जी सूचना के प्रति अवगत होना

यह एक ऐसा तरीका है जहाँ फर्जी जानकारी के साथ कंटेंट की वास्तविक सूचना भी पोस्ट की जाती है ताकि उपयोगकर्ताओं को वास्तविक जानकारी और सच्चाई से अवगत कराया जा सके। YouTube द्वारा लागू किया गया यह तरीका उपयोगकर्ताओं को नकली या घृणित सामग्री में किये गए भ्रामक दावों को खत्म कर देगा तथा सत्यापित और सुव्यवस्थित जानकारी वाले लिंक पर क्लिक करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

### विनियमन लाना

सोशल मीडिया के लगातार बढ़ते दायरे का सामना करने के लिये एक संपूर्ण राष्ट्रीय कानून होना चाहिये।

इस संबंध में जिम्मेदारी तय होनी चाहिये और कानूनी प्रावधान होने चाहिये।

### जन जागरूकता

वर्तमान में देश को डिजिटल साक्षर बनाए जाने की जरूरत है। एक जिम्मेदार सोशल मीडिया का उपयोग कैसे किया जाए, इस विषय में देश के प्रत्येक स्कूल और कॉलेज एवं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसका परिक्षण किया जाना चाहिये, जहाँ लोग उन्हें बेवकूफ बनाकर अपना काम आसानी से निकाल लेते हैं।

### कानूनी उपाय

भारत निर्वाचन आयोग (Election Commission of India - ECI) ने चुनाव के समय में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फर्जी खबरों और गलत सूचना के प्रसार पर अंकुश लगाने के कई उपायों की घोषणा की थी। इसने

राजनीतिक दलों के सोशल मीडिया कंटेंट को आदर्श आचार संहिता के दायरे में लाया गया और उम्मीदवारों को अपने सोशल मीडिया खातों तथा उनके संबंधित सोशल मीडिया अभियानों पर सभी खर्चों का खुलासा करने के लिये कहा था। इसी प्रकार सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (Ministry of Information & Broadcasting) की मीडिया विंग विभिन्न सरकारी मीडिया प्लेटफॉर्मों की गतिविधियों पर नजर रखने में सरकार के विभिन्न संगठनों की सहायता करती रही है। इस तरह की गतिविधियों को सभी पैमानों और संस्थानों में प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। चूँकि हाल के दिशा रावी और किसान आंदोलन पर हुए टिप्पणियों के प्रसंग इसके दुष्प्रभावों को वैदिष्टमान करते हैं।

### निष्कर्ष

यदि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की ओर देखें तो इतिहास के 19वीं सदी के आंदोलनों को हम सामाजिक आंदोलन कहते हैं या हमारे राष्ट्रपिता गाँधी द्वारा स्वतंत्रता के लिए किये गए आंदोलन भी एक प्रकार से सामाजिक आंदोलन ही थे किन्तु आज के दौर में आंदोलन या क्रांति लाने के सम्पूर्ण सामर्थ्य की आवश्यकता नहीं है अपितु केवल और केवल अपने हाथ की उँगलियों की ही मूलतः आवश्यकता होती है। ट्विटर आदि एप्स इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। गुण और दोषों की चर्चा तो हम पहले ही कर चुके हैं तो अब निष्कर्ष की ओर अगर बढ़ते हैं जैसा कि भारत एक निगरानी राज्य नहीं है, इसलिये निजता, बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार पर कोई गैर-कानूनी या असंवैधानिक जाँच नहीं होनी चाहिये जो प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है। इसमें एक संतुलन होना चाहिये क्योंकि संविधान ने भाषण और अभिव्यक्ति के अधिकार पर कई सीमाएँ लगाई हैं। बड़ी प्रौद्योगिकी फर्म, जिनके पास सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं, कंटेंट के संदर्भ में मध्यस्थता कर सकती हैं और इस प्रकार लोकतंत्र को प्रभावित कर सकती हैं। उन्हें और सभी को अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिये, जिसके व्यापक सामाजिक प्रभाव होते हैं।



**अंकित पाल**  
बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष

## किसी की परवाह मत करो आगे बढ़ो

किसी की परवाह मत करो आगे बढ़ो

यदि लोग आप पर पथराव करते हैं, तो उनसे डरना मत दोस्तों। जैसे— हाथी किसी की भी परवाह किए बिना अपनी चाल में मदमस्त होकर चलता है। उसी प्रकार जो कुकुर होते हैं, आपने देखा भी होगा कि जब भी किसी भी गांव या शहर में हाथी आता है, तो वे उसके पीछे पड़ जाते हैं। फिर भी हाथी की चाल में मस्ती ही रहती है। हाथी एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखता।

जब कभी गांव में हाथी आता है, तो उस गांव में जो बड़े-बुजुर्ग या युवा होते हैं वे सब हाथी के आगे हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं और कहते हैं— जय हो गणेश महाराज की...

उसी गांव के एक सज्जन ने पूछा कि बताओ गांव और शहर में क्या अंतर है? तब गांव के एक बुजुर्ग ने जवाब दिया कि गांव में जब भी हाथी आता है, तो हम उसे गणेश भगवान बोलते हैं। परंतु जब किसी शहर में हाथी जाता है, तो वहां के लोग हाथी को गणेश भगवान नहीं बोलते हैं। बस इतना ही अंतर है।

मुझे नहीं लगता कि हाथी के सिवा कोई दूसरा ऐसा जानवर है जिसके आगे इतने हाथ जोड़े जाते हों... मुझे तो नहीं लगता... लेकिन एक दूसरी विडंबना यह है कि जितने हाथ हाथी के आगे जोड़े जाते हैं उतने ही ज्यादा कुकुर उसके पीछे भाग रहे होते हैं। फिर भी हाथी को कोई फर्क नहीं पड़ता।

वे कहते हैं न...

‘जिसकी जितनी स्तुति होगी

उसकी उतनी निंदा भी होगी।’

तो आप लोग जिस परिस्थिति में हैं, उसी में आगे बढ़ने का प्रयास करें और टेंशन लेने की जरूरत नहीं है।

आज तक मुझे एक बात समझ में नहीं आयी कि कुकुर को हाथी से इतनी तकलीफ क्यों है? हाथी और कुकुर की भाषा हम समझ भी नहीं सकते, तो उन्हें तकलीफ क्या है? यह कैसे पता चलेगा?

तो आज मैं आपको बताता हूँ कि कुकुर को हाथी से क्या तकलीफ है? तकलीफ बस इतनी है कि कुकुर को हाथी से कोई तकलीफ नहीं है। उसे तकलीफ उन लोगों से है जो हाथी के आगे हाथ जोड़े खड़े हैं। हाथी के आगे जो लोग हाथ जोड़े खड़े हैं न वह उनसे सहन नहीं होता। उनसे देखे भी नहीं जाते। आखिर हाथी की प्रशंसा में इतने लोग क्यों खड़े होते हैं? उसके आगे हाथ जोड़े क्यों खड़े रहते हैं?

कहने का मतलब यह कि स्तुति करने वाले हाथ जोड़े खड़े होंगे और भौंकने वाले पीछे पड़े होंगे। ऐसा ही मनुष्य के जीवन में भी होता है। इसलिए घबराने की जरूरत नहीं है। यदि लोग आपको ताना मारें, तो टेंशन न लें। आप अपना मस्तक उठाकर चलें। क्योंकि आपने देखा ही होगा हाथी कभी भी हाथ जोड़ने वालों के पास नहीं ठहरता और रोकने वालों की तरफ मुड़कर नहीं देखता।

खुश रहो और आगे बढ़ते रहो।



**आकांक्षा शुक्ला**

बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## सामाजिक जिम्मेदारी

दूसरों को बदलना जरूरी नहीं। कामयाबी पाने का जरिया है स्वयं में बदलाव लाना। आज इस बदलते दौर में स्वयं को बदलना एवं समय के साथ-साथ चलना जरूरी ही नहीं बल्कि स्वाभाविक भी है। जिस प्रकार से समय का चक्र घूमता है इंसान की प्रतिक्रिया भी उसी के अनुसार ढलने लगती है। बदलाव में सकारात्मक प्रतिक्रिया होना गर्व की बात है, क्योंकि यह विकास की ओर बढ़ता प्रमुख कदम है किंतु जब प्रतिक्रिया नकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर होने लगे तब उसे विकास की उपाधि देना उचित न होगा। यदि आजादी के बाद से अब तक 74 वर्षों में हुए बदलावों की बात करें तो उनमें मुख्य भूमिका युवाओं की रही है, जिसमें अनेक परिवर्तन गवाह हैं।

युवा किसी भी राष्ट्र का कार्यात्मक एवं संरचनात्मक ढाँचा होता है, जो राष्ट्र निर्माण तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। युवाओं की भूमिका हमेशा से उच्च रही है, चाहे वह सामाजिक राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र हो या कोई अन्य क्षेत्र युवाओं के परिवर्तन से अछूता नहीं है।

परिस्थितियाँ तेजी के साथ बदलती नजर आ रही हैं, जिससे युवा वर्ग अधिक प्रभावित हुआ है। इससे उन्हें हताशा, निराश, तनाव और नकारात्मकता का शिकार होना पड़ा। जिसका मुख्य कारण कहीं न कहीं विदेश नीति, शिक्षा प्रणाली, बेरोजगारी है। भारत जैसे विशाल देश में बेरोजगारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। हताश युवा विभिन्न डिग्रियों की प्राप्ति के बावजूद भी भटक रहा है। ऐसी स्थिति में शक्तियों का अनुचित प्रयोग किया जा रहा है और इसे कम करना तथा इसका हल ढूँढना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। निःसंदेह युवा वर्ग विकास का प्रमुख स्तंभ है, इसलिए युवाओं की बदलती परिस्थितियों व समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करना अनिवार्य है। युवाओं के सफल ना होने तथा बेरोजगारी के अन्य कारण देखने को मिलते हैं। गरीबी, पारिवारिक बंधन, अंकुश,

संकोच, प्रोत्साहन में कमी, सहयोग न मिलना, जनसंख्या, अवसरों की कटौती, आत्मविश्वास, नकारात्मक सोच यह सभी कारक किसी भी युवा पीढ़ी को ऊँचाइयों के मुकाम तक पहुँचने से रोकते हैं। लड़कों पर पारिवारिक जिम्मेदारी तो लड़कियों पर शादी का बोझ डालकर उन्हें निराशा हताश करना पारंपरिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। जिससे जितनी दूरी बनाओ, वह उतना ही दौड़कर गले लगाना चाहती है। जरूरत है अच्छी आदतों को परिवेश में लाने की, जीतने की, लड़ने की, स्वयं को मजबूत बनाकर दौड़ने की, जिंदगी में ठोकर खाकर भी मुस्कुरा देने की और यह जानने का प्रयास करना कि सच में हम स्वयं का क्या करना चाहते हैं। जिंदगी में युवा दूसरों के पीछे भागता है स्वयं को नहीं सुनता कि वह क्या करना चाहता है। उसकी दौड़ खुद से है जिसमें उसे स्वयं को जिताना है और सही फैसले लेकर रास्ते का चुनाव करना तथा कदम-कदम पर सही कदम रखने की जरूरत है। अरस्तु का कथन है कि युवावस्था में डाली गई अच्छी आदतें सारा संसार बदल देती है। वहीं दूसरी ओर अल्बर्ट आइंस्टाइन का कथन है – मैं उस एकांत में रहता हूँ, जो युवावस्था में तकलीफ देती है, किंतु परिपक्वता के दिनों में स्वादिष्ट। सोशल मीडिया ने भी युवाओं को भटकाने में कम सहयोग नहीं दिया। बल्कि नकारात्मकता की डोर भी उनमें बाँधी है। युवाओं का यदि प्रसार हो, उन्हें अवसरों की समानता मिले, तो युवा स्वयं खुद का मार्गदर्शक बन सकता है। जरूरत है उन्हें अधिक से अधिक सरकारी संगठनों में शामिल किया जाए ताकि अपराधों में कमी हो और साथ मिलने का लाभ हो। अपराध अत्यधिक बढ़ रहे हैं क्योंकि एक युवक दूसरे का पेट काटकर खुद की प्यास बुझा रहा है। वह नैतिकता के मूल्य को भूल चुका है। स्वयं की तकलीफों की पट्टी अपने आंखों पर बाँध ली है, जो सरासर गलत है जिस पर चिंतन मनन करना हम सब का कर्तव्य है। सरकार देश-विदेश के दौरे करना जानती है लेकिन हो रहे अपराधों पर, बढ़ती समस्याओं को कम करने का ढोंग करती है। राष्ट्र को विकास की गति तक पहुँचाना और युवाओं की बदलती तस्वीर की समस्याओं को हल करना आसान नहीं, क्योंकि यह दुष्कर कार्य है। एक साथ सब पूर्ण रूप से बदलना संभव नहीं लेकिन प्रयास किए जा सकते हैं। हम जिस देश में रहते हैं वहाँ का संविधान अत्यधिक मजबूत और सफल है, जिससे उम्मीद है कि राष्ट्र की 65% से अधिक युवा आबादी के द्वारा ठोस कदम जरूर उठाया जाएगा। जिससे उनका जीवन सफल बन सकेगा। देश का विकास तभी होगा जब युवा पीढ़ी तनाव मुक्त होगी और तभी समाज के अपराध और अंधविश्वासों का अंत होगा जो देश के पतन का मुख्य कारण बन कर रह गए हैं।



**वर्षा मीना**  
बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष

## गुरु एवं अध्यापक

मैं अपने इस लेख के माध्यम से गुरु एवं अध्यापक पर प्रकाश डालना चाहती हूँ। यदि हम अध्यापक शब्द का संधि-विच्छेद करें, तो पायेंगे कि जो व्यक्ति अपने अध्ययन में परिपक्व है, वह अध्यापक होने का गौरव प्राप्त कर सकता है।

अब दूसरी ओर मैं गुरु शब्द पर प्रकाश डालना चाहूँगी कि जो व्यक्ति अविद्या से विद्या यानि अंधेरे से उजाले की ओर ले जाए, वही व्यक्ति गुरु कहलाने का अधिकारी है।

'न मैं जीती, न मैं मरती, मैं तो परम तत्त्व की छाया जीवों का उद्धार करने को मैं धरती पर आई।

महाभारत में जिक्र आता है कि भील पुत्र एकलव्य का जिसने गुरु द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति को ही अपना गुरु मानकर अपनी भक्ति व श्रद्धा के योग से धनुर्विधा में निपुणता हासिल कर ली थी। लेकिन अफसोस होता है कि, न तो अब गुरु के प्रति समर्पित शिष्य रहें और न ही गुरुओं के प्रति शिष्यों का वैसा आदर रहा।

**गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय,  
बलिहारी गुरु आपणे, जिन गोविंद दियो बताय।**

उपरोक्त पक्तियों में संत कबीर दास ने परमात्मा से कहीं ज्यादा गुरु को महत्त्व दिया है। गुरु वास्तव में हमारे मार्गदर्शक हैं। गुरु शिष्य परंपरा अविरत मधुर बनी रहे। मैं ऐसी कामना करती हूँ और आखिर में संस्कृत के श्लोक के माध्यम से अपने परम अध्यापकों के प्रति मैं अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूँ—

**ध्यान मूलम, गुरु मूर्ति पूजा मूलम  
गुरु पदम मंत्र मूलम गुरु वाक्यम,  
मोक्ष मूलम गुरु कृपा।  
अखंड मंगलाकरम् व्याप्तम् येन  
चराचरम तद्रूपदमः दशितः येन, तस्मै गुरुवे।**



**तनवी**  
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

## जिंदगी का सफर

जिंदगी का सफर एक ऐसा सफर है जिसका दुःख और सुख के साथ सफलता और असफलता भी हमसफर है जिंदगी के सफर में कभी सफलता मिलेगी, कभी असफलता, लेकिन डरना नहीं असफलता को देखकर। असफलता जिंदगी के सफर में कई बार बहुत कुछ सिखाकर जाती है। जिंदगी का सफर एक ऐसा सफर है

जिसका दुःख और सुख के साथ सफलता और असफलता भी हम सफर है।

जिंदगी के सफर में कभी गिरते हैं, कभी हार का सामना करते हैं, लेकिन कभी हार नहीं मानते। हिम्मत करके आगे बढ़ते हैं और बनते हैं मुकद्दर का सिकंदर, सफल जीवन बनाने में मुसीबतें लाखों आएंगी। सुननी पड़ेगी दुनिया की बातें लेकिन इन मुसीबतों का डटकर सामना करना है और आगे बढ़ना है। जिंदगी का सफर एक ऐसा सफर है जिसका दुःख और सुख के साथ सफलता और असफलता भी हमसफर है।

जिंदगी के सफर में समय अहम भूमिका निभाता है। समय कहता है कर ले कदर मेरी वरना पछताएगा, मैं बड़ा बलवान हूँ, नहीं रूकता मैं किसी के लिए, मेरी कदर करेगा तो पाएगा सफलता वरना रह जाएगा पछताता। जिंदगी का सफर एक ऐसा सफर है जिसका दुःख और सुख के साथ सफलता और असफलता भी हमसफर है।



**अनुभव मिश्रा**  
बी.ए. (प्रोग्राम), द्वितीय वर्ष

## भारतीय समाज और स्त्री

हिन्दी साहित्य के अनुसार स्त्रियों की स्थिति आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक बदलती रही है। आदिकाल में राजा तथा उनकी प्रजा स्त्रियों को पूज्य तथा देवी का प्रतिरूप मानती थी। यह अपने आप में एक अच्छी विचारधारा थी, लेकिन ये ज्यादा दिनों तक नहीं रह पाई। भारत में मुगल शासकों का आक्रमण होना शुरू हुआ और जब भारत मुगल साम्राज्य के अधीन हो गया तब से लेकर आज तक महिलाओं की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। मध्यकाल में महिलाओं को सिर्फ विलास की वस्तु माना जाता था। सामंत कालीन राजा तथा शासक अपनी हरम बनाते थे, जिसमें बहुत सारी महिलाओं को जबरदस्ती उठाकर लाया जाता था। शासक जब कभी सैर पर निकलता था उस समय अगर कहीं उसे कोई सुंदर स्त्री दिखाई देती तो उसको वहाँ से जबरदस्ती उठवाकर अपने हरम में रख लेता था। मध्यकाल में राजा प्रजा पर ध्यान न देकर भोग विलास का जीवन व्यतीत करता था। इसके बाद युग आता है अंग्रेजों का, इस काल में महिलाओं की स्थिति सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक रूप से और भी ज्यादा खराब होती चली गई। महिलाओं पर अंग्रेजों के सिपाहियों द्वारा शोषण तथा अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होने लगी थी, जिसका साक्ष्य प्रेमचंद जी के कर्मभूमि उपन्यास में मिलता है। हमारा समाज धर्म, जाति के नाम पर बँटा हुआ था, सभी धर्मों में महिलाओं को लेकर अनेक प्रकार की कुरीतियों, कुप्रथाओं तथा आडम्बरों ने समाज में अपनी पकड़ को और अधिक मजबूत कर लिया था। महिलाओं के भाग्य में जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई भी सुख की लकीर नहीं थी, इनके जन्म लेने से घर वालों के ऊपर बोझ बनना, कम उम्र में शादी कर देना, ससुराल के लोगों के द्वारा दी जा रही प्रताड़ना को सहना, दहेज कम मिलने से ससुराल

वालों के द्वारा जला दिया जाना, पति की मृत्यु के बाद उसी के साथ जिन्दा जला दिया जाना इत्यादि।

सन् 1900 ई. के बाद भी ये प्रथाएँ चलती रहीं, इसको सुधारने के लिए बहुत सारे समाज सेवकों ने इसको बंद करने तथा समाज में जागरूकता पैदा करने का काम किया। आधुनिक काल के सभी साहित्यकारों का यही मुख्य विषय बना हुआ था, सभी लेखकों ने अपनी कलम रूपी तलवार से समाज में हो रहे महिलाओं के खिलाफ अत्याचारों को समाप्त करने में पूरा योगदान दिया, उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से देशप्रेम तथा समाज में जागरूकता लाने का काम किया, लेकिन मेरा मानना यह है कि इन सभी चीजों से चाहें कुछ लोगों के विचार में परिवर्तन आया हो लेकिन अभी भी हमारा समाज दहेज प्रथा, महिला उत्पीड़न, शोषण से आजाद नहीं हुआ है। इन सभी रचनाओं का प्रभाव मात्र पढ़े-लिखे लोगों पर पड़ सकता है, लेकिन अनपढ़ और पितृसत्तात्मक लोगों के ऊपर इसका तनिक भी असर नहीं पड़ा है। कहने को हम अंग्रेजों से आजाद हो गये हैं, लेकिन हम अभी भी कुरीतियों, पितृसत्तात्मक सोच तथा विचारों की जंजीरों में बुरी तरह बँधे हुए हैं।

हम अब भी यही सोचते हैं कि महिला सिर्फ एक विलास की वस्तु है और कुछ नहीं। अगर हम में से कोई कुछ अच्छा भी सोचता है तो हमारे पीछे खड़े हजारों लोग उसको फिर से अपनी तरफ खींच लेते हैं। ये समाज एक केकड़ों से भरा हुआ समुद्र है, अगर आप इसमें से निकलने कि कोशिश भी करोगे तो ये आपको फिर से अन्दर खींच लेगा। ये समाज डरपोक है, ये डरता है कि कहीं जो स्त्री अभी तक हमारे साथ नहीं खड़ी होती है, हमसे आँख तक नहीं मिला पाती है कहीं ये सब हमसे आगे न निकल जाए।

ये हमारा समाज है, जहाँ पर हर समय कोई न कोई महिला शोषित होती है। राक्षस रूपी पुरुष का शिकार बनती है और हम क्या करते हैं चुप्पी साध लेते हैं यही काम फिर समाज को शोभा देता है। हम उसको न्याय तक दिलाने से डरते हैं, ये सोचना कि अगर ये बात बाहर आ गयी तो मेरी सारी इज्जत, मान, प्रतिष्ठा का क्या होगा? ऐसे लोग अपनी दिखावे की मान प्रतिष्ठा के लिए उस महिला को आग के कुएँ में सती होने के लिए झोंक देते हैं। भारत देश में 99 फीसदी मामले पुलिस या कानून तक पहुँच ही नहीं पाते। बचे हुए एक फीसदी मामलों का न्याय मिलते-मिलते शोषित महिला यह बेरहम दुनिया छोड़



चुकी होती है। यही हमारे समाज की सच्चाई है, जिसको हम स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

हमारा समाज कहने को तो बहुत शिक्षित, अच्छा, सम्मान के योग्य है, लेकिन ये उसका मुखौटा है, जिसे निकालने पर आपको इसकी हैवानियत का पता चलेगा। हम अपने आप को बहुत अच्छा समझते हैं, लेकिन हमें पता है कि हमारे अन्दर भी ऐसी कुरीतियाँ भरी पड़ी हैं, कुछ लोग अपनी सच्चाई दिखा देते हैं और बाकी सब मुखौटा पहनकर समाज की पैरवी करते फिरते हैं।

महिला जन्म से लेकर मृत्यु तक सिर्फ दूसरों के लिए जीती है। वह अपनी सभी इच्छाओं को, अभिलाषा को त्यागकर खुद को ज्वालामुखी रूपी समाज में झोंक देती है, उसके पैदा होने पर उसके परिवार को उतनी खुशी नहीं होती जितनी एक पुरुष बालक के पैदा होने पर होती है। इसका जिम्मेदार सिर्फ पुरुष को ही नहीं मान सकते हैं, स्त्री भी स्त्री को उत्पीड़ित करने में पीछे नहीं है। सभी अपने ऊपर हुए अत्याचारों को किसी दूसरी महिला पर निकालती हैं। सास अपनी बहु पर फिर वही बहु सास बनकर अपनी बहु पर। ये सभी महिलाएँ मिलकर एक साथ इस समाज की बुराईयों का सामना करके इस समाज की जड़ों को उखाड़ कर फेंक सकती हैं।

इसका एक राजनीतिक परिदृश्य भी है जो महिला सशक्तिकरण के नाम से काफी प्रसिद्ध है। यही एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पर लगता है कि महिलाओं की स्थिति सुधरने के मार्ग पर है लेकिन इसकी गहराई तक जाने पर पता चलता है कि ये भी एक दिखावा है। महिला सशक्तिकरण सिर्फ और सिर्फ शब्दों का खेल है जहाँ पर महिला को आश्वासन दिया जाता है और कुछ नहीं। महिला सशक्तिकरण सिर्फ आप को आरक्षण दिलाने से सम्बन्धित है और कुछ नहीं क्योंकि घर आते ही इसका प्रभाव शून्य हो जाता है।

1. महिला सशक्तिकरण पिता की सम्पत्ति में अधिकार मिलेगा।
2. पति की सम्पत्ति से जुड़े हक।
3. पति पत्नी में न बने तो कानूनी कार्रवाई।
4. घरेलू हिंसा से सुरक्षा।
5. घरेलू हिंसा से जुड़े वक्तव्य आदि।

इन सब बातों को देखा जाए तो यह पता चलेगा कि ये सभी बातें एक पुरुष से जुड़ी हैं। सबसे पहले कोई

भी पिता अपनी सम्पत्ति बेटी को कभी नहीं देगा क्योंकि उसकी भी सोच पितृसत्ता से ओतप्रोत होगी। पति की सम्पत्ति से जुड़े अधिकार में पत्नी को कोई भी पति अपने समान नहीं देखना चाहेगा, वह सिर्फ उससे विवाह करके अपनी कामनाओं को पूरा करने तथा उनकी यही सोच होती है कि ये सिर्फ खाना पकाने के लिए है। पत्नी पर सिर्फ उसके पति का ही नहीं बल्कि पूरे परिवार का अधिकार होता है। छोटी-छोटी बातों को लेकर खरी-खोटी सुनाना एवं दंडित करना ये सभी कार्य घरवालों के लिए लिखे गए हैं। हमारे समाज के द्वारा, बार बार उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाना आदि। महिला से ज्यादा सहनशीलता किसी और प्राणी में नहीं होती है। जिस दिन ये सब्र का बाँध टूटेगा, उस दिन सब्र कहता हूँ, एक बार फिर से समुद्र में पानी की मात्रा बढ़ेगी, सूर्य का ताप अनंत हो जायेगा और धरती अपनी जगह से हिल जायेगी, जिसके प्रभाव से सभी कुरीतियाँ, आडम्बर, झूठी शान तथा मान प्रतिष्ठा सब जलकर भस्म हो जाएगा।

मैं किसी नारीवादी उपागम का समर्थक नहीं हूँ। मैं मानवता को मानता हूँ और वही मेरा धर्म है, मैं आप सभी समाज के लोगों से सिर्फ महिलाओं को सम्मान एवं समान दर्जा देने की बात करता हूँ जो कि उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। कोई भी समाज, धर्म, संस्कृति बिना महिला के कुछ नहीं है। अगर हमें विकसित होना है, अपनी सोच से, अपने विचारों से, तो उनको अपने से आगे रखना पड़ेगा। उनके बिना हम विकास की कामना भी नहीं कर सकते। मैं आपको इसके मूल्यांकन का हिस्सा बनाना चाहता हूँ, आप को सिर्फ अपनी आँखों को बंद करके किसी भी स्त्री के बारे में सोचना होगा। आपका सर्वप्रथम विचार ही इस मूल्यांकन का उत्तर है।

मैंने जो कुछ भी लिखा है वह कहीं से पढ़कर नहीं लिखा। ये सब मैंने अपने समाज में देखा है। आप भी इसको महसूस कर सकते हैं, सिर्फ अपने आपको उस गहराई तक ले जाएँ जहाँ अभी तक महिला गई हैं, फिर आपको अपने समाज का अच्छे से ज्ञान हो जाएगा।

मैं अभी और लिखूँगा  
अभी कलम की नोक कमजोर है  
इसको तलवार बनने तक...  
मुझे अभी और लिखना है...



**सौरभ कुमार**

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

शिक्षा जीवन का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा का समाज के विकास में अहम योगदान है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के ज्ञान में वृद्धि करते हुए उसे संयमित एवं विचारवान बनाना है। शिक्षा एक व्यक्ति को उसमें अंतर्निहित कौशल से अवगत कराते हुए उसके सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है और उसे अच्छे एवं बुरे में अंतर समझने में सक्षम बनाती है। जैसा कि हम इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि बाह्य वातावरण परिवर्तनशील है, हमारे आसपास एवं समाज में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं जो वर्तमान में हमारे सामने कई चुनौतियां भी उत्पन्न करते हैं। इसी संदर्भ में शिक्षा नीति में परिवर्तन शिक्षा के क्षेत्र के अंतर्गत एक तार्किक परिवर्तन का संकेत करती है तथा इसके द्वारा शिक्षा से संबंधित विभिन्न विषयों पर गहन अध्ययन के साथ महत्वपूर्ण संशोधन एवं बदलाव का संकेत दिया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण बदलाव को इंगित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति का एक अभिन्न अंग है, जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को पारित किया गया है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य भारत सरकार के शिक्षा के क्षेत्र में एक अहम दृष्टिकोण को स्पष्ट करना है। अब तक भारतवर्ष को तीन शिक्षा नीतियाँ मिल चुकी हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने हेतु केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2030 तक का लक्ष्य रखा गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को तैयार करने के संदर्भ में केंद्र सरकार द्वारा 31 अक्टूबर 2015 को पूर्व कैबिनेट सचिव टी. एस. आर. सुब्रमण्यम की अध्यक्षता वाली 5 सदस्यों की कमेटी को बनाने की सिफारिश की गई थी। दिनांक

27 मई 2016 को कमेटी द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इसके पश्चात दिनांक 24 जून 2017 को इसरो के प्रमुख वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 9 सदस्यों की कमेटी का गठन नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ड्राफ्ट बनाने हेतु किया गया। दिनांक 31 मई 2019 को यह ड्राफ्ट मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक को सौंपा गया। मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत किए गए ड्राफ्ट के संदर्भ में समस्त भारतवर्ष से कई सुझाव भी आमंत्रित किए गए। इसके पश्चात अंततः 29 जुलाई 2020 को केंद्रीय कैबिनेट द्वारा नई शिक्षा नीति के ड्राफ्ट को मंजूरी प्रदान की गई।

जैसा कि हम इस तथ्य से भलीभांति अवगत हैं कि वर्ष 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पारित किया गया था, जिसके पश्चात वर्ष 1992 में इसमें कई महत्वपूर्ण संशोधन किए गए थे। गत तीन दशकों से अधिक समय से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं किया गया है तथा गत तीन दशकों के दौरान हमारे देश की अर्थव्यवस्था एवं समस्त दुनिया में कई महत्वपूर्ण बदलाव भी आए हैं। इसलिए 21वीं सदी के दौरान देश की बदलती हुई मांगों को पूरा करने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधारों को लाने की आवश्यकता को महसूस किया जाने लगा जो भारतीय अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ ही भारत को विश्व के विकसित देशों की श्रेणी में एक विश्व शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाने में सहायक सिद्ध हो सके। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत क्वालिटी, इनोवेशन और रिसर्च तीन ऐसे बिंदु हैं जो उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति में समस्त भारतवर्ष के लिए निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होंगे।

### राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख सिफारिशें

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मानव संसाधन मंत्रालय का नाम पुनः शिक्षा मंत्रालय करने का निर्णय लिया गया है।
2. इसके अंतर्गत कानून एवं चिकित्सा के पाठ्यक्रम को छोड़कर समस्त उच्च शिक्षा के लिए भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा आयोग को एकल निकाय के रूप में गठन करने की मंजूरी प्रदान की गई है।
3. इस शिक्षा नीति के तहत समस्त शिक्षा प्रणाली पर सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का 6% सार्वजनिक व्यय करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। वर्तमान में यह



लगभग 4.43% है।

4. इस शिक्षा नीति के अंतर्गत एम.फिल को समाप्त करते हुए अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान देने के लिए 3 वर्ष के स्नातक डिग्री के बाद 1 वर्ष के स्नातकोत्तर करके सफलतापूर्वक पीएचडी में प्रवेश लिया जा सकेगा।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सकल नामांकन अनुपात (जी.ई.आर.) को 100% वर्ष 2030 तक लाने का प्रावधान किया गया है।
6. पांचवी कक्षा तक की शिक्षा के अंतर्गत मातृभाषा स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में वरीयता देने पर बल दिया गया है। इसके साथ ही मातृभाषा को कक्षा 8 और उसके आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव भी दिया गया है।
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष बल देने का सुझाव पारित किया गया है।
8. शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक सुधार के उद्देश्य का तर्क देते हुए शिक्षण, प्रशिक्षण और सभी शिक्षा कार्यक्रमों को विश्वविद्यालय के स्तर पर सम्मिलित करने की सिफारिश की गई है।
9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत समूह के अनुसार विषय चुने जाने के स्थान पर अन्य विषयों को सम्मिलित करने को एक विकल्प के रूप में मंजूरी प्रदान की गई है।
10. नेशनल साइंस फाउंडेशन के तर्ज पर नेशनल रिसर्च फाउंडेशन को लाने का प्रावधान किया गया है, जिसके परिणाम स्वरूप पाठ्यक्रम में विज्ञान के साथ सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किया जा सकेगा।
11. ई.सी.ई. को शिक्षकों एवं व्यस्को के लिए राष्ट्रीय करिकुलम फ्रेमवर्क के रूप में मंजूरी प्रदान की गई है।
12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत छात्र के अधिगम की जांच करने हेतु उनकी प्रगति की समय-समय पर समीक्षा की जाएगी। इसके अतिरिक्त 'परख' नामक एक राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया गया है।
13. 10+2 बोर्ड संरचना के स्थान पर अब नई शिक्षा बोर्ड संरचना 5+3+3+4 को लागू किया जाएगा, जिसके

अनुसार 5वीं तक यह प्री-स्कूल के रूप में मान्य होगा, कक्षा 6-8 तक माध्यमिक स्कूल और 8वीं-11वीं तक हाईस्कूल के रूप में मान्य होगा एवं 12वीं के आगे यह ग्रेजुएशन के रूप में मान्य होगा।

14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत ग्रेजुएट कोर्स में दाखिला लेने के लिए नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एन.टी.ए.) से परीक्षा कराने को मंजूरी दी गई है। इसके साथ ही जिला स्तर, राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर ओलंपियाड परीक्षा कराने पर भी सहमति बनी है।
15. इसी प्रकार उच्च शिक्षा में बदलाव के साथ छात्र अब स्नातक (ग्रेजुएशन) में 4 वर्ष का कोर्स पढ़ेंगे, जिसमें बीच में कोर्स छोड़ने की गुंजाइश भी दी गई है। प्रथम वर्ष के पश्चात कोर्स छोड़ने पर सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा, दूसरे वर्ष के पश्चात कोर्स छोड़ने पर एडवांस सर्टिफिकेट प्रदान किया जाएगा, 3 वर्ष के पश्चात डिग्री और 4 वर्ष के पश्चात शोध के साथ डिग्री प्रदान की जाएगी।
16. इसी प्रकार स्नातकोत्तर के संदर्भ में 3 तरह के विकल्प उपलब्ध होंगे।

विकल्प-1. प्रथम विकल्प में स्नातकोत्तर 2 वर्ष का उन छात्रों के लिए होगा जिन्होंने 3 वर्ष का स्नातक कोर्स किया है।

विकल्प-2. दूसरे विकल्प के रूप में 4 वर्ष का डिग्री शोध के साथ स्नातकोत्तर करने के लिए समय सीमा 1 वर्ष निर्धारित की गई है।

विकल्प-3- तीसरे विकल्प के रूप में 5 वर्ष का इंटीग्रेट प्रोग्राम होगा जिसके अंतर्गत स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों को एक साथ किया जा सकेगा।

अतः हम देख सकते हैं कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति न केवल वर्तमान परिस्थितियों में तेजी से हो रहे बदलावों को आत्मसात करके युवाओं को एक नई दिशा देने में सक्षम है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन आने वाली चुनौतियों का सामना भी अब नई शिक्षा नीति के साथ संभव हो सकेगा। इस नई शिक्षा नीति के अंतर्गत शिक्षा के क्षेत्र में हमें एक व्यवहारिक बदलाव देखने को मिलता है। इस नीति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य पुस्तकों और डिग्री से आगे बढ़कर युवाओं को रोजगार परक माहौल और दृष्टिकोण प्रदान करना है जिससे युवा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शत प्रतिशत आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सकें।



# English Section

**“Literature is where I go to explore the highest and lowest places in human society and in the human spirit, where I hope to find not absolute truth but the truth of the tale, of the imagination and of the heart.”**

- Salman Rushdie



**ENGLISH  
EDITING  
TEAM**



## From the Editor's Desk

It's April 29, 2021. Total Lockdown. Second wave-- Covid's fangs raging at its best. Finally, after 14 days of quarantine, I come outside to enjoy my cup of tea. Though I have been taking classes online and participating in google/ zoom meets since last year, being confined in the room, made me realize the power of internet. All consultations with my doctor were online and I could seamlessly connect with my near and dear ones. The time has opened me to different perspectives and helped me differentiate essentials from luxuries; luxuries that we've been taking for necessities and taking nature for granted.

Sipping my adrak chai, I notice a pair of birds has found the money- plant vine in my Verandah, a fit place to breed. I am suddenly taken back to the same time last year when the air felt much clearer when this deadly virus struck us for the very first time and the nature got some relief from we humans! There was a time I couldn't believe I am in my same house when I heard rustles, brushes, swishes, coos, twitters, flutters, meows and barks instead of screeches, blares, clangs...



Yonder in the park, I can see yellow leaves of Ashoka trees making a thick pile below. The young, pink bougainvillea flowers peep through the new leaves as they push their way out amidst the old. The birds and butterflies are on a mission.

Seeing the thick pile of yellow leaves, I reflect, nutrients in the shape of decomposed leaves will go back to the trees, enriching the soil, completing its cycle and serving the ultimate purpose of uniting with the source. I ponder--I am also just one among the scheme



of things and will go back to the elements I am made of. Then why do we humans not respect nature enough? Is it not we pitch for holistic and sustainable approaches that integrate human health with animal, plant, soil and environmental health to curtail future pandemics? I reflect that this Covid time is a time To ASK and SEEK answers. As Tagore, in his Geetanjali, talks of connectedness of all things, I too feel “the life-throb of ages dancing in my blood this moment”. Communing with nature and its rich biodiversity, to me, is a perpetual source of enrichment both physically and mentally.

As I leafed through the entries I found many pieces suffused with introspection. When we self-analyze, we are able to see our own mistakes in the things that go wrong. It leads to self-reckoning and hope. As we see in the words of Afzal, in the novel, *Basti*, by Intizar Husain. During the 1971 riots in Pakistan, when all

friends sit silently and stare at the smashed glass panes, scattered bricks and walls covered with soot, Afzal says, ‘Yar, we weren’t virtuous either’, ...‘we’re cruel. We too’...‘there are no virtuous men’. ‘Signs always come at just these’ (any crisis) times. Then ‘this is the time for a sign’, to admit our mistakes regarding destroying our varied ecosystems. This is the time to build shared programmes of knowledge, to act for collective welfare where bio-diversity is maintained.

I am glad to present a mixed fare of poetry, fiction, prose narrative, critiques of classic works and amazing photo stories by my colleagues and students. Additionally, there are tips for online share trading and measures to curb plastic pollution. With my colleague, Dr Reshma Tabassum and young scholars, it was fun and bonhomie, mitigating the strenuous labour. The hard work of Srishti, Preeti, Harshita, Divyanshi and technical expertise of Vrinda wove magic into the entire English Section by turning the ordinary to sublime.

My gratitude to all.

Hope you have an enjoyable read!

God bless and protect you and your loved ones always!

**Dr. Vandana Agrawal**

Associate Professor  
English Department





**Aadar Atreya**

B.A. (Program) III Year

## The Blacker Twilight

It was not the usual twilight in Rabindra colony. The stubborn black clouds seemed to be there for ages. The ailing planet was showing its colors, Mr. Banerjee's shop, and the brothel of Balraj was covered by the gushy abodes of air. Both of the places were at a meagre distance from the colony. A pack of dogs



were barking persistently and the gigantic clock in the Kanaklata clock tower showed 7 pm. The pendulum in the house of Mr. Ghosh, a resident of the Rabindra colony had a difference of just a second. Mr Ghosh, the man with butterfly moustache, was returning back to his flat when he saw the door of '3FA' open. The man was not nonplussed but concerned for no owner lived there. He was confused and lost in deep thought until the filthiest smell of his life caught his nose. It was strong enough for him to drop the bag carrying ladyfingers. The news of the raunchiest possible smell spread like forest fire among the simpleton members of the colony. All of them formed a crowd before the '3FA' flat within no time. There were discussions among the members of the colony for a long time. A decision was made and the responsible secretary took the lead. Handkerchiefs became the dire need of the hour. The secretary along with the male residents of the colony entered the grubby and shabby '3FA' flat.

The pungent smell kept on intensifying as they drew closer. They were determined not to puke. At first, a table flooded with blood caught their eyes. But their jaws dropped when they saw the naked slaughtered body of a lady. The Colony was in shock and despair. Ultimately a precise decision of calling the police was made. Cold and petrified faces were seen all around. Some were biting their own teeth. The police came and they themselves claimed the dead body to be one of the most morbid amongst the many they had seen in their career. The normal procedure followed and the naked lady's body was taken for forensic test. The lives of the residents of the colony and everyone in their proximity turned worse after that blacker twilight.

Two days after the catastrophe, they were invited to the police bureau. The quadragenarians were discussing their assumptions among themselves. After a wait of an hour, the whole queue went through lie detection test. After drinking a dozen glasses of water, the investigator Mr Matthews caught one of the two murderers. His name was Vikash. The no-nonsense investigator used his tricky tone and flawless skills to make Vikash admit that he was one of the culprits. The forensic cop stated that the dead body was raped by two necrophiliacs. The time of murder was determined to be a day before discovery of the dead body. However, the mentally ill Vikash had a chronic disease- a disease which leads to partial memory loss of events prior to twenty-four hours. Chains, whips and even batons could not make him recollect even the face-cut of his accomplice. It was Mr Ghosh's turn for the lie detection test after Vikash. He was the least affected because his conscience told him that he was innocent. When he sat in the chair, Mr Matthews told him that the defaced CCTV camera saw him carrying a plastic bag. The investigator asked him in a professional way about what was in the bag. He replied with full confidence 'Ladyfingers'. The machine nodded with a sound. Mr Ghosh shook his hands and went to the washroom where he murmured to the mirror "I have always been weak in English. For me, there is no distinction between Ladyfinger and Lady's finger." He was finally the winner in his diabolical game - the game of making his dexterous murder imminent and escaping the clutches of police.

**Disha Wadhvani**

B.A. Political Science (H)

II Year



## Dog Lover

I'm a dog lover since childhood. I had a dog with me when I was small, and his name was Micky. Micky has an exceptional place in my heart. Bhaiya and I, both are fond of dogs. I remember we used to take biscuits every morning for the newborn puppies in our lane.

I was in 12th, and in April, we adopted a Pomeranian, and we named him Micky. He was a cute white fur baby.

In February, Boards were approaching, and I was studying in my living room. Suddenly, I heard a lot of noise from outside, and I listened to a puppy's voice who was crying terribly. I got terrified and ran out, and I saw 7-8 oversized and dangerous dogs, and this puppy seemed one month old.

He was crying and shivering so severely beneath the car and was trying to save himself from these big doggies. I ran there and took this small baby in my arms and ran back to my home. He was so small, cute and was scared and shivering. He was starving and was not eating anything then we gave him 'cerelac' (baby food). He loved it, and somehow by eating cerelac, he survived.

After 2-3 days, he got comfortable with Mickey and us. I realised that Micky (my pom) didn't trouble him at all, I don't know, but maybe he knew when someone needs help, we should help them wholeheartedly. Micky showed his affection for this cute puppy.

And gradually, we got attached to him and didn't want to leave him out on the streets. My parents supported this idea, and we decided to adopt him. We named him Happy.

Mickey and Happy lived happily ever after.

Sometimes, I see Boards and posters written, "**No stray dogs allowed**", outside streets and colonies. Why? If we do not feed them, if we do not take care of them, then who will?

Dogs are friendly and eager companions as well as skilled at interpreting our emotions. A new study reveals even stray dogs or other animals that have never lived with people can still understand our gestures.

**STREET DOGS DESERVE TO LIVE!**

They are not less worth just because they are street dogs.



**Hritika Lamba**

B.A. English (Honours) II Year

## This Is Also Life

For years, an old man stares at a house every day. The look in his eyes conveys deep grief and sorrow. The security guard of the building observes him daily. He eventually decides to ask him about it.

Ratan, the security guard, interrupts the grizzled man with grey beard in his daily gazing-the-building-task: "I have been noticing you here for years, old chap! Planning to purchase a building like this? Or to rob this one? Ha-ha!"

The dumbstruck look on the old man's face, upon hearing what Ratan says in humour, makes him think if the old man really has some wrong motives. The man doesn't answer and moves his way.

The next day, Ratan tries again to fetch an explanation for his coming.

"Do let me know the reason for your daily coming. You know, I can complain to the owner of this building that I suspect you.

Come on! Okay, first tell me, what is your name?"

"Dh .. Dh... Dharampal", says the aged man.

Ratan doubts this fumble.

"Say, why do you come here, daily?"

"My grandson, my lovely grandson, died here, right here, in this house. I lived here. We lived here", answers Dharampal in a lowly voice.

"How did he die?" Questions Ratan.

"He was killed!"

"Killed? By whom?"

"Not me, I didn't kill him. I didn't kill him. I didn't kill.", says Dharam. Saying this, he fastens his pace and runs away, resisting Ratan's plea for details.

The next day, Dharampal doesn't turn up. Ratan sits ready for the old man's daily arrival at sharp eleven in the morning. A week passes, but the old man doesn't show up.

"He never misses any day. I have seen him coming even in the terrible rains, storms, blazing sun and even on public holidays."

Odd and bewildered, Ratan happens to recount the episode to the building owner who comes to the parking lot that day.

"The previous owners of the building were a married couple; their old father killed their eight-year-old only son out of madness. I really got this house at a considerably low price due to the inauspiciousness related to the murder", says the owner.

"He killed his own grandson! Oh, God! What happened to him then, sir?" I have heard that he ran away and died later.

"Was it a gggghh host which I saw ...sir?"

"I don't believe it—your own illusions, perhaps."

"No sir, I have been watching him for years."

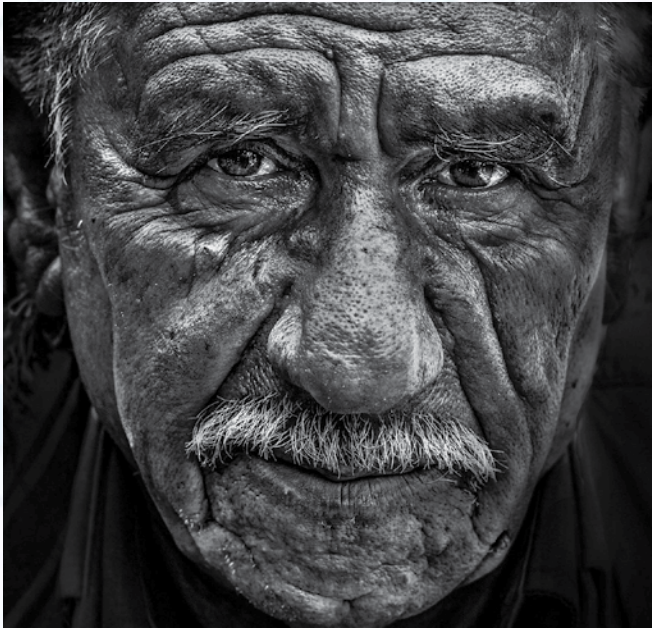
Now, not only Ratan but also Karanjeet, the building owner, is curious to know about the old man or perhaps Dharampal's ghost.

Ratan is now restless. He gets many sleepless nights.

Every time he closes his eyes, Dharampal appears, his eyes full of pain.

His thoughts haunt him. 'A man killed his own grandson.' His mind is filled with disgust for the old man.

"He looked so gentle and innocent. Times have changed; the plain-looking people can be murderers."



He speaks to himself.

"But did I really see a ghost? What would have been his reason to kill his grandson? He lied to me because he thought I might file a complaint against him?"

But why would a ghost lie?  
Does he not know he is dead?  
Or is he not dead?

Frustrated by his own irrational justifications of this unfathomable incidence, Ratan ultimately visits Karanjeet and requests him to visit the last owner of the building. After a lot of excuses and delays, Karanjeet finally agrees to visit the previous owners of the house with him. They look for the address in some old diaries. After finding the correct one, Karanjeet takes Ratan in his car to the address.

"The door is locked. Let us ask the neighbours!" says Karanjeet.

They ring the bell of the adjacent house.

"Hello. Where are your neighbours? We are here to visit them."

"They are dead."

'They died? But when? And how?'

Just a week ago.

The letter they obtain from the neighbours leaves them in severe panic and shock.

"...Eleven years ago, we were fighting, me and my wife. It was a normal domestic fight, but it turned out to be a tragic, life-changing one. Our only child, eight years old, Ronnie, was hard hit in between when he came to calm us down and stop the fight. We didn't intend to kill him, our own son. He was accidentally hit by the knife we were using to threaten each other. 'I'll kill myself if you don't listen this time', said my wife. And I used the same words. Had he not come in between, he would have lived. We would have lived. He was dead. We tried to save him, but he died. My father, who saw it all happening, went mad."

He loved Ronnie even more than us. My wife, out of the fear of lifetime imprisonment, planned something all of a sudden. We shifted the blame of killing our son to my father. He ran to the neighbors saying, "I didn't kill him, I didn't kill him, and after listening to our false story, our neighbors assigned him the name 'the mad man', one who killed his own grandson out of the madness. After these prolonged mental tortures, my father committed suicide. We lived under this guilt for years. But now, my father is calling us. His ghost daily visits us to remind us of the 'murders' we did. We, too, are going." Bye, world!

Suicide statement

By — Amar Dharm Pal Singh.

**Barenya Tripathy**

B.A. English (H) III year

## Fever

That one drop of rain has been clinging to this window-pane the moment I appeared, with the sheer intensity transfixed into its hold, almost scorching. It sometimes disappears, leaving behind the mud of its feet, and sometimes appears to blink those indistinguishable eyes at the stars outside my night sky. It doesn't speak, but the hum of its lips echo in the crisp hands of the wind; the voice isn't quite like a voice yet it can form words I somehow understand.

So, the rain falls, but the drop doesn't slip. The wisps of smoke from the coffee cup sway towards my chin supported on my palm and gently tickle the bottom before they tear apart into streams and fade away. I look at the swimming sun behind the grey clouds, wondering if it is the sun or the moon in disguise, cross-dressed behind the rumbling bellies of those clouds. A rainy night is the scariest night, isn't it?

I pull out the black earphones from my ears, squeeze it into the inner pocket of my jacket that has a small W engraved onto it. Finishing off my coffee, I go to the counter of the small café to order a chocolate muffin.

"Here you go, sir." The guy behind the counter says, holding out a paper bag to me.

When I step out of the café, the rain has stopped, but the lingering greys in the sky suggest it's not completely over. The road appears to be cut in halves by a naked wire that must have come undone in the night no one was around to keep a watch on it. I carefully step over the wire and trudge along the road, walking ahead for a couple of minutes before I come

across the rough trail between the woods.

Shouldering my backpack, I breathe in the scent of familiarity, of the warm embrace I crave every morning the moment my eyes open to the rising sun. My jacket slides open with the light breeze, flattening the white fabric of my shirt against my torso.

My feet carry forward over the damp grass and mud path, and don't stop until a clear stream appears in front of my eyes. It is my stream; I sometimes toy with the fancy idea that this stream is the extension of that little drop of rain that I see on every window I gaze through. I haven't ever dipped my hand in that stream though, maybe because I'm scared that this is a dream that I'm not supposed to dream, and if the dream becomes aware of me, then I will be alone. Forgotten, distant like old music.

Settling a few paces away from the stream, I bring out the chocolate muffin from the paper bag and bite into it. The chocolate chips melt across the roof of my mouth as my tongue slips out to lick the crumbs from my bottom lip. I finish off fast, still relishing the wind on my face.

"My anxious mist." I mutter jokingly into the wind as if it has ears to hear me. Perhaps, it does.

I open my backpack and pull out an empty canvas along with a few paint bottles to lay them down around me. Loosening the bottle caps, I slowly pour the purple paint onto the white void followed by black, red and yellow. I bend over the canvas, my hair falling over my eyes as though to conceal the horrific colours from my impuissant sight. My index and middle fingers press into the cold colours as I begin to slop them around the paper with an aim that I haven't set for myself. After all I'm no painter, I vomit paint like an overdosed drink and call it an art.

Then I reach for the blue paint at last; the blue in it seems to glow once like fairy dust. Unscrewing the little bottle, I begin pouring it the same way I poured the others. As the last of the blue flops onto the paper, a whisper of a hum touches my ear lightly. I snap my head towards my left, the sound moves to my other ear.







**Harshita Negi**  
 B.A. English (H) III year

## Beauty

*“Beauty is about enhancing what you have. Let yourself shine through.”*

- Janelle Monae



The standard of beauty is to be attractive on the feminine beauty ideals that are presented by the culture and society. Society defines women as objects Beautiful women have very fair colour, flawless skin, shining hair, small waist and a slim body. Similarly, men are judged by muscle, body and other masculine features that determine today's beauty.

Where Do Beauty Standards Come From? They are influenced by Celebrities like Kylie Jenner, Kendall Jenner, Bella Hadid and many more. Photoshop technology creates unrealistic standards for women. A wide range of makeup products makes women lose their own identity and hide their reality. Then Social media impacts the mindset and plays a significant role in making women feel insecure about their bodies. No one or not everyone posts their “collapses or failures” on social media. No one or not many is posts “without filter” selfies.

**Real beauty comes from within and not how we look.** People with a good heart are the most beautiful people in the entire world. It's your inner beauty, the way you treat people, the way you pay respect people, the way you help people, expecting nothing in return is what matters. Appearances aren't everything. Skills, values, character are the attributes that one must seek to develop.

Your outer beauty may help you grab attention from people, but that attention won't last long. Don't try to be someone else. Be authentic. Be you. That's what will make you stand out. No one in this entire world is perfect; the whole concept of being perfect is flawed in itself. Your identity should never be swayed by any social conventions or any beauty standard set by society.

Your self-esteem should never depend on your external appearance but your inner beauty. If you are confident you will feel happy within, then no matter what others say, you are beautiful!

*“Accept your body the way it is. You're unique and beautiful and don't need to be a certain way to be beautiful. When you're happy with yourself, you are beautiful. Be Yourself!”*

**Chitrank Kaushal**

B.A. Political Science II Year

## Lessons from the “Diseased” Year



Well yes, quite so the “diseased” year and certainly not a “deceased” one yet!

The year 2020 threw challenges at us like never before. The people today might not take a bath too often but have been well-engineered to pour alcohol on their hands more than anything else. They now know that a face mask resting on their chins amounts to a fine. They have realised that this year did take a toll on them and salaries would not credit to their accounts for free. The year 2020 is a unique year for the unease and the disease that it caused and the lessons that it left behind. I for one, shared banter with myself a year ago, that “look how Kerala got the first COVID-19 positive case, the communists are all the same!” Little did I know that the hells were about to break loose. In three months, the world was mewling with pain; the roads and railways were all vacant; not one plane to be seen in the blue-blue sky and the monotonous television bulletins on how many more people have died- had become a routine by now.

“Precautions!”, “Mask on!”, “Wash hands!”, “Sanitize!” etcetera was sooner a regimen to the world and an ugly honk to my ears! I still tried to comply with the newly-formed norms of the society but wait, I was equally bored with it! ‘Hitman’, ‘Max Payne’ or ‘GTA V’ didn’t seem to mitigate the boredom even a bit. ‘Online classes’ came out of the blue and ZOOM and GOOGLE MEET was where the “vidyaarthees” went for the remainder of the year. Deepawali came and went by, so did Christmas and now it was my birthday. I didn’t want to celebrate it without a cake you see, so I ordered one along with macaroni and pizzas; ate them and fell ill, HAHA! The next day, the thermometer read: “101°Celsius”. I got scolded and losing my sense of smell and taste is the next thing I remember. After being rushed to the hospital I had my RT PCR done and was tested POSITIVE! That was one ‘positive’ thing that happened to me in a long while, although I was not happy to welcome it.

More than anything else in the world, I now fear the unforeseen which is bound to happen. And that was the fear 2020 A.D. gifted me on my birthday, while my relatives who ordered a cake from the same bakery a few days ago did not fall ill. Our ancient sciences and scriptures had us warned: “no one escapes the inevitable!” Argh! I was an ignorant little fellow not to have acknowledged that before.

The year 2020 has left a lesson behind us all- with millions of lives lost, half a million recovered and a handful not affected- is to teach us that precautions are good, but seldom do they work when we are to live by, what has been charted out for us by the mighty plan of the Supreme Being.

I have now tested negative but the anosmia is yet to recover.



**Srishti Garg**

B.A. English (H) III Year

## Mirror, Mirror on the Wall: Don't Lose Confidence at All

How do we figure ourselves out when we look into the mirror? Do we see our past presiding over us or a better future waiting for us? Do we see ourselves better before or feel proud of what we are today?

Confidence is a thing we await to see while looking ourselves into the mirror. Nobody, except us, knows what we were before and what we are today. Nobody sees our growth or what we have gone through, what they observe is the superficial understanding of the people around them.

Everyone wishes that they must give good vibes to the people they come in contact with, but it is not possible when you aren't confident about your own self. Confidence comes from self-positivity and self-positivity comes from within. It seems to be not an easy job but can be achievable through a certain degree of tenacity.

Accepting the present is the key to initiate. Indulging in past problems and future worries, will not help in evolving as a person. Sometimes, forgetfulness will help us and sometimes, striving is all that we need. The striving will take us to the shore. Nevertheless, striving without hope leads to nowhere;

"Most of the important things in the world have been accomplished by people who have kept on trying when there seemed to be no hope at all."

– Dale Carnegie

With confidence and hope, one needs to create their own space, build their own nest. We live in the world of trendsetters, where nothing sticks around. This is the nature of the world and if we don't adopt it, we end up hurting ourselves. This often becomes an obstacle to a smooth lifestyle as when something unusual comes up, we respond to it in the most unusual way. We should be ready for any change. If anybody leaves or stays, if something happens all of sudden, we must know how to handle it. Once we decide to go ahead, there is nothing that could stop us.

We should be grateful for whatever we have. Whenever somebody asks us about our strengths, why we feel it so difficult to answer such questions because we never think about the blessings that God has bestowed upon us. We, rather see the things that we don't possess. We must count our blessings, not our failures.

Before taking charge of our own lives and not moulding it as people say, we must shape them the way we want them to be. It brings us to the point where we have a strong urge to have something. Something that constantly compels us to involuntary actions. If that's the thing, ask for it.

Ask for everything and anything you want to have. Doesn't matter if the answer is negative or affirmative, it will surely leave you with no regrets.





Nupur

B.A. English (H) III Year

## A Social Union Called 'Marriage'

It was about two years to this day when Pearl agreed to say yes to the proposal of marriage from Vicky. They were an irresistible couple, extremely exquisite and more than enough to buy smiles for each other every day. Their meeting was not a mere coincidence. In fact, it was the wit of Pearl in her college grades and the willingness to learn new things that actually brought them close. Vicky was good at playing the guitar but struggled to pass the strings of the exam, while Pearl was exquisite in her class, from charming papers to actually scoring the highest of all the knowledge required to pass. So, it was more the urge of learning rather than attraction that brought both of them to close. Pearl always wanted to sing while playing the guitar, but her lessons from Vicky trained her to play strings with the chords of love, and she never learned how to play the guitar. But Vicky surely passed all his college exams along with winning over Pearl's heart.

Years after their college, when both their lives



entangled in office hours, marriage became their solution for spending their saved hours. Their life was lovely for some months after marriage, but with time, love took its own test of happiness, and after two long years, they both found themselves unhappy, but the marriage was not to blame but the "in-laws" who came free of cost with a marriage.

Vicky's mother had always been boastful of the bride they've been blessed with, but the walls of their house spoke about the dissatisfactions: a mother had with her son's choice. She believed her son was a prince, and Pearl was nothing less than a demon whose only intention of entering into their lives was to spellbind her son in order to break the mother-son relation.

Till this time, Pearl respected Vicky's mother for all that she was. But Vicky's mother never spoke like a mother to her; Pearl never complained. Every time she cared for her as a mother, the mother-in-law gave Pearl more reasons to let her think of what she always did not want to think of her mother-in-law as a woman. And then, one day, Pearl could not hold it all when the mother-in-law broke all her limits of what a woman should not be to another woman.

The day was about to end. The sun was sliding below the crease of the garden wall's view. Pearl, after rolling her hair into a high bun while following the journey of the garden to her own room, found Vicky's mother waiting for her in her room. She asked politely if she wanted something, but the mother-in-law didn't respond. She instead asked her to sit down in front of her in her croaky voice. She presented her next question in the form of metaphors—

"A family tree looks nice if there are flowers blooming on it", Pearl didn't understand her reference, so she asked her to elucidate the meaning of her sudden talk of flowers and trees. "Do you intend to become three from two or not?" said the mother-in-law.

"Are you talking about the baby mummy?" replied Pearl.



"I'm exactly talking about the babies if you care to pay attention to the family."

"Oh, we still haven't thought about it... Actually, I'm really not prepared for it now", said Pearl in a hesitant voice.

"Prepare for it? Do you or do you not wish to have children?" Said the mother-in-law.

"Oh, we wish. But I think we need some more time to be mentally prepared in order to become parents."

"Some more time"... "some more time... It is all I've been hearing since you've entered this house. You're not at all fit for this house as well as for my son. You do not deserve him. Have you ever looked at yourself? You eat like demons, cook raw food for me, filling up layers of fat daily on your body. Also, you're not as white as milk, not even fairer than my son. God knows the child you'll be able to carry will manage to be fair or black like you are." She incessantly blurted poison like words from her mouth without even realising that her son was at the door listening to all that she was saying.

Vicky interrupted her, "What are you saying, Maa? isn't she...? the one who takes care of you every time, isn't she...?"

She cut Vicky short and started again, "You don't know Vicky, she is useless like her mother and her mouth... she talks all nonsense with that fatty mouth like her father."

Pearl could not hold it that day when her mother-in-law dragged her parents name in a conversation that was too irrelevant and derogatory. She stopped her right there- "How can you take my parents name? Who are they to blame for all your small talk? If it is you who can never be satisfied with what you are and what others are not, then that is your problem and not mine. Also, the demonic part of my eating habits and the colour problems which you have with me are your demons of the mind. Everything I do is never good

enough for you. And for the notions of me which you have in your mind, I can't help them because that is what I am. If you think that is demonic for you, then that is absolutely your zero awareness about what a human should be..."

Vicky tried taking his mother to another room in order to make her quiet but the fierce mother-in-law blazing in fire kept shouting - "Asked her to say sorry otherwise she must leave this house at once." Vicky stopped her right there and said- "Then I must be lonely for the rest of my life. Is that what you want, Maa? Is that what you want to make our future to be full of sadness and loneliness?" But she didn't back off.

That night, everyone slept without uttering any apologies to anyone though the mother-in-law was quite sure about Pearl making apologies to her, but that night Pearl was quite sure of what she did and that was required to be done before. Vicky also did not ask Pearl to say anything because he too, felt that the conversations were pointless and quite slippery from his mother's side. But for Pearl, they were not pointless but definitely way too slippery.

The next day, Pearl woke up before anyone else. She went into the bathroom to brush her teeth, but the moment she looked herself into the mirror, tears rolled down her cheeks from somewhere, and she burst out completely. She touched her forehead, washed her face, stared at the outlines of her own face and felt herself zoning out, but at once, she turned off the tap, wiped her face with a towel and wearing a smile of 5 centimetres, she prepared the breakfast table with the fresh beginning of a new day.

The technocratic age has evolved humans from hunter-gatherers to smartphone- handlers, but there are still many things that even modest inventions cannot change about humans. One such thing among all of this is — forgetting that we are mortals and not perfect in life. Yet, we see life patterns around us as if we are more than perfect and immortal beings living our lives.



Vrinda Parwal

B.A. English (H) II Year

## Diverse Colours of Unified 'Bharat'

The faagun (spring in Hindi) breeze was mesmerising today. Ratan was sitting by the window enjoying his morning tea. His wife was preparing some fresh coriander chutney; its fragrance intermingled with the wind blowing outside and the smell of wet earth, as it had rained the previous night.

"Papa, papa...", hurriedly came a little boy holding his multi-coloured pichkari. "Good morning, Dev beta. What are you doing with your pichkari in the morning? You must freshen up and have the lovely dhoklas which your mother is preparing. "No, no, papa. I want to go and buy colours and water balloons. Holi is coming." "Alright, alright, let us quickly finish breakfast and go to the market."

The bazaar in Dadar (an area in Mumbai), was huge. You could easily find people from all communities coming here. The rich, the poor, the young and



the old - the bazaar offered something for everyone.

There was an ancient orthodox church near the market and an old Hanuman temple too. A few miles away, you could easily hear the sound of the azaan (a Muslim prayer). Some Sikhs had built a small



gurudwara there as well, and you could spot a few Sardars offering the passerby a glass of lassi or halwa.

"Papa", cried Dev. "Mr. Dabbowalla is waving at you." "Look, look," he exclaimed! Ratan waved at Mr. Dabbowalla, a middle-aged Parsi man and a humble businessman. "Ay, you dikra, how you do?", he asked in his broken English. "I am good, sir. Dev spotted you in the crowd. Dadar is always crowded...", said Ratan. "Ah! Dadar is always crowded... Yes... But I love Dadar. It has a rich history... So vibrant the market is. So what if it's a little crowded? Akkha Bombay is filled with people and buildings and cars. What to do eh?" Mr. Dabbowalla replied. "Very true sir, very true", Ratan said. "Papa, chalo chalo (let's go)", little Dev interrupted. He kept on insisting his father by nudging his hands. "I better go now, sir. I have to buy rang (colours) for my little son for Holi. Otherwise, he will drive me crazy." As soon as they departed, the father got squashed by a phool wali. Her basket was twice her size which she was carrying on her head. "Hato sahib, hato (move sir, move)..." she yelled.

The breeze continued to blow and the aroma of freshly made jalebis and kachoris was filled in the air. The halwai from a shop nearby shouted, "lelo lelo 10 rupay mein kachori lelo... (come and buy a kachori for Rs. 10 only)... Asli desi ghee mein bani hai..." (it is cooked in pure desi ghee), he said. Ratan stopped by the sweet shop and said, "chacha, how are you?" "I am good beta, what would you like to have today?", he



interrogated. "Well, Dev wants a jalebi and I would like two kachoris please.

"Yummy", said Dev while sticking his tongue out to clean the sugar syrup. "Papa, now let's go and get the colours...I can't wait!", he said excitedly. The little boy tightly squeezing the hand of his father was fascinated throughout this journey. It was like a little adventure for him. He observed multiple things on this expedition. There were flowers, sweets, toys, vegetables, fruits, clothes and other items of decoration, etc. Everything was so beautiful. The market was flooded with people, almost capturing the essence of India or 'Bharat', as some people would still like to call it. It was vibrant and jovial, filled with ecstasy.

Finally, the boy cried, "Papa, papa, look at the Muslim uncle who is selling colours. His shop is the biggest amongst all the others. Wow. Can we go to him, please?" "Okay, Dev. Let's...", answered Ratan. After entering the shop, Dev felt marvelled at the sight of what he saw. The place looked like a rainbow to him and he was enthralled. "Wow!", he exclaimed while turning around in a circle.

Aseef, a young chap, wearing a white kurta-pajama and topi came walking towards him. "What can I get you, chote?", he asked. "We want some gulaal for Holi, sir", Ratan answered. Aseef said, "we have all the colours displayed here, sir. They are all of premium quality with no additives and adulteration. We make these colours at our own *gaav* using flower petals. In fact, our colours go to the Baken Bihari temple in Vrindavan every year", he added. He mentioned a few more things about his business, which pleased Ratan.

"Who is a Hindu and who is a Muslim, sir? We are all human beings and for me dharma means worshipping your work and honouring other people." Aseef said. Ratan and Dev, whilst on their way back purchased a few more items for the Holika Dehen and headed home.

Before entering the house, Dev hugged his father. Jumping into his arms he said, "Aseef uncle was so kind, papa. I learnt a lot from him today. I know I am small, just eight years old but Aseef uncle inspired me. I want to be like him...", Dev exclaimed. Ratan smiled at his son, looking at him with pride. "Beta, my beta...", he said.







**Aarzo Agarwal**  
B.A. English (H) II Year

## Mother Nature Is Healing

Do you hear the silent screams now?  
Ah, how would you? You soulless being.  
I wonder how your deaf ears have been,  
For years, it is like that.  
Mother Earth calling you loud, and again and again,  
And you do you, again and again.  
If we ever rip you out,  
Guilt will flow and relief will come to you.  
But no, Mother Earth is on a roll.  
She will tell you,  
how it feels never to be heard, never acknowledged,  
and despite doing everything, never loved.  
She will tell you that she is beautiful,  
with or without you.  
She will glow among the darkness you spread,  
with or without you.  
Ironically, she did without you.  
When you were somewhere between your last  
breaths, She shined the brightest.  
The sky was blue, the ground was green,  
Chimneys were close, and stars were seen.  
We know this was not the end you expected,  
the anguish, the pain, the torment,  
was somewhere rested.  
I hope you come out of your wonderland,  
the utopia you have created around,  
and your actions be bound.  
This was your home, not a place where you can  
construct a house,  
And live there like a mouse.  
Let it go, release yourself from the handcuffs,  
And do some uphill work.  
Let us create heaven, it will be felt,  
If you have some humanity left.



**Hritika Lamba**  
B.A. English (H) II Year

## Money

Shedding sweat and blood,  
hands and face speckled with mud.  
He is working day and night,  
to fill his and family's appetite.  
Bearing forever pressure of tax,  
his tired body is not willing to relax.  
His little grandchildren crying for toys,  
his son too is helpless to afford their little joys.  
Getting only a tenth part,  
of what his struggles deserve, from the start.  
This isn't a fact, of which he is not aware but going  
against it, he can not dare.  
He knows his fellows, who did protest,  
their meagre wages too, they did wrest.  
Working since childhood, now his hair are greying.  
All his youth went in work such as hay  
That small currency keeps him quiet,  
fearing that rebuke will ruin his little diet.





**Krishna Chandra Mishra**  
B.A. Sanskrit (H) III Year

## Silence

I heard the silence  
Speaking louder than words  
I felt the vibrations  
Of many colliding noises  
Trying to express  
those untold stories  
and untold words  
hidden amidst the silent voice.  
I wondered  
If silence was really so void?  
Being so devoid of noises,  
or is full of silent voices?



**Suchit Rajvanshi**  
B.Sc. Mathematics III Year

## Quite Lost

Tell me where did quiet cease?  
Or still sullen at me?  
Tell me now I'm too heavy to be pushed on  
My perfect piece of craft, a breakthrough art,  
Devised by my own imperfect hands, alas is lost  
It's been the cool breeze across my soul,  
Before the onset of the first monsoon rain  
Or those same droplets of rain that quench the long  
dried meadows,  
Unfettering the heavenly scent of earth  
Now it only takes a free bird sitting on a twig,  
Planning on retaking a free flight, for me to realise -  
I'm too envious  
Gazing at that bird, I beckoned but it denied,  
As if mocking me flew off into the grey blue sky  
It feels perpetuity since I've been imbued with that  
intimacy  
My loud heartbeats - a gentle reminder of my  
unraveling heart  
Miles, I've covered in the search of no avail  
Or maybe the outside is not a good place to hide  
Lost within me, a dear organ of mine,  
In a camouflage not observed by the naked eyes  
I wonder if I'm ever gonna get through I'm unable to  
speak,  
A good treatment is due.



**Radhika Nagpal**  
B.Sc. Statistics (H) II Year

## Does the Dream Ever Come True?

Standing in the middle of the mountain  
Upon me is falling snow,  
River of love is flowing.  
Standing by my side, the woman I know,  
When she holds me in her arms,  
The sun goes down and the night comes up high,  
She means so much to me... without her, I cannot  
survive.  
When I open my eyes, I find myself all alone.  
Scared of the dark and no one to hold  
I have a question for you  
Does the dream come true?  
Breathing in the air of love it feels so pure.  
See, as far as you want to, but you will not see hate  
anymore.  
Tears of blood are not pouring, there is no need to cry  
Because, no longer for anyone someone dear can die.  
No need to close your eyes, no need to close your ears,  
Everything you don't want to see or hear has been  
washed away in the past years.  
When I open my eyes, I found myself living in the world  
Where hate and fray is above faith and love  
I have a question for you  
Do the dreams come true?



**Divanshi Aggarwal**  
B.A. English (H) I Year

## Anxiety: Our Generation's Legacy

Imagine what it feels like  
When anxiety is our legacy,  
And existence just a protocol.  
Ah! What a lovely skeleton —  
Apparently, grinning, buoyant and gratified.

Living in the interludes —  
Aloof from the world, in a bitter mood.  
Apathy, heavy-hearted, Self-  
grieved, dying in silence.  
Alas! What a pseudo generation of ours.

Souls shattered, shut tight in catacombs,  
Helpless o helpless, strenuously lingering

Hopeless hopeless, cumbersome living.  
Heart and mind constantly bickering,  
Ravaged by the flames burning deep  
inside,  
voice always trembling.

Alas! What a piteous generation of ours.

Anxiety, life an utter incongruity,  
What an inevitable portrait of ambiguity.  
Scream o scream!  
Vent out the pain!  
Break o break,  
The bars of the flawed legacy.



**Kusha Vasudeva**  
B.Com. (H) II Year

## Racism Isn't Born but Taught

Humans carry plenty of masks on their face  
Bounty of layers  
Yet, we tend to observe  
The natural colour as a disgrace  
What is the hideous look for?  
Is it something to be judged about?  
Or something to be ashamed of?  
All of us have the same smile carved  
The same sorrow in our hearts  
The same blood we bleed  
The same tears we weep  
Yet, we treat each other distinctly!  
Has god endowed more power to one colour  
Or we as a society, have made our own norms  
To consider one colour beneath and another colour  
better?  
Is the idea of racism really born in our head  
Or is it something people around us have sowed it  
gradually instead?  
It is something we sometimes learn eventually  
Humans treat others according to the colour of their  
skin  
We often create notions about mankind  
Due to the superficial features of a person  
Let's play chess and not care about the colour I choose  
Let's normalise diversity without bluntly spouting out  
our personal views  
Yet, ironically white gets to make the first move  
Even in chess, we follow such rules  
Let's look in our conscience and keep it alive  
Let's practise to accept all beings as they are  
Since we know at some point, we too did likewise.



**Shaurya Dev**

B.A. Political Science (H) II Year

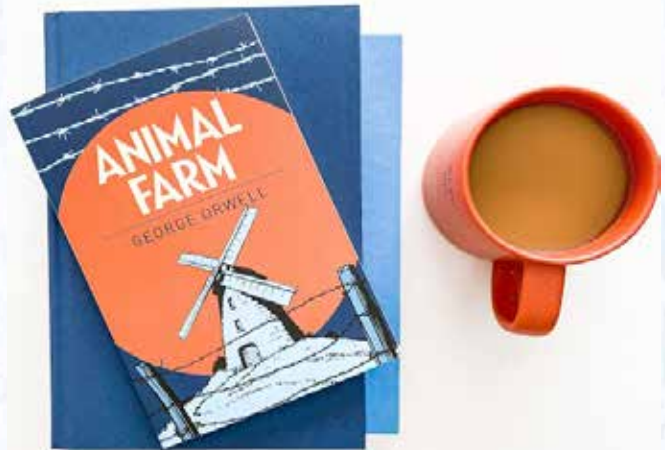
## ***Animal Farm* by George Orwell**

*Animal Farm* by George Orwell is an eloquently written fable of a rebellion by the animals in the farm of Mr. Jones, who end up driving him off the farm and setting up an egalitarian rule or Animalism as they call it in hoping to create a society where the animals can be equal, free, and happy. The allegory obviously reflects on the events of the Russian Revolution of 1917 and the rule of Stalin in the erstwhile USSR. Now as someone keenly interested in History, I found *Animal Farm* absolutely amusing and found myself smiling or rather chuckling throughout the book on how beautifully George Orwell had put these events of History into the world of animals, how the aged white boar Old Major shared his dream of an Animal Farm similar to what Karl Marx and Lenin did for a communist state and how Napoleon and Snowball, like Stalin and Trotsky set up this Animal Farm with their seven commandments of Animalism.

George Orwell has written this book in a very simple and easy language which any little kid could read and enjoy, or any adult could find it a funny read by relating it to events of the Russian Revolution, but there's is obviously a lot of than what meets the eyes as is the case with any book by Orwell. The book in a simple sounding tale of animals reflects upon several murky realities of our societies, political and cultural systems and vices ingrained in the human nature. George Orwell, I feel had a very deep insight and understanding of the human nature which is

why his writings continues to be read and discussed.

Now among the many themes in the novel, first we see how, as it is said 'Power' tends to corrupt, and absolute 'Power' corrupts absolutely, we see in the case of Napoleon who is blinded and lusted in power so much so that he forgets the cause with which they begin their rebellion that is to make a society where all animals were equal, but power makes Napoleon yet another master to those animals, rather even a worse master than their previous one, Mr. Jones.



We also see how leaders when they come to power, they often try to rewrite history and erase the memories of the past. In case of the Animals, since only a couple of them could read it was very easy for Napoleon to change the commandments to suit his benefits, like changing the basic commandment from "All Animals are equal" to "All Animals are equal but some are more equal than others" or the commandment "four legs good, two legs bad" signifying animals are good and human are bad was changed to "four legs good, two legs better" when Napoleon himself started walking on two legs. The group of Sheep blindly repeated them which convinced the animals that this was the initial commandment. We see such instances even today when those in power may use the multitude of the means of technology available today to diminish or change the past and we are no less than animals in this case as we too often get blinded by the new narratives.



In *Animal Farm* by the end we also see Napoleon collaborating with humans, who have not been deposed from their position by the revolution outside the farm itself, just as Stalinist Russia was happy to collaborate with bourgeois and even fascist States for their advantage.

The theme of Totalitarianism and Absolutism is very well shown in the book. Now one of the first steps to setting such a rule or regime is to create new enemies and dehumanise the others. To tell the people how some people among us are not equal. They're not really people! The best line putting forth this is - "All Animals are equal but some are more equal than others" This has been seen time and again in history,

In Nazi Germany, Jews were people, but not the Real People. Dr. Shashi Tharoor taking inspiration from the lines in George Orwell's *Animal Farm* in his latest book, "The battle of belonging" writes how in India today too, the perception being made is that Everyone is an Indian, but some are more Indian than the others.

And lastly the character of Benjamin, the donkey who is the oldest member of the farm and has seen a lot of more in life than the other members of the farm, often remarks, "Life will go on as it has always gone on – that is, badly." Now though Benjamin there sounds cynical but it portrays how times do not remain the same always, whether good or bad.

Note: We are also, happy to share another fantastic paper on 'Animal Farm' by our student, Karanjeet Singh.  
<https://drive.google.com/file/d/15V86iee1dgW09vGrTufSjYdnPuYhBf6E/view?usp=sharing>



**Divyanshi Goel**

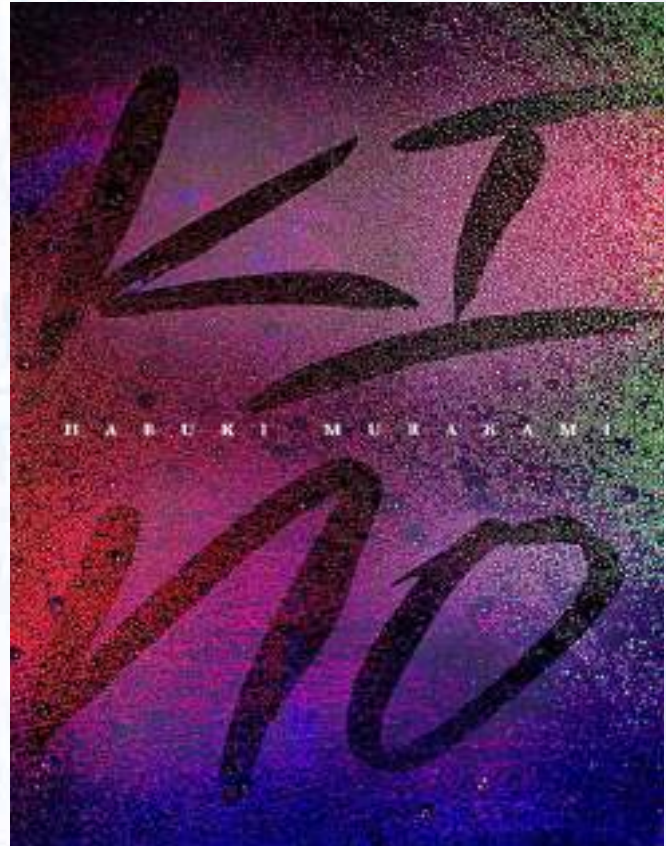
B.A. English (H) IIInd Year

## ***Kino* by Haruki Murakami**

*Kino* by Haruki Murakami revolves around our eponymous protagonist coming to terms with the feelings he hasn't allowed himself to experience for a long time. The story dangles around the theme of personal loss.

The author begins the story in a bar located at a back alley somewhere in Tokyo, narrating *Kino's* thoughts towards one of his guests, and we get the feeling that the protagonist is a rather reserved man and doesn't like to get into conflicts. The character relies on the present, changing emotions, and yet betrays the subconscious will to understand his own existence. He does that willingly. The first sentence proves the disconnection *Kino* has with his own whereabouts of the mind, of life itself. The attention is transferred from him to the man sitting in the bar. This attention keeps shifting from one character to another that keeps lingering back to the bar. Murakami doesn't allow *Kino's* presence to be significant until the very end which can be seen as the reflection of the character's own subdued emotions of severe hurt and pain.

The central theme of loss is undeniable. *Kino* lost his wife and, by his own will, his job. He moves into his aunt's old house and transforms the coffee shop that she attended into a bar with clean furniture and jazz music playing on a record player. The overall setting is filled with melancholia.



*Kino* is found with the great responsibility of actually acknowledging his past when foul situations erupt in his new life in the bar. Two men's attempt to fight one another in his presence, yet instead of being passive, *Kino* steps in. This was his first step into conflicts which contrast to his prior action of barely reacting when he found his wife cheating on him. He accepted the pain, buried it and decided to live in reality.

The image of the cigarette burns on the body of the woman *Kino* sleeps with is an image that manifests itself again (when *Kino* imagines those same burns on his wife's body). This incident with the woman seems to bound up with the admonition he received from *Kamita* that he has not done something affirmatively wrong, but has failed to do the right thing. On first seeing the marks, *Kino* asked himself: "What kind of man would inflict such pain on a woman?" Yet didn't try to help her. His lack of emotion toward his wife during their marriage, his failure to "pick on clues" reappears again and again. It seems that *Kino* was



such a man who, in his cold neglect had inflicted pain on his wife, even though he didn't intend to do any harm. Kino's imagining of the burn marks on his wife, that early hint of his upcoming awakening,

Once Kino leaves his material comforts he becomes exposed to reality. He comes to the realisation of how closed off from the world he had been in mind and heart, how he had allowed cumulative hurts to bury him away.

Kino's story is a story of acceptance, not just about what his wife did to him, but also his own emotions. Through this story, Murakami conveys the message to never lock your feelings, and to forgive and forget. One should allow himself to "feel his feelings" and release the pain because these emotions even if suppressed would haunt the person in one way or the other.



## Goa Diaries: A Photographic Journey



**Ms. Renu Kapoor**

Associate Professor, Department of English

The tiny, coastal Indian state of Goa is synonymous with shimmery blue waters, endless beaches and vast swathes of golden sand. The very mention of this state conjures visions of the carnival, cashews, feni, hedonistic pleasures of casinos, wine and endless platters of sea food. Move a little inland and you witness a verdant green landscape dotted with ponds, lakes and waterfalls. The vast, intense green is punctuated by gems of Portuguese architecture in unbelievable colors. Also vying for your attention are white washed churches with a minimal touch of blue and fabulously colored temples, testimonies to the multicultural heritage and history of Goa.

I visited Goa in February 2021. This wasn't my first trip to Goa and I plead guilty to the touristy routine of beaches and more beaches on all previous trips. The lockdown had created a yearning for travel hitherto unknown to even a footloose traveller like me. International travel being out of question, I settled for Goa but with a promise to myself to uncover a new, unknown to most, side of Goa and Goa did not disappoint. The place threw utterly unexpected delights my way.

Here I present my photographic Goan diary where I tried to capture unexpected and hidden beauty. Just as there is a face behind a face, similarly, there is a place behind a place, which reveals itself only to those who will seek.

1. Heritage Houses - Legacies of the colonial past, there are palatial mansions built across Goa in European architectural styles. Built by the wealthy, the furniture, art and artifacts in these houses speak of luxury and opulence. The pictures shown here is of the Menezes Braganca's house in Chandor which dates back to the 17th century.



2. Azulejos - Azulejos are hand painted, glazed tiles that the Portuguese introduced in Goa. While the tiles were used by the Portuguese to adorn the structures they built, the tiles were made in Portugal and shipped to Goa. It was much later that a couple of students from Goa College of Arts went to Portugal to study this art form and brought it back to the state. Now there are studios where these tiles are made.



3. Portuguese street names, street signs and name plates - In Goa they say that if you have been to Goa then you don't need to go to Portugal and while I would highly recommend a trip to Portugal, often one forgets that one is in Goa, particularly when you see street signs and name plates like the one mentioned below.



4. Flora - Over 3000 different species of plants and flowering trees will keep flora hunters busy and happy. Besides unusual flowers and leaves, the ubiquitous coconut palms add a picture post card charm to Goan landscape.



5. Walls - Yes, walls. I am addicted to walls and facades and Goa offered incredibly beautiful colours, textures, patterns on its walls. Then there are fabulous doors and windows to give these walls company.



6. Quirky Houses - While Portuguese influence is seen on architecture throughout the state, one often spots some quirky, eccentric houses too. This one, for example. Is it weirdly fascinating or fascinatingly weird? It stands next to two play schools and I wonder how tiny tots react to it when they see it for the first time.



7. Wishing Well - It was the first time I saw a wishing well into which one is supposed to throw a coin and make a wish. This well has been filled up but the external structure is intact. I didn't throw any coins but that didn't stop me from making a wish or two.



8. Colours - I love colours and Goan houses were all my colour wishes come true. The cherry on the cake was this unicorny stairway.



9. Rooster - The rooster seen on the roof of Christian houses in Goa is linked to Barcelos Rooster, a symbol of Portugal. The rooster guards the houses and protects people who live in them.



10. Tulsi Vrindavans - These gaily colored planters on pedestals are an integral part of Goan landscape. Used to house tulsi or sacred basil plant, tulsi vrindavans hold the pride of place in the courtyard of every Hindu house. Painted in auspicious colours like red, yellow, orange and green the most common forms and shapes used for them are elephants, lotuses and birds.



**Dr. Urvashi Sabu**

Associate Professor, Department of English

## Engaging the Learner: Why Do We Need the Human Teacher in a Rapidly Digitising World

We live today in a rapidly digitizing world. Every aspect of our lives is now dominated by the digital devices and services that we use to carry out our day to day tasks of communication, memorizing, reflection, invention, learning or knowledge seeking. In the past five years, education has conclusively and decidedly moved from its conventional space of the physical classroom to the virtual space. To a great extent this move has been motivated by the equalizing mantra of 'education anytime, anywhere and for anyone'. Virtual educational platforms (VLPs) offer flexibility, ease of access, wide reach, global content in a globalised context, and a learning environment that is in the control of the learner rather than the provider. Never has education (or ed-tech, as it is now called)



been such a marketable, 'user friendly' commodity as it is today. The virtual educational platform works on software programming, content creation and a comfortable interface where the user/student and the provider/'teacher' can transact the business of learning. The teacher on the virtual platform is now a disembodied voice on a computer screen or a video recording. Given the popularity and exponentially increasing user base of practically all ed-tech platforms, we, the teachers in conventional chalk and board class rooms, in brick and stone educational institutions begin to wonder, and to genuinely and somewhat fearfully ask ourselves: Are we needed any longer? Are we on our way to extinction? Have we become the endangered species that no sanctuary has the desire or the will to protect?

Before we, somewhat fatalistically, begin writing our academic obituaries, let us take a step back and analyse what is that we human teachers can do that a virtual educational/learning platform cannot.

- A virtual learning platform is a one-way street. The user travels this street to derive whatever information it can about a subject of their choice. The human, live teacher is not a one-sided communicator. The job of the teacher, more than ever today, is not just to speak, but to listen. This is something no virtual learning platform can do. The human teacher, if she has to continue existing, has to provide the learner a willing, receptive ear. She has to become not just the transmitter of knowledge but also a willing participant in and a receiver of the multiplicity of opinions of her class. She has to respect this very multiplicity, this heterogeneity. She has to connect, to converse, to engage. Human teaching-learning is a two-way communication process while ed-tech is single sided. If we as teachers, in the hubris of our greater knowledge and superior position, have become only speakers and not listeners, only transmitters and not receivers, then it's time we unlearn that old practice and reorient ourselves.

Computers have come a long way from the machine created by Charles Babbage in the late 19th C. Today, they're smarter, quicker, more



efficient, and increasingly, more intelligent than the average person. Ed-tech uses all these attributes to its advantage, offering the learner more in terms of content. But no computer as yet made, can comprehend or navigate the complexities and conflicts of the human heart and mind, its psychological motivations and its unarticulated thoughts. No ed-tech as yet can read the human face, analyse what's going on beneath the surface and come up with either an answer or even a question. No ed-tech can differentiate between multiple personality types, varied mindsets, cultural diversity, and personal orientations. Ed-tech offers a one size fits all approach to education, at the most distinguishing between levels of difficulty based on IQ. It is only the human teacher who has the ability to understand the EQ, (emotional quotient) as well. 'Why are you late today?', a question that every human teacher, at least once in her career will have put to her students, can become the starting point for a whole world of creative opportunities, an investigation into complexities, and an understanding of the little dilemmas that constitute the variety of our existence. The virtual learning platform will not ask this question, will not enquire. Briefly, the teacher cares, the VLP doesn't. The teacher understands, the VLP doesn't; the teacher listens, the VLP doesn't. If we as teachers have stopped inquiring into the holistic wellbeing of our students, or trying to find out why 'they're late', then we're really no different from the VLP's. In fact, VLP's have the advantage of access and offer learning at the learner's convenience. If we cannot utilize the humanness which is our USP, very soon we will find our classrooms bereft of learners.

- Let us investigate why Literature, or the Humanities, more than any other discipline, is better understood if taught by a human being rather than dispensed through a machine. It is an old and often repeated cliché that literature is the mirror of society. It emerges from society, it reflects society. It is a creative record of human stories, of ambitions and failures, of the tragic and the comic, of all emotions and ways of existence

known to man. At what point then, did this creative record become so mired in theoretical jugglery and so buried under the debris of critical inquiry that we forgot to relate it to that which it emerged from: life? How many of us deal with a text in class as more than just a unit to be mugged up for examination? How many of us emphasize what critics have to say about a particular text rather than enquire what we, or more importantly the students think about it? Are we only in the business of conducting examinations for students so they can acquire a degree, and conducting research for ourselves so we can acquire a promotion? Or do we also carry the academic and educational responsibility of fostering and promoting independent critical inquiry? I agree that our system is oriented towards examinations rather than education. If a student has to pass the examination, all she has to do is go on the internet. There are endless study guides, learning circles, e notes, papers and articles that will steer her through, and with good grades, because as examiners too, we award more marks to those students who write all the 'right' things, mouth the accepted views, quote the known critics. A student does not need the human teacher to engage in all of the activities mentioned above, because a VLP can do that equally well, if not better. Students need the human teacher to guide them through their personal engagement with the text, to navigate and understand its emotional nuances, and most importantly, to establish with examples and cultural corroborations, the text's closeness to life. If we can take up the text and relate it to the everyday lives of our students, they will be more interested, better informed, more enriched and definitely more capable of negotiating not just with the text but with actual situations they may face later in life.

- A look into the syllabi of English departments is vital for a reorientation and renovation of the study of English literature. Our preoccupation with English literature, i.e. literature written in and by English writers has to now move towards a more eclectic inclusion of not just English literature,



ie literature written in English from across the world) but also literature in translation, and the various other offshoots of what we call the 'text', film studies, adaptation studies, applied gender studies, social media studies, translation studies and active translation projects, creative writing, media studies, performance studies, journalism etc. We need to bring literature back to the vantage point from where it originated, in life and its myriad artistic expressions. However, along with being reinstated as the one discipline that includes within itself most other branches of social science and humanities, it must also be taught in a way that enables students to make a living out of it. And not just a living as English teachers. For too long now, literature students have gone on to become working clones of their favourite teachers, entering the teaching profession, disseminating the same critical and theoretical knowledge they garnered during their college days. A stagnation of thought, of pedagogy, of enquiry, has slowly but definitely crept into our academic psyche. The need of the hour is to hit the refresh button, to move beyond the conventional and the canonical; to involve and not preach; to understand and not dictate; to be non-judgmental and necessarily promote the same quality in our students; to juxtapose the everyday realities of our students with the abstractions of the text; to first familiarise them with the text and then with the plethora of critical material available on it.

- For all the theoretical tools available to us for interpretation of the text, it must be kept in mind that the text does not organically lend itself to theoretical interpretation unless it has been written with a specific politics in mind. Theory is essentially the art of fitting a square peg into a round hole, and that is one of the reasons why it finds few eager and willing takers amongst academics and students alike. There are of course detractors from this opinion, academics and students who are committed to theory, and who see no other valid way of reading the text. Given the denseness of this exercise however, and the fact that this takes away from a more direct understanding and enjoyment of the text, can we consider for a while what a classroom would be like if, along with the customary theoretical interpretations of the text, we encouraged our learners to react to it at a more personal, emotional level? One of the reasons why literature classes, in the live setting have become so boring, dry, and formidable is precisely because we have deflected the emotional appeal of literature to, primarily, its technical aspects. To make matters worse particularly in the Indian context, we have continued our excessive reliance on western interpretative tools for our study of literature, even when the text in question is not a western text. Can we, in a truly post-colonial, post-western exercise, develop our own methods of critical inquiry, of engagement with the text? Can we encourage our students to navigate the thematic complexities of the text on a more personal, interactive level rather than the cold comforts of the ivory tower of theory?

It is only by asserting our humane side that we teachers can survive the juggernaut that is ed-tech. If we continue to teach by the same old methods, and only to ensure that our students pass the exams, not only will have done gross injustice to the cause of literature, but we will also have sounded our own death knell, because technology today can fulfill that need much more effectively and comprehensively than any human can.

**Dr. Vandana Agrawal**

Associate Professor, Department of English

## An Angel's Kiss

"Hey, hang on. Please ...a minute! Le'me have a close look."

"Don't, don't take hold of it, may be some wild thing", warned my friends.

"Tch...Well, ...ignoring them, I bent..... plucked one. And why not? After all, foraging was not new to me. I washed it from my water-bottle and had a close look... appeared mini strawberry...took a bite...yes, the taste was...ah ...awesome. I was transported to my childhood days... when running amidst the fruit trees, shrubs and vines was my pastime...when standing in the neat rows of strawberry, I used to pluck my fill and enjoyed the tangy Strawberry.

My parental house boasted of many fruit trees- *langda aam, litchis, loquat, peach, jungle jalebi, kachnar, lemon, chakotra, lml, jamun, bel, karonda, anar, amla, jack- fruit, pears, meetha nimboo and kambrak*. There was also a huge *ber* tree, some *phalsa* trees and a strawberry garden. After school in the afternoon or during mid- day on week-ends, it was my routine to pick whatever booty was available according to the season- *phalsas, kamrakh* or raw mango and relished it while I "float"ed amid the trees. Sometimes, I would pick up *khatti- meethi* or the round white of marigold flower and eat it. Springing from one *kyari* to other, I remember going through the rows of strawberries, selecting soft, oval, red rounds, for their heavenly flavor. The comfortable spots on the trees were my favorite perches. I would rush to these spots with the spoils of the day and nestled among the leaves was

oblivious of everything.

O, the good olden days! Well, one thing that still is a part of olden days is the connect with my school friends. Our latest to go out was Bhutan in 2019, a small country nestled among the Himalayan mountain ranges.

Apart from the *stupas*, monasteries, Tiger's Nest and other places of interest, the Royal Botanical Park, that forms a part of a Biological Corridor, was also one of the places in our itinerary. It is a huge lush green space sprinkled with native bushes and trees, a heaven for tourists to bask in the lap of nature, to picnic, stroll, click photos.

It was while sauntering there, I chanced upon a low-lying- bush lush with red flowers, when I asked my friends to hold on. And it came out to be nothing else but ruby-bright mini strawberry. Imagine my ecstasy to savor a naturally ripen strawberry! My delight to see this mini jewel, aroused curiosity among all. All rushed to pick the juiciest ones and one hour slipped by in the botanical park relishing the natural vitamin. I saw another variety of wild berry which the locals enjoy with relish at the forest sanctuary for Yak, another protected area. This was clear to us that Bhutan does not experiment with its native varieties.

All this made me to question why the strawberries of today not the same as that of yore. The demand for





more production has led to the research of hybrid varieties which are disease- resistant, high-yielding, uniform in size and less sweet. They are picked up raw and ripened by ethylene gas. Today, we know its flavor through the strawberry jam or ice-cream or jelly or crush-- a concoction of sugar and artificial flavors. I wonder, is it good to tweak the natural genes and adopt artificial means of growth?

The Botanical Park that straddles the Ridge- the Sinchula- Dochula- Helena, is Bhutan's protected area. Bhutan painstakingly maintains 60% forest cover. About 30 percent of Bhutan lies within national parks, wildlife sanctuaries or natural reserves.

How farsighted these Bhutanese are! They are carrying a silent battle to maintain the planet clean and green. According to the World Bank report, carbon emission of this country is negligible. It is also a carbon sink



due to its high ability to absorb atmospheric carbon-dioxide.

Today world is in the grip of novel coronavirus. These are zoonotic diseases, a spill-over from animals to humans. The destruction of the natural environment, globalized trade and travel and industrialized food production systems have created numerous channels for new pathogens to jump between animals and humans. Our beautiful planet is paying for our greed.

But the feeling that one gets here is that everything is right with the world. Balance is maintained between capitalism and environment. No wonder, we drank to the full in the lap of pristine Bhutan.

I picked up a plant gently with its roots and firmed it with a twig wrapped in mud and a leaf. I planned to take it with me to India to plant in my garden. While sitting on the plane, I was planning the spot where I will plant it. Suddenly, I realized that I forgot to pick it from the pot of bottle- palm in the portico of the hotel, where I had securely placed it. Was it a providence? May be nature wants to call me again to loose myself in the ethereal forest, to go back for the angel's kiss.





**Ms. Nancy Khera**  
Associate Professor  
Department of English

Public transportation in Lisbon goes beyond the usual bus, train and metro. It includes an elevator, funicular and trams! Nothing however captures the quintessential spirit of Lisbon like the yellow trams - they are an ubiquitous part of the landscape of Lisbon. In fact, tourists queue up for hours in the high season to take a ride in the famous Tram 28. As it traverses the narrow and sometimes steep lanes of Alfama one wonders at its very agility. I waited quite a few times for a tram to cross the narrow street just so that I could see it navigating what seemed like an impossible turn! In this photo feature I am sharing a few pictures which capture the trams and the city they so beautifully represent - I just wish I could share with you the rattle and shake and the fun and charm that accompany a tram ride as it winds its way amongst the maze of streets.

## Trams in Lisbon







**Dr. Vandana Agrawal**

Associate Professor, Department of English

## Toba Tek Singh Revisited (2020)

On the frenzy and riots in North- East Delhi in February 2020 on Citizenship Amendment Act, 2019, I take forward the legacies of the story Toba Tek Singh by Saadat Hasan Manto and Gulzar's poem Toba Tek Singh (1970), to show that madness and frenzy of people driven by religion and territoriality is a continuous process. We may have got our freedom but the common man still suffers.



I have to go to meet Manto's Toba Tek Singh's Bishan at Wagah!

To tell him that still there has been no vaccine for virus of hatred

Gulzar had been telling him so too.

Politicians still race for brownie points

Hate speech, fake photographs, concocted stories still abound

Loot, plunder, lightings, shattered identities still found.

Again wails, howls, screams, groans....

Again, a brother losing a brother, parents losing a son, a child losing a father, a wife her husband.

The same scared eyes, vacant faces, listless bodies, dazed existence....

Again 'the other' in the same locality: "Desh ke gadaaron ko, Goli maaro saalon ko".

Again, the feeling that the other has a right to do anything to the other.

Again, the cries of butchered Ratan Lals, Faizans, Nasirs, Dineshs....

Again, a race for ghettoization, parochial sentiments....

A sky rending cry again emerged from the gullet of Bishen Singh-

"Opad di gud gud di moongdi dal di laltain di" **azaadi ke baad bhi** "di dur fitey munh".

**Ms. Anindita Goldar**

Assistant Professor, Department of Commerce

## Safety Tips for Online Share Trading

Investing is very much essential these days as savings alone is not adequate to fulfil all our financial goals and to beat inflation. With the Sensex crossing the 50,000 mark for the first time in history and Nifty scaling the key 15,000 mark recently, more individuals are drawn to investing in the stock markets today. Indian stock markets have become quite accessible lately for the common investors too and it provides the latter with some amazing advantages and opportunities. With the advent of the new technologies, trading in the stock market has become more convenient and less time-consuming these days as you can trade all by yourself without the assistance of a broker through online trading. Online trading is an act of buying and selling financial products through an online trading platform.

Just like shopping for groceries online, you can buy and sell stocks online. Stocks, bonds, options, futures, and currencies can all be traded online. These platforms are normally provided by internet-based brokers and are available to every person who wishes to try and make money from the market.

Online trading platforms

help you trade without any difficulty as these platforms enable high-speed trading. These platforms have revolutionized the way trading is done. You can simply download these to your system or mobile and can begin trading. Most of these brokerage firms that offer this service use a high level of security, which will make you feel comfortable and give you the confidence to trade online. Experts also state that online trading is as safe as offline trading as financial transactions are always protected.

Having said this, it can also be said that nothing in our world is safe. Trading online in capital markets can give you profits by leaps and bounds, but it is also considered as a nest of vipers. If you are one of those who frequently trade in stocks online, it is important to know how you can make e-trading safe. Hackers might steal your personal as well as financial information if proper safety methods are not implemented.

Steps to be followed to make online share trading safe and secure:

- Before starting to trade online, it is important to install antivirus and anti-spyware software and complete the full system scan. Also, make sure to keep the software up to date.
- A number of online share trading frauds happen through fake websites that lure customers with offers and advice. One can check the legal Demat account providers list of the official websites of





NSDL and CDSL and traders can choose the firm that is reputed and well experienced.

- Try getting the maximum information of the online broker before choosing one. It is always advisable to choose a well-reputed company for your online share trading as they have proven histories of dedication and service that they have provided to their customers.
- Set limits for your online trading transactions. The limit can be set on the amount, per day transactions, per week transactions, or month transactions.
- Never trade online or never do any online investment securities at all on a public computer.
- Be careful from Phishers and Scammers. If you ever receive an email from an unknown email id asking for "Your account related information"

then immediately delete that mail. If you want to ensure, call your broker and ask them if they sent you an email.

- Always make sure that the website you are doing online trading has a "locked padlock" icon in the browser window and there should always be "HTTPS" at the beginning of the URL.
- Always check on your online transaction regularly. In case you notice anything wrong with your account, such as inaccuracies or transaction problems immediately contact your online broker.

Thus, online share trading can be quite a lucrative way to save for your retirement or to just make some extra money for those family vacations. Whatever be the reason, this can also turn out to be a wrong place if proper choices are not made. So, follow the above-mentioned tips and stay safe and make good money. Happy investing!



**Ms. Sakshi Verma**

Assistant Professor, Department of Commerce

## Moving Towards a Plastic-Free World

We have created the Great Pacific Garbage Patch! And it is 3 times the size of France! Nothing to be proud of as this is an island of discarded plastic. From mountains to sea, deserts to islands, we have created plastic pollution everywhere. All this when we know that plastic is terrible for the environment as they are largely non-biodegradable. Reducing plastic pollution is one of the major challenges countries across the globe are facing. Everyone knows that plastic is bad for Every living being on this planet still we are unable to Live without it. Plastic is all around us, just look in your home and your grocery basket, it is full of plastic. Let me share some facts to prove why we should worry about plastic.

- Around 8.3 billion tons of plastic have been produced worldwide since 1950s!
- In the past 50 years, the plastic pollution production across the world has doubled!
- Single use plastic products and packaging accounts for half of the production.
- Across the world 2 million plastic bags are used every minute and the average life of a plastic bag is only 12 minutes!
- Can you guess how many plastic bottles are used in one minute? It is It is one million across the world!!
- The litter on those beautiful beaches is 73% plastic.

- Plastic kills more than 1.1 million sea birds and animals every year and we as humans consumes 70000 microplastics each year!

I am sure with all these alarming numbers and facts one must become a little conscious and feel guilty of polluting our environment. First step to bring any change is to realise that something is wrong and then finding ways to fix it. I already covered the first step and I am on way to fix things at my level. We all talk about banning plastic but issue is how? Let me share some of common but relevant and easy steps I have taken in my pursuit of moving towards a sustainable lifestyle. These might sound very simple, but still many of us are unable to actually practice them.

1. I have replaced plastic bottles with steel and glass.
2. I carry my own bottle and avoid buying packaged water. Just plan your day and carry a bottle accordingly.
3. I carry a cloth/jute bag to local markets.
4. I don't buy plastic straws; steel straws are easily available online and in local shops now. I use them.
5. Check the garbage bags, again plastic. You can use newspaper lining instead or switch to compostable bags, I am using eco friendly bags offered by The Better Home.
6. Replacing the plastic jars with glass ones (recycled). It is good for environment as well as your health. (Please don't discard all the plastic in your house,





do this as gradual process, pledge not to buy any new plastic).

7. I have switched to eco-friendly cleaners which do not contain micro-plastics. The Better Home is one such brand. You can check the ingredients before buying anything, do not trust the advertisements blindly.
8. I have started making own soaps and using shampoo bars, easily available on Amazon, donotrash eco store. You can't imagine how many shampoo bottles we discard, that is plastic too!
9. Love gifts? Everyone does. I love to pack them but you know packing material is also plastic. I am switching to packing them with papers, newspapers. Its pretty simple and can look pretty too with a little effort.
10. Whenever we order from outside, it comes generally in plastic boxes. Some restaurants have stated packing in paper boxes. I always select the option of not sending cutlery, since that is plastic too. In reviews and recommendations, I always suggest to stop using plastic packing.

There are several things I am still working on in this journey but not yet completely successful like not having any packaged food, buying staples in jars and not plastic packets, carrying own kit of spoon and folk to avoid disposable plastic.

Don't ignore these baby steps. They matter a lot! Pledge to make your life free of plastic but don't throw everything in one go and pollute the environment with all the usable plastic you have. Pledge not to buy plastic, reuse whatever plastic you have to its maximum life and recycle the things which are at end of useful life. Buy local, promote companies with sustainable products, be a part of campaigns. I was following the 30-day plastic-free campaign by "Donotrash" and it gave me a lot of insights. You can also visit their website. They also have eco-store offering sustainable products. <https://www.donotrash.org/>.

Let us share more such sources to get alternatives to plastic products and make a plastic-free world.

Disclaimer: All the brands mentioned are as per my personal experience and not for paid promotion. One can always explore more options, idea is to learn and share information to switch to sustainable products.



**Ms. Sakshi Verma**

Department of Commerce

## Friends for Life

"Sharing day and night  
The events, daily itinerary and all our fights.  
We all have a few friends,  
Whom we narrate everything  
Without thinking twice,  
Coz they are our comfort zone  
And are inseparable part of our lives.

Well,  
Thats what we suppose,  
Sometimes it works not as we think,  
Time Changes,  
So does people.  
Not everyone can bear the burden,  
Of our challenges and hurdles.

Hold on to those  
Who listen Unconditionally,  
Knows you are sharing and not complaining.

You my friend,  
Ease my journey,  
By listening to me  
Without any judgments,  
And so I don't feel lonely."

A decorative circular frame with intricate floral and scrollwork patterns, rendered in a lighter shade of blue. The frame has a central dark blue circle containing the text.

**College  
Societies**

## IQAC REPORT

Internal Quality Assurance Cell (IQAC) is an intrinsic part of the working of the College. It undertakes, initiates and facilitates activities that will enhance the performance of students, teachers as well as the College as a whole.

With emphasis on quality education and holistic development, IQAC has given special consideration to overall improvement of parameters of academic excellence.

During the academic year the IQAC has facilitated two FDP programmes. While one was held in conjunction with the Dept of Mathematics, the other was interdisciplinary and included the Departments of Hindi, Political Science and History.

Another notable undertaking was the Certificate Courses. There were five Certificate courses held this year in Commerce, Economics, Hindi, Sanskrit, and Yoga. Apart from this various workshops and seminars were organized throughout the year.

The IQAC was also instrumental in facilitating the promotion of our colleagues. Many colleagues were promoted to Associate Professors. Three colleagues also became full Professors.



It has been an endeavor of the IQAC to put systems into place that encourage and channelize participation at various levels, thereby improving the standards of education.

**Anu Kapoor**  
IQAC, Co-ordinator





## LIBRARY: PGDAV COLLEGE

It gives me joy to tell that library of PGDAV College has a very rich collection of more than one lakh books on various subjects and disciplines. It subscribes around 63 periodicals and 19 newspapers for the knowledge and reading pleasure of students and faculty alike. We aim to provide comfortable and peaceful reading ambience to enhance their concentration while studying for long hours. The library is fully computerized, air-conditioned and Wi-Fi enabled with High Tech CCTV surveillance. Library provides free access to both conventional as well as electronic resources like N LIST and Delhi University Library system e resources to its registered users.

College Library extends support to needy students through book bank facility. Needy and meritorious students can borrow books for the entire semester related to their course. Library serves its differently-abled students through various assistive devices and technology. We have a dedicated lab for accessing Braille library resources, Suganya Pustakalaya and reading & recording of other resources for visually impaired students. Students are supported for learning and reading through various softwares like JAWS and devices like ANGEL DAISY Reader, MP3 recorder, Net books, Zoom X Instant Text Reader, Lex Portable Camera etc.

To motivate library users and provide wider platform for book selection, college library organized Book exhibition on 18th March 2021. Many popular publishers were invited to display their collection. The book fair fetched overwhelming response from the faculty of the college.

Since last year the entire world is struggling with the COVID pandemic. Libraries are untouched and to sustain in such situation we modified our mode of delivery of services and resources. The college library followed the COVID protocols in its working and has started offering services to its users. Online New arrival alerts, new and free e-resource updates, online book recommendation facility, overdue reminders, mail alerts, website updates related to library resources and services, remote log facility, plagiarism check facility for faculty of the college are the few initiatives taken by the college library adapting to the current scenario. The Library also conducted user orientation program for the fresher's at the beginning of the session. Awareness programme like *Ethics* and *Plagiarism in Communication* was the part of the certificate course offered by the college.

**Garima Gaur Srivastava**  
Librarian , P.G.D.A.V. College





## THE PLACEMENT CELL

The Placement Cell of our college is characterized by an unparalleled zeal to help students secure jobs after graduation and help them get internships in various profiles aligning with their field of interest. The Cell works tirelessly toward the aim of benefiting the students by connecting them with the corporate world.

This year, despite the challenges of the covid situation, the Placement Team continued with its operations in a virtual setting and successfully aided students in their corporate journey by providing campus placement as well as internship opportunities to the students of the college.

We already have more than 55 companies on campus for the session 2020-21 offering full-time opportunities across various domains to the Batch of 2021. We were able to strengthen ties with our corporate partners like: EY GDS, Bajaj Capital, Jaro Education, Teach for India, TresVista, Bank of America, Deloitte, Chegg and Wipro, while forging new associations with companies like: ICICI Prudential, Willis Towers Watson, Netomi, DE Shaw, and more. The highest package for this session stands at 19.75 LPA till now.

Placement Statistics for the Session 2020-21

<b>Median Package</b>	<b>4.7 LPA</b>
<b>Highest Package</b>	<b>19.75 LPA</b>
<b>Total Students Placed</b>	<b>177</b>

For internships, we had 55 companies extending 250 offers to our students. Some of the top companies offering internships were Airtel, Metvy, Zomato Feeding India, Cvent, CoHo, etc. The highest internship package offered was INR 20,000 p.m.

To facilitate a productive lockdown period for the students of the college, various initiatives were undertaken for the development of the students.

An Alumni connect session was conducted with our alumni from EY and Deloitte to help the students understand the hiring process followed by the Big 4's.

Alongside this, to prepare students for the technical rounds of the hiring process, sessions were conducted

by our teacher coordinators Mr. Pradeep Dubey and Ms. Charu Puri to help with basic of accountancy and Advanced Excel which are often tested in the interviews.

The team also partnered with Coursera, for its campus program and provided the students of P.G.D.A.V. free access to over 1500 courses from top universities from all across the globe, enabling the students to make the most out of their time during pandemic.

The Cell also continued with its monthly News Letter and Corporate Blog- 'Corporate Catena' to ensure that our students are well prepared and informed before stepping into the corporate world. These are now regularly posted on the website, Instagram, Facebook, and LinkedIn handle of the Cell. Efficient and regular postings and crowd engagement posts are being





made on all social media handles of the cell.

Keeping up with the advancing technology, the cell also shifted its functioning to its own website. All the Internship and Placement related information is available on the site. Students of the college have successfully registered on the site and apply for opportunities through the website itself.

This year, we also conducted an orientation session for the freshers to help them understand the working of the cell and the opportunities available to them through the cell. The session ended with a Q&A round where all the queries of the new batch were cleared.

The Placement Cell, P.G.D.A.V. College organized the 5th Edition of its Flagship Event, CONVERGE, on 2nd March 2021. Given the lack of campus exposure amidst the pandemic, The Internship Fair was conducted over a Unique Virtual Platform in which the entire setup was mapped in 3D to make this event as close to an offline experience as possible.

The platform featured designated areas that enhanced the overall user experience. Auditorium for the inauguration ceremony, Information Desk for technical support, and Interview Halls with dedicated ooths for each recruiter. The main highlight was the 'Reserve a Chat' feature through which participants could book a time slot for an interview at their convenience and interact live with the recruiters. A few of the top recruiters were Jio, Zomato-Feeding India, Bajaj Capital, LIC, Coding Ninjas, AIESEC, and many more.

Through this initiative, The Placement Team of P.G.D.A.V. ensured that students were able to secure their dream internship from the comfort and safety of their home. All the available interview slots on the platform were booked within a short span of the inauguration. The recruiters as well as the participating students were in awe of the platform and the team received positive reviews from all regarding the innovative approach to host a live event despite the restriction due to the social distancing norms.

With the relentless support of the faculty and the students associated with the placement cell and most significantly our convenor, Dr. Sonia Sabharwal at the helm, whose zeal and dedication towards her work always drive us to work harder and attain higher goals. We strive to reach a step closer to our ultimate goal of 100% placements for our students.

CONVERGE'21 REPORT	
Total No. of Companies	78
No. of Profiles Offered	40
Highest Stipend	INR 65,000 p.m.
No. of Visitors	1400
No. of Students Shortlisted	250
No. of Registrations	2500



## NATIONAL CADET CORPS (NCC)

This year 49 girls and 156 boys were enrolled in our P.G.D.A.V. Company, under the guidance of Lt Renu Jonwall and Lt Hari Pratap Singh and the leadership of SUO Rahul Thadiwal and JUO Yogita Barman.

During the arduous time of pandemic Covid-19, our cadets had shown great spirit and played a crucial role in managing and reinforcing various tasks actively at virtual platforms. Our 1 girl and 2 boy cadets attended Republic Day Camp. The girl was appointed as a camp senior, one boy was selected for the contingent commander and the other one was selected for flag bearer and marched on Rajpath. 1 girl and 3 boy cadets participated in PM's Rally at Cariappa Parade Ground. Total 13 cadets participated in Online EBSB Camp which was mainly focused on cultural activities; cadets from different states shared their cultural and traditional values to promote National Integration. 4 girl and 1 boy cadets participated in Wreath Laying Ceremony at National War Memorial India Gate to commemorate 72nd Raising Day of NCC. 12 boy cadets

were part of 73rd Independence Day Celebration at Red Fort.

Cadets of P.G.D.A.V. Company participated in various programs like "MY LIFE MY YOGA" on 'International Yoga Day', "ATMANIRBHAR BHARAT CAMPAIGN", "FIT INDIA MOVEMENT", "FIT INDIA FREEDOM RUN", "TREE PLANTATION DRIVE", "AIR POLLUTION AWARENESS DRIVE", "SAVE WATER DRIVE" etc. with zeal and discipline these activities were conducted via online mode. Cadets also participated in "MAHA SWACHHTA PAKHWADA INAUGURATION" in the presence of Defence Secretary of India Dr. Ajay Kumar IAS, and DG NCC Lt Gen Tarun Kumar Aich at India Gate. During the year, cadets attended national and state level camps and participated in Online Quiz, Video Vlogs, Video Making, Article Writing, Reciting Poems and so many other competitions and shared their pictures at various social media platforms like Twitter, Instagram, and Facebook. Cadets also won prizes in online poetry, declamation, and poster-making competitions.

Enrolment of 1st-year girls took place via online mode and enrolment of boys was done offline.

Also, our 24 girl and 69 boy cadets attended the Annual Training Camp; they were trained for B certificate as well as C certificate exams covering both practical and written exam preparation. The participation of the cadets throughout the year was remarkable and will be continued further.





## NATIONAL SERVICE SCHEME (NSS)

The National Service Scheme (NSS) is a scheme of the Government of India, Ministry of Youth Affairs & Sports. It was established on the auspicious occasion of birth platinum Jubilee of one of the most selfless man, "Bapu", in 1969. The sole aim of the NSS is to provide hands-on experience to young students in delivering community service.

N.S.S P.G.D.A.V helps the students to grow individually and as a group. It makes the students confident, develops leadership skills, and gain knowledge about different people from different walks of life. Students also learn other skills that help them lead a better life in various situations.



The motto of the National Service Scheme (N.S.S.) is "Not Me But You."

N.S.S P.G.D.A.V offers various departments to its volunteers to be a part of and give in a helping hand:

1. Women Development Cell
2. Blogging Department
3. Rural Development Department
4. Astitva Department
5. PWD Department
6. Promotion Department

7. Organising Department
8. Anchoring Department
9. Technical Department
10. Creative Department

We have a group of spirited workers who happily take up a task and make a huge success of it. Each member works with commitment and puts his or her best foot forward believing that with hard work and dedication anything is possible. We were awarded for being the most active N.S.S unit in the University of Delhi by DU Assassins in 2020.

We would like to extend our gratitude to Sanjay sir and Aparna ma'am, our Programme Officer and Co-Convenor respectively, who always guided us in the right direction. Also, a big thank you to President, Shivangi Dwivedi, Vice-President, Shreshth Verma, Secretary, Monika, and Treasurer, Manvi Saini and to our whole team. Let's keep working hard and make this society a better place for everyone.






## HYPERION - CULTURAL COMMITTEE

Our college has always been bustling with cultural activities throughout the session. This had been a different year because of pandemic, and it pushed us all to think out-of-box. Hyperion shares strength that is equivalent to its name. Despite the obstacles and challenges, Hyperion- The Cultural Society of P.G.D.A.V. College- emerged as a winner. The members (students as well as faculty) had been using social media extensively. Hyperion team President Akshat Agarwal; Vice President, Nidhi Singh; Secretary, Abhay Jain; Treasurer, Vani Gera and Coordinator (Digital Media), Hitesh Sharma worked relentlessly to keep up the momentum this year.

Hyperion kicked the session off with an intra-college competition that spanned hundreds of students of second and third year of the college. In all 23 competitions were held online participation of students and organizational skills of Hyperion linked together showcased a stage to behold for the coming years.

With the arrival of young blood in the online premises of P.G.D.A.V., Hyperion organized auditions for all the college students which met with great responses and positive validations from everyone.

The annual celebration of the talent of first years "Exploranza" reached a new stage and platform of virtual meetings. Exploranza exclusively organized for the first years paved their way towards making an extraordinary display of their talents virtually. The Prize Distribution Ceremony was hosted by

ecstatic anchors of Spectrum who pulled the event smoothly. The occasion was graced by Mr. Anant Vijay - a senior journalist, columnist and author with more than two decades of journalistic experience. Online performances by the prize winners and the ending note by Hyperion's Convenor- Dr. Veenu Bhasin showcased the energetic spirit of P.G.D.A.V. College.

Hyperion also successfully organized events for the occasion of Shaheed Diwas, 23 March 2021. The Slogan Writing, Poetry Writing, Essay Writing and Song Writing competition met with a huge number of participants who showcased their reverence.

Aaghaz'21, the annual festival is planned on 16 and 17 April 2021. The two-days fest was held online. The theme of our festival this year is 'AVIRAL' - the Voyage Continues. Competitions in various categories Dance, Vocal music, instrumental music, Theatre, Poetry, Digital Media etc. was held online.

### Iris

Iris the photography society - helmed by President Laksh Chadha and Vice President Sukarmanvir Singh, proved to be the best. Realizing the needs of the hour, Iris switched to Instagram and updated the page with magnificent portraits. It also started an Instagram series called '#SundayShow, reviewing movies and web series. Prakhar Saxena from Iris was shortlisted as one of the top 13 photographers of the world by 'Nature Unlocked', a campaign by UNECE. Iris also won around 15 prizes in competitions organised by some of the most prestigious institutions of India.

### Navrang

Navrang, the Stage Play Society of P.G.D.A.V. college has turned heads and gained appreciation from everyone. The heads of Navrang: President, Asra Khatoon; Vice President, Satyam Kumar and Coordinator, Pranjali Malpani have put in all their efforts to their society and it shows in its performance this year.





Navrang gained a diverse range of experiences in the academic session. Adarsh Kumar from Navrang won the first prize in the event 'Mix-it-up' and Nikhil Kumar won the first prize in the acting event 'Kirdaar'. Navrang is giving its best in every field and is living up to its legacy.

### Raaga

Raaga the Indian Music Society, is led by the talented team of President, Rahul Chaudhary; Vice President, Sahil Sunil and Coordinator, Ananya Kapoor. The hours of practice and training have paid off for Raaga and it shows in the year they've had.



Raaga, the Indian Music Society of P.G.D.A.V. college specializes in classical Indian music. This year, the members of Raaga brought laurels by participating in competitions organised by reputed institutions like: 7Shades, Periyar Management and Computer College, Smile Foundation and many more. It is rightly said that "Music surpasses all the barriers and binds humans

together" and this is exactly what Raaga lived up to by constantly updating its social media handles with musical renditions.

Rapbeats- Rapbeats is the first hip-hop music society in the Delhi University circuit. Led by President, Sarthak Srivastava; Vice President, Mayank Grover and coordinator, Anubhav Bhatnagar, Rapbeats did not cease to justify why it is one of its kind.



Rapbeats achieved its goal of imprinting its name to be repeated in the history of hip hop circuit. Mayank Grover from rapbeats bagged the third position in 'Larynx- the beatboxing competition' organised by IIT Bombay. Despite the pandemic, Rapbeats lived up to its name and participated in numerous competitions across and beyond the DU Circuit.

### Rudra

Rudra the Street Play Society of P.G.D.A.V. college is one of the most reputed street play societies in the DU circuit. Rudra continues to grow ahead under the leadership of Aayushi Saini; Vice President, Ritika Gupta; Coordinators, Sreeram PP and Shyama Saraf.





Although the pandemic didn't allow Rudra to organise its annual fest 'Shor', it won around 20 prizes across and beyond the DU circuit. It brought in laurels by participating in numerous events organised by prestigious institutions like: IITD, PEC (Chandigarh), IIM Calcutta, IIM Trichy, IIM Raipur, IIM Shillong and the list goes on.

Techwiz- Our support system during these tiring times, Techwiz, the IT society of P.G.D.A.V. college stood up to its name under the direction of Tarun, President and Prasoon Jain, Vice president along with the coding and quizzing coordinator, Vaishnavi Jaiswal; gaming coordinator, Kunal Saini; graphic designing coordinator, Akash Choudhury and web development coordinator, Himanshu Sharma.



Like all the other societies, Techwhiz too went against all odds and brought in laurels. Techwhiz collaborated with Hansraj and KMC, to facilitate a better environment for coding. Techwhiz, proved their technical expertise by winning prizes in Ram Lal Anand College, Aryabhatta College, VIPs, Kalindi College and many more.

### Chanakya

Chanakya, the Intellectual Society of P.G.D.A.V. College moulds itself to the challenges it faces. Keeping the same spirit, Chanakya moved from active audiences of slam poetry, festivals, debating centres and quizzing halls to an online meeting with profile pictures. Chanakya achieved new highlights in 2020 under the direction of President Arjun Chaudhury, Vice President

Deepali and Co-ordinators Drishti Verma, Preeti Deepa Dash, Eish Salooja, Mukul Lakhmani.

Chanakya participated in online events with their impeccable skills and continued to prove their name as the Best Society of Hyperion. Drishti Verma from Chanakya won national level prizes in Creative Writing at IIT Kanpur, VIT Chennai. Arjun Chaudhury was invited to judge a debate competition at Xenia, the cultural fest of the Indian School of Business and Finance, Delhi. Arjun Chaudhury and Payal emerged as Quarter-Finalists at CRMD 2020, Fr Crce, Mumbai. Chanakya emerged victorious at many Delhi University-level competitions and continued its winning streak.

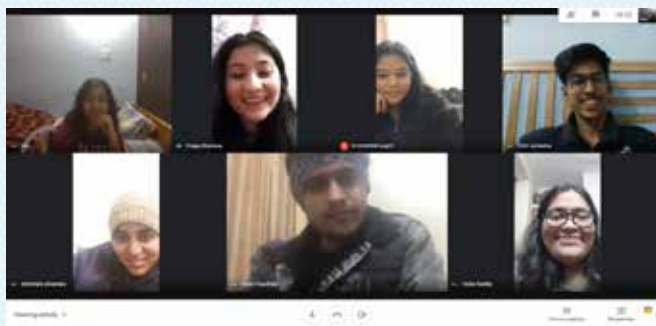


### Conundrum

Conundrum, the Western Music Society of P.G.D.A.V. College is the star of all the college events. Conundrum used the strength of audiences cheering in chat boxes to motivate them to reach new platforms online. It created awards and sweet melodies under the leadership of President Payal; Vice-President, Nimish Sethi and Coordinator, Pragya Bhardwaj.

Conundrum proved their musical strengths by winning in events organized by colleges all over the country. They won multiple prizes in the category of Western Solo Singing at New Delhi Institute of Management and Shaheed Rajguru College of Applied Sciences for Women. Despite all troubles, Conundrum's voices and music will continued to lead the college.





## Diversity

Diversity, the Dance Society of P.G.D.A.V. College is the movement to the rhythm of the college's heart. Diversity lives up to its name's authenticity by constant practicing even when their cheerful practice rooms changed to their homes. Diversity traversed all its strengths under the leadership of President, Vaishali Kashyap; Vice-President, Ishani Nag and Coordinators, Karan Singh Sidhu, Reshmi S Mohan, Harshita Vashisht.

Diversity continued to dance to their rhythms in meetings of online windows and their hard work showed up in their participation and achievements. Diversity won prizes at MDI Gurgaon, Aravali Faridabad and Lingaya's Lalita Devi Institute of Management & Sciences. Diversity moves forward like their rhythmic steps to make its name known all over the world.



## Impressions

Impressions, the Fine Arts Society of P.G.D.A.V. College is in charge of creating art that displays all the hues of being a mature youth. Impressions displayed its vibrant artistry under the leadership of President Suchit Rajvanshi, Vice President Anuj Yadav and Coordinator Priya Jha.

Impressions and their creativity on how they can view the world by sitting in their rooms have truly left us bewildered. Impressions established its stronghold by winning prizes all over the country. Suchit Rajvanshi and Neha Maan won prizes at "Splash" organised by IIT Kanpur. Naming a few colleges where they left their mark by winning prizes are Kirorimal College, Shaheed Rajguru College, ARSD College etc. Impressions flow like their brushes and leave colours wherever they go.



Although the pandemic hampered the working of Hyperion to some extent, it didn't cease to work effortlessly towards achieving its goal. Hyperion owes its success to its convener, Dr. Veenu Bhasin; co-convener, Dr. Pardeep Singh; treasurer, Dr. Awadhesh Kumar Jha and all its dedicated faculty members- Dr. Parmanand Sharma, Dr. Pramita Mishra, Dr. Prabhat Srivastava, Ms. R V S Chuimila, Ms Kirti Yadav, Ms Purima Bindal and Ms Suchitra. Hyperion will always continue to strive for success and endeavour to go against all odds and emerge as a winner. Hyperion moves forward to organize more events under their flagship and showcase its event management skills.

### ACHIEVEMENTS OF STUDENTS IN THE SESSION 2020-2021

S.No.	NAME	EVENT	LEVEL	ORGANIZED BY	Position
<b>Society – Chanakya (The Intellectual Society)</b>					
1.	Drishti Verma	Equinox: Fall Writing Competition			Third
2.	Drishti Verma	Creative Writing, ELE'20, Anragini	National	IIT Kanpur	Second
3.	Drishti Verma	Throw A Wrench,	National	NSUT Delhi	First
4.	Deepali	Creative Writing	Intra- College	EWS Club Parikalan, P.G.D.A.V.	First
5.	Preeti Deepa Dash	JAM Competition,	Intra- College	P.G.D.A.V.	Third
6.	Drishti Verma	Dikotomy	National	NSUT Delhi	First
7.	Drishti Verma	Spellbound Halloween Slam Poetry,	Inter-College	JMC Delhi	Second
8.	Drishti Verma	Inkspilled,	National	VIT Chennai	Third
9.	Drishti Verma	Witch Hour		DSC	First
10.	Drishti Verma	Creative Writing,	Intra- College	EWS Club Parikalan, P.G.D.A.V.	
11.	Mridu Rana	Unscripted, Just A Minute,	Inter-College	MAIMS Delhi	Second
12.	Drishti Verma	Pharmacy Debate,	Inter-College	DPSRU	Second
13.	Arjun Chaudhury, Payal	CRMD 2020,	National	FrCrce, Mumbai	Quarter-Finalists
14.	Drishti Verma	Redstockings Chronicle Magazine Creative Writing,	Inter-College	Bharati College	Runner up
15.	Harsh Gupta	Open Mic Competition	Inter-College	Janki Devi Memorial College	Third



S.No.	NAME	EVENT	LEVEL	ORGANIZED BY	Position
16.	Saumya Khatri	Samvaad Know Your Republic Inter College Debate Competition,	Inter-College	P.G.D.A.V College	First
17.	Satyajit Lall	Samvaad Know Your Republic Debate	Inter College	P.G.D.A.V College	Best-Interjector
18.	Mukul Lakhmani	Jabberwocky Annual College Fest (Inter College Turncoat Debate Competition)	Inter-College	JDMC College	Second
19.	Drishti Verma	Geo-Crusaders Intra-Environmental Quiz	Intra- College	P.G.D.A.V.	First
20.	Arjun Chaudhury	Geo-Crusaders Intra-Environmental Quiz	Intra- College	P.G.D.A.V.	Third
21.	Madhav Mahajan	Mock stock	Inter-College	CVS	second
22.	Eish Salooja	Mock stock	Inter-College	Motilal nehru	Third
23.	Aayush Kumar Pal	Abhivyakti	Inter-College	RLA College	second
24.	Aayush Agarwal	Conventional Debate	Inter-College	Sri Venkateswara College	Best Interjector
25.	Shail Goyal	Polstrat			Second
26.	Drishti Verma	Perspectives of Panorama	Inter-College	Motilal Nehru College Morning	Runner Up
27.	Drishti Verma	Dictionary Definitions	Inter-College	Dyal Singh College	Runner Up
28.	Manosmita Mohanty	On The Spot Creative Writing	Inter-College	Ram Lal Anand College	Second
29.	Drishti Verma	AKBD Creative Writing Competition	Inter-College	JDMC	Special Mention
30.	Deepali	Amore Poema Eclectica	Inter-College	P.G.D.A.V. College	Second
31.	Trisha Pandey	English Poetry Slam, Spring Fest	National	IIT Kharagpur	1
32.	Aarzo Agarwal	Slam poetry event Unkahi, Blithchron '21	National	IIT Gandhinagar	Second
33.	Abhishek Singh	Creative writing Event	Inter-College	MLNCE	Special mention
<b>Society – Conundrum (The Western Music Society)</b>					
34.	Payal	Arietta- Western Solo Singing by Ruhaniyat,	Inter-College	NDIM	1st
35.	Pragya Bhardwaj	Arietta- Western Solo Singing by Ruhaniyat,	Inter-College	NDIM	3rd
36.	Payal	Cadenza- Western Solo Singin	Inter-College	Philyra, SRCASW	2nd



S.No.	NAME	EVENT	LEVEL	ORGANIZED BY	Position
37.	Pragya Bhardwaj	Cadenza- Western Solo Singing	Inter-College	Philyra, SRCASW	3rd
38.	Shrinkhala Srivastava	Game of Sounds- Beatboxing competition	Inter-College	Rapbeats, P.G.D.A.V.	1st
<b>Society – Diversity (The Dance Society)</b>					
39.	Varsha G Shenoy	Vividhta Mein Ekta,	National	Periyar management and computer college	2nd
40.	Utkarsh Sinha	quarantance ,	Inter-College	University College of Medical sciences Delhi	1st
41.	Utkarsh Sinha	talent.maniac, Talent maniac	Inter-College		1st
42.	Utkarsh Sinha	Magnum	Inter-College	Bhim Rao Ambedkar College	2nd
43.	Utkarsh Sinha	jamai vu,	Inter-College	Ramjas College	3rd
44.	Utkarsh Sinha	qu'art'antine	Inter-College	Believe in smiles NGO	2nd
45.	Utkarsh Sinha	sync with dance	Inter-College	Navprayas NGO	3rd
46.	Parkhi matlani	sync with dance	Inter-College	Navprayas NGO	1st
<b>Society – Impressions (The Fine Arts Society)</b>					
47.	Yash vardhan	Doodle making	Inter-College	JDMC	2nd
48.	Yash vardhan	poster making	Inter-College	NSS, P.G.D.A.V.	1st
49.	Yash vardhan	Poster making	Inter-College	JDMC	3rd
50.	Yash vardhan	Best out of waste	Inter-College	KMC NSS	1st
51.	Yash vardhan	Poster making,	Inter-College	KMC NSS	3rd
52.	Priya jha	Floral theme online painting comp.	Inter-college	IP college of Women	1st
53.	Neha mann	PMCC	National	Periyar management and computer college	2nd
54.	Mili Sachdeva	PMCC	National	Periyar management and computer college	2nd
55.	Esha sati	PMCC	National	Periyar management and computer college	2nd
56.	Bhaves haldwani	PMCC	National	Periyar management and computer college	2nd
57.	Suchit Rajvanshi	splash	National	IIT Kanpur	finalist
58.	Neha maan	splash	National	IIT Kanpur	3rd



S.No.	NAME	EVENT	LEVEL	ORGANIZED BY	Position
59.	Priya Jha	Painting Competition,	Inter-College	Shaheed Rajguru College	3rd
60.	Suchit Rajvanshi	Competition	Inter-College	Shaheed Rajguru College	3rd
61.	Priya Jha	Fine Arts Article Writing	Inter-College	, ARSD College	winner
62.	Prasasti Dwivedi	Caricature Making,	Inter-College	Maitreyi College	1st
63.	Subhanshu Rahangdale	Poem writing, Shaheed Diwas,	Intra-college	P.G.D.A.V.	1st
64.	Vanshika Saxena	Poem writing, Shaheed Diwas,	Intra-college	P.G.D.A.V.	2nd
65.	Mahi Pal	Slogan writing, Shaheed Diwas,	Intra-college	P.G.D.A.V.	3rd
66.	Chhavi Gupta	Chitrakala, Fusion	National	IIT BHU	3
<b>Society – IRIS (The Film and Photography Society)</b>					
67.	Prakhar Saxena	Nature Unlocked	International	UNECE	Selected as one of the 13 photographers from the world.
68.	Aalekh Deval	Klick कला	Inter-College		First
69.	Dhriti Goyal	Klickकला	Inter-College		First
70.	Roohan Malik	Klickकला	Inter-College		First
71.	Yash Kumar	Klickकला	Inter-College		Second
72.	Dhriti Goyal	Nazariya	Inter-College	Maitreyi College	First
73.	Sukarman Bhullar	WPC	Inter-College		Second
74.	Laksh Chadha	Shutter Up -	Inter-College	Shri Aurobindo College	First
75.	Sukarman Bhullar	Short Film Making Competition	Inter-College	Rajguru	First
76.	Laksh Chadha	Short Film Making Competition	Inter-College	Rajguru	First
77.	Riya Singh	Short Film	Inter-College	Rajguru	First
78.	Tanya Sharma	photography competition	Inter-College	Prism Media Fest	First
79.	IRIS - Team Competition	short film	Inter-College	Prism Media Fest	First
80.	IRIS - Team Competition	documentary	Inter-College	Prism Media Fest	First
81.	IRIS - Team Competition	ad making	Inter-College	Prism Media Fest	First



S.No.	NAME	EVENT	LEVEL	ORGANIZED BY	Position
<b>Society – Navrang (The Theatre Society)</b>					
82.	Adarsh Kumar	MIX-IT-UP	Intra-college	Rudra, P.G.D.A.V.	First
83.	Nikhil Kumar	Kirdaar-acting event			first
84.	Asra Khatoon	Udghosh-The Stage Play Competition	State	Lal Bahadur Shastri Institute of Management	Best Actress
<b>Society- RAAGA (The Indian Music Society)</b>					
85.	Ananya Kapoor	Meri awaaz-	National	7Shades organization	First
86.	Ananya Kapoor	Vividhta mein ekta	National	Periyar management and computer college	Second
87.	Ananya Kapoor	Believe in smiles	Inter-College		Third
<b>Society- Rapbeats (The Hip Hop Music society)</b>					
88.	Mayank Grover	Larynx-Beatbox Competition,	National	Mood Indigo	Third
89.	Mayank Grover	Realm Of Rythm Beatbox Competition	National	SIES College	Second
<b>Society- Rudra (The Street Play Society)</b>					
90.	Ritika Gupta	Ajeeb Daastan Hain Yeh... Kahan Shuru Kahan Khatam (Story Writing Competition)	National	Machaan, IIITD	special mention
91.	Vaishnavi	Hindi Short Skit Competition	Inter-College	Department of Hindi, Swami Shraddhanand College	Third
92.	Vaishnavi	Ghost Storytelling;	National	Clan Wildcats, Department of Students Welfare, MRIIRS	Third
93.	Vaishnavi	Hunkaar Monologue (PecFest);	National	PEC, Chandigarh	Second
94.	Ritika Gupta	Moviink It;	Intra-college	Navrang P.G.D.A.V.	First
95.	Vaishnavi	RJ HUNT (Vritika 2020)		Metropolitan Education	First
96.	Shyama Saraf	QUIZINGO	Inter-College	Daulat Ram College	Third
97.	Vaishnavi	Vyakt Monoact Competition	National	Samagra,MAIMS College	First
98.	Vaishnavi	Joka Roadies	National	Adventure Club, IIM CALCUTTA	Second
99.	TEAM-RUDRA	Vakyon ki Vyakhyan-Scene Writing Competition			Second



S.No.	NAME	EVENT	LEVEL	ORGANIZED BY	Position
100.	Vaishnavi	War of RJ	National	SCMHRD,PUNE	First
101.	Vaishnavi	Mono Act	National	IIM TRICHY	Second
102.	Vaishnavi	Kirdaar- MonoAct Competition:	National	Rang Dramatics Club,IIM RAIPUR	First
103.	Vaishnavi	Utkat-Mono Act Competition	National	Delhi School of Journalism	Second
104.	Vaishnavi	Pehel- Monologue Competition	National	IIM Shillong	First
105.	Vaishnavi	Nautanki Saala- Mono Act Competition:	National	IIM Udaipur	Second
106.	Vaishnavi	Kirdaar-MonoAct Competition	National	Rang Dramatics Club,IIM RAIPUR	First
<b>Society – TechWhiz (The I.T. Society)</b>					
107.	Mohit Kumar Jain	Treasure Hunt,Know Your Republic Samvaad,	Inter-college	P.G.D.A.V. College	1
108.	Tarun Chawla	Hardcode, Techmelange Eniac	Inter-college	Shaheed Rajguru College	3
109.	Anjali Garg	Poster Making, Arthashastra,	Inter-college	Motilal Nehru College Evening	2
110.	Prasoon Jain	Coding Carnival, Automata'21	Inter-college	Ram Lal Anand College	1
111.	Mohit Kumar Jain, Radhika Nagpal, Tarun Chawla	Math-e-Magic	Inter-college	Kalindi College	3
112.	Arjun Yadav	Decrypt'21, Orrey 2021,	Inter-college	Miranda House	3
113.	Himanshu Tiwari	Inquisitive, Celestech'21, TechPioneers,	Inter-college	Aryabhatta College	2
114.	Muskan Bansal	Cover Page Designing, Satark,	Intra-college	P.G.D.A.V. College	1
115.	Mohit Kumar Jain	Cryptogram, Statistics Department	Inter-college	Ramjas College	1
116.	Mohit Kumar Jain	FinQuest, Finance and Investment Cell,	Inter-college	Shivaji College	3
117.	Shourya Bathla Taneja	Monopoly, Arthvidya,	Inter-college	VIPS	1
118.	Vaishnavi Jaiswal	Black Box, Technophilia, Sattva,	Inter-college	Kalindi College	1
119.	Radhika Nagpal	Coding Battle, Coding Marathon, QuickSort,	Inter-college	Ramanujan College	3
120.	Mohit Kumar Jain	Presentomania, Spectrum,	Inter-college	Anant, P.G.D.A.V. College	2
121.	Mohit Kumar Jain	Cresmos, Spectrum,	Inter-college	Anant, P.G.D.A.V. College	1



## ENACTUS - THE P.G.D.A.V. CHAPTER

Enactus is the world's largest experiential learning platform dedicated to creating a better world while developing the next generation of entrepreneurial leaders and social innovators.

Enactus P.G.D.A.V. is the P.G.D.A.V. chapter of The Enactus network of global business, academic and student leaders unified by the vision—to formulate a better, more sustainable world. It's functioning on its three eminent projects namely: Project Korakagaz, Project Nistaaran & Project Sugandh.

Project Korakagaz strives to empower women from marginalized communities by providing them the ability to produce and market notebooks and diaries made out of recycled paper. Through our project, we aim to make these women financially independent. Aside from producing notebooks and diaries, women are also taught how to maintain financial records. Along with this competence, we provide them regular wages during the whole process. Through our project, we have successfully been able to produce one entrepreneur, Rukhsaar, who now runs her own brand called Abhilasha. Our product's target audience is students, corporate employees, and educational institutions and we market the product on both online and offline platforms.

Project Nistaaran aims to empower the rag pickers both socially and economically by providing them with the skills and network required to produce and market organic manure. The manure comes from the domestic waste from the residential area of South Delhi. The revenue generated from the sales performs as a supplementary source of income for the ragpickers. Through Nistaaran, we aim to spread cognizance amongst people regarding the significance of proper waste segregation practices. Our product's target market includes nurseries, schools, colleges, and households.

Project Sugandh focuses on the protection of the

enactus  
PGDAV COLLEGE

Enactus PGDAV  
presents

**VOLUNTEER PROGRAMME 2020**

**Date:**  
19th October 2020 to 8th November 2020

**Profile:**  
Funding and Marketing Volunteer

**Incentives**

- › Certificate of Completion
- › Letter of Appreciation to Top Performers
- › An opportunity to attend interesting webinars and live sessions
- › A chance to be a part of Enactus PGDAV's Team\*

\*Terms and Conditions Apply  
Last date to apply: 14th October 2020

**Contact:**  
Viraj Agarwal (Secretary) 9887066037  
Ankur Gupta (Marketing head) 8929649405

public from malicious health problems. We strive for this by nurturing our environment and curbing pollutions and the threats it poses.

We provide non-toxic and eco-friendly incense sticks, as an alternative to harmful charcoal-based incense sticks. Project Sugandh also aims to empower and aid the underprivileged communities economically and socially by equipping them with the skills and network required to produce and market incense sticks. Our product's target market includes temples, households, spas, and meditation centers.



In the academic year 2020-21, Enactus P.G.D.A.V. achieved the first position in League 3 of the New Team League Round of Enactus India National Competition. It also organized 'Volunteer Program 2020' as an initiative to educate students from different colleges about the concept of social entrepreneurship. Also, during the tough times of Covid-19, it took an initiative to conduct Mask Distribution Drive for waste pickers of Project Nistaaran.

With a head for business and a heart for the world, living our values of integrity, passion, innovation and collaboration, we constantly strive to take our organization to sky heights.





## SATARK – THE CONSUMER CLUB

**“The first step towards change is awareness”**

– Nathaniel Branden

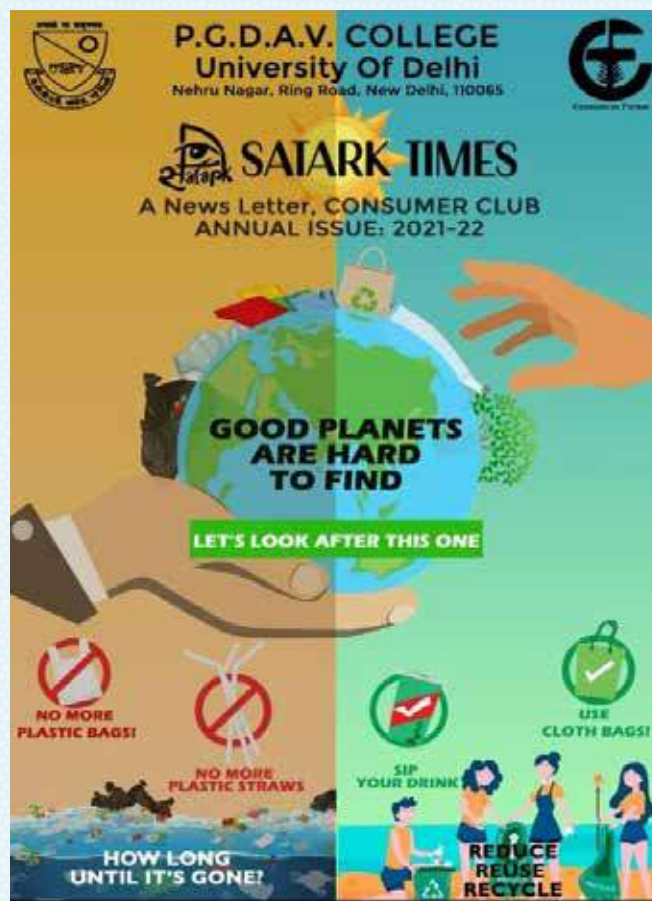
Keeping this as its motto, Satark- The Consumer Club of P.G.D.A.V. College completed another session successfully despite all the unimaginable odds that the Pandemic threw at it. While everyone was trying to adjust to the ‘New Normal’, Team Satark bounced quickly and shifted to online means to conduct its awareness sessions.

The session commenced with our first virtual ‘Knowledge Sharing Session’ (KSS). Unlike pre-lockdown days, we didn’t have a room full of enthusiastic learners, but our participants’ list was huge. The first KSS was on the new Consumer Protection Act, the second on Major Internet Privacy Issues and the third on Exploitative Pricing in Times of COVID-19. Satark spared no effort in spreading awareness amongst the consumers regarding all the possible exploitative measures through the Knowledge Sharing Sessions.

To keep the awareness streak going and let the creative juices of the students across India flowing, Satark, in association with Consumers India, organised its very first competition, **Memezaar- An online meme-making competition**, dated 9 to 30 September 2020, on the topic **Consumers Exploitation**. Satark received an overwhelming response of more than 285 entries. The event was headed by Nomesha, Neha, and Meghna under the guidance of Satark’s convener Ms. Sakshi Verma.

Considering the rising problems of plastic pollution and as one of the most pressing environmental issues, Satark organised a number of competitions:

- **Cover Page Designing Competition** dated 3 to 25 January headed by Manish and Rohit under the guidance of Ms. Megha.



- **Column Writing Competition** dated 2 February to 28 February 2021 headed by Preeti, Divya and Shifa under the supervision of Ms. RVS Chuimila on the topic **Plastic Pollution and It’s Solutions**.
- In collaboration with Consumers, India organised the **Infographic Competition** dated 16 February to 5 March 2021 on the topic **Together We Can: Attack Plastic Pollution**. The event was headed by Ishika, Vanshika, and Mansi under the auspices of Ms. Nisha and Ms. Anandita.

It also organised **a talk on the topic ‘Plastic Pollution and Its Solutions’** on 15 March 2021 on Google Meet on the occasion of **World Consumer Rights Day by Ms Saroja, Executive Director (CAG)**. It saw an overwhelming number of participants who were eager to know about the topic as it is the call of the hour.

E-Waste is perilous to humans and the ecosystem. With its long-standing partner, E-PARISARAA- India's first E-waste recycler, Satark, as its tradition now for several years, conducted an **E-WASTE DRIVE**. However, unlike old times, it was conducted on Instagram this year where faculty members, members and ex-members of Satark posted pictures with e-waste and promised to dispose of e-waste responsibly. The members also visited the college on 5 April to dispose the e-waste collected during this session.



Satark endeavors to spread awareness globally and for this purpose, Satark has its own **Instagram page** (click here to visit), **Facebook page** (click here to visit), and **Blog** (click here to visit) updated every Thursday on topics serving the interests of the consumers. Consumer Updates, on recent happenings revolving around consumers. **Satark Alert**- a series of updates that are vital to the consumers and demand immediate attention. **Satark Encounters** – A mini-series in which incidents are shared by the consumers who fell into the trap of fraudsters.

Last but not least Satark also started **Budget Series** so the consumers of India remain to update with all the new laws that were implemented in the budget of 2021-2022)

With the public health emergency created by COVID-19, life lost its flavour. Satark worked ceaselessly to make this session as spicy as possible. Hence, we concluded this session with the hope that

the next session will be much better and merrier than the session of 2020-2021.

### TEAM SATARK 2020-2021

- |                   |  |
|-------------------|--|
| Founder, Advisor  | - Dr. Vandana Agrawal  |
| Advisor           | - Dr. Anuradha Gupta   |
| Convener          | - Ms. Sakshi Verma   |
| Faculty Members   | - Ms. Nisha Goel, Ms. Megha Mandal, Ms. R V S Chuimila, Ms. Anandita |
| President         | - Tanya Kashyap  |
| Vice President    | - Pratibha Singh, Neha   |
| Secretary         | - Manish, Preeti   |
| Treasurer         | - Rohit  |
| Content Heads     | - Nomeesha, Divya  |
| PR Heads          | - Vanshika, Shifa  |
| Executive Members | - Meghna, Alfiya, Mansi, Ishika, Ananya, Jasbir, Tanya               |





## Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar Memorial Lecture Series, 2021

To commemorate Dr. Bhim Rao Ambedkar's birth anniversary, a lecture-series is organized every year by P.G.D.A.V. College. This year also it was organized on 15 April 2021, in online mode, on the topic, 'Dr. Ambedkar's Approach Towards Women Empowerment'. The talk was delivered by honourable Prof. Sushma Yadav, Vice Chancellor, Bhagat Phool Singh Mahila University, and former Chair Professor, Dr. Ambedkar Chair, IIPA, New Delhi.

In her lecture, she briefly described the history of status of women in Indian civilization and the contribution of Dr. B.R. Ambedkar in strengthening the struggle for women's equality in India. She said that Dr. Ambedkar's approach towards women empowerment was based on the idea of social justice.

Under this lecture-series, a poster making competition

on the theme 'Dr. B.R. Ambedkar: A Multifaceted Man', was also held in which first and the second winner received ₹ 1500 and ₹ 1000 respectively. In addition to the cash prize, they were also given e-certificates. Students of various colleges of University of Delhi enthusiastically participated in this poster-making competition.

The cooperation of the students and teachers was commendable in the successful execution of the programme. Special thanks to our principal, Dr. Krishna Sharma for her cooperation and encouragement. Had she not given her unconditional support, it would have been impossible to conduct this programme successfully.

Conveners: Ms Rimpay Kaushal  
Mr Sunil Kumar



## भारत केंद्रित राष्ट्रीय शिक्षा नीति...



**डॉ. संदीप कुमार रंजन**

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

शिक्षा हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। यह हमारे जीवन के सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास का महत्वपूर्ण साधन है। यह न सिर्फ एक व्यक्ति के विकास का महत्वपूर्ण साधन है, बल्कि किसी भी देश के आर्थिक और सामाजिक विकास का भी महत्वपूर्ण साधन है। किसी भी देश की शिक्षा नीति उस देश की सफलता की सर्वोत्कृष्ट कुंजी होती है। अतः प्रत्येक देश सर्वाधिक सफल देश बनने के लिए एक बेहतर शिक्षा नीति का निर्माण करता है। भारत सरकार द्वारा भी लगभग 34 वर्षों बाद 29 जुलाई 2020 को नई शिक्षा नीति को पारित किया। यह शिक्षा नीति देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण बदलावों को इंगित करती है, जिसमें प्रमुख है इसका पूर्णतया भारत केंद्रित होना। इस शिक्षा नीति को लागू करने हेतु भारत सरकार द्वारा वर्ष 2030 तक का लक्ष्य रखा गया है।

इसी नई शिक्षा नीति पर केंद्रित 4 मार्च, 2021 को पीजीडीएवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति : आत्मनिर्भरता की राह पर भारत' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध शिक्षाविद, 'शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति' के राष्ट्रीय सहसंयोजक और 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' के राष्ट्रीय सचिव माननीय अतुल कोठारी जी थे। मंचासीन अतिथियों में पीजीडीएवी महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा, सम-सामयिक राजनीतिक मुद्दों के प्रमुख विश्लेषक और वरिष्ठ समीक्षक डॉ. अवनिजेश अवरथी, देश के प्रमुख अर्थशास्त्री और 'स्वदेशी जागरण

मंच' के राष्ट्रीय सह-संयोजक प्रो. अश्विनी महाजन और पीजीडीएवी महाविद्यालय के बरसर डॉ. सुरेन्द्र कुमार उपस्थित थे। संगोष्ठी का शुभारंभ दीपप्रज्वलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि माननीय अतुल कोठारी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के स्वरूप और उसकी प्रासंगिकता पर विस्तार पूर्वक विचार प्रस्तुत करते हुए सभागार में उपस्थित सभी लोगों का ज्ञानवर्धन किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की विशेषता का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि यह पहला अवसर है जब पूरी तरह भारत केंद्रित राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है। उन्होंने यह भी कहा कि इस शिक्षा नीति को लागू करने में अनेक तरह की चुनौतियाँ आएंगी, लेकिन जहाँ चुनौती होती है, वहीं अवसर भी होता है। यह शिक्षा नीति उसी चुनौती को अवसर में बदलने का एक सफल प्रयास है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति और आत्मनिर्भर भारत को एक ही सिक्के का दो पहलू बतलाया, जिसमें बारम्बार स्थानीयता की बात कही गयी है। अतः हमें यह देखना है कि हमारी स्थानीय आवश्यकताएँ क्या हैं? इन्हीं आवश्यकताओं का इसमें अध्ययन करके 'स्किल डेवलपमेंट' की बात की गयी है। 'वोकेशनल एजुकेशन' और 'स्किल डेवलपमेंट' उच्च शिक्षा में लाना अत्यंत जरूरी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में उल्लिखित प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इसमें 'रटन' प्रक्रिया का विरोध करते हुए बच्चों को खेल-खेल में व्यावहारिक ज्ञान और शिक्षा देने पर बल दिया गया है। इस शिक्षा नीति में प्रयोग हुए 'इनोवेशन' शब्द पर विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने कॉलेज स्तर पर तीन प्रकार के सुझाव भी दिये।





महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा ने मुख्य अतिथि का स्वागत स्मृति चिह्न भेंट देकर किया और अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक सुखद संयोग है कि हम लोग लगभग एक वर्ष बाद एक साथ ऐसी महत्वपूर्ण संगोष्ठी के माध्यम से रूबरू हो रहे हैं। महाविद्यालय की परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि हम अपने महाविद्यालय में आये नवागंतुक छात्र-छात्राओं का स्वागत चंदन और तिलक लगाकर करते हैं। यहाँ तक कि महाविद्यालय का सत्रारम्भ भी हम हवन यज्ञ के साथ करते हैं। अतः हम ये कह सकते हैं कि पीजीडीएवी महाविद्यालय के संस्कार राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार ही है। डॉ. अविनेश अवस्थी ने संगोष्ठी में उपस्थित सभी अतिथियों और प्राध्यापकों का स्वागत और अभिनंदन करते हुए 'आत्मनिर्भरता की राह पर भारत' विषय पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया। सर्वप्रथम उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि 'आत्मनिर्भरता' शब्द को आक्सफोर्ड हिंदी ने वर्ष 2020 का 'वर्ड ऑफ द ईयर' चुना है। उन्होंने भारतीय शैक्षणिक परंपरा का विस्तार से उल्लेख करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की महत्ता पर प्रकाश डाला। मुख्य

वक्ता के रूप में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए प्रो. अश्विनी महाजन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की विशिष्टता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी जरूरी है। अंत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रतिपा। और उसकी विशिष्टता को रेखांकित हुए उन्होंने कहा कि एक अच्छी नीति के आने से उसका अच्छा प्रभाव स्वतः फैल जाता है।

संगोष्ठी का संचालन डॉ. सीमा अग्रवाल ने किया। बरसरा डॉ. सुरेंद्र कुमार ने नालंदा विश्वविद्यालय के ज्ञान प्रकाश को याद करते ऑडिटोरियम में उपस्थित सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए संगोष्ठी की सफलता की सभी को बधाई दी।

गौरतलब है कि यह संगोष्ठी कोरोना महामारी की सभी गाइडलाइन को ध्यान में रखते हुए महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में ऑफलाइन आयोजित की गई थी। मार्च, 2020 के बाद यह पहला अवसर था जब कोई कार्यक्रम महाविद्यालय में ऑफलाइन आयोजित किया गया।

## संस्कृत विभाग

### संस्कृत-समवाय

#### वार्षिक रिपोर्ट- 2020-2021

‘संस्कृत-समवाय’ पीजीडीएवी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति है। संस्कृत-समवाय के द्वारा वेद व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला के अंतर्गत शुक्रवार 31 जुलाई, 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय- “कौटिल्य की प्रशासन व्यवस्था” निर्धारित किया गया था। वक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, संकाय प्रमुख, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली आमंत्रित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार है। उस ज्ञान विज्ञान को अपने बच्चों से परिचय करवाने के लिए हमने यह वेद व्याख्यान मञ्जरी व्याख्यानमाला को शुरू किया है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने मुख्यवक्ता का परिचय कराते हुए विषय प्रवर्तन किया।

मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने व्याख्यानमाला के गौरवशाली परम्परा के अनुरूप बहुत ही सहज सरल ढंग से छात्रों को ध्यान में रखते हुए अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। उन्होंने कहा- व्यवस्थाओं का विश्वकोश है कौटिल्य का अर्थशास्त्र।

इससे पहले पीजीडीएवी कॉलेज की उप-प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा ने आशीर्वाचन दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि मैं उप प्राचार्या के रूप में पहली बार भाग ले रही हूँ। उन्होंने एक श्लोक के माध्यम से समझाते हुए कहा कि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है, राजा यदि अत्याचारी हो, पापी हो तो प्रजा भी उसका अनुकरण करती है, उसी तरह राजा के धार्मिक होने पर प्रजा भी धार्मिक होती है। वेबिनार का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने किया।

कोरोना महामारी के कारण इस सत्र में नए छात्रों का प्रवेश पूर्ण रूप से ऑनलाइन माध्यम द्वारा 12 अक्टूबर, 2020 से 31 दिसम्बर, 2020 तक हुआ। इसी बीच 18 नवम्बर, 2020 से नए छात्रों की कक्षाएं भी शुरू हो गईं। इस सत्र में संस्कृत ऑनर्स में कुल 40 और बी. ए. प्रोग्राम में कुल 18 छात्रों ने प्रवेश लिया। नए छात्रों के प्रवेश से संबंधित सभी कार्यों को



विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा और रोहित कुमार ने व्यवस्थित रूप से सम्पन्न किया।

27 फरवरी, 2021 को गूगल मीट पर वेद-व्याख्यान मञ्जरी के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं कम्प्यूटर के विद्वान डॉ. सुभाष चंद्र का बहुत ही महत्वपूर्ण व्याख्यान- “संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग” विषय पर सम्पन्न हुआ। इस वेबिनार का प्रारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया, जिसको तृतीय वर्ष की छात्रा अर्चना ने डिजिटल रूप से किया। तदुपरांत महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा का संबोधन हुआ। डॉ. शर्मा ने वेबिनार के सुन्दर संयोजन और संचालन की प्रशंसा करते हुए कहा कि नासा में बहुत पहले से संस्कृत पर शोध कार्य हो रहा है। जिसमें सभी रिसर्चर ने कहा है कि संस्कृत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने अपना स्वागत भाषण और विद्वान वक्ता का परिचय दिया।

तदुपरांत डॉ. सुभाष चन्द्र ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ करते हुए कहा- हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत थी, सभी संस्कृत में वार्तालाप भी करते थे। युद्ध कला, चिकित्सा शास्त्र, राजनीतिक शास्त्र की सारी चीजें संस्कृत भाषा में डॉक्यूमेंटेड हैं। कार्यक्रम के अन्त में संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तत्पश्चात प्रथम वर्ष के नवागंतुक छात्रों का स्वागत कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। जिसमें प्रथम वर्ष के छात्रों से प्रश्न मंच के द्वारा संस्कृत साहित्य से संबंधित प्रश्न पूछे गए। इस कार्यक्रम में संस्कृत विभाग के सभी प्राध्यापक और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। डॉ. दिलीप कुमार झा जी ने अपने वक्तव्य में सभी छात्रों को शुभकामनाएं दी एवं नवागंतुक छात्रों का स्वागत किया और डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा जी ने सभी छात्रों को सफलता के मार्ग पर चलने और भावी जीवन के लिए शुभकामनाएं दी। अन्त में राजकुमार को मिस्टर फ्रेशर और शिवानी साहू को मिस फ्रेशर चुना गया।

## संस्कृत विभाग वेबिनार रिपोर्ट

**कौटिल्य का अर्थशास्त्र व्यवस्थाओं का विश्वकोश है**

**- प्रो. संतोष कुमार शुक्ल**

पीजीडीएवी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की अकादमिक समिति "संस्कृत समवाय" के द्वारा वेद व्याख्यान मंजरी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत शुक्रवार 31 जुलाई, 2020 को एक वेबिनार का आयोजन किया गया। जिसका विषय— "कौटिल्य की प्रशासन व्यवस्था" निर्धारित किया गया था। मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, संकाय प्रमुख, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली आमंत्रित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में कॉलेज के प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार है। उस ज्ञान विज्ञान को अपने बच्चों से परिचय करवाने के लिए हमने यह वेद व्याख्यान मंजरी व्याख्यानमाला को शुरू किया था। हमारा कॉलेज स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों को लेकर चलता है। वेद का कोई साम्य नहीं है, संस्कृत साहित्य की कोई तुलना नहीं है। काफी सारी चींजे हिंदी में अनुदित हैं, जो अंग्रेजी में पढ़ना चाहते हैं उनके लिए भी सुविधा है, संस्कृत में तो है ही। बच्चों को प्रेरित करते हुए डॉ. अग्रवाल ने कहा कि पुस्तकालय में जाकर सभी बच्चों को कौटिल्य के अर्थशास्त्र को देखना और पढ़ना चाहिए।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने वक्ता का परिचय कराते हुए विषय प्रवर्तन किया। डॉ. दिलीप कुमार झा ने कहा कि मीमांसा और धर्मशास्त्र के निष्पात विद्वान प्रो. संतोष कुमार शुक्ल जी को इस रोचक विषय पर हमने आज विशेष व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया है। संस्कृत साहित्य में कुछ ऐसे साहित्य हैं, जो सार्वकालिक हैं। जैसे कालिदास, उसी तरह कौटिल्य का अर्थशास्त्र मल्टीडिसिप्लिनरी पुस्तक है। जिसमें तत्कालीन समाज की आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक इत्यादि पहलुओं की जानकारी मिलती है।

उनके सिद्धान्त आज भी प्रांसगिक है। डॉ. झा ने आगे कहा कि बहुत लम्बा कालखंड गुलामी का रहा जिसमें बहुत सारी पाण्डुलिपियां नष्ट हो गईं। इसी क्रम में उन्होंने यह भी कहा कि पं. शामशास्त्री ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अंग्रेजी में 1905 ई. में तथा गणपति शास्त्री ने संस्कृत में प्रकाशित किया। इस प्राचीन ग्रंथ में आधुनिक सोच की तरह फेडरल व्यवस्था थी, जिसमें मंत्रिपरिषद, ग्राम पंचायत इत्यादि हैं। प्रशासनिक व्यवस्था लोककल्याण के लिए थी वसुधैव कुटुम्बकम् वाली।

इस वेबिनार का विधिवत शुरुआत संस्कृत की समृद्ध परंपरा मंगलाचरण से हुई। वैदिक मंगलाचरण संस्कृत ऑनर्स द्वितीय वर्ष की छात्रा आकांक्षा ने किया, वहीं लौकिक मंगलाचरण द्वितीय वर्ष की ही छात्रा अर्चना ने किया।

**पी. जी. डी. ए. वी. महाविद्यालय**  
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

**वेद-व्याख्यान-मञ्जरी**

संस्कृत विभाग की "संस्कृत-समवाय"  
समिति के द्वारा आयोजित वेबिनार

**विषय :- कौटिल्य की प्रशासन व्यवस्था**

दिनांक- 31 जुलाई 2020 (शुक्रवार), समय- 11:30 बजे,  
माध्यम- Google meet

<b>स्वागत वक्ता</b>	<b>मुख्य वक्ता</b>	<b>आशीर्वाचन</b>
डॉ. मुकेश अग्रवाल प्राचार्य पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज	डॉ. संतोष कुमार शुक्ल संकाय प्रमुख, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान के. एन. यू., नई दिल्ली	डॉ. कृष्णा शर्मा उप-प्राचार्या पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज

Google meet Link-  
<http://meet.google.com/szr-kgdi-hhm>

निवेदन -  
संस्कृत विभाग  
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज



मुख्यवक्ता के रूप में प्रो. संतोष कुमार शुक्ल ने व्याख्यानमाला के गौरवशाली परम्परा के अनुरूप बहुत ही सरल ढंग से छात्रों को ध्यान में रखते हुए अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कौटिल्य को याद करना इसलिए जरूरी है कि वे दुनिया के महान विचारक एवं चिन्तक थे, वे राष्ट्र निर्माता थे। उनके मन में पीड़ा थी, वो राष्ट्र को अखंड, अपराजित बनाना चाहते थे। एक आचार्य के रूप में शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र में परिवर्तन की धारा बनाई। कौटिल्य की शिक्षा तक्षशिला में हुई, जो इस समय भारत में नहीं है। वे आजीवन ब्रह्मचारी रहें। विद्यार्थी तैयार करते रहे। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित किया। ऐसा ग्रंथ दिया जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। कौटिल्य जिन्हें विष्णुगुप्त तथा चाणक्य के नाम से भी हम जानते हैं। शासन व्यवस्था की हर बात कौटिल्य अर्थशास्त्र में है। उसमें सूत्ररूप में बातें कहीं गई हैं। व्यवस्थाओं का विश्वकोश है कौटिल्य का अर्थशास्त्र। कौटिल्य ने राजाओं के शासन विधि का निर्माण किया, जो राजा बनना चाहते हैं या राज्य शासन में जाना चाहते हैं, उन्हें यह ग्रंथ पढ़ना चाहिए। यह ग्रंथ बहुत बड़ा हो सकता है लेकिन संक्षेप में लिखा है, कम शब्दों में अधिक बातें। उसके बाद प्रो. शुक्ल ने राजा के गुणों को बताते हुए कहा कि राजा को खुद विनीत होना चाहिए। विद्या युक्त होना चाहिए। विद्या केवल किताब पढ़ने से नहीं आती है। वह अधीति (अध्ययन), बोध, जीवन में आचरण से आती है तभी हमें इसके उपदेश के प्रचार का अधिकार मिलना चाहिए। दूसरों को उपदेश तो हर कोई देता है पर कोई अपने पर लागू नहीं करना चाहता। प्रजा के हित में ही राज्य का हित है। राजा न्याय करें, न्याय ऐसा हो कि जिसने अपराध किया है उसे दंड मिले, जिसने अपराध नहीं किया है उसे दंड नहीं मिले। क्योंकि अपराधी को दंड नहीं मिलता तो प्रजा खुश नहीं रहती है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजा के बारे में विस्तार से कहा गया है।

प्रो. संतोष शुक्ल ने अपने संबोधन के अगले भाग में कहा कि अर्थशास्त्र शासन-प्रशासन के लिए है। राजा और राजनीति के लिए यह टेक्स्टबुक की तरह है। फिर उन्होंने अर्थशास्त्र के कलेवर को बताते हुए कहा कि यह बहुत व्यापक ग्रंथ है, जिसमें राजनीति, अर्थ-वित्तनीति, विदेशनीति, सामान्य लोक प्रशासन से लेकर मिलिट्री साइंस तक अनेक विषय हैं। यह 15 अधिकरण और 150

अध्यायों में बंटा हुआ है। पहला अधिकरण विनयाधिकरण है जिसमें नियुक्तियों पर चर्चा है। राजा के बाद आमात्य मंत्री पुरोहित की नियुक्ति। गुप्त उपायों से गुप्तचरों की नियुक्ति का वर्णन है। इंटेलिजेंस पर जोर दिया गया है, क्योंकि पूरा सिस्टम उसी पर आधारित होता है। राजदूतों की नियुक्तियों से लेकर आमात्य के कुल 30 विभाग उसमें बताया गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में व्यक्ति का जीवन शीशे की तरह साफ था, चार प्रकार से एक व्यक्ति की परीक्षा होती थी— धर्मापधा, अर्थापधा, कामोपधा, और भयोपधा। प्रो. शुक्ल ने दो उदाहरण देकर बताया कि शासन व्यवस्था में रहने वाले लोग स्वाभाविक रूप से भ्रष्टाचार कर सकते हैं, जैसे जिह्वा पर मधु और विष रखें। क्या यह सोच सकते हैं कि जीभ उसका स्वाद न लें, यह हो नहीं सकता। इसी तरह संस्था अथवा प्रशासन में लगे लोग जरूर भ्रष्टाचार करेंगे। उन्होंने दूसरा उदाहरण यह दिया कि जिस प्रकार मछली पानी में चलती है और चलते-चलते कब पानी पी लेती है पता नहीं चलता। उसी तरह शासन व्यवस्था में शामिल लोग भ्रष्टाचार करते हैं। इसलिए उस पर निगरानी जरूरी है। इसी तरह तीक्ष्ण दण्ड, मृदु दण्ड इत्यादि दण्ड व्यवस्था को भी उन्होंने समझाया। प्रो. शुक्ल ने व्याख्यान के अंतिम भाग में कहा कि अर्थशास्त्र के सप्तांग सिद्धांत में राजा विधि निर्माता नहीं है बल्कि उसका पहला भाग है। राजत्व भी एक व्यक्ति से नहीं चलता है, जो 30 विभाग बनाये गए हैं बिना उसके सहयोग के नहीं चलता। इस तरह समग्रता से कौटिल्य के कर व्यवस्था सहित सभी प्रशासन व्यवस्थाओं को प्रो. शुक्ल ने समझाया।

इससे पहले पीजीडीएवी कॉलेज की उप प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा ने आशीर्वचन दिया, जिसमें उन्होंने कहा कि मैं उप प्राचार्या के रूप में पहली बार भाग ले रही हूँ। वैसे वेद व्याख्यान मंजरी में हमेशा रही हूँ। जब दिलीप जी ने मुझे यह विषय बताया तो हमने भी पढ़ा। उन्होंने एक श्लोक—

**राज्ञ धर्मिणी धर्मिष्ठाः पापे पापा समे समाः।  
राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजा॥**

को समझाते हुए कहा कि जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है, राजा यदि अत्याचारी हो, पापी हो तो प्रजा भी उसका अनुकरण करती है, उसी तरह राजा के धार्मिक होने पर प्रजा धार्मिक। उन्होंने अपने संबोधन के अंत में



ऑनलाइन शिक्षा की खामियों का उल्लेख किया, जिसमें विद्यार्थी सिर्फ सुनते हैं, जब सामने में होते हैं, तब बच्चे शिक्षक से आचरण भी सीखते हैं।

वेबिनार का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने किया। उन्होंने वेद व्याख्यान मंजरी व्याख्यानमाला के शुभारंभ करने वाले प्राचार्य डॉ. मुकेश अग्रवाल को धन्यवाद देते हुए कहा कि उनके प्रयासों से कॉलेज में संस्कृत से इतर जो बच्चे हैं, उन सबको भी संस्कृत के ज्ञान-विज्ञान से अवगत कराने के लिए यह व्याख्यानमाला प्रारंभ किया, तथा हमेशा उत्साहवर्धन करते रहते हैं। उनके कारण ही यह व्याख्यानमाला हो रही है। उनका आभार। उसी तरह प्रशासनिक रूप से उपप्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा पहली बार भाग ले रही हैं, लेकिन वेद व्याख्यान मंजरी में मंच संचालन से लेकर तमाम व्यवस्था तक वह करती रही हैं, उनका भी धन्यवाद। प्रो. संतोष

कुमार शुक्ल ने सहज ढंग से बच्चों को अर्थशास्त्र के बारे में बताया। विष्णुगुप्त, चाणक्य, कौटिल्य, को हमारे बच्चे विशाखदत्त के मुद्राराक्षस नाटक के माध्यम से पढते रहें हैं, आज उनका और ज्ञानसंवर्धन हुआ है। काबिलेगौर है कि इस वेबिनार में विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के संस्कृत प्रेमी विद्वानों ने भी भाग लिया।

## संस्कृत के ज्ञान परंपरा को सभी तक पहुंचाने के लिए नवाचार की जरूरत है

- डॉ. सुभाष चन्द्र

“संस्कृत-समवाय” के द्वारा 27 फरवरी 2021 को गूगल मीट पर वेद-व्याख्यान मंजरी के अन्तर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत एवं कम्प्यूटर के विद्वान डॉ. सुभाषचंद्र का बहुत ही महत्वपूर्ण व्याख्यान- “संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग” विषय पर सम्पन्न हुआ। इस बेबिनार का प्रारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया, जिसको तृतीय वर्ष की छात्रा अर्चना ने डिजिटल रूप से किया। तृतीय वर्ष के छात्र सौरभ ने वैदिक मंगलाचरण किया। विकास ने लघुफिल्म के माध्यम से पीजीडीएवी कॉलेज की गौरवशाली अतीत और संस्कृत विभाग की परंपराओं को बताया। बेबिनार का संचालन आकांक्षा पाठक ने किया। तदुपरांत महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा का संबोधन हुआ। डॉ. शर्मा ने बेबिनार के सुन्दर संयोजन और संचालन की प्रशंसा करते हुए कहा कि मैं वेद व्याख्यान मंजरी के अंतर्गत आयोजित व्याख्यानों में प्रारंभ से जुड़ी रही हूँ, परन्तु इतना सुन्दर संचालन और इतनी बड़ी संख्या में छात्रों की उपस्थिति पहले कभी नहीं रही। उन्होंने कहा कि नासा में

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय  
दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्कृत विभाग  
"संस्कृत समवाय" द्वारा आयोजित वेबिनार  
"वेद-व्याख्यान-मंजरी"

विषय- संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग  
Topic - Computational Application Of Sanskrit.

मुख्य वक्ता- डॉ. सुभाष चन्द्र (असिस्टेंट प्रोफेसर),  
संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक - 27 फरवरी 2021  
समय - 11:00 (प्रातः)

स्थान-गूगल मीट  
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक -  
संस्कृत विभाग

प्राचार्या  
डॉ. कृष्णा शर्मा



बहुत पहले से संस्कृत पर शोध कार्य हो रहा है। जिसमें सभी रिसर्चर ने कहा है कि संस्कृत कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है। प्राचार्या महोदया ने आगे कहा कि भारत में कुछ समय पहले तक संस्कृत को लेकर जो भी स्थिति रही हो लेकिन इस समय संस्कृत को जो सम्मान मिल रहा है वह गर्व का विषय है। धीरे धीरे संस्कृत को लेकर समाज में भी बदलाव आ रहे हैं।

इस अवसर पर संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिलीप कुमार झा ने अपना स्वागत भाषण और विद्वान वक्ता का परिचय दिया। गौरतलब है कि पीजीडीएवी महाविद्यालय में प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए आयोजित होने वाला नवागंतुक स्वागत समारोह भी कोरोना काल के कारण इसी विशिष्ट व्याख्यान के साथ ही किया गया था। वैसे कॉलेज की परम्परा भी इसी तरह की रही है। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए डॉ. झा ने प्रथम वर्ष के छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि आज का विषय नया है और इस महत्वपूर्ण विषय पर पीजीडीएवी कॉलेज डॉ. सुभाष चन्द्र जी को वक्ता के रूप में पाकर धन्य है। डॉ. दिलीप झा ने आगे कहा कि डॉ. सुभाषचंद्र जी दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत और कम्प्यूटर को लेकर एक नई परम्परा को शुरू करने वाले आचार्य हैं।

तदुपरांत डॉ. सुभाष चन्द्र ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ करते हुए कहा कि यह विषय नया है, और छात्र भी संस्कृत भाषा के हैं इसलिए मैं संस्कृत का संगणकीय अनुप्रयोग पर बात करने से पहले कुछ बातों पर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ कि यह विषय क्यों जरूरी है। हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत थी, सभी संस्कृत में वार्तालाप भी करते थे। आजकल विदेशों में संस्कृत की स्थिति अच्छी है। प्राचीन काल में ज्ञान विज्ञान की भाषा संस्कृत थी। युद्ध कला, चिकित्सा शास्त्र राजनीतिक शास्त्र सारी चीजें संस्कृत भाषा में डॉक्यूमेंटेड है। परन्तु आज मूल संस्कृत टेक्स्ट नहीं पढ़ते, अनुवाद पढ़ते पढ़ाते हैं। डॉ. सुभाष ने उदाहरण देकर बताया कि कोई आयुर्वेद का चिकित्सक भस्म का अंग्रेजी अनुवाद आयरन डस्ट का प्रयोग करके इलाज करेगा तो वह बेहतर नहीं कर पाएगा। जितना भस्म को पढ़ कर करेगा। आयुर्वेद में भस्म बनाने की एक खास विधि है। संस्कृत सभ्यता एवं संस्कृति से जुड़ी हुई है। कई सारी कमियां वेदों के समय में थी इसलिए वेदों को समझने के लिए वेदांग की रचना हुई। छन्द, ज्योतिष,



निरुक्त व्याकरण आदि। अष्टाध्यायी जैसा ग्रंथ लिखा गया, तब भी बात नहीं बनी तो प्रक्रिया ग्रंथ लिखा गया। भाष्य लिखे गए। धीरे धीरे सिद्धांत कौमुदी और लघुसिद्धांत कौमुदी तक आये। आज स्थिति यह है कि लघुसिद्धांत में भी कुछ चिन्हित सूत्र ही पढाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समय के अनुरूप अपनी ज्ञान परम्परा को लोगों तक पहुंचने के लिए आपको आज की तकनीक में ही बातें करनी होंगी। समय के साथ नवाचार (इनोवेशन) की जरूरत है। वक्ता ने अपने लम्बे व्याख्यान में यह कहा कि भारत में जितनी भाषाएं हैं उनमें से सिर्फ 10 भाषाएं स्क्रिप्ट में लिखी जाती है। भाषा के रूप में संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है यह किसी राज्य की भाषा नहीं है, अभी हाल ही में उत्तराखंड में बनाई गई है। न के बराबर बोली जाती है। फिर भी यह भाषा शास्त्रीय परम्परा की भाषा है। किसी प्रदेश और देश की भाषा नहीं है फिर भी सबकी भाषा है। संस्कृत परिष्कृत और नियमबद्ध भाषा है। इसके बाद मुख्य विषय की चर्चा करते हुए डॉ. सुभाष चन्द्र ने कहा

कि संगणकीय भाषा विज्ञान क्या है? उसके बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि संगणकीय भाषा विज्ञान प्राकृतिक भाषाओं का कम्प्यूटर के सांख्यिकीय या नियम आधारित मॉडलिंग से सम्बंधित एक अंतर्विषयक (भाषा विज्ञान एवं कम्प्यूटर) क्षेत्र है व मानवीय भाषाओं या प्राकृतिक भाषाओं का कम्प्यूटर के द्वारा विश्लेषण करना ही संगणकीय भाषा विज्ञान है।

सर्वप्रथम 1950 के दशक में अमेरिका द्वारा पाठ के स्वतः अनुवाद के लिए शुरु किया गया। भारत में इसका प्रारंभ आई. आई. टी. कानपुर के द्वारा 1980 के आसपास किया गया। धीरे धीरे धीरे इसका विकास हुआ और लगभग सभी आई. आई. टी., सी. डेक. सी., आई. आई. एल. मैसूर तथा कुछ विश्वविद्यालयों में अध्ययन एवं अध्यापन हुआ। सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने 1991 में भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी का विकास (TDIL) किया। इन सबकी ऐतिहासिक यात्रा चर्चा करने के बाद पाणिनीय सिस्टम के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पाणिनि सिस्टम की विशेषता यह है कि पाणिनीय सिस्टम में स्वनिम अवयव दो प्रकार के हैं— 1. स्वनिम (Phonetic Component) और 2. प्रत्याहार, आदिरन्त्येन सहेता। स्वनिम में 14 शिवसूत्र है। इसमें नियम डेटाबेस के बारे में बताया है। डेटाबेस दो प्रकार के हैं—1. धातुपाठ व 2. गणपाठ। डॉ. साहब ने आगे कहा कि आज प्रोग्रामिंग भाषाओं में भी इन सभी बातों का ही अनुकरण किया जाता है। DRY- (DO N'T Repeat Yourself) अनुवृत्ति। अर्धमात्रा लाघवेन रूप में स्थापित है। पाणिनी ने बहुत सारे तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया है। पाणिनि के सूत्रों के प्रकार जो पहला संज्ञा है जो Function को Define करता है। दूसरी परिभाषा, तीसरी— विधि, चौथी नियम और पांचवी अतिदेश और छठा अधिकार। इसके अतिरिक्त सूत्रों के अन्य दो प्रकार के विभाजन भी है। उत्सर्ग और



अपवाद। इसतरह डॉ. सुभाष ने पाणिनि द्वारा टेक्नोलॉजी का भी जिक्र किया। 2000 धातुएं हैं उन्होंने एक धातवः करके डेटाबेस तैयार किया, उनको जरूरत होने पर कॉल भी कर लिया। इसतरह उन्होंने इकोयणचि सूत्र के द्वारा सिद्ध भी किया। उसके अतिरिक्त मशीन अनुवाद जैसे तमाम विषयों पर बहुत ही लम्बा और बच्चों की दृष्टि से उपयोगी व्याख्यान दिया।

अन्त में संस्कृत विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. गिरिधर गोपाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने सबसे पहले माघ महोत्सव और संत रविदास जयंती की बधाई देने के बाद वसन्तोत्सव में डॉ. सुभाष चन्द्र जैसे गंभीर विद्वान को सुनने का पुण्य अवसर देने के लिए कॉलेज और संस्कृत विभागाध्यक्ष का आभार व्यक्त किया। फिर संस्कृत समवाय की गौरवशाली परम्परा और वेद व्याख्यान मंजरी का इतिहास भी बच्चों को बताया। फिर कॉलेज की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा जी द्वारा वेद व्याख्यान मंजरी के शुरु करने तथा उसके हर कार्यक्रम में उपस्थित रहने के लिए भी धन्यवाद दिया। तत्पश्चात कार्यक्रम में शामिल सभी श्रोताओं का धन्यवाद किया। इस अवसर पर विभाग के सभी प्राध्यापक और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

## हिंदी विभाग

2 मार्च 2021 को पी.जी.डी.ए.वी.कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) द्वारा 'साहित्य, समाज और सिनेमा' का अंतर्संबंध विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा ने किया तथा इसकी प्रस्तावना हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ. सुषमा चौधरी ने प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के

रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर कुमुद शर्मा और निर्माता-निर्देशक प्रकाश भारद्वाज ने 'साहित्य, समाज और सिनेमा' के अंतर्संबंधों पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. कपिलदेव निषाद और डॉ. बन्ना राम मीना ने किया।

**पी.जी.डी.ए.वी.कॉलेज**  
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली द्वारा आयोजित  
**वेबिनार**  
**साहित्य, समाज और सिनेमा**

दिनांक : 2 मार्च, 2021 मंगलवार, प्रातः 11:00 बजे से

**कार्यक्रम की रूपरेखा**

**स्वागत भाषण** **प्रास्ताविक** **वक्तागण**

**डॉ. कृष्णा शर्मा**  
प्राचार्या (कार्यवाहक)  
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज  
दिल्ली विश्वविद्यालय  
दिल्ली

**डॉ. सुषमा चौधरी**  
प्रभारी, हिन्दी विभाग  
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज  
दिल्ली विश्वविद्यालय  
दिल्ली

**प्रो. कुमुद शर्मा**  
हिन्दी विभाग,  
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

**प्रकाश भारद्वाज**  
निर्माता निर्देशक

**संयोजक:**

**डॉ. कपिलदेव निषाद** **डॉ. बन्ना राम मीना**

स्थान: गूगल मीट का लिंक प्रातः 10:45 पर सबको वितरित कर दिया जाएगा।  
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के चिंतन-हिन्दी साहित्य सभा द्वारा 10 मार्च 2021 को 'समानता और समरसता के कवि सतगुरु रविदास' विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार व्याख्यान के मुख्य वक्ता रैदास साहित्य के प्रसिद्ध चिंतक, समीक्षक और अनुसंधानकर्ता डॉ. मनोज दहिया थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन चिन्तन समिति के संयोजक डॉ. मनोज कुमार कैन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रभारी डॉ. सुषमा चौधरी ने किया। वेबिनार का संचालन छात्रा शशि ने किया। वेबिनार में कई अन्य विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, विद्यार्थी, सामाजिक कार्यकर्ता और दूसरे गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए। वेबिनार में लगभग 200 श्रोता उपस्थित थे।

**चिंतन**  
हिन्दी साहित्य सभा  
के संस्थापक डॉ. मनोज कुमार कैन  
दिल्ली विश्वविद्यालय प्रातः 11:00 बजे से

**समानता एवं समरसता के कवि सतगुरु रविदास**  
दिनांक : 10 मार्च 2021 मंगलवार, प्रातः 11:00 बजे से

**स्वागत भाषण** **प्रास्ताविक** **संयोजक** **प्रमुख वक्ता**

**डॉ. कृष्णा शर्मा**  
प्राचार्या (कार्यवाहक)  
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज  
दिल्ली विश्वविद्यालय  
दिल्ली

**डॉ. सुषमा चौधरी**  
प्रभारी, हिन्दी विभाग  
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज  
दिल्ली विश्वविद्यालय  
दिल्ली

**डॉ. मनोज कुमार कैन**  
संयोजक  
दिल्ली विश्वविद्यालय  
दिल्ली

स्थान: गूगल मीट का लिंक प्रातः 10:45 पर सबको वितरित कर दिया जाएगा।  
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।



आई. क्यू.ए. सी. और हिंदी विभाग पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 'मीडिया, तकनीकी और साहित्य के अंतर्संबंधों की पड़ताल' विषय पर 10 दिवसीय सर्टिफिकेट ओरिएंटेड कोर्स कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला 10 मार्च 2021 से 20 मार्च 2021 तक अपराह्न 2.30 बजे से 5.30 बजे तक दो सत्रों में चली। इस कार्यशाला की संरक्षक महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कृष्णा शर्मा, कार्यक्रम निदेशक आई. क्यू.ए. सी. के निदेशक श्री के.के. श्रीवास्तव और संयोजक हिंदी विभाग की प्रभारी डॉ. सुषमा चौधरी थी। इस कार्यशाला में 17 वक्ताओं डॉ. वीणा, डॉ. अवनिजेश अवस्थी, डॉ. सुषमा चौधरी, डॉ. कपिल प्रसाद निषाद, डॉ. मनोज कुमार कैन, डॉ. अरुण कुमार मिश्र, डॉ. बन्ना राम

मीणा, डॉ. परमानंद शर्मा, डॉ. आलोक दीपक उपाध्याय, डॉ. संदीप कुमार रंजन, डॉ. अवंतिका सिंह, श्री ऋषिकेश, श्री नरेंद्र, डॉ. विशाल चौहान, डॉ. रुद्रेश नारायण मिश्र, डॉ. प्रकाश उग्रेती और श्री प्रवीण डोगरा ने 'मीडिया, तकनीकी और साहित्य के अंतर्संबंधों की पड़ताल' विषय से संबंधित अलग-अलग विषयों पर अपने महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए। प्रभारी व संयोजक डॉ. सुषमा चौधरी ने पूरे कार्यक्रम की समरी प्रस्तुत की। तत्पश्चात महाविद्यालय की प्राचार्या व कार्यक्रम संरक्षक डॉ. कृष्णा शर्मा ने दस दिनों तक चले इस कार्यक्रम की सफलता पर हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को बधाई दी। अंत में हिंदी विभाग की सबसे वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ. वीणा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



## पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय  
नेहरू नगर, दिल्ली- 110065



### आयोजक आई.क्यू.ए.सी. व हिंदी विभाग

विषय- मीडिया, तकनीक और साहित्य के अंतर्संबंधों की पड़ताल

संरक्षक



डॉ. कृष्णा शर्मा  
(प्राचार्या)  
पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

कार्यक्रम निदेशक



श्री के. के. श्रीवास्तव  
(निदेशक, आई.क्यू.ए.सी.)  
पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

संयोजक



डॉ. सुषमा चौधरी  
(प्रभारी)  
पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

अवधि- 10 मार्च - 20 मार्च 2021  
समय- अपराह्न 02:30 - 05:30 बजे तक  
माध्यम- जूम ऐप

पंजीकरण लिंक-

[https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQL5d41PWAXmQgh\\_UA7tL225bqf45zMBH15leY9WrBlrqSrv8Zw/viewform](https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQL5d41PWAXmQgh_UA7tL225bqf45zMBH15leY9WrBlrqSrv8Zw/viewform)



## ECLECTICA - THE ENGLISH DEPARTMENT LITERARY SOCIETY

Eclectica, the English literary society, P.G.D.A.V. College, nurtures students' to turn them into artists, thinkers, writers, and poets.

Due to Corona pandemic, first year admissions were delayed, but it did not stop us from cheering them warmly, virtually on **28 November 2020 on 80's Bollywood theme**. Our new set of first years are truly an enthusiastic batch, and we really admired their wonderful participation.

The highlight of the year was the launch of Eclectica's reading circle **The Wordpeckers**, an initiative by **Ms. Uma Gupta** and our student Joint Secretary, **Preeti Deepa Dash**. The circle seeks to create a platform full of opportunities and peer learning.

The books taken up for reading may be gauged from the collage below:

**On 26 October, 2020, Dr Nandini Sen, Bharati College** led the event and discussed **The Plague**, an existentialist classic, centred around the epidemic

of Spanish Flu, 1918-20. There was a debate on the philosophical nature of questions of meaning of life, death, religion, love, creativity and despair.

**A Room of One's Own by Virginia Woolf was taken up on 2 December 2020. Dr. Meenakshi Malhotra, Hansraj College**, brought an understanding of history of feminist movement and delineated how the current book shaped the issues of First Wave Feminism.

**Men Without Women by Haruki Murakami was listed for 23 January 2021**. These short stories by Murakami opened up underlying post-human anxieties from Japanese society. The discussion was solely taken up by the students who debated on various aspects of the book.

**Animal Farm by George Orwell was taken up on 13 February 2021**. Through this book our students engaged in an enduring commentary on questions of nature of state, power, politics, and human nature.

Many congratulations to the following readers





who shared their valuable insights along with the teachers: **Deepali Dhiman, Kartika Sah, Srijony Das, Divyanshi Goel, Srishti Garg, Karanjeet, Shaurya Dev, Preeti Deepa Dash, Hritika Lamba, Supriya Sharma.**

India has a long tradition of story-telling, we have epics like Ramayana and Mahabharata and keeping that in mind we decided to carry forward that zeal, we held **our first inter-collegiate story writing competition on 19 January 2021.** The topic was 'Life in a Pandemic' or 'Grace under Stress'. We were truly overwhelmed by the response from the students all over Delhi University. **Ms. Lallianpuui Ratle and Dr. Pritika Nehra** provided their valuable skillset to judge the competition.

On **4 March 2021, our Annual Poetry Recitation Competition titled 'Amore Poema',** organized by **Ms Mona Goel** was open to all departments and received a phenomenal response. The judges were **Ms. Jyoti A. Kathpalia** and **Dr. Mukesh Kumar Bairva.** Out of the fifteen entries, seven poems are published in this issue of Ankur. The winners of the event were: **Aadar Atreya** from BA Programme and **Deepali** from B.A. English Honours. The poems were formidable expressions tied together as a festoon of verses.

We have also initiated an **International Lecture Series in collaboration with IQAC.** The inaugural Lecture was held virtually on 23 April 2021, on the topic, '**Mapping the Victorian Age through Jane Eyre**' by **Prof Aruna Krishnamurthy, Department of English Studies, Fitchburg State University, Massachussets, USA.**

Eclectica, also, undertook a wonderful initiative of launching a **YouTube Channel** and airing a **poetry podcast.** It was undertaken by **Dr. Renu Kapoor** and **Ms. Nancy Khara** and was executed by **Vrinda Parwal**, IInd Year. A much-needed solace in Covid times!

Our core committee was formed on **28 September, 2020** with **Ms. Uma Gupta** and **Ms. Mona Goel** as **our convenor and co-convenor.**

We wish to share that Eclectica is alive on various social

media platforms such as Instagram, Facebook and LinkedIn. It boasts of a dynamic blog on WordPress publishing students' creative outputs.

We hope to continue to build on the strengths of tradition and innovative energy of our ever-inspiring faculty and batches of students.

### Office Bearers:

**TEAM ECLECTICA**  
Year 2020-21

 Ms. Uma Gupta (Convenor)	 Ms. Mona Goel (Co-Convenor)
 Srishti Garg (President)	 Deepali (Vice President)
 Vrinda Parwal (Secretary)	 Preeti Deepa Dash (Joint Secretary)
 Kartika (Treasurer)	 Divyanshi Goel (Technical Head)
 Srijony Das (Creative Head)	 Rowa Joshi (Students Coordinator)





## REPORT ON DEPARTMENT OF COMMERCE ACTIVITIES

The COVID-19 pandemic has disrupted life as we know it all over the world. However, the Department of Commerce, PGDAV College, has always believed that 'Learning Should Never Stop' even in difficult times. In this endeavour, the Department of Commerce, PGDAV College, has adopted innovative pedagogical approaches to content and knowledge delivery, by organizing several activities throughout the academic year for the wholesome development of its students as well as the benefit of its faculty members.

To begin with, the Department of Commerce under the able guidance of Dr. Rajni Jagota (Teacher-In-Charge), organized an insightful and enriching webinar on 'International Business' by Dr. Sumati Varma (Associate Professor, Sri Aurobindo College) on 17th May 2020 at 11.30 a.m. on a digital platform, which was well attended by commerce students as well as faculty members. It was a very learning and stimulating experience for all the attendees. Dr. Varma deliberated upon several current topics related to Globalization as well as providing a thorough overview of all the major issues in international business.

The Department of Commerce conducted another educational webinar for its students on 26th May 2020 from 5-6 p.m. on Google Meet. Ms. Anindita Goldar and Sakshi Verma, Assistant Professor, Dept. of Commerce, PGDAV College, took up a session on a relevant topic- "Covid 19 Pandemic: Assessing its Impact on International Business and Consumer Behaviour". Ms. Anindita showcased an extensive presentation on the impact of the COVID-19 pandemic on International business. Thereafter Ms. Sakshi Verma took over and discussed the impact of Covid-19 on Consumer Buying Behaviour. The webinar was attended by 150 participants including students and faculty of PGDAV College. Queries were taken up at the end of both sessions. Students were given a small quiz to assess the learning from the sessions. The webinar was useful for students as it provided them insights into Covid-19 and its impact on both sides- business as well as consumers.

The Department of Commerce further organized

a 2-day ICSSR sponsored National Conference on: 'Sustainable Development and Business: Managing Organizations of Tomorrow' in association with the Department of Commerce, University of Delhi concluded on 18th August 2020. Scheduled initially to be held in April, the conference had to be postponed due to the pandemic. The conference was chaired by Sh. K.K. Shrivastava and co-chaired by Dr. Shuchi Pahuja. Dr. Atul Kumar was convenor of the conference, while Ms. Monika Saini and Dr. Gurcharan Sachdeva were co-convenors.

We received an overwhelming response for the conference with 143 research papers from faculty, research scholars, and students from various universities and business schools of India. 94 participants registered for the conference. The students' session was to be held on 4th August 2020 keeping in mind the DU OBE examination near the conference date. In total, 17 students from different universities presented their research papers in two different technical sessions held on 4th August. 77 participants presented their research papers across six different technical sessions on 18th August 2020 in the faculty and research scholar category.

To augment its efforts to enrich the knowledge of students as well as faculty members, the Department of Commerce constituted 'Analytica', the Academic and Research Committee last year. Analytica, the Academic and Research Committee comprises of the following faculty members (year 2020-21): Dr. Anuradha Gupta, Dr. Rajni Jagota, Dr. Manoj Kumar Sinha, Dr. Akanksha Jain, Dr. Mussarrat Aarzo, Ms. Geetika Jaggi, Ms. Anindita Goldar, and Ms. Suchitra Mehta. Since its inception, Team Analytica has also actively hosted many enriching and enlightening webinar sessions.

In this regard, Team Analytica initially organized a webinar on "Novelty, Patent and Patent Trolls" on 7th August 2020 at 11 a.m. with Advocate Priggya Arora, Patent Specialist, and Founder of PA Legal on Google Meet. The event witnessed huge participation from faculty members from different colleges and



Team Analytica Members (Year 2020-21)

universities across India. The session was highly informative and appreciated by all the attendees.

Team Analytica hosted another webinar on the topic "Social Media Content Strategy" by Ms. Dola Halder, Brand Head-Doritos PepsiCo., India, on 9 January 2021, at 3 p.m. on Google Meet. It was a highly engaging and interactive session, where Ms. Halder talked in-depth regarding successful online marketing strategies adopted by various companies in India and abroad. The webinar attracted huge participation from faculty members and research scholars from various colleges and universities across India.

Furthermore, Team Analytica, organized a webinar on the 'Effects of Pandemic on Daily Life & Mental Well-Being' on 4th February 2021 (Thursday, 6.30 p.m.), on Zoom Platform for the benefit of the 1st year commerce students as well as the Department of Commerce faculty members. The resource person for the session was Ms. Himanshi Khanna who is presently a consultant visiting psychologist in our very own PGDAV College. Ms. Khanna elaborated on the topic by explaining the multiple social, economic, and personal impacts of the Pandemic on the life of students. She further pointed out the effects of stress and the importance of maintaining our mental health in these turbulent times. Lastly, she suggested some positive coping strategies which can be easily practiced by students for creating mental health reserve.

Team Analytica hosted another webinar on the theme 'Investing in Stock Markets' by Mr. Saurav Dutta,

Chief Manager - Private Banking Group, ICICI Bank, on 10 April 2021, at 2 p.m. on Google Meet. It was an elaborate webinar where Mr. Dutta deliberated on wide-ranging topics like the basics of stock markets, fundamental analysis, and technical analysis of stocks and trends using real-life examples. The session was highly appreciated by all the attendees.

The Department of Commerce and IQAC PGDAV College organized a short-term certificate course on 'Effective Communication Skills' from 12th April 2021 to 28th April 2021. 47 students enrolled for the course. The certificate course was completed in 30 hours, where students attended 15 online sessions of two hours each. The sessions were conducted through an online platform- Google meet.

The course was inaugurated by Professor Mala Sinha, Former Professor of Business Ethics and Communication, Faculty of Management Studies, Delhi University. She introduced students with basic communication vocabulary and barriers encountered in effective communication. The course was divided in different themes such as verbal communication, non-verbal communication, written communication, conflict resolution through communication, listening skills, presentation skills, visuals communication, intercultural communication, lessons for facing personal interviews and group discussion using social media sites effectively, and ethics and plagiarism in communication. Eminent Academics and Industry resource persons interacted with students. The participants were evaluated on the basis of quizzes, and certificates of participation were awarded to all the successful students

## सेवानिवृत्त कर्मचारी



श्री दर्शन कुमार

## COMMERCIUM: THE COMMERCE SOCIETY

Commercium- The Commerce Society of PGDAV College is one of the active and largest departmental society with more than 200 hardworking members, who have worked methodically throughout the year. The executive members elected for the session 2020-2021 are President: Yamini Singh, Vice President: Harsh Goel, Secretary: Samta Sudiksha & Akhil Sharma, Joint Secretary: Khushi Gupta, Sneh Lata & Shashank Gupta, Treasurer: Tina Kalra & Dhriti Goel and two Student Coordinators: Nomesha Bhola & Rachit Singhal. The Faculty team consists of Teacher in-charge: Dr. Rajni Jagota, Convenor: Dr. Shashi Nanda, Co-Convenor: Dr. Shamsher Singh & Ms. Shikha Menani, Members: Dr. Ritu Tanwar & Ms. Priyanka Khanna.

This year, the unexpected pandemic stood strong with uncertainty in the minds of most of us, but the dedicated team of the faculty and students denied shaking their enthusiasm in holding the events in a virtual mode. In the memory of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan, a successful teacher, a great scholar and the leader of our nation, Commercium initiated its very first virtual event on 5th September, 2020 by celebrating Teacher's Day at Google meet platform with the presence of all Commerce faculty members along with the Principal Dr. Mukesh Agarwal and Vice

Principal Dr. Krishna Sharma. The event comprised of various fun filled activities and ended by felicitating the teachers for their endless guidance and support.

The two new initiatives at the social media platform, namely, DID YOU KNOW- A smashing series of audio updates and COMMSTRUCK- The weekly Commerce newsletter; have been started this year. The weekly blog, FINANCIAL SCOOP, which is already at the social media handles of Commercium has been diligently continued by the team.

Further, Commercium conducted two Webinars at Google Meet platform for the students to enhance their knowledge and interpersonal skills. The first one was held on 11th September 2020, Topic: Bulls and Bears: All About Stock Markets, Resource Person: Harbinder Singh Sokhi, Manager, Investors' Protection Fund at Bombay Stock Exchange, who gave insights and in depth knowledge about the stock market. The second one was held on 5th October 2020, Topic: Art of Success: Cracking Civil Services Exam, Resource Person: IPS Ilma Afroz, Alumni of Oxford University and secured an All India Rank 217 in her first CSE attempt in 2017; she shared her experiences and some amazing tips with students to help them crack civil services exams.



A glimpse from the virtual Teacher's Day Celebration

Every year team Commercium holds its flagship events, viz., The Youth Conclave and Commquest in the months of October and March respectively. This year, the pandemic changed the whole scenario and motivated us to hold all our events online. Youth Conclave had to be replaced by our first paramount event: The Million Insights, which took place at the Instagram platform on every weekend of October at 7:00 p.m. that attempted to spread



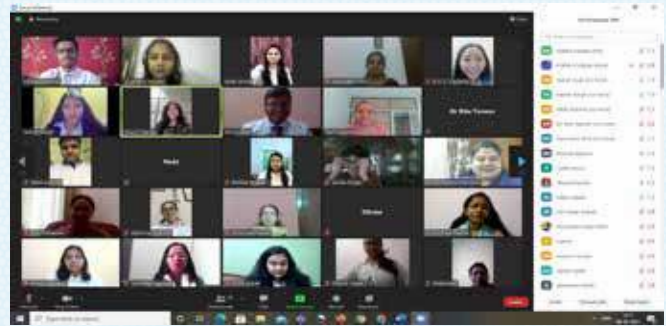
positivity amongst the youth and captivated to bridge the gap between aspirations and achievements. Renowned personalities from diverse fields were invited to share their success stories with our students. We took pride in inviting Kaustabh Chaturvedi, a content creator, Rashmi Chaddha and Prafful Garg, successful startup entrepreneurs, a writer and director at Bollywood, Hitesh Kewalya, a professional singer, Neelanjana Ray and Chef Pankaj Bhaduria, who shared their experiences, hurdles, triumphs and much more through live interactive sessions. The event proved itself to be a great success with an overall 1k+ audience witnessing the live sessions.

Another proud moment for Commercium has been to welcome the newly admitted freshers of 2020, by holding its virtual Orientation Ceremony on 23rd November, 2020 which was also aired live on the YouTube handle.

Last, but not the least, Commercium celebrated its flagship event, the Annual Commerce fest: Commquest'21, with the theme "Together towards tomorrow" on 6th March, 2021. This is the most awaited departmental fest across Delhi University; the team took pride in availing the opportunity of providing a platform to the students of various colleges and universities to participate in different events through Zoom and Google Meet platforms. The events were full of exposure to the corporate world with a twist of fun.

The fest was graced by the presence of the respected chief guest Namratta Ohri: the founder of CLOVER (Common Life Objectives Very Easily Reachable), a corporate trainer, therapist, healer and an orator at live TV shows with Delhi Doordarshan. In the inaugural ceremony, she talked about the corporate mantras to boost the morale of young minds and souls.

The one day online Fiesta consisted of seven events. There were 2 technical events; the entries for these events were received beforehand.



A glimpse from the Commquest'21

- Vision Camera Action The theme included: 3R (reduce, reuse and recycle), product marketing, Front line warriors and poverty.
- Art Twister The theme included: Be the change, Economical Innovation, Uniqueness of 21st Century and Support your Local Economy

A total of 5 LIVE events took place, simultaneously, at different googlemeet platforms. These were:

- Ad Mad - A game of catchy phrases, logos, taglines and brands to check some marketing skills.
- War Of Words - A game of deliberation and debate; the way you stir is the soul of the democracy.
- Quiz Fiesta - A place where a smart answer won't get anyone fired.
- Innoventure - A place to put your knowledge to test.
- Ace The Case - A game that prepares you to be a game changer.

Commercium graciously ended its Annual Fest by felicitating the winners of various events. We proved that "where there is a will, there is a way". Despite being stuck in a pandemic situation, Commercium as a team, managed to organize a very insightful and knowledgeable fest. Thereby, breaking the shackles of physical barriers and making everything possible with its thrilling annual virtual event, Commquest 2021, we stand by our motto #YES\_WE\_WILL!

Farewell for outgoing batch was held on 30th April, 2021 in virtual mode.

## THE EQUILIBRIUM- DEPARTMENT OF ECONOMICS



Equilibrium, the Economics Society of P.G.D.A.V. College organizes various academic and non-academic activities outside the classroom with a dual purpose of involving students with real life economic issues and provides them a platform for personality development.

On August 20, 2019 the Economics Society had organized a Fresher's Welcome in the old seminar room. The event was full of performances by first year and second year students. The function was a big success under of the guidance of Dr. Ashwani Mahajan, Dr. Varun Bhushan, Sh. Aniruddha Prasad and Sh. Ankush Garg.

On April 21 2020 The Department of Economics had organized a webinar on the topic The World Economic Order – Post Corona. Prof. Biswajit Dhar of Centre of Economic Studies and Planning JNU was the key speaker in the webinar. Prof. Dhar is a renowned author, economist and an expert on trade theories. The session discussed about the biggest economic disaster the world is facing currently and the ways to revive the economy. The webinar witnessed active participation of all the faculty members and the students of Economics Department.



On May 12, 2020 The Department of Economics had organized a webinar on Covid19: The Present Scenario and The Post-Covid Economy. Prof. Shamika Ravi, Professor in Indian School of Business Hyderabad, Former member of PM's Advisory Council and Senior Fellow in Brookings Institute was invited to speak on this topic. The session was attended by all faculty members and students of Economics Department. The session discussed various economic questions related to balancing economic and health concerns, ideal fiscal and monetary policies to tackle the economic slowdown and the sizes of the stimuli by the central and state governments.



## SANKHYIKI - DEPARTMENT OF STATISTICS

“Sankhyiki” the Statistics Society of the P.G.D.A.V. College has been actively involved in organising various extra-curricular academic events and activities in which the students participate with great zeal and enthusiasm thus making each such event a grand success.

Most notable of Sankhyiki’s activities is the departmental festival ‘SKEWSION’ held once in each academic session. During ‘SKEWSION’ the society arranges a talk by an eminent personality from statistics or some interdisciplinary field as well as from the industry along with events such as creative writing, quiz, statistical antakshri and other informal events.

Due to the unprecedented conditions caused by COVID-19 pandemic, the ‘SKEWSION’ was not organized this year. However, under the aegis of the society, 14th National Statistics Day was celebrated in the memory of Prof. P.C. Mahalanobis on June 29, 2020. On this occasion, a webinar on “Employment Scenario in India” was held and the esteemed speakers were Sh. D.P. Mondal, Ex. DG, NSSO, MoSPI and Sh. S. L.



Menaria, Add. DG, NSSO, MoSPI. The society organized another webinar on “Applications of Statistics: Some case studies” on February 08, 2021 and the eminent speakers for this webinar were Prof. Bimal Kr. Roy, Chairman, National Statistical Commission, Govt. of India, Shri A.K. Sadhu, Ex. Director General, NSSO, Govt. of India. The society also conducted a webinar on “Statistical Tools & Data Analysis” on March 09, 2021 and the guest speaker for this webinar was Prof. Anoop Chaturvedi, Former Head, Department of Statistics, University of Allahabad. All the sessions were very interesting and informative and appreciated by all the faculty members and students.



## DHAROHAR - DEPARTMENT OF HISTORY

This academic year was extraordinary in many ways. The pandemic has altered our sensibilities regarding community, life, and education too. It took a while for making sense of this new world order, but as tutors, we did not flinch. Probably as a teacher, we cannot give up. We all have shifted to the online mode of teaching to carry on the exchange of information during a pandemic. The department of history has strived its best to cater to the need of the students online. Online portals such as What's app, Zoom, Google Meet, Google Hang Out, Microsoft Teams were explored to facilitate the learning process. We did perform well. On the 1 February 2021, Dharohar - the History Society, P.G.D.A.V. College, organised a lecture by Prof PK Basant, Department of History and Culture, Jamia Millia Islamia, New Delhi, on – Why Study History? Prof Basant engaged with various dimensions of

historical and cultural enquiry and scope of research. The lecture was very well received among students and faculties alike. Dharohar also organised a panel discussion on 'Multicultural Nationalism' for marking an extended celebration of 75 years of independence on the 12th March 2021. The department of Political Science and History, P.G.D.A.V. college, has put up an exciting panel discussion. Dr AP Singh, Associate Prof., the department of political science, discussed the multicultural aspect of nationalism in India. On the other, Dr. C P Singh, the department of history, teased out the origin and theoretical bearing of nationalism and lastly, Dr. V Chauhan, the department of history, deliberated on linkages between early Indian cinema and nationalism from the 1910s to 1940s. Student participation and engagement in the discussion was indeed encouraging.

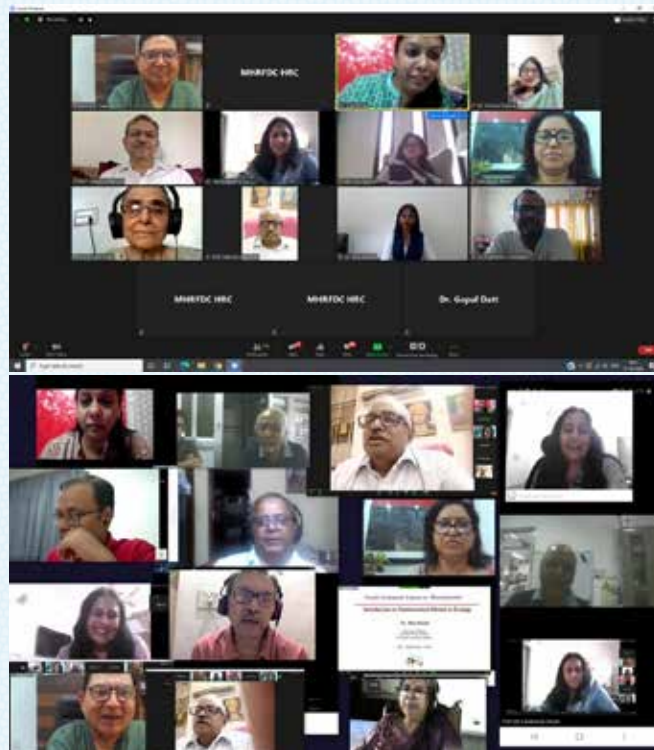




## DEPARTMENT OF MATHEMATICS

Although time and multiverse travelling has not been invented yet, we might be on the right path to better understand the dynamics of deadly diseases and even improve current treatments by relying on Biomathematics. With this as inspiration, Department of Mathematics, Teacher In-charge, Dr. Geeta Kalucha, P.G.D.A.V. College and Internal Quality Assurance Cell (IQAC), Director Mr. K.K. Srivastava, P.G.D.A.V. College organised **a two week (online) International FDP on BIOMATHEMATICS, from 15-28 October, 2020** in collaboration with Mahatma Hansraj Faculty Development Centre (MHRFDC) - A Centre of MoE under PMMMNMTT Scheme, Hansraj College, University of Delhi. With renowned resource persons namely Prof. Ajit Iqbal Singh, INSA Emeritus Scientist, Formely Professor and Head, Department of Mathematics, University of Delhi, South Campus; ,Dr. Peeyush Chandra, Prof. (Retd.), Department of Mathematics & Statistics, IIT Kanpur; Dr. Nitu Kumari, Associate Professor, School of Basic Sciences, IIT Mandi, H.P; Dr. Prashant K. Srivastava, Associate professor, Department of Mathematics, School of Basic Sciences, Indian Institute of Technology, Patna; Prof. (Dr.) K.R. Pardasani, Professor of Mathematics, Former Head, Department of Mathematics, Bioinformatics And Computer Applications, Maulana Azad National Institute of Technology, Bhopal; Prof. Subhendu Ghosh, Formerly Professor and Head, Department of Biophysics, University of Delhi, South Campus; Dr. Rajan Shrivastava, Senior Research Fellow, Department of Biophysics, University of Delhi, South Campus; Prof. Sankar K. Pal, National Science Chair, Emeritus Professor, Distinguished Scientist, Former Director Indian Statistical Institute, Center for Soft Computing Research, Kolkata; Prof. Sunita Gakkhar, Emeritus Fellow, Department of Mathematics, Indian Institute of Technology, Roorkee; Prof. James Murray, Emeritus Professor of Mathematical Biology, University of Oxford, Emeritus Boeing Professor of Applied Mathematics, University of Washington; Prof. Siddhartha Pratim Chakrabarty, Dept. of Mathematics,

IIT Guwahati and Prof (Dr). Sitabhra Sinha, Institute of Mathematical Sciences, C. I. T. Campus, Taramani, Chennai shared their resources with all the panellist and attendees. Prof. (Dr.) B.K. Dass, Prof. (Retd.), Department of Mathematics, University of Delhi, Prof. C.S. Lalitha, Head, Department of Mathematics, University of Delhi, Dr. J.K Krishnamurthy, Formerly Principal, P.G.D.A.V. College, Dr. Mukesh Aggarwal, (then) Principal, P.G.D.A.V. College and Dr. Krishna Sharma, Vice-Principal, P.G.D.A.V. College, graced the programme with their presence and guidance.



With a total of 92 participants all over the India and outside, the FDP and its learning outcomes such as hands on computer sessions using PYTHON 2.7, the theory of bifurcation and chaos, modelling molecular evolution, population growth, cell division and the ongoing disease COVID-19 etc. were appreciated by all.

An online orientation for the first- year students of B.Sc. (Hons.) Mathematics was also organised



on 7 December,2020 in which the students were made familiar with their course, faculty members of the department and its society namely, Anant Mathematics Society. Dr. Krishna Sharma, Principal, P.G.D.A.V. College welcomed and motivated the students with her inspiring words. All other faculty members also guided them for the course they have chosen and wished them luck and success for the years to come.



Interviews for the members of Anant Mathematics Society was conducted online and once it was finalised, the over enthusiastic seniors of second and third year organised a welcoming party for the students of first year on 25 January,2021.



An online mathematical fest 'Spectrum'21' was organised by Anant Mathematics Society on 5 and 6 of April, 2021. It included an Inaugural talk by Dr. Sitabhra Sinha, Institute of Mathematical Sciences, C. I. T. Campus, Taramani, Chennai on 'Going Viral! Epidemics and the Mathematical Modeler'. The programme also covered four other academic events namely 'Presentomania' which had presentations from students on various topics of mathematics, 'Cresmos' in which the students used various mathematical equations to draw various pictures of the real world

**Anant Mathematics Society**  
Department of Mathematics  
P.G.D.A.V. College  
(University of Delhi)

**SPECTRUM'21**  
Inaugural Talk  
on  
**GOING VIRAL!  
EPIDEMICS AND THE  
MATHEMATICAL MODELER**  
by  
**DR. SITABHRA SINHA**

**5th April 2021, Monday**  
**Time: 3:30 PM - 5:00 PM (IST)**  
**Venue: Google Meet**

Link will be shared at 3:00 PM on 5th April

**Dr. Krishna Sharma** (Principal)  
**Dr. Geeta Kalucha** (Teacher In-Charge)  
**Divyanshi** (President)

For any queries contact Divyanshi (9529079030) Aakash(9518837285)



using "Desmos graph plotter", 'King's Gambit', an online chess game and 'Infinity Macedons', a riddle based quiz competition. The department further plans for more academic programmes for the students.

We hope that in the upcoming year, the Department of Mathematics would flourish more and our students would come out with flying colors, hoping that a lot of opportunities would come in our way and we would work on them.

Dr. Geeta Kalucha  
Teacher-in-charge  
Department of Mathematics  
2020-21



## SAMVAAD - DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

As it is often said, when life doesn't get easier or more forgiving; we get stronger and more resilient. Samvaad, the Political Science society of P.G.D.A.V. College, too showed such strength and determination in the wake of the global pandemic. Despite the fact that the college was not physically functioning, Samvaad went ahead with conducting a multitude of events and programmes all throughout the year.

In October, as annual physical elections were not feasible, a distinguished panel of the faculty of Political Science conducted interviews of the applicants and duly selected the Office Bearers for the year 2020-21. The following are the Office Bearers 2020-21:

President	: Sahil Choudhary (3rd year)
Vice President	: Amit Sharma (3rd year)
Secretary	: Shaurya Dev (2nd year)
Joint Secretary	: Anchal Thakur (2nd year)
Joint Secretary	: Chitransh Kaushal (2nd year)
Treasurer	: P. Ajay Rathod (2nd year)

To increase the participation of students and to inculcate democratic values and practices in the society, 'Amatya' - a cabinet with various departments namely Anchoring, Creative, Cultural, Media-Cum-Promotion, Research and Technical was established and after interviews, students were duly selected as Head and Sub-Head for each department:

### **Anchoring Department:**

Head	: Pratiksha Tripathi
Sub-Head	: Disha Wadhvani

### **Creative Department:**

Head	: Shyamli
Sub-Head	: Aparna Jha

### **Cultural Department:**

Head	: Ashita
Sub-Head	: Rashi Bindal

### **Media-cum-Promotion:**

Head	: Shikha Kumari
Sub-Head	: Kashish Tanwar

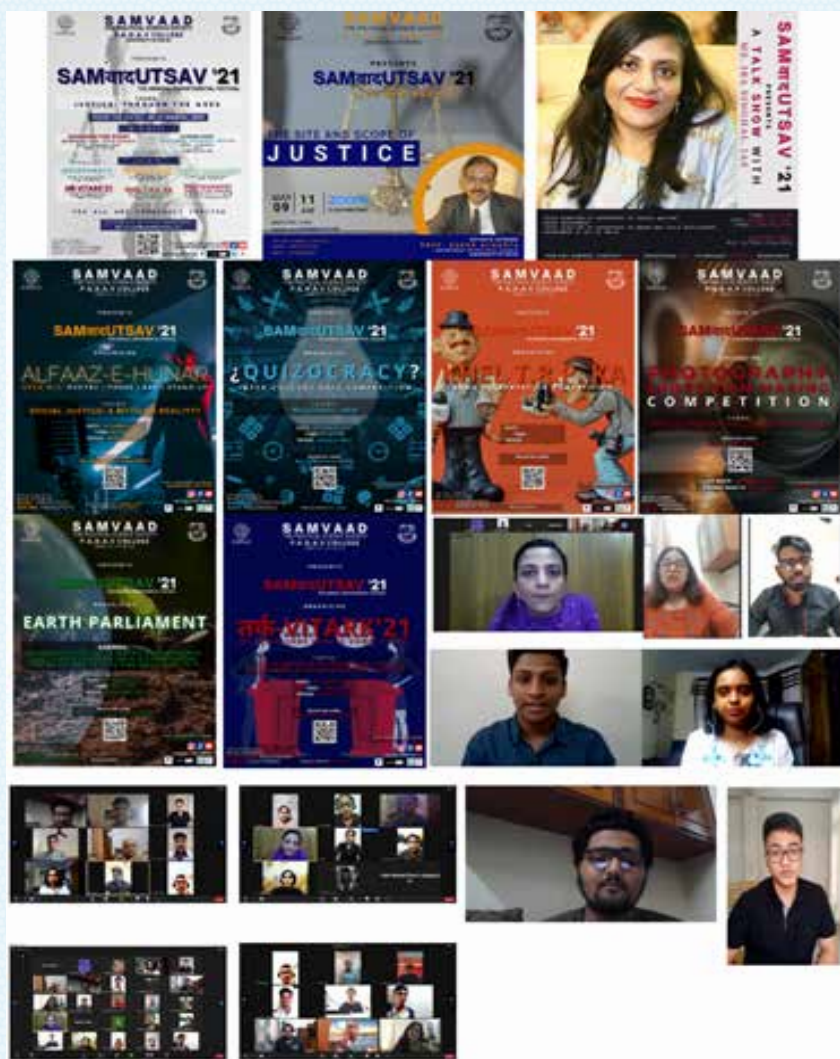
### **Research Department:**

Head	: Radhika Gupta
Sub-Head	: Sebgadulla Mowaheed

On 28 November, 2020 Samvaad organised its 'Orientation Program' to officially welcome and induct the Freshers who joined the Political Science (Hons.) course in the 1st year. The Freshers were introduced to the Faculty and were informed and made aware of the course structure, Samvaad's legacy and major annual events, various societies of P.G.D.A.V. College. On 5 December 2020 Samvaad organised an Open Book Examination (OBE) session to make students aware of the nitty-nitty of this new format of online examination.

French writer Anatole France said, "To accomplish great things, we must not only act, but also dream; not only plan, but also believe." Samvaad too with its 'Vision 2020+1' did not just plan or dream, but even in the short period of time and in the limited virtual setting, it also started working tirelessly to implement and execute these numerous plans which were envisioned. With the beginning of the 'Even' semester from 4 January 2021, Samvaad began working at full speed and organised numerous events in the semester. In the month of January, an Intra-department Debate Competition on the topic of 'Censorship of OTT platforms' was held. An Online Treasure Hunt, Movie Review Session and E-Sports Event were also conducted. The process of Learning is not limited to the spaces of classes and textbooks, but it is ubiquitous and a continuous process, and to enrich this learning, on 13th January 2021 Samvaad organised an Intra-Department Quiz Competition.

Samvaad organised an Intra-Department Poetry-cum-Tutorial Session - "कवि कविताएँ और संवाद", which was aimed at imparting the basics of poetry composition to the students. 'Know Your Republic' is an annual event organised by Samvaad to celebrate the Republic Day of India which made our students



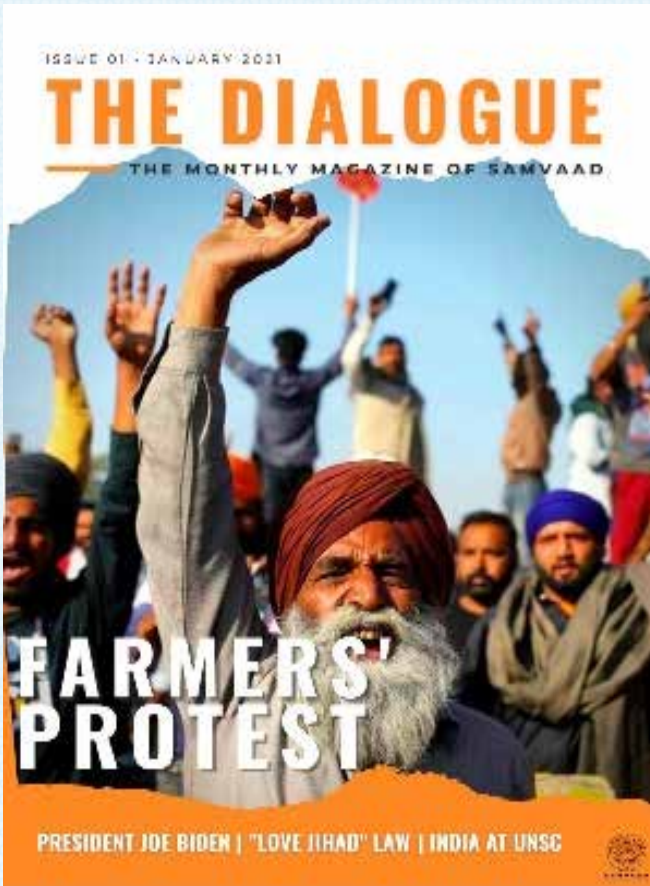
Samvaad launched the very first edition of the proposed monthly E-magazine, 'THE DIALOGUE', in which students from all three years of the department contributed eloquently written articles on various issues and happenings of January 2021 ranging from Farm Bills, 'Love Jihad' Act to US President Biden, India at UNSC.

On 15 February 2021 Samvaad organised a Webinar on the topic - "President Joe Biden and US-India Relations" for which Dr. Rajan Kumar (School of International Studies, Jawaharlal Nehru University) was invited as the "Guest Speaker". The session was highly informative and educational for all the students as it gave them an excellent opportunity to understand in detail the bilateral relations of India and USA and this crucial aspect of India's foreign policy and global politics through the deep insight and knowledge of Dr. Rajan Kumar.

Samvaad held its annual fest – 'SAMVAADUTSAV '21' on 9 and 10 March,

aware of the various tenets and facets of our Republic. This year, while several societies cancelled or minimized their events, Samvaad on the other hand decided to extend the celebrations to a two days event and organised a multitude of events on 22 and 23 January, 2021. A webinar was organised on the topic "Indian Constitution and its Philosophy" and the speaker for the event was Professor Ujjwal Kumar Singh from the Department of Political Science, University of Delhi. Other events organised in two days: 'Know your Republic 2021', which saw immense participations from several colleges and universities, Inter College Quiz Competition, Inter College Treasure Hunt Competition, Inter College Debate Competition and Inter College Poster making Competition.

2021 under the theme 'Justice: Through the Ages'. The fest began with keynote Webinar, on the topic 'On the Site and Scope of Justice', by our Guest Speaker Prof. Ashok Acharya who eloquently talked about Justice and various facets. Further the fest was packed with a plethora of events like: 'Quizocracy?'- Inter-college Quiz Competition 'Millennial India', 'तर्क-Vitark '21'- Inter-college Debate Competition on the topic 'Public Interest Litigation (PIL) is an instrument of Socio-Economic Justice', 'Alfaaz-e-Hunar'- An Inter-College Online Open Mic Competition, Photography and short film making competition, 'Khel T.R.P Ka' - News Presentation Competition and 'Earth Parliament' to encourage young minds to discuss, deliberate and find solutions to the global ecological crisis. As a



closing event an online Talk Show was organised with Speaker Ms. Ira Singhal, IAS who talked about several key issues like the role of administration in ensuring justice, women empowerment, bureaucracy, etc. The versatile family of Samvaad portrayed their immense talent digitally with two short films that were screened during the events. Through these short films, Samvaad tried to shed light upon two social menaces prevalent in our societies. The film "KHAMOSHIYA" dealt about depression while the second short film "AFSOOS" highlighted the many vices of drugs and its abuse among the youth.

Samvaad has come out better and stronger from the tough times of the global pandemic and the entire team or rather family of Samvaad has shown utmost dedication and commitment to keep the students of the department engaged and in action constantly and even in the coming times Samvaad continues to strive for such excellence.



## PARIKALAN - DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE

A plethora of online activities were conducted by “Parikalan”, The Computer Science Society during the whole academic year. The pandemic could not water down the spirit and enthusiasm of the students; rather it opened a door for a variety of virtual activities for the faculty and students. Throughout the academic session, various activities were held after the class schedule.

QuizBots, CodeBots, NetWeavers and EWS clubs of Parikalan were on their toes to keep the students involved in interesting tasks and talks. Crosswords, essay writing, passage quiz, rat quiz, face and phrase quiz, logo quiz, coding events and elocution activities were amongst some of the interesting activities organized throughout the session. A Thirty days of CodeHackerrank’s Challenge was held and six students completed it successfully. Hands on workshops on topics like ReactJS, CSS, JavaScript and HTML were conducted for the students. Large number of webinars on a wide variety of topics like, “What after college”, “Utilizing college days the right way”, “Software

development evolution”, “Competitive programming and complexity analysis” were organized and saw a large participation. Throughout the academic session, the students actively participated in various inter college events and won prizes for the same.

A one-day Annual Technical Festival “Xenium” of the department was successfully organized on 18 February 2021. This time, the festival was held in online mode and included 4 events: Code Crusade, Impromptu Relay, Web Designing and Group Discussion. Students from institutions like IIT, IIIT and colleges from University of Delhi participated in the festival in large numbers.

Samarjit Mahi, a B.Sc. (Hons.) Computer Science student was selected as Google DSC Lead and P.G.D.A.V. Developer Student club (DSC) is being run since September 2020. Many sessions consisting of hands-on workshop, study jams, speaker tech talk on domains like web development, android, machine learning, augmented reality, open source and designing have been conducted by DSC.





## GEO-CRUSADERS – DEPARTMENT OF ENVIRONMENTAL STUDIES

### Mission Statement:

The mission of Geo-crusaders is to create awareness and motivate students towards understanding various repercussions of environmental degradation and creating a healthy environment for our present and future generations. Issues regarding various socio-ecological aspects, ways of sustainable development as well as environment conservation are also addressed.

In order to sensitize students about the importance of the environmental conservation and natural ecosystems, the society in association with the Department of Environmental Studies of our college, observed significant days of environmental importance and organised various events online amid COVID-19 pandemic, during the Academic Year 2020-21. The society organised a cleanliness drive at Vinobapuri Metro Station on 3 March, 2020 where students cleaned the area around the Vinobapuri Metro station along with the surrounding area.

A Webinar was organised for students where Dr. Richa Agarwal delivered a talk on restoration of city forests in Delhi through participatory approaches on 13th April 2020. The society also observed World Environment Day on 5 June 2020 online. The Society in collaboration with the Department of Environmental Studies of our college celebrated International Ozone Day on 16 September 2020, where along with awareness programs, quiz and slogan writing competitions for students were also held online. The society along with the Department of Environmental Studies observed 'World Wildlife Week' from 1-8 October, 2020 where activities like wildlife quiz, poster making competition and other awareness programs on Wildlife and its Conservation were organised online for the students. A webinar was also organised on 8 October, 2020 where Dr. Kuldeep Sharma from the Department of Botany

and Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, delivered a talk on the Importance of Wildlife. An awareness program on the importance of Wetlands was organised to mark the celebration of World Wetland Day on 2 February, 2021, where short documentaries on Wetland ecosystems were showcased to students online.

Along with the celebration of various events we regularly keep our social media platforms up to date by regularly posting different updates concerning pressing threats to Environment and ways to mitigate it.

<https://www.instagram.com/geocrusadersp.g.d.a.v/>  
<https://www.facebook.com/Geocrusaders.P.G.D.A.V.College>

### Our Team

#### Student Office Bearers:

Pearl Mittal- President

Abhinav Tiwari- Secretary

#### Faculty Office Bearers:

Dr. Gaurav Kumar- Convener

Dr. Pardeep Singh- Co- convener

Dr. Richa Agarwal- T.I.C.; Department of Environmental Studies

Dr. Chanderpal Singh

Dr. Parmanand Sharma

Dr. Hira Singh Bisht

Dr. Yuvraj Kumar



## DEPARTMENT OF PHYSICAL EDUCATION

For the year 2020-21 the college admitted 30 candidates on the basis of sports in different games viz. Athletics, Boxing, Cricket, Football, Taekwondo, Volleyball and Wrestling.

The College is organising a short-term certificate course on “Yoga for Wellness and Health”. The course will run online and offline simultaneously.

The offline course was exclusively meant for students and staff of P.G.D.A.V. College and the online mode for the other members of Delhi University. Both Theory and Practical classes were held for two weeks regularly excluding Sunday and an examination was held at the end.

The course commenced on 15 March 2021 and concluded on 27 March 2021.

At 9.30 am light refreshments were served to all offline participants. All participants were in proper activity dress for the practical classes. The offline participants brought their own Yoga mats as we had to maintain COVID 19 safety.



List of Achievements in the year 2020-21:

S.No.	NAME	GAME	LEVEL	ACHIEVEMENT
1.	Himanshi B.A(H) Hindi 1st Yr	SQAY	Senior National Championship	Bronze Medal
2.	Yobraj B.A (P) 3rd Yr	Boxing	District Boxing Championship	Silver Medal
3.	Tannu Singh B.A(H) Pol. Sci. 3rd Yr	Volleyball	Senior National Championship	Bihar State
4.	Gaurav Dabas B.A(H) Hindi 2nd Yr	Volleyball	Senior National Championship	Delhi State



## KAIZEN - THE CAREER COUNSELLING CLUB, PGDAV COLLEGE

KAIZEN, the Career Counselling Club, PGDAV College was started in March 2015 to make students aware of emerging career options; to help them identify careers best suited to their own strengths; and, to promote creativity in career selection. The club is largely run by the students along with teacher conveners Dr.Rajni Jagota and Ms.Geetika Jaggi of the Commerce department as torch-bearers who provide overall guidance and help in getting logistical support for its activities. The club conducts two types of activities: regular and sponsored.

Regular activity is a weekly activity of the club, which generally consists of book reviews; presentation of biographical sketches of persons of eminence; a session on vocabulary (English and Hindi); discussion on current topics. Students are also encouraged to showcase their self-composed poems and share individual experiences of personal growth.

Book reviews for the year were 'The Tempest' by William Shakespeare, Alice Walker's 'The Color Purple', an account of the experiences of Blacks in US; Rajmohan Gandhi's voluminous 'Gandhi before India', 'My Gita' by Devdutt Patnaik and a motivating book by a young writer, Preeti Shenoy, 'Life is What You Make It'. Jack Ma was the personality discussed. Quizzes on current affairs and miscellaneous presentations on themes like Ikigai, Network Marketing, Case study on Entrepreneurship, Single Use Plastic, Insolvency and Bankruptcy Code, Forms of Business Organization, Importance of Reading Books and autobiographical presentation on 'My Success Story' by Monica Rana, our college's decorated sports star, were other highlights.

Sponsored activity of the year was a special workshop on 'Communication Skills and Resume writing' conducted by Ms Sadaf Taher of ITM, Mumbai.

There were also special sessions on 'Why to Study

Law' and 'Career Opportunities in the Banking Sector' conducted by our very own former students- advocate Bibhuti Bhushan and Vijay Anand, now Manager RBI Mumbai.

Nikhil Yadav from Vivekanand Kendra Delhi conducted a session on Yoga and Meditation while Dr Monika Saini honed the skills of students with a session on 'How to write a research paper'. There was also a special session on How to Write Examination Paper.

Other important activities by members of Kaizen included 'Cleanliness Drive' called 'Living Gandhi' and a program celebrating the Republic Day.

2019-20 also saw the launch of new initiatives like 'Kaizen Times' a capsule of current events and 'Kaizen Outreach' a blog post.

### Report of 2020-21

Covid could not daunt the spirit of Kaizen, the Career Counselling Club which continued to function online on a regular basis.

Anchoring became a new highlight and students made good use of anchoring skills to make the program interesting for the viewers.

The range of books that were reviewed also underlined the concerns of the times. Harinder Baweja's 'Kargil the Inside Story', Jeff Keller's 'Attitude is Everything', Ramchandra Guha's 'Gandhi, the Years that Changed the World', Bhagvati Charan Verma's classic 'Chitralkha', Shashi Tharoor's 'Pax Indica', and last but not least, George Orwell's all-time best seller, 'Nineteen Eighty-four' were ably reviewed by the students. Besides the regular vocabulary sessions and interactive quizzes, students also discussed the personalities of Chhatrapati Shivaji and Sister Nivedita apart from historical events like the Third Battle of Panipat and its significance. Some current topics





caught the attention of students and were discussed at length like the 'Farm Bills', National Education Policy', Highlights of the Union Budget, Uniform Civil Code, New Scrapage Policy and Green Tax, Covid 19, Women Empowerment, US Elections, Finance and Investment Management, and, a very informative presentation by a student on Crpto-currency and Blockchain.

Covid also led to a sense of gloom and loneliness inspiring our young students to come up with discussions on themes of public speaking, body-shaming and confidence-building, along with discussion on self-empowering shlokas from the Bhagwat Gita. Self-composed poems by students were frequent, acting as windows into the thought process of the times.

The grand finale of the academic session, however, was an interactive online program on 'Career Guidance- Questions and Answers'. The speaker, Dr Somesh Chadda, management consultant, NLP trainer, facilitator and success coach answered the queries of the students on issues related to the meaning of career, role of skill and motivation in the success of a career, the issues related to income and mental satisfaction and also about the shifting from one career to another (The video of the interaction is available for students who would like to benefit from the interaction.) The program ended with a heartwarming farewell to the teacher convener Dr Kusum Lata Chadda who retired on March 31, 2021 and bidding adieu the final year students who were the office bearers for the academic year.

### पत्रिका संबंधी विवरण

#### फार्म नियम - 04

फार्म

(नियम- 04 देखिए)

1. प्रकाशक स्थान : पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नेहरू नगर, नई दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि : वार्षिक
3. मुद्रक का नाम : गरिमा गौड़ श्रीवास्तव
4. क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ  
यदि विदेशी मूल हैं तो देश का पता : .....
5. संपादक का नाम : डॉ. मनोज कुमार कैन
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रकाशित से अधिक के साझेदार हों। : प्रो. कृष्णा शर्मा

मैं, गरिमा गौड़ श्रीवास्तव, एतद्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवम् विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

वर्ष : 2020.21

अंक : 69

# सेवानिवृत्त प्राध्यापक



**डॉ. मुकेश कुमार अग्रवाल**  
पूर्व प्राचार्य  
हिंदी विभाग



**श्रीमती अजंता कोहली**  
अंग्रेजी विभाग



**डॉ. कुसुम कौशिक**  
राजनीति विज्ञान विभाग



**डॉ. कुसुम लता चड्डा**  
राजनीति विज्ञान विभाग



**श्री के. के. श्रीवास्तव**  
वाणिज्य विभाग



**श्री एम. पी. शर्मा**  
वाणिज्य विभाग



**P.G.D.A.V. COLLEGE**  
(UNIVERSITY OF DELHI)

**AAGHAZ'21**  
AVIRAL - THE VOYAGE CONTINUES

**INAUGURATION CEREMONY**  
16<sup>TH</sup> APRIL 2021 @ 3:00 PM TO BE HELD ONLINE.

**PRINCIPAL**  
DR. KRISNA SHARMA

**GUEST**  
MR. SUDHIR CHAUDHARY

FOR FURTHER DETAILS, PLEASE VISIT: [HTTPS://WWW.PGDAV.EDU.IN/AAGHAZ21](https://www.pgdav.edu.in/aaghaaz21)



विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,  
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।  
हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये,  
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।  
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,  
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

—मैथिलीशरण गुप्त (मनुष्यता)



पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय  
(दिल्ली विश्वविद्यालय)  
नेहरू नगर, नई दिल्ली—110065